

ASAMIYA SAHITYAR CHANEKI

OR

TYPICAL SELECTIONS

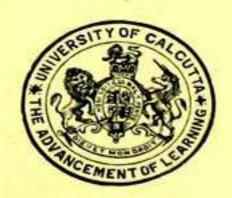
FROM

ASSAMESE LITERATURE

Vol. I.

FIRST THREE PERIODS

HEMCHANDRA GOSWAMI,
ASSAM CIVIL SERVICE.



UNIVERSITY OF CALCUTTA
1929



CCU 1502

PRINTED BY BUOPENDRALAL BANERJEE
AT THE CALCUTTA UNIVERSITY PRESS SENATE BOOSE, CALCUTTA

Reg. No. 114B. -November, 1929 - ε.

952261



CONTENTS OF THE THREE VOLUMES

"Typical Selections from Assamese Literature" or "Asamiya Sahityar Chaneki." compiled by Srijut Hemchandra Goswami, was published in three volumes consisting of seven parts, between the years 1923 and 1929.

Volume I, in one part, published in 1929, with a Preface and Lifesketch of the late Mr. Goswami by Prof. S. K. Bhuyan, and a Note on Assamese Language and Literature by Mr. Goswami and Rai Sahib Padmanath Gohain-Barua.

| | | | | PAGES. |
|--------------------------------|--------------|----------------|--------|----------|
| Giti-yng z or the first period | : | | | 92,092 |
| Dhai-nam | *** | 544 | 4.4.4 | 1-6 |
| Garakhia-nam | *** | 1994 | 343434 | 7.9 |
| Bia-nam | *** | 7222 | 444 | 10-19 |
| Bihur-nam | 33.55 | 17.5 | *** | 20-34 |
| Nao-kheloa git | 99** | *** | 200 | 35-37 |
| Baramahi git | * * * | (11) | 777 | 38-44 |
| Gaolia git | *** | *** | *** | 45-63 |
| Tokari-nam | 10.00 | (Winds | 994 | 64-65 |
| Huchari-nam | 4 | 12027 | *** | 66-70 |
| Ai-nam | (B) | | *** | 71-75 |
| Mantra-arn-Bhanita-yuga o | r the second | period :- | 6 | |
| Mantras | *** | *** | 36303 | 76-100 |
| Dak-bhanita or the apho | risms of Da | k | 224 | 101-133 |
| Prak-Vaisnava-ynga or the | third period | : : | | |
| Rudra Kandali | | 10000 | 989 | 134-148 |
| Hem Saraswati | 17:27 | | 644 | 149-165 |
| Madbava Kandali | 990 | 0.43 | 7.55 | 166-317 |
| Kaviratna Saraswati | *** | *** | ••• | 318-325 |
| Durgavar | (4.6) | | *** | \$26-855 |
| Volume II, Part I, publis | hed in Janua | ry, 1924. | | |
| Vaisnava-yuga or the fourth | period :- | | | |
| Saukar Deva | *** | *** | *** | 2-198 |
| Madhava Deva | 100 mm | *** | ARR | 199-302 |
| Rama Saraswati | *.*.*. | 222 | 277 | 303-370 |
| Ananta Kandali | 1000 | *** | *** | 371-420 |
| Volume II, Part II, publi | shed in May | , 1924. | | |
| Vaisnava-yuga : | | Land L | | |
| Pitamvara Dvija | 0 | | | 421-432 |
| | | | | |



| | | | | PAGES. |
|--|-----------------|------------|---|----------------|
| Sridhara Kandali | | 4.00 | 594 | 438-452 |
| Bhagavata Misra | | | | 453-483 |
| Control of the Contro | F | 2.50 | 2000 | 484-504 |
| | 8.68 | 9.6.6 | 100 | 505-522 |
| Sagar Khari | *** | 100 | 1000 | 523-531 |
| Gopalebaran Dvija | | | 2007 | 532-539 |
| Govinda Misra | 9.5 | *** | | 540-569 |
| Srivishnu Bharati | 556 | 07/27/20 | (3.55) | 570-581 |
| Sukavi Narayan Deva | 3757 | 100000 | () () () () () () () () () () | 582-594 |
| Chandrachura Aditya | 999 | 144 | 1000 | 595-601 |
| Vishnu Bharati | | 1000 | 244 | 602-608 |
| Ramcharan Thakur | 500 | | 100 | 609-619 |
| | 10074 | *** | | 620-626 |
| Krishnananda Dvija Bhakatia Phakara | (3.00) | 100.00 | 2.55 | 627-629 |
| | · · | (6.66) | 886 | 630-648 |
| Damodar Das | (4)474 10000 | 1000 | F. 8. 9. | 649-682 |
| Ratnakara Misra | 222 | *** | #3404. GAZIII | 683-697 |
| Aniruddha | 7550 | 9:15 | 224 | 698-723 |
| Ramananda Dvija | (888) | 045A | VADV | 724 739 |
| Narottam Thakur | *** | *** | 3555 | 740-748 |
| Bhushan Dvija | *** | *** | *** | 749-762 |
| Damodar Dvija | ••• | 1000 | 522 | 763-781 |
| Gopinath Pathak | 225 | 100000 | | 782-814 |
| Kavi Ramrai Das | (***) | 6*** | | 815-830 |
| Sriram Jadumani | (00)0000 | *** | 333 | 613-650 |
| Tolume II, Part III, pub | lished in J | uly, 1924. | | |
| istar-yuga or the fifth perio | | | | |
| Ramchandra Barpatra-g | ohain | | | 831-844 |
| Rangapath Dvija | 0.894.90 | *** | 122 | 845-861 |
| Nilakantha Das | *** | *** | (6.65) | 862-874 |
| Kesav Das | 144 | 244 | *** | 875-892 |
| Ananta Acharyya | 222 | 299 | *** | 893-903 |
| Lakshminath Dvija | | | | 904-914 |
| Pithuram Dvija | *** | | | 915-934 |
| Ram Dvija | | | *** | 935-951 |
| Vishnuram Dvija | *** | *** | | 952-961 |
| Jainarayan | | 1444 | 34 C | 962-973 |
| Kamdeo Bipra | | | | 974-979 |
| Bhadracharu Das | • | | - | 980-995 |
| The state of the s | | | | |



| | | | | | PAGES. |
|----------------|--|------------|-------------|--------|-----------|
| Kalidas | *** | 0.5(7.7) | 600 | 227 | 996-1004 |
| Ramananda | *** | 2.6662 | 222 | | 1005-1015 |
| Kaviraj Chak | ravarti | | 0.00 | 5000 | 1016-1025 |
| Ramananda I | | 5244 | *** | 990 | 1026-1038 |
| Ram Misra | - | 144 | 35660 | 76,000 | 1039-1061 |
| Dvija Viswes | wara | | 7,2507 | *** | 1062-1072 |
| Dina Dvijava | | | *** | | 1073-1092 |
| Krittivasa Pa | | *** | 0.000 | *** | 1093-1103 |
| Rudraram Ka | avi | 75X | 688 | 2.55 | 1104-1123 |
| Gangaram Da | as | *** | +4+ | 4440 | 1124-1129 |
| Raghunath D | | 3444 | 9648 | 66.00 | 1130-1138 |
| Ranganath D | | 022 | | 142 | 1139-1145 |
| Kaviraj Chak | | (*)*(* | | 990 | 1146-1162 |
| Volume II, Par | | shed in No | vember, 192 | 4. | |
| Vistar-yuga :- | | | | | |
| Dvijavara | | | 222 | 227 | 1168-1174 |
| Nandiswar D | | 10.00 | *** | 200 | 1175-1182 |
| Khargeswar | 5550 Files | 3000 | 17.000 | | 1183-1195 |
| Bipra Damod | Control of the Contro | **** | 700 | | 1196-1208 |
| Srinath Dvij | | 100001 | 244 | *** | 1209-1222 |
| Narottam D | | 200 | 1942 | 400 | 1223-1232 |
| Ratikanta D | | | *** | 202 | 1233-1241 |
| Raghunath I | | | | *** | 1242-1256 |
| Ananta alias | | nda | 3555 | *** | 1257-1269 |
| Daityari Tha | A STATE OF THE STA | | *** | 999 | 1270-1295 |
| Vidyachandr | | | | 3.6 | 1296-1307 |
| Bhavananda | *** | SUL. | | 1000 | 1308-1315 |
| Bhavadeva E | | *** | | 933 | 1316-1330 |
| Gangadas Se | N. T. Carlotte | *** | (5000) | *** | 1331-1338 |
| Subudhi Rai | | 5550 | *** | (555) | 1889-1856 |
| Bhavani Das | | *** | *** | *** | 1357-1369 |
| Haridas Bipi | | *** | ••• | *** | 1870-1375 |
| Gopinath Pa | | | *** | 2.5 | 1376-1383 |
| Vidya Panch | | | | 222 | 1384-1395 |
| Dvija Rama | | | *** | | 1396-1419 |
| Madhunaray | | 255.50 | 2000 | | 1420-1436 |
| Krishnachary | | 3.55 | 200 | *** | 1437-1451 |
| Asam Buran | and the second s | 4.00 | | 1839 | 1452-1460 |
| Baloram Dvi | | 3304/67/ | | *** | 1461-1479 |
| Baioram DVI | ja | - | *** | *** | 1101-1110 |



| | A.M. Co. | | | |
|-------------------------------|-------------------------------|---------------|----------|----------|
| | | | | PAGES. |
| Volume III, Part I, publishe | ed in Au | igust, 1923. | | |
| Vartaman-yuga or the sixth pe | riod :- | 2 | | |
| Suryyakhari Daivajna | 14.9-4 | 1966 | *** | 1-22 |
| Ratikanta Dvija | 9.434 | | 14(4) | 23-49 |
| Parasuram Dvija | \$500 | 12/20 | 277 | 50-64 |
| Kasinath Tamuli Phukan | 20.00 | 10.00 | 7.5/5 | 65-79 |
| Arunoday | 20.00 | 0.000 | *** | 80-99 |
| Anandaram Dhekial Phuks | m | (*** | 656 | 100-120 |
| Nidhiram Levy Farwell | 5060 | 196460 | + + + | 121-144 |
| Baloram Phukan | 997 | (4.43) | 34 1574 | 144-152 |
| Jajnaram Deodhai-Barua | | *** | 140 | 153-156 |
| Purnananda Deka-Barua | 1.804 | *** | *** | 157-160 |
| Hemchandra Barua | 111 | 100 | 125.0 | 161-189 |
| Gunabhiram Barua | 444 | | 4.414 | 190-218 |
| Ramakanta Chaudhuri | 303 | 944 | 14,9743 | 219-235 |
| Raghudeva Goswami | *** | | 444 | 236-245 |
| Indivar alias Nilkumud Ba | rua | (****) | 44.5 | 246-251 |
| Kaliram Barua | 69080 | 4+4 | (54)4(4) | 252-270 |
| Gopinath Chakravarti | 12003 | 3.44 | 1000 | 271-290 |
| Balinarayan Bara | 200 | 1022 | 202127 | 291-305 |
| Madhavchaudra Bardalai | 2.2.2 | (7/5/2) | | 306-317 |
| Kamalakanta Bhattachary | ya | 30000 | 64.0 | 318-347 |
| Volume III, Part II, publish | hed in I | December, 192 | 3. | |
| Vartaman-yuga :- | | | | |
| Bholanath Das | 1222 | D 7555 | | 348-361 |
| Lambodar Bara | | *** | *** | 362-391 |
| Ratneswar Mahanta | 877 | (3.55) | 5755 | 392-417 |
| Satyanath Bara | *** | 1000 | 14.6 | 418-446 |
| Lakshminath Bezbarua | | (4.44) | *** | 447-483 |
| Chandrakumar Agarwala | 7 | *** | *** | 484-494 |
| Rajanikanta Bardalai | | 3.85 | 555 | 495-499 |
| Kanaklal Barua | 35,527 | 200 | *** | 500-526 |
| Hemchandra Goswami | | *** | *** | 527-564 |
| Anandachandra Agarwala | | *** | | 565-591 |
| Benudhar Rajkhowa | | | 000 | 592-603 |
| Padmanath Barua | | | | 604-628 |
| Haliram Mahanta | | | | 629-632 |
| Purnakanta Devasarma | | | | 633-642 |
| Durgaprasad Datta Majin | dar Bar | | | 643-648 |
| | Control of the Control of the | Ole II | | 0.20.010 |



প্রথম প্রভাব স্থলীপত্র

গীতি-যুগ

| | | | | | পিঠি |
|-----|-------------------------|----------|-------|---------|------|
| 21 | ধাই নাম | | | | |
| | (ক) লৰা শুওৱা নাম | | ••• | (202) | > |
| | (খ) লৰা নিচুকোৱা নাম | | | | 9 |
| | (গ) লৰা ওমলোৱা নাম | *** | *** | *** | e. |
| 21 | গৰথীয়া নাম · · · | *** | | *** | 9 |
| 91 | বিয়া নাম | | | | |
| | (ক) সাধাৰণ | (7.75%)) | | | >. |
| | (খ) হৰগোৰীৰ বিয়া | *** | ••• | ••• | 28 |
| | (গ) ৰাম-দীতাৰ বিয়া | *** | *** | ••• | 24 |
| | (ঘ) কৃষ্ণ-ক্রিণীৰ বিয়া | e #8 | | *** | >> |
| | (ঙ) উষা-অনিকন্ধৰ বিয়া | | 1994 | *** | 24 |
| 8 | বিহুৰ নাম · · · | *** | *** | • • • • | 20 |
| @ 1 | নাও খেলোৱা গীত · · · | | | *** | 20 |
| ١ ڪ | বাৰমাহী গীত | | | | |
| | (ক) মধুমতীৰ গীত | 375 | | | ৩৮ |
| | (খ) কন্সা বাৰমাহী | *** | (888) | ••• | 8. |
| 91 | গাৱঁ লীয়া গীত | | | | |
| | (क) कुल (काँवर | | 1444 | ***5 | 80 |
| | (খ) মণি কোঁৱৰ | | *** | *** | 49 |
| 114 | (গ) পগলা-পাৰ্ববতীৰ গীত | • ••• | *** | *** | 49. |
| | В | III SiDE | | | |



| | | | | | | পিঠি |
|------------|--------------------|-----------|---------|------------|----------|----------------|
| | (ঘ) হালবোর। ব | গীত | (***) | *** | *** | ৬১ |
| | (ঙ) যঁতৰৰ গীত | 133 | 200 | 504 | (8.5%) | ৬২ |
| b-1 | টোকাৰী নাম | | 2.00 | Mary B | 2 | \\ \\ 8 |
| 21 | ভ্চৰী নাম | 222 | | | | ৬৬ |
| >01 | আই নাম | | E | | | 95 |
| - | | | | | | |
| | | | | | | |
| 6 | tite en | | 755 177 | 1000 | | |
| æ. | 2. 2 | ন্ত্ৰ আৰু | ভণিতা | যুগ | | |
| 2 | 922 8.0 | | | 100 | | |
| 2 | ান্ত্র | | | | | |
| ۱ د | পক্ষীৰাজ মন্ত্ৰ | *** | | | 2.22 | 96 |
| ٦ ا | সুদশন মন্ত | *** | *** | | | 60 |
| | বৃক্ষ আৰোপণ মন্ত্ৰ | 084 | | | 222 | 64 |
| 81 | গৃহ-কম্পন মন্ত্ৰ | | ••• | | | 69 |
| a 1 | তামুল ঝৰা মন্ত্ৰ | *** | *** | | 200 | 49 |
| <u>ن</u> ا | পুষ্পা ঝৰা মন্ত্ৰ | *** | ¥234 | | | b-9 |
| 91 | কদলীপত্ৰ ঝৰা মন্ত | *** | *** | 201 | | 64 |
| b 1 | চিকনি ঝৰা মন্ত | 10000 | | 1994 | | 66 |
| 21 | সূত্ৰ ঝৰা মন্ত্ৰ | *** | *** | 25.444.558 | 15 TANK | 44 |
| > 1 | সৰিষা ঝৰা মন্ত্ৰ | 2000 | *** | | | 66 |
| 221 | দিশ-বন্দী মন্ত্ৰ | *** | *** | 26.64) | 1894 | 66 |
| ३२ । | ধনুবাটলি মন্ত্র | 0.5550 | 200 | | *** | 4.0 |
| 201 | গঢ় মস্ত্র | *** | *** | | | 49 |
| 186 | বিড়া বন্ধ মন্ত | | 2.55 | **** | | ۵۰ |
| 26.1 | কৰতামন্ত্ৰ | 200 | | 200.00 | | ۵۰ |
| ١٧٧ | ধৰণী মন্ত্ৰ | | | Person | NEC (MA) | ಎಲ |
| 1 86 | গু-কৰতী | 1905 | | | | 744.40 |

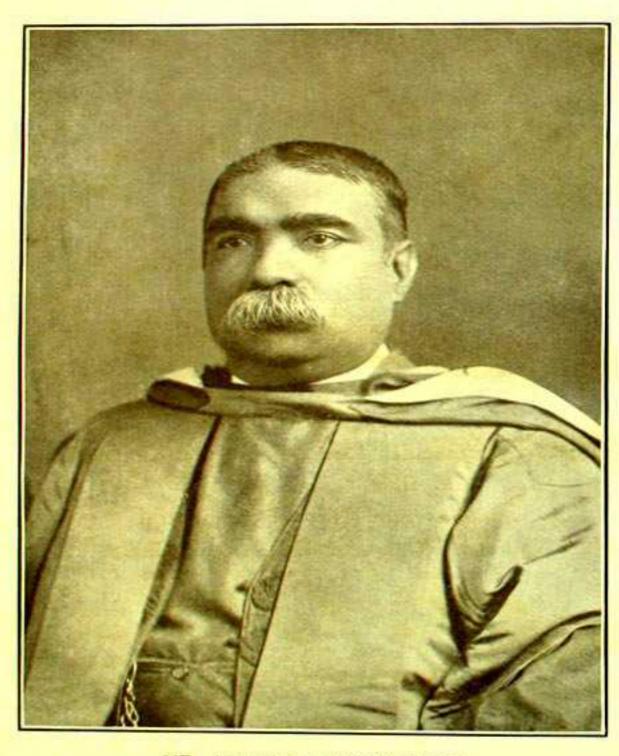


| | | | | | | পিঠি |
|-----|----------------------|------------------|-------------|---------|--------------|-------|
| = 5 | ঢাক-ভণিতা | +647 | | | - A | |
| 51 | জন্ম প্ৰকৰণ | | *** | -1 | *** | >0> |
| ٦ ١ | ধৰ্ম প্ৰকৰণ | *** | *** | *** | i | 200 |
| 01 | নীতি প্ৰকৰণ | *** | *** | *** | 212.*** | 200 |
| 81 | ৰাজনীতি প্ৰকৰণ | ***/ | *** | *** | | >>> |
| @ 1 | ৰন্ধন প্ৰকৰণ | **** | | **** | *** | 220 |
| 91 | গৃহিণী লক্ষণ | *** | ••• | ••• | | 228 |
| 91 | পৰিত্যাগ কথন | ••• | ••• | ••• | ••• | 250 |
| P 1 | কুষি লক্ষণ | ••• | ••• | ••• | ••• | >5> |
| 91 | বুষ লক্ষণ | ••• | | *** | | १९७ |
| >01 | জ্যোতিষ প্ৰকৰণ | | ••• | *** | *** | . ૨૦ |
| 221 | বৰ্ষা লক্ষণ | | **** | **** | *** | 256 |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | | প্রাক্-বৈ | ষ্ণব যু | গ | | |
| > 1 | ৰুদ্ৰ কন্দলী | | | | | |
| | মহাভাৰত, ডোণপ | াৰ্ব্ব, সাত্যকি- | প্রবেশ | *** | ••• | 208 |
| २ । | হেম সৰস্বতী | | | | | |
| | প্ৰহ্লাদ-চৰিত | ••• | ••• | ••• | 1001 1002 | 789 |
| ৩। | মাধব কন্দলী | | | | | |
| | ৰামায়ণ, আত্মপৰি৷ | 5য় | *** | *** | *** | ১৬৬ |
| | ৰামায়ণ, অযোধ্যাব | চাণ্ড, ৰামৰ ব | নবাস | *** | *** | ১৬৭ |
| | ৰামায়ণ, অৰণ্যকাং | 3, সীতাহৰণ | ••• | ••• | ••• | २२১ |
| | ৰামায়ণ, কিজিস্কাব | ांछ, वाली-वंश | 1 | ••• | ••• | 285 |
| | ৰামায়ণ, কিকিন্ধাব | | | ••• | ••• | 200 |
| | ৰামায়ণ, কিঞ্চিশ্বাব | গও, ভাৰীই | শ্ৰীৰামক শা | भ मिर्य | ••• | २७५ - |



| | | | | পিঠি |
|-----|--------------------------------------|------------|-----|------|
| | দেৱজিত | *** | | : ৬৯ |
| | বামায়ণ, উত্তৰাকাণ্ড, লৱ-কুশৰ ৰামায় | ণ কীৰ্ত্তন | *** | 0)) |
| 8 1 | কবিৰত্ন সৰম্বতী | | | |
| | মহাভাৰত, দ্ৰোণপৰ্বৰ, কৈলাস বৰ্ণন | | *** | 978 |
| œ I | ছুৰ্গাবৰ | | | |
| | গীতি-ৰামায়ণ, অৰণাকাণ্ড, ৰাম-লক্ষ্মণ | ৰ বিলাপ | | ৩২৬ |





SIR ASUTOSH MOOKERJEE



To SIR ASUTOSH MOOKERJEE, KT., C.S.I.,

I humbly beg leave to inscribe
this book
in grateful recognition of
his noble endeavours
to sow the seed of Indian Nationality
by stimulating research
in the Vernacular Literature of the Country,
and thus paving the way
for the reconstruction of the truly
National History of Regenerated India.

Hemchandra Goswami,

Assam, 1923.



PREFACE.

Upon me has devolved the most responsible task of piloting through the press the first volume of Typical Selections from Assamese Literature, and of supplying the introductory matter relating to the entire compilation. I remember the extreme care and solicitude with which the lamented compiler watched the publication of the previous parts, and the high ideal of scholarship which he and the originator imposed upon this momentous compilation, I feel my efforts can hardly reach the verge of perfection. Srijut Hemchandra Goswami breathed his last on May 2, 1928, after the second and third volumes were published, and the first 150 pages of the first volume were in print. Asutosh Mookerjee who originated the scheme of publishing typical selections from the principal literatures of India, and whose interest in the present compilation remained unabated till the end, died somewhat unexpectedly at Patna on May 25, 1924. Srijut Bholanath Barua, a premier merchant and business man of Calcutta, who financed the publication of the Assamese selections by the University of Calcutta, died on May 30, 1923. It is a lamentable irony of fate that the three persons who were so intimately associated with the compilation and publication of the Assamese selections have not lived to see the completion of their labours.

The origin of the present compilation was the patriotic zeal of the late Sir Asutosh Mookerjee to unfold all that is best in Indian culture on the principle "that the most fruitful results in the domain of higher studies could be achieved only by the assimilation of what is best in the West with what is best in the East, for the revivification of all that is most vital in our national ideals." He it was who dis-

Sir Asutosh Mookerjee's Convocation Speech of 1923.



xvi

covered and removed the grotesque anomaly that while in England and Germany the study of the English and German languages forms part of the highest stages of University scholarship, in India the study of the Vernaculars was performed in a perfunctory and elementary fashion. He initiated a scheme for the advanced study of the Indian Vernaculars by which "for the first time in the history of Indian Universities, it became possible for a person to take the highest University degree on the basis of his knowledge of his mothertongue." In 1919, the University of Calcutta, with the sanction of the Government of India, established its Department of Indian Vernaculars which the distinguished founder characterised as "a special feature of our University and which should constitute its chief glory in the eyes of all patriotic and public-spirited citizens." According to the Regulations, a student studying for the M. A. in Indian Vernaculars "should possess a knowledge of two vernaculars, namely, a thorough knowledge of his mother-tongue and a less comprehensive knowledge of a second vernacular. The student is also required to obtain a working acquaintance with two of the languages which have formed the foundation of the Indian Vernaculars, such as Pali, Prakrit and Persian. The languages which have already been recognised as principal languages are Bengali, Hindi, Guzrati and Oriya. The languages which have been recognised as subsidiary languages are Bengali, Assamese, Oriya, Hindi, Urdu, Maithili, Guzrati, Marathi, Telugu, Tamil, Canarese, Malayalam and Sinhalese."

As a fitting adjunct to this advanced study of the Indian Vernaculars, the University further organised a scheme for the preparation and publication of volumes of typical selections in all the Indian Vernaculars, from the earliest stages



xvii

of their development to modern times, and the following note appears on page 87 of the Report on Post-Graduate Teaching in the University of Calcutta, 1918-1919,—

"During the session under review, on the recommendation of the Council of Post-Graduate Teaching in Arts, the Senate at its meeting held on the 31st August, 1918, sanctioned a scheme for the preparation of a series of volumes of typical selections to facilitate advanced study of the Indian Vernaculars in their critical, scientific, historical and comparative aspects with a view to include them as subjects for the degree of Master of Arts of this University. The scheme, which was initiated by the Hon'ble Sir Asutosh Mookerjee, the President of the Council, was first considered by a joint meeting of the Boards of Higher Studies in Sanskrit, Pali, Arabic and Persian, and Comparative Philology. For the purpose of editing the selections the following arrangements were made:—

Marathi-Mr. D. R. Bhandarkar, M.A., Carmichael Professor of Ancient Indian History and Culture.

Prakrit - Dr. P. D. Gune, M.A., Ph.D., under the guidance of Sir Ramkrishna Gopal Bhandarkar, K.C.I.E., M.A.

Assamese—Srijut Hemchandra Goswami, Joint-Editor of the Assamese lexicon Hema-kosha.

Pali—Mahamahopadhyaya Dr. Satischandra Vidyabhushan, M.A., Ph.D., and Dr. Benimadhab Barua, M.A., D.Lit.

Oriya-Babu Bijaychandra Majumdar, B.A.

Hindi-Lala Sitaram, B.A.

Gujarati-Prof. I. J. S. Taraporewala, B.A., Ph.D., and Prof. A. B. Dhruva, LL.D,

Urdu-The Hon'ble Dr. A. Suhrawardy, M.A., Ph.D."

In March 1918, Sir Asutosh Mookerjee visited Gauhati with the other members of the Calcutta University Commission. His mind was delving into the possibilities of developing vernacular studies in his alma mater. Lieutenant-Colonel P. R. T. Gurdon, I.A., C.S.I., then Com-



xviii

missioner of the Assam Valley Division, pointed out Srijut Hemchandra Goswami, his Personal Assistant, as the most competent person to undertake the compilation of the typical selections from Assamese literature. With that keen eye for merit which distinguished Sir Asutosh above his contemporaries, he readily accepted the suggestion. Mr. Goswami was requested to submit a plan of the proposed work, and he submitted the following scheme to Sir Asutosh in his letter, dated April 23, 1918.—

"I propose to divide Assamese literature into six different periods on historical and philological grounds.

"The first period begins about 600 A.D., when the Chinese pilgrim Hiuen-Tsiang visited the country of Kamarupa, and extends up to 800 A.D., when the aphorisms of Dak were first reduced to writing. During this period literature remained in an unwritten state and it was entirely lyrical in its nature. The cradle songs, the pastoral songs, the Bihu songs and the ballads of Assam belong to this period. I propose to call this as lyrical period or Giti-yuga.

"The second period begins about 800 A.D., when the mantras and the aphorisms were first reduced to writing, and extends up to 1200 A.D., the time when the regular written literature took its birth. I propose to style this period as the period of mantras and aphorisms or Mantra-aru-bhanita-yuga.

"The third period begins about 1200 A.D., when the translation of the Puranas and the Ramayana was taken in hand for the first time by writers like Hema Saraswati, Madhava Kandali and Pitambar Dwija, to prepare the way for Vaisnavism in the next period, and extends up to 1450 A.D., the time of Sankara's birth. I propose to call this the Pre-Vaisnavite period or Prak-Vaisnava-yuga.

"The fourth period commences at 1450 A.D., with the birth of Sankara Deva, the great exponent of Vaisnavism in



xix

Assam, and it extends up to about 1600 A.D. All the great writers of ancient Assamese literature flourished in this period, and the literature was chiefly employed for the propagation of Vaisnavism. I propose to call this as the Vaisnavite period or Vaisnava-yuga.

"The fifth period begins about 1600 A. D., with the consolidation of the Ahom power in the country, and it extends up to 1800 A.D., about which time the country came under British rule. This period was marked with great literary activities and numerous books were written on a variety of subjects by writers of all grades, but on the whole it was a period of deterioration owing to the depredations caused by the Moamarias and the Burmese. As the literature in this period lost in depth it gained in surface, and so I propose to call this the period of extension or Vistar-yuga.

"The sixth or the last period commences in 1800 A.D., with the advent of the British and it continues up to the present time. With the spread of English education the vernacular literature of the country assumed a new mould, and I propose to call this the modern age or Vartaman-yuga."

On the recommendation of the Council of Post-Graduate Teaching in Arts, the Senate at its meeting held on the 31st August, 1918, appointed Srijut Hemchandra Goswami to prepare the selections from Assamese literature on an honorarium of Rs. 2,000. An additional sum of Rs. 400 was subsequently sanctioned for the services of a copyist.

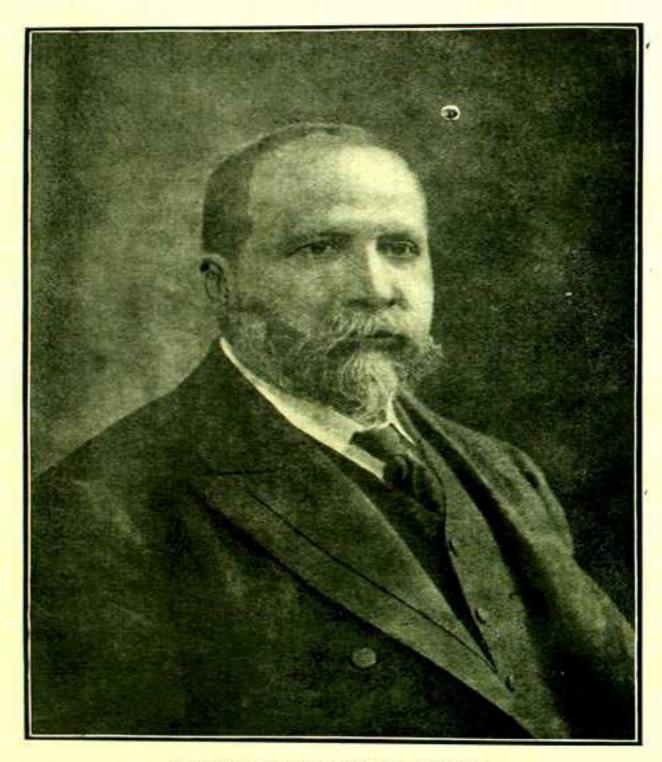
Sir Asutosh Mookerjee could not have hit upon a more competent person for the work than Mr. Goswami. While a student of the Presidency College he had compiled the first systematic history of Assamese language and literature,

The British came to Assam in 1826, and modern Assamese literature tinged with the influence of the new contact began from that date. There would have been no material disadvantage if the fifth period of Mr. Goswami's classification had ended in, and the sixth period begun from, that year.



which was published as a serial in the monthly journal Jonaki, Calcutta series. Jointly with Lt.-Col. P. R. T. Gurdon he had edited and seen through the press the voluminous dictionary of the Assamese language, Hemakosha, compiled by the late Srijut Hemchandra Barua. Whatever leisure he could wrest from the responsible duties of an executive officer of the Government was devoted to literary and antiquarian pursuits. Sir Edward Gait found in him a most enthusiastic and helpful worker when he instituted a systematic survey into the possibilities of historical research in Assam, as we know from his Report on the Progress of Historical Research in Assem, 1897. Mr. Goswami had represented to the Government the immediate necessity of collecting the ancient Assamese manuscripts lying for ages in the archives of Assamese families. Sir Archdale Earle, then Chief Commissioner of Assam, readily took up the suggestion, and in October, 1912, deputed Mr. Goswami to collect the available manuscripts, which, in the words of Col. Gurdon, "supplied Hem Gosain with a great portion of the information which he acquired and afterwards utilised in his published works." He had compiled with extraordinary pains a descriptive catalogue of the puthis collected, which is now being published by the Calcutta University. He had edited and published the sixteenth century Assamese prose rendering of the Gita by Bhattadeva, and the old metrical chronicle of the Darrang Rajas. He had contributed a series of critical articles on numerous old Assamese classics in the pages of the first two volumes of the Usha. He had published, with his introductory notes, the rock inscriptions of Assam and the diplomatic letters of the Ahom court in the sixth, seventh and eighth volumes of the Alochani. For the space of forty-five years, 1883-1928, he was a devoted student of Assamese literature and history, being more acquainted with original sources than any other Assamese gentleman of the time.





SRIJUT BHOLANATH BARUA

MERCHANT AND PHILANTHROPIST

Born 1853 Died 1923

GS224.



xxi

The financial difficulties which Sir Asutosh Mookerjee experienced in developing the Post-Graduate Department of the Calcutta University have now become a matter of history. The publication of the Assamese selections would have been postponed indefinitely but for the patriotism and generosity of Srijut Bholanath Barua who was a well-known figure in the business circles of Northern India. the second session of the All-India Oriental Conference, held at Calcutta in January, 1922, Sir Asutosh in the company of Mr. Goswami personally approached Mr. Barua for financial assistance in the publication of the Assamese selections. The irresistible appeal of Sir Asutosh readily obtained the aid solicited, and Sir Asutosh mentioned in his Convocation Speech of March, 1922,-" Mr. Bholanath Barua, one of the most enlightened sons of Assam, has offered a handsome donation of rupees ten thousand to meet the cost of publication of the Assamese selections."

The original plan of the typical selections from Assamese literature was to publish the pieces in two volumes, of one thousand pages each. The first volume was to contain the selections from the first four periods, and the second volume from the last two periods. "An introduction in English will be added to the first volume, dealing with the history of the language and literature, and a glossary of the archaic words with meanings will be put at the end of the second volume." The original plan included provisions for illustrations, and index, and notices of the authors included in the compilation, which would have immensely added to the value and utility of the book. But Mr. Goswami's continuously failing health culminating in his untimely demise did not make it possible to publish the book according to the original plan.

Convenience and bulk dictated the division of the book into three volumes, a scheme which was subsequently adopted by Mr. Goswami in July, 1923. The first volume was to contain the first four periods, the second volume the fifth



xxii

period, and the third volume the modern period. The second scheme also underwent slight changes, as the second volume, as it is now printed, contains selections from the fourth period. The printing of the second and third volumes was first undertaken, as the matter for the first volume could not be got ready before all the other volumes were printed off. Sir Asutosh was to write a preface to the third volume, but unfortunately we find only his scheme for the typical selections with special reference to the volumes on Assamese literature inserted at the beginning of the third volume.

Mr. Goswami's original idea was to make every volume self-contained, i.e., complete in itself, with preface, introduction, contents, text and glossary. He wrote in a letter from Jorhat, dated July 10, 1923,-"The Preface will give only an account of the preparation and the printing of the book; the Introduction will give the history of Assamese literature showing the progress and development of the language with the distinctive characteristics of the periods dealt with in the volume; and the Glossary would give the archaic words with their interpretations. The modern period being almost devoid of archaic words, the Glossary of the third volume would be necessarily small. In my opinion, this would be a much better arrangement than to have a separate volume of Glossary for all the periods." This would have been certainly the ideal method of publishing the selections, but Mr. Goswami's official preoccupations, his gradually failing health, coupled with the inconvenience of printing the book from a distance, did not permit it to be brought out on the lines of modern critical compilations.

I would, therefore, suggest that arrangements should be made for compiling and publishing a supplementary volume which will contain a critical introduction dealing with the history of Assamese language and literature with special reference to the periods into which the selections have been grouped; it should also have illustrations, a glossary, an



xxiii

errata, and short notices of the authors represented in the selections. Then only will be realised the ideal set forth by the distinguished originator of the scheme when he said,-"The general plan of the volumes will be historical and critical. The selections, if judiciously made, will serve to illustrate linguistic and literary evolution and help to illuminate many a dark corner of social, religious and administrative history. Each volume will be furnished with an introduction, glossary, notes and appendices." Mr. Goswami's work suffers by being the first of its kind in Assam; and there are many phases of Assamese language and literature which were lost sight of by the original compiler, and which might be adequately represented in the supplementary volume. The historical and dramatic literature of Assam, which constitutes its chief distinction from the other vernacular literatures of India, might be more amply represented. Selections from works compiled under the commission of the state, such as the treatises on elephants and horses and other similar productions, might also find place in the supplementary volume. New classics which bave been raked up by the labours of recent investigators might also be represented in that volume.

As the compilation and publication of the proposed supplementary volume are evidently a matter of delay, we venture to place these selections before the learned world with a short sketch of the life and works of the editor which will naturally illustrate many aspects of Assamese language and literature and throw light on many authors and pieces included in the Typical Selections. In lieu of the much desired historical introduction from the pen of Mr. Goswami, which would have given evidence of his vast erudition and life-long acquaintance with the literature of ancient Assam, we insert here a very carefully compiled note on Assamese language and literature by Mr. Goswami, and Rai Sahib Padmanath Gohain-Barua. This note was submitted in 1907 to Mr.



xxiv

F. W. Südmersen, B.A., then Principal, Cotton College, Gauhati, who was engaged in compiling a monograph on the Assamese language at the instance of the Assam Government.

I am indebted to Sriman Saratchandra Goswami, B.A., the eldest of the surviving sons of Mr. Hemchandra Goswami, for placing at my disposal the papers, notes and diaries of his distinguished father.

COTTON COLLEGE, GAUHATI, ASSAM. September 3, 1929.

SURYYAKUMAR BHUYAN.





SRIJUT HEMCHANDRA GOSWAMI
ANTIQUARIAN AND SCHOLAR
Born 1872. Died 1928.



SRIJUT HEMCHANDRA GOSWAMI

A SHORT BIOGRAPHICAL SKETCH.

The late Srijut Hemchandra Goswami's chief claim to the recollection and gratitude of posterity consists in his life-long devotion to the cause of Assamese literature and history. He pursued his labours in the midst of the heavy duties of an executive officer of the Government, and there is hardly any branch of historical investigation in which he did not actively and arduously exert himself. A born scholar and investigator he was a source of inspiration to all who came in contact with him, and wherever he went, be, by his earnestness and affability created an atmosphere of learning and scholarship. By the art of gentle persuasiveness of which he was an adept master, he enlisted the sympathy and patronage of high Government officials in the cause of historical research. His personality was of no less consequence than his performance.

Hemchandra Goswami was born on January 8, 1872, at Gaurang Satra, near Golaghat in the district of Sibsagar, Assam. His father Srijut Dambarudhar Goswami, mauzadar, died at Benares when Hemchandra was only eight years old. His mother Srijukta Ghanakanti Devi, now the sole guardian of the family consisting of two soas and a daughter was reduced to the verge of despair regarding the maintenance and education of her children. Hemchandra had to remain at home for some time without any school education, but this was the time when he learnt from his mother a large mass of traditional history, with which every Assamese lady of the older generation was naturally equipped. He further initiated himself in the reading of manuscripts and committed to memory a large portion of the Amar-kosha, the two things which marked the early education of every Brahman youth



xxvi

of those days. When Hemchandra was only thirteen his mother contrived to have him sent to Nowgong to live with a relative of the family for purpose of education.

Nowgong was then the centre of the literary revival which followed the due recognition of Assamese as the language of the schools and courts. The leading figure was Rai Bahadur Gunabhiram Barua, the virtual dictator of the Assamese literature of the nineteenth century. Among the members of the circle were persons whose contributions have mainly formed the nucleus of modern Assamese literature. They were Bholanath Das the poet, Ratneswar Mahanta the antiquarian, Padmahas Goswami the free-thinker, Rudram Bardaloi, Dharmeswar Goswami, Baladeva Mahanta, Balinarayan Bara, Naranath Mahanta, Ratnadhar Barua, Chandrahas Bhuyan, Mahadananda Bhattacharyya, Mrs. Padmavati Devi Phukanani and Mrs. Bishnupriya Devi. Being thrown into the atmosphere of Nowgong an impressionable youth like Hemchandra Goswami, whose literary instincts had already been roused to some extent, could not long remain outside its domination and sway. Rai Bahadur Gunabhiram Barua was not slow in detecting the potentiality of the youth, and welcomed the latter's articles in the pages of the Assam-Bandhu of which he was the founder and the editor. Mr. Goswami wrote a number of poems in the pages of the same journal which were marked by simplicity of diction and ideas, as a reaction against the prevailing school of Assamese poetry with its outlandish half-Bengali jargon and structure, mainly popularised by the contributions of Bholanath Das.

Having passed the Entrance Examination from the Nowgong High School in 1888, Mr. Goswami joined the Presidency College at Calcutta. He read there for four years but failed to get the B.A. Degree, which was due to his engrossment in the work of the Assamese Language Improvement Society. It was a very critical juncture in the history of Assamese language and literature. Systematic attempts were made



xxvii

in certain uncritical quarters to brand Assamese as a mere Assamese youngmen who lived in patois of Bengali. Calcutta as students took up arms against this humiliation and did all that lay in their power, by carrying on a regular propaganda in the press, to restore to their mother tongue its legitimate recognition as a daughter of Sanskrit, as different from Bengali as English is from Spanish or Italian. They stinted themselves of the meagre allowance remitted from home and conducted two papers, the Bijuli and the Jonaki, to champion the cause of Assamese and to re-kindle in the minds of all Assamese-speaking people a confidence and interest in their native literature. The resultant effect of this strenuous literary campaign was the failure that attended the University career of several Assamese young men who afterwards distinguished themselves in various spheres of activity. Among them are included men like Srijut Lakshminath Bezbarua, the premier Assamese man of letters of the present day, Rai Bahadur Anandachandra Agarwala, the poet and Superintendent of Police, and Rai Shaib Padmanath Gohain-Barua, special literary pensioner.

Mr. Goswami identified himself with the successful conduction of the Jon ki and he wrote a series of articles on the history and development of Assamese language and literature. Though he failed to get a degree he cherished a great love of the Presidency College, and his face glowed with enthusiasm when he spoke of his distinguished Professors F. J. Rowe, W. T. Webb, C. H. Tawney, J. C. Bose and H. M. Percival.

Mr. Goswami's family circumstances did not allow him to remain longer in Calcutta as he had to earn bread for himself and the other members, he being married in the meantime. He served as the Head Master of the Sonaram High School at Gauhati after which he went to Shillong, the capital of Assam, to try his fortune there. He was in the Secretariat for some time where he came in contact



xxviii

with Mr. (now Sir) Edward Gait, who was then engaged in collecting materials for the purpose of compiling a. critical history of ancient and modern Assam, Lt.-Col. P. R. T. Gurdon justly remarks,-" Hem Goswami was of great assistance to Sir Eward Gait in his work of historical research in which the former's knowledge of Sanskrit and acumen for digging and delving in a previously unknown field supplied a collaborator with just the equipment that Sir Edward required." The services which Mr. Goswami rendered to Sir Edward have been well appreciated in the letter which the distinguished historian wrote to the present writer soon after Mr. Goswami's death, in which he said,-"It is over thirty years since I saw Hemchandra Goswami. He was then quite a young man, but already took much interest in Assamese history and literature. He helped me a good deal in hunting up references to ancient Kamarupa in the Puranas, Tantras, etc. He also, as you have already noted, collaborated with Col. Gurdon in editing Hemchandra Barooah's Assamese Dictionary. His death will be a great loss to his country."

Mr. Goswami was commissioned by Mr. Gait to translate into English an Assamese chronicle recovered from the family of Juvaraj Keshavkanta Singha, grandson of Chandrakanta Singha, the last reigning king of Assam. Mr. Goswami's masterly translation of the chronicle which bristled with untranslatable archaisms at once brought him to the notice of the Local Government, and he was appointed on 17th May, 1897, as Sub-Deputy Collector, though he was not a graduate. As for Sir Edward Gait he has duly acknowledged Mr. Goswami's services in his Report on the Frogress of Historical Research in Assam, published by the Assam Government in 1897.

Col. Gurdon's letter to the present writer, dated June 19th, 1928, published in the Cotton College Magazine for February, 1929.



xxix

As a Sub-Deputy Collector Mr. Goswami won the estimation of his administrative superiors. Col. Gurdon, who had an extensive experience of the administration of Assam, refers in glowing terms to Mr. Goswami's career as a Sub-Deputy Collector,—

"I rememebr how well he supervised the work of his subordinates at that time and how he met any difficulty with that determination and sangfroid which always distinguished him, for the work of a Sub-Deputy Collector Tahshildar provided no bed of roses in those days, and revenue and settlement duties were full of difficulty more specially at a time when the whole settlement system was reorganised by Sir Bampfylde Fuller. It was about this time that the first re-settlement operations on scientific principles were undertaken in the Assam Valley, when Hem Goswami was easily marked out by the authorities as just the man for settlement work under the new conditions; and I remember how highly the settlement officer, Mr. Barnes, spoke of Hem Goswami's keenness and driving power."

On May 2nd, 1905, Mr. Goswami was promoted to the Assam Executive Service and appointed Extra Assistant Commissioner or Deputy Magistrate at Gauhati. He was then transferred to Tezpur, where with his old friend Rai Sahib Padmanath Gohain-Barua he evolved many schemes for the improvement of Assamese literature. Mr. Gohain-Barua founded the Usha, a monthly Assamese periodical, which established a reputation for chaste and lucid diction, no less for the classical character of the subjects dealt with in its pages. Mr. Goswami contributed a series of articles on several ancient Assamese manuscripts, but the most momentous contribution from Mr. Goswami was his account of the battle of Saraighat, in which the Mogul hordes under Raja Ram Singha were completely defeated by the Ahom forces under the General Lacit Barphukan. The unparalleled heroism of Lacit Phukan. revealed for the first time through



XXX

the glowing narrative of Mr. Goswami was portrayed in numerous dramas and poems written subsequently. Lacit became a national hero of the Assamese people who found in him a new source of inspiration. Mr. Goswami had the gratification of seeing annual celebrations on the occasion of the hero's anniversary and the dedication of several dramas to himself for having brought home to his countrymen a new ideal and a new message. In collaboration with Mr. Gohain-Barua he compiled a note on Assamese language and literature for the use of Mr. F. W. Südmersen, who was commissioned by the Government to compile a monograph on the origin and development of the Assamese language. Mr. Goswami was mainly responsible for the award of a special literary pension to Mr. Gohain-Barua, the first distinction conferred by the Government upon an Assamese man of letters. The difficulties were many, and when Mr. Goswami broached the subject to Col. Gurdon the latter simply remarked,-"You have given me a very tall order to execute."

One of the recommendations of Mr. Südmersen was the appointment of a responsible Government officer for the collection of the Assamese Puthis lying forgotten in Assamese Mr. Goswami in an interview with the Chief families. Commissioner of Assam showed him several valuable Assamese manuscripts partially destroyed, and pointed out the necessity of taking immediate steps to collect all puthis that might be recovered. Sir Archdale Earle, who several years previous to his connexion with Assam had guided the educational destiny of Bengal as its I.C.S. Director of Public Instruction, acknowledged the urgency of the matter, and Mr. Goswami was, as a matter of course, placed on Special Duty from October, 1912 to March, 1913. He was to act under the guidance of Col. Gurdon, the Honorary Provincial Director of Ethnography. The appointment met with a chorus of approval from all quarters and Mr. Goswami put himself



xxxi

in earnestness about his new work, for which he was more naturally equipped than for sifting the complications of Civil and Criminal litigation. As a preliminary step, the Sub-Deputy Collectors of the Assam Valley Division were requested to prepare censuses of Puthis in their respective jurisdictions. Mr. Goswami visited the districts of Goalpara, Kamrup, Nowgong, Sibsagar and Lakhimpur; he also paid a visit to Cooch-Behar, where in the State Library a large number of Assamese manuscripts have been deposited since the days of Maharaja Naranarayan, who like his great contemporary Akbar, commissioned a number of Assamese scholars to translate into Assamese the Mahabharata and treatises on Mathematics and Astronomy. Mr. Goswami's visit to the Satras or Vaishnava monasteries of Assam was rewarded by the recovery of a large number of manuscripts in Assamese and Sanskrit, the most remarkable of them being the treatise on elephants, entitled Hasti-Vidyarnava compiled by a scholar of the court of King Siva Singha, 1714-44. Mr. Goswami's collection included Assamese chronicles, song books, dramas, aphorisms, books on medicine and arithmetic, commentaries. on the Bhagavata and Raghu-vamsam, a treatise on the artistic manipulation of the fingers known as Hasta-muktavali, an Ahom dictionary, besides the usual cluster of manuscripts found in old Assamese families. The deputation lasted till March, 1913. The manuscripts acquired as gifts or loans were deposited at the office of the Commissioner of the Assam Valley Division, from where they have been since removed to the premises of the Kamarupa Anusandhan Samiti. The next task which occupied Mr. Goswami was the compilation of a descriptive catalogue of the manuscripts collected, for which he was placed on special deputation in August, 1914. He had to write an account of each puthi under the following heads, -name, subject, author, date, description, opening lines, closing lines, colophon, contents, owner, place of deposit, and The compilation of this volume entailed great remarks.



xxxii

labour upon Mr. Goswami, and it will not be far from the truth that it aggravated the symptoms of his failing health; but as Col. Gurdon said,—"The descriptive catalogue of Assamese literature was the work of Hem Gosain's alone, and it is on this great achievement that his fame will probably rest and go down to posterity."

Mr. Goswami played a leading part in the establishment of the Kamarupa Anusandhan Samiti or the Assam Research Society at Gauhati in the year 1912. The growing desire of all the scholars interested in the history and antiquities of Assam to co-ordinate their individual efforts was felt for several years. Mr. Goswami in concert with Mahamahopadhyaya Padmanath Bhattacharyya and Rai Bahadur Kalicharan Sen represented to the Government the extreme desirability of extending its patronage to an institution of that type. Sir Archdale Earle again came up to meet this cultural demand of the province under his administration. Mr. Goswami was seen romping about the antiquarian sites in the neighbourhood of Gauhati in the company of his ardent fellow-workers. Many were the schemes which they took up for execution by the new-born society. A critical edition of the Yoginitantra and a collection of the diplomatic letters of the Ahom Court was undertaken by Mr. Goswami himself. He edited for the Samiti the chronicle of the Ahom Rajas recovered from Keshav Kanta Juvaraj. He was in fact the permanent President of the Samiti except at intervals when he was away from Gauhati. His interest in the advancement of the Samiti remained undiminished till the last moment of his life. His ready counsel was a source of inspiration to the vounger generation of workers. The translation of the Samiti into a full-fledged museum with a permanent staff and systemtic arrangements for collecting relics and finds from all parts of the province, was the dream of Mr. Goswami's life, and his attempt to enter the provincial



xxxiii

Legislative Council in 1926, was mainly inspired by this ambition.

The next phase in the life of Mr. Goswami was his association with Sir Asutosh Mookerjee. Being the foremost antiquarian of Assam his name was already known in literary circles in Bengal. He was one of the chief promoters of the Bangiya Anushilan Sabha of Gauhati, established with the avowed object of disseminating knowledge of the history and literature of Assam. One chief achievement of the Sabha was the popularisation in Bengal of the story of the martyred Assamese princess Jaymati. This Sabha is still existing in the shape of the Gauhati branch of the Bangiya Sahitya Parishat. Mr. Goswami read papers in Bengali on Chaitanya's visit to Assam and on the antiquities of Kamakhya. His home was the resort of all Bengali scholars who came to Gauhati on flying visits. Mr. Goswami had seen Sir Asutosh on several occasions at Bhowanipore. When the latter came to visit the Colleges of Gauhati in March, 1918, as a member of the Calcutta University Commission, he found an opportunity of further extending his scheme of publishing typical selections from Indian literatures, and selected Mr. Goswami to undertake the Assamese section of the work. The whole scheme was discussed by the Senate of the Calcutta University in August, 1918, and Mr. Goswami obtained formal appointment for the work on an honorarium of Rs. 2,000. The University subsequently sanctioned a grant of Rs. 400 for copying the selections from original manuscripts, books and periodicals. After some correspondence with Sir Asutosh Mookerjee, Mr. Goswami settled upon a definite plan of work dividing Assamese literature into six periods. He was fully occupied with this work for more than three years. This gigantic work was carried out in addition to his heavy duties as Extra Assistant Commissioner. The manuscript of the Typical Selections was handed over to the University towards the end of 1921. It was approved by the University, but difficulty arose



xxxiv

regarding the expenses of its publication. The University was passing through a financial crisis and the newly organised Vernacular Department had naturally to suffer in spite of the best endeavours of Sir Asutosh. In January, 1922, Mr. Goswami stayed as a guest at the Howrah residence of Mr. Bholanath Barua, an Assamese gentleman who had risen to wealth and eminence by extensive business concerns in India and England. Mr. Goswami persuaded Mr. Barua to come to the rescue of Sir Asutosh in the matter of publishing the Assamese selections. This possibility was pointed out to Sir Asutosh, who motored down to Mr. Barua's one fine afternoon and obtained from the merchant and philanthropist a promise to finance the publication of the Assamese selections. The next day a cheque for Rs. 10,000 reached the hands of Sir Asutosh. The printing of the book was undertaken at the Calcutta University Press, but some difficulty arose owing to the absence of types of some Assamese letters. Sir Asutosh got them cast in a leading Calcutta foundry. The printing of the book went on apace though some inconvenience arose for the distance at which the compiler lived. The printing of the first volume was postponed to the last for obvious reasons, chiefly because it had to contain the introductory matter relating to the entire compilation. Only six parts were published during the life-time of Mr. Goswami, four parts of the second volume and two parts of the third.

The Assam Sahitya Sabha was established in December, 1917, with the object of promoting the cause of Assamese language and literature, on the lines of the Bangiya Sahitya Parishat. After some change of fortune its headquarters were permanently established at Jorhat. The momentous task which the Sabha has undertaken is the compilation of an exhaustive dictionary of the Assamese language to be known as 'Chandrakanta Abhidhan,' to the memory of the late Srijut Chandrakanta Handique, B.A., son of Rai Bahadur Radhakanta Handique, the munificent patron of the compilation. Hemchandra



XXXV

who had presided over one of its annual sittings, was transferred to Jorhat in October, 1922, and he at once became the friend, philosopher and guide of the Sahitya Sabha, which was then running through a financial crisis. The cause of Assamese literature has always suffered for the absence of a wealthy leisured class; men who have to follow other vocations in life have to work in the field of literature; and every financial project has to be executed by Government support or by contribution from individual donors. Hemchandra approached His Holiness Naradeva Goswami, the Adhikar of Dakshinpat Satra and obtained from him a donation of Rs. 8,000; another Satradhikar, Srijut Radha Nath Deva Goswami of Mahara Satra made an endowment of Rs. 2,000, to be called "Kamaladevi Trust Fund," after the name of the donor's mother. The object of the latter endowment was the publication of juvenile books. Hemchandra's personality and persuasiveness were mainly responsible for the second gift as well. Mr. Goswami approached His Holiness Kamaldeva Goswami of Auniati Satra and obtained from him a promise for a donation of Rs. 5,000, but the unexpected death of that cultured and philanthropic Satradhikar Gosain could not then materialise the gift.

Mr. Goswami had in the meantime collected the old Vaishnava dramas of Assam, known as Ankiya nats and sent them to the press. He also edited the voluminous prose translation of the Bhagavat by Bhattadeva known as Katha-Bhagavat.

Incessant literary labours coupled with the sedentary work of a judicial officer had in the meantime produced symptoms of a disease which was responsible for Hemchandra's premature death. He retired from Government service in February, 1925. He proposed to utilise this long-sought leisure in undertaking more arduous tasks. He convinced Mr. H. C. Barnes, I.C.S., M.A. (Oxon.), C.I.E., Commissioner of the Assam Valley Division, of the



xxxvi

desirability of publishing old classics with English translations, representing different phases of Assamese culture. Mr. Barnes accordingly moved the Government for sanction and financial assistance which were readily obtained. The editing and the translation of the classics were entrusted to responsible scholars, under the general direction of Mr. Goswami, and the books selected were,— Hasti-vidyarnava, Kamaratna-tantra, Vaidya-kalpa-taru, Dak-bhanita, Kitabatmanjari, historical letters, Ghora-Nidan and two Assamese chronicles. But during Mr. Goswami's life-time only one book Kama-ratna-tantra could be sent to the press. The book has now been published.

Mr. Goswami's well-deserved retirement and rest were converted into a period of strenuous labour. He became the director of one or two local banks at Gauhati, and proposed the publication of a periodical from Nalbari. In November, 1926, he stood as a candidate for election to the Assam Legislative Council from the Golaghat constituency, but was defeated by his Swarajist rival.

While a student of the Presidency College, Mr. Goswami had married Srijukta Bamasundari Devi, the daughter of Kesavchandra Sarma Barua of the Rasendra-Barua family, who were hereditary physicians of the Ahom monarchs. The children of the marriage were Kiranchandra Goswami now deceased, Saratchandra Goswami, B.A., Prafullachandra Goswami, Tarunchandra Goswami and three daughters Muktabala Devi, Hiraprabha Devi and Kamalakumari Devi.

On the 13th of December, 1927, Mr. Goswami's eldest son Kiranchandra who was opening a tea-garden in the Golaghat sub-division died of pneumonia leaving a young and childless widow. Hemchandra's mother, long confined to bed, followed her grandson in February, 1928. Towards the end of April, 1928, a diabetic carbuncle appeared on the face of Hemchandra, and after two weeks of suffering he breathed his last in the morning of May 2, 1928. His



xxxvii

remains were cremated at the foot of the Kamakhya Hill, facing the vast expanse of the Brahmaputra river.

The death of Hemchandra Goswami has created a void which it is very difficult to fill. His earnestness and infinite capacity for work are best revealed in the books or articles he edited or compiled. The keynote of his life was his intense patriotism which manifested itself in an indomitable desire to dig up the past glories of Assam and place them before his countrymen as a stimulus and inspiration. His Gauhati house was the rendezvous of scholars who happened to visit Assam. We had seen there Sir Prafullachandra Roy, Mr. Kasinath Dikshit, Dr. D. R. Bhandarkar, Prof. G. Tucci and Sir Devaprasad Sarvadhikary, all listening rapturously to the antiquities and civilisation of ancient Kamarupa from the lips of the Assamese savant. The gorgeously illustrated manuscript of Hasti-vidyarnava was shown by Mr. Goswami to Dr. Rabindranath Tagore and Mahatma Gandhi. Reading, to whom this manuscript was shown by Mr Barnes, expressed great delight on seeing this marvellous specimen of Assamese painting and scholarship. Goswami's object in exhibiting these rare tokens of Assamese civilisation to distinguished visitors to Assam was to raise their estimation of his much abused and misrepresented countrymen.

Literary Works.

The literary career of Hemchandra Goswami spread over a period of forty-five years commencing from his school days at Nowgong under the irresistible association of Rai Bahadur Gunabhiram Barua. Mr. Goswami's literary performance is in the main critical and editorial, though in his earlier years he wrote verses with considerable ease and spontaneity. He was chiefly engaged in supplying the raw materials with the help of which 'constructive and scientific



xxxviii

criticism may be undertaken in future when more materials will be forthcoming. He was bewildered at the sight of the immense mine of sources and data for a history of Assam and of Assamese language and literature. Large numbers of manuscripts representing the culture and civilisation of Assam are lying untraced and forgotten in the archives of Assamese families besides numerous inscriptions and archaeological relics scattered throughout this hoary land of Kamarupa. The first task of the historical pioneer in Assam is to collect the data now readily available but which will be effaced during the course of a few decades. Hemchandra's performance has the risk of being superseded by the more critical, scientific and academic attempts of future workers; but their value will lie chiefly in the fact that they have been able to rouse and maintain a sustained interest in historical investigations in The achievement of the pioneer or spade-worker is as laudable as that of the constructive historian, the latter being impossible without the former. The pioneer is a martyr to his cause while the fortunate reconstructor reaps the fruit of his earlier path-finder's labours. While the majority of his countrymen remained deeply engrossed in worldly pursuits, Hemchandra's life was dominated by an overwhelming, if not fanatical, zeal for research. He had to create his The arduous duties of a judicial officer own facilities. could not hold him back from the performance of what, he thought, was his life's mission. He will live in the grateful remembrance of posterity, not as an efficient revenue officer or magistrate, but as an earnest and zealous Assamese worker whose patriotism was primarily directed towards the revivification of the glorious past of his motherland. The regrettable spectacle of Hemchandra poring over official files or over the contending versions of deponents,-Hemchandra who by his natural equipment and taste could perform tasks of more enduring and permanent importance-was nothing short of a national calamity.



xxxix

The first appearance of Hemchandra before the public was with an article on agriculture contributed to Rai Bahadur Gunabhiram Barua's Assam-Bandhu for February-March, 1885, of which Mr. Goswami himself wrote on the copy of his own volume,—"This was my first Assamese composition when my age was thirteen years and I was reading in the fifth class of Nowgong Government High School." In this piece the young author deplored the abandonment of agricultural pursuits by the educated middle class of Assam. The style is direct and earnest in tone. This was followed by a number of poems published in the same magazine. These poems have been incorporated in his collection of juvenile verses published in 1907 under the title Phular Chaki, literally a nosegay of flowers. The pieces do some credit to a young lad in the early teens.

Mr. Goswami's historical contributions are mainly embodied in the books he edited, and in the occasional papers he wrote to Assamese periodicals. We give below short notices of his more important works with the belief that they will afford us glimpses into certain phases of the history of Assamese literature.

Hemakosha.—Hemchandra Barua, one of the founders of modern Assamese literature died in 1896 leaving unpublished his dictionary of the Assamese language, known as Hemakosha after the name of the distinguished author. The manuscript of this voluminous compilation was handed over to Lt.-Col. P. R. T. Gurdon by the late Dulalchandra Chaudhuri. Mr. Gait, realising the importance of the work moved the Government for having it published at their expense. Sir Henry Cotton, the then Chief Commissioner of Assam, granted a sum for the purpose. During the earthquake of June 1897, the buildings of the Government Press at Shillong were completely destroyed, and Mr. Gait had to rescue the manuscript of Hemakosha from below a heap of debris. Col. Gurdon and Mr. Goswami jointly undertook the editorial responsibility.



The coadjutors were engaged in this work for many months in addition to their ordinary official duties. "This important work," writes Col. Gurdon, "occupied us for many months and gave us plenty to do, the revision and editing being undertaken by both of us in addition to our ordinary duties. While engaged, Hem Gosain and I were naturally much thrown together, and many were the talks we had over the antiquity and beauty of the Assamese language and Assam historical research." Hemchandra was entrusted with the editing of the vernacular portion of the work, and the fact that Hemakosha has served as the only authority for the spelling and meaning of Assamese words during the space of nearly thirty years since its publication in 1900 pays a glowing tribute to the careful compilation and editing respectively of the earlier and the later Hemchandra.

Darrang-raj-vamsawali. - This is a metrical chronicle of the descendants of Biswa Singha, the founder of the Koch dynasty, who established themselves as rulers in Cooch-Behar, Bijni, Darrang and Beltola. The book was composed by Suryyakhari Daibajna during the latter part of the eighteenth century under the patronage of Samudranarayan, Raja of Darrang. The original manuscript embellished with copious illustrations was examined by Mr. Gait who wrote an account in the Journal of the Asiatic Society of Bengal for 1893. Mr. Goswami recovered the book in 1912 from Kumar Khagendranarayan of the now faineant Darrang Raj family. The book was edited by Mr. Goswami and published by the Assam Government in 1917. The language of the book is refined and artistic, and the handling of the materials systematic and picturesque. Apart from the general history of the Koch rulers down to Balinarayan, alias Dharmanarayan, brother of Parikshit, grandson of Cilarai, the interest of the book centers round the vigorous description of the victorious expeditions of Sukladhwaja or Cilarai, and the construction of the Kamakhya temple at Gauhati by an architect named



xli

Megha Mukdum under the orders of King Naranarayan patron of of Cooch-Behar. The King was a reputed scholars, poets and saints; and his commissioning of the erudite pandits of the land to translate Sanskrit masterpieces into Assamese for "the edification of Sudras and females and of Brahmans at a later age" has its counterpart in a similar attempt made by his great contemporary Akbar. King Naranarayan summoned all the scholars of Gauda and Kamarupa and commanded them to compile new treatises or translate specific classics. Purushottam Vidyavagis was entrusted with the compilation of a grammar entitled Ratnamala-vyakaran; Rama Saraswati was to translate the entire Mahabharata, the Ramayana and the eighteen Puranas; Sankar Deva was asked to translate the twelve cantos of the Bhagavata; Sridhara compiled a popular treatise on astronomy; and Bakul Kayastha was to render Lilavati into Assamese. The description of the above attempt of the King for the cultural regeneration of his countrymen is not an artistic device to bring in all the poets and scholars of Naranarayan's time together in one canvas. It is a historical fact and has been corroborated by the independent testimony of the writers themselves who have all acknowledged their gratitude to the royal patron in the colophons of their respective works. This measure of King Naranarayan places him on the same line with Alfred, Akbar and Sir Asutosh Mookerjee. The Darrang-raj-vamsawali has been an invaluable source-book for all studies connected with the early history of the Koch rulers.

Ratha-Gita.—This is a prose rendering of the Gita by Baikunthanath Kaviratna Bhagavata-Bhattacharyya commonly known as Bhattadeva, a contemporary of Sankar Deva and a learned exponent of the Vaisnava cult. His descendants are still holding charge of two notable monasteries of Kamrup, Patbausi Satra and Biahkuchi Satra. Bhattadeva was also the author of the Assamese prose translation of the



xlii

Bhagavata, known as Katha-Bhagavata, the word Katha being prefixed to titles of books written in prose as distinguished from verse. Katha-Gita is a monument of religious Assamese prose which has a conventional Sanskritic ring and a marked affinity to the artificial diction of old Assamese poetry. The style though not racy has a majestic simplicity of its own. At the end of every chapter the author has inserted a brief peroration pointing to the glory of Srikrishna and urging all men and women to attain salvation through the adoration of Srikrishna. Mr. Goswami published this book with his introduction in 1918. Sir Prafullachandra Roy, who presided over the Tezpur session of the Assam Students' Conference, marvelled at the antiquity of Assamese prose literature and recorded his impressions in a language worthy of the scientist and patriot,-"Indeed the prose Gita of Bhattadeva composed in the sixteenth century is unique of its kind. I had an opportunity of coming across an excellent edition of this book which we owe to the patriotism and scholarship of Pandit Hemchandra Goswami It is a priceless treasure. Assamese prose literature developed to a stage in the far distant sixteenth century which no other literature of the world reached except the writings of Hooker and Latimer in England. There has been a controversy for long about the independence and identity of the Assamese language. This is extremely foolish. This is due, I hold, to the provincial patriotism and the national conceit of the Bengalees living in Assam. The Katha-Gita shows clearly that the Assamese literature developed to a standard in the sixteenth century which the Bengalee literature had reached only in the time of Iswar Chandra and Bankim Chandra. In fact, if some Assamese scholars now get up and say that it is the Bengalee who has borrowed his prose from Assamese literature and enriched his own, it will be very difficult to dislodge him. I think the question may now be considered as solved and settled for good. I say this not as a representa-



xliii

tive Bengalee but as the ex-president of the Bengal Literary Conference."

Sir Asutosh Mukerjee's opinion was equally gratifying,—
"The people who could write Gita in such prose in the
sixteenth century was not a small people."

Purani Asam Buranji.—In 1922 was published Purani Asam Buranji under the auspices of the Kamarupa Anusandhan Samiti. Mr. Goswami supplied the introduction and the editorial paraphernalia. The manuscript of the chronicle was recovered from the family of Yuvaraj Keshav Kanta Singha, grandson of Chandra Kanta Singha, the last reigning King of Assam. This particular volume dealing with the history of the Ahoms from King Sukapha to King Gadadhar, A.D. 1228-1696 is one of the many Buranjis which are a distinctive feature of Assamese literature.

The editor points to some of the characteristic aspects of Assamese Buranjis. He refers to the regrettable loss of an Assamese chronicle of Bardhaman which he proposed to publish and which was exhibited in the Gauripur session of the Uttar Banga Sahitya Sammilan. It may be mentioned that Purani Asam Buranji published by the Kamarupa Anusandhan Samiti, is the first Assamese Buranji or chronicle to see the light of day.

Typical Selections from Assamese Literature.—This voluminous compilation was undertaken at the instance of the late Sir Asutosh Mookerjee in execution of his extensive scheme for promotion of the study of the Indian Vernaculars in the Calcutta University. The work was commenced in 1918 soon after Sir Asutosh's visit to Gauhati as a member of the Sadler Commission. The whole range of Assamese literature has been divided, for the purpose of this compilation, into six distinctive periods, viz., the lyrical period or Giti-yuga, the period of mantras and aphorisms or Mantra-aru-bhanita-yuga, the pre-Vaisnavite period or Prak-Vaisnava-yuga, the period of extension or Vistar-yuga, and the modern age or the



xliv

Vartaman-yuga. The original plan adopted in consultation with Sir Asutosh included the insertion of a historical introduction, a glossary of archaic terms and short notices of the authors selected; but the death of the editor when only the second and the third volumes had been published and the first volume was in the press made the insertion of the proposed editorial matter an impossible task. As a pioneer work undertaken by a man of Mr. Goswami's limited leisure, it does credit to the editor and will serve as the necessary basis for the comparative study of the history of Assamese language and literature, though a future work of the same type may benefit by the unavoidable deficiencies of Mr. Goswami's performance. It may be mentioned that Mr. Goswami's own contributions have been inserted in the third volume of the "Typical Selections," Part 2, pages 527 to 564. The original plan was to bring down the selections to the date of compilation, but it was modified with a view to include writers up to the end of the nineteenth century.

Kama-ratna-tantra.—The publication of this book was undertaken in execution of the Assam Government scheme to translate representative Assamese classics into English. Assam, the reputed home of the Tantras, has a large assortment of manuscript specimens of old Tantric literature, and Hemchandra could not do better than select this Kama-ratnatantra, the prescriptions of which are still adopted by some sections of the Assamese on purposes laid down. According to the editor, 'the book describes how by incantations and other methods a man as well as a woman can be subdued, attracted, made hostile, paralysed, killed, freed from evils, excited and so on. It gives the methods to be adopted for the performance of the above facts in the forms of medicines, mantras and jantras." The Tantra prescribes the remedies necessary, among others, for the following objects,-subduing of wives, subduing of husbands, preven-



xlv

tion of sleep, causing quarrels, protection of crops, success of one's speech, besides other objects verging on the side of obscenity, which made the editor write,—"To an ordinary eye the book will appear full of indecencies but in the light of science everything will appear instructive and illuminating." Mr. Goswami used to repeat the story how Mr. Barnes at once welcomed the idea of printing the book saying,—"This book must be published," when Mr. Goswami pointed out to him the recipes for taming refractory wives and shrews. It is not surprising that Assam where the magical potents prescribed in this Tantra were practised, should be known to the rest of India as a land of witchcraft and black arts.

In accordance with the general plan of this series, the English translation is inserted on the page facing the corresponding Assamese text, thereby rendering the book highly helpful to foreign scholars who want to master the peculiarities of the Assamese language as employed in technical purposes.

The manuscript of Kama-ratna-tantra was recovered from the Na-Gosain family of North Gauhati, who were gurus of the Assam Rajas. Mr. Goswami supplied the preface and the foreword which are dated April 17, 1926. The book has been printed at the Assam Secretariat Press, and published posthumously in May, 1929.

A Descriptive Catalogue of Assamese Puthis.—This book contains a descriptive account of the puthis collected by Mr. Goswami during his deputation in 1912-13; and it is being published from the Calcutta University Press at the expense of the Assam Government. The first part, pages 1 to 184, deals with Assamese manuscripts, and the second, pages 187 to 256, with Sanskrit puthis. This catalogue was compiled during a short period of deputation commencing from August 1914. Every manuscript is described under the following heads,—name, subject, author, date, description,



xlvi

the opening lines, the closing lines, colophon, contents, owner, place of deposit and remarks. The compilation of the details under the above heads was a work of unceasing labour, and the words of Lt.-Col. P. R. T. Gurdon who was associated with the collection of the manuscripts and the preparation of the catalogue may be quoted,-" The descriptive catalogue of Assamese literature which is, I believe, still in the press, was the work of Hem Gosain's alone, and it is on this great achievement that his fame will probably rest and go down to posterity." Though Mr. Goswami did not live long enough to write a constructive history of Assamese literature, the mass of valuable information supplied in this catalogue will serve as the foundation for all such endeavours in future. The book records the result of Mr. Goswami's life-long acquaintance with old Assamese literature. It also affords scattered glimpses into the political history of Assam which had always a close relationship with the progress and development of its language and literature.

Ankiya Bara-nat.-The antiquity of Assamese dramas as well as its historical literature is a feature conspicuous by its absence in Bengal. The early Vaisnava poets in imitation of their Maithili forerunners and compatriots adopted numerous devices for the popularisation of their creed. Sankar Deva translated Bhagavata and other classics glorifying Srikrishna, while his chief apostle Madhava Deva busied himself in interpreting and expounding the cardinal principles of his master's creed. Sankar Deva introduced the custom of singing religious hymns to the accompaniment of musical instruments and of reading aloud to a devoted audience portions of religious and semi-religious classics. One of his most momentous innovations was the propagation of his faith by the spectacular appeal of dramatic performances, an idea which he might have seized during his extensive travels in Behar and Orissa, having seen the enactment of



xlvii

Vidyapati's dramas, the Assamese poet being much junior in age to his Maithili contemporary. Thus in Assam as in Europe motives of religion led to the birth of the drama. Sankar Deva was himself a master of music and of the histrionic art, and like the great Shakespeare, took part in the acting of his own dramas.

The volume Ankiya Bara-nat is a collection of twelve dramas written by Sankar Deva and Madhava Deva, viz., Kalia-daman, Patniprasad, Rasa-krida, Rukmini-haran, Sriram-vijay, Parijat-haran, Arjun-bhanjan, Chordhara Jhumura, Bhumi-lutiwa, Pimpara-guchua, Bhojan-vyavahara and Sri-krishna-janma. The language of these dramas presents a curious mixture of Maithili and Assamese. Songs are closely interspersed, and the original Sanskrit texts on which a particular scene is based are inserted in apposite places with simple renderings in Maithili-Assamese. The Sutradhar introduces the main theme of the drama, as well as the scenes and characters as they come along. The illusion is maintained by the preponderance of music, the archaic ring of the diction and the sacred character of the subjects treated.

The popularity of the Vaisnava dramas has continued till this day. They are popularly known as Bhawanas and are acted in the nam-ghars or houses of public gathering attached to every Assamese Hindu village. The anniversaries of the saints and the major tithis of the year are occasions when these plays are enacted in the public halls without the aid of a stage or scenes. They are also performed on secular occasions which necessitate a large congregation of individuals, such as marriages and sraddhas, in temporary sheds erected for the purpose close to the residences of the families who perform the ceremonies. The Ahom monarchs honoured distinguished visitors to their courts by inviting them to the performance of Bhawanas arranged for that sole purpose. A stranger paying even a flying visit to any Assamese village will hear the music of drums indicating that rehearsals are



xlviii

going on for some dramatic entertainment. It has been customary with the Vaisnava Satradhikars of the Assamese monasteries to give tokens of their learning and religious zeal by first composing a drama before they are formally ordained as pontiffs.

Mr. Goswami sent his collection of dramas several years before his death, but they have not seen the light of day as yet on account of the delinquency of the Calcutta press of which every Assamese publisher of books is an invariable victim.

Katha-Bhagavata.-Mr. Goswami sent this second work of Bhattadeva to the press several years ago, but the voluminous character of the book will necessarily take many more years before it sees the light of day. Sankar Deva translated the Bhagavata into Assamese verse jointly with Ananta Kandali, while Bhattadeva rendered the same into simple and majestic Assamese prose thus laying the foundation of the Bhagavati Dharma, another name of the Vaisnava creed as it obtained in Assam through its principal sponsors. The diction of the Katha-Bhagavata is no doubt artificial and far removed from the actual language spoken by the people. has great affinity to the artistic diction of Assamese Vaisnava poetry which is familiar to every Assamese Hindu, the reading aloud of Vaisnava classics to a devoted audience being universal in Assam. Even the uninitiated and illiterate Assamese peasant can follow the stories of the Katha-Bhagavata and draw morals from them. The Bhagavata had thus a great influence in humanising the Assamese people and educating them in the cardinal principles of religion and morality as propounded through the life and teachings of Srikrishna. Katha-Bhagavata when published will be of interest to all scholars of Eastern India on account of its linguistic catholicity, inasmuch as it can be followed by any man of Orissa and Behar, not to speak of Bengal and Assam.



xlix

Publications in Periodicals.—Among the most important of the contributions of Hemchandra to the vernacular periodicals mention may be made of the following:—

- 1. Presidential speech delivered at the fourth session of the Assam Literary Conference, published in *Chetana*, Volume II, No. 5, pp. 231 spp. The author describes the inter-relationship between literature and national advancement, and the wealth and variety of ancient Assamese literature, with suggestions for the recovery and publication of ancient Assamese classics.
- Presidential speech delivered at the seventh session of the Assam Students' Conference, published in Milan, Volume I, No. 1, pp. 9-27. The address dealt with the educational ideals of the East and the West, and the pursuit of literature by students.
- 3. Essays on old Assamese manuscripts, published mainly in the first and second volumes of Usha. The books described were, - Santa-akhyan or the story of the saints, by Viswanath. detailing the various sects of Vaisnavism, their founders, and the principal Satras or monasteries representative of the sects: Chaitanya-patal in Assamese prose by Srikrishna Bharati, describing the excellence of Chaitanya's creed, and the reformer's alleged visit to Kamarupa; Govinda-charit by Bhavananda Misra, a metrical biography of Govinda Thakur, a disciple of Madhava Deva, and a propagator of the Vaisnava creed in Darrang; Chandi written by Ruchinath Kandali during the reign of Rudra Singha, A.D. 1696-1714; Siat Gosair Puthi, written by Kaviraj Daibajna during the reign of Madranarayan, Raja of Darrang, describing the life of Dharmadeva whose son was brought up in the den of a jackal in the first year of his infancy. Two more papers were contributed to the third volume of the Usha, one on Kavyasastra, an Assamese translation of the Hitopadesa, and the other on Santa-muktavali dealing with the lives of several Vaisnava Mr. Goswami also wrote . two more illuminating





papers on Madhava Kandali, in *Chetana*, Volume IV, and the other on Hema Saraswati, in *Milan*, Volume II, the two poets being predecessors of Sankar Deva, who acknowledged his obligations to the first in lines which have been immortal like Dunbar's tribute to Chaucer and Shakespeare's more famous one to Marlowe.

- 4. A short history of Assamese language and literature was compiled by Mr. Goswami when he was a student of the undergraduate classes of the Presidency College. This was read at the second anninversary of the Assamese Language Improvement Society, Calcutta, held under the presidency of Rai Bahadur Gunabhiram Barua, and published as a serial in the Jonaki, Vol. III. The author pointed out the three distinctive stages in the history of Assamese literature, which have been elaborated for the purpose of the "Typical Selections" into six periods. According to the earlier division the first period ranged from the earliest times to Sankar Deva; the second from Sankar Deva to the British occupation of Assam; and the third is the modern period characterised by the influence of the western contact. The author describes the salient features of each age and concludes with an appreciation of the two leading litterateurs of the day, Rai Bahadur Gunabhiram Barua and Hemchandra Barua. This portion has been incorporated in Asamiya Sahityar Chaneki, Volume III, part 2, pages 527-542. This series of articles represented the first systematic attempt to trace historically the growth of Assamese language and literature, and gave early promises that its author was a competent person to undertake investigations on the subject, and they have been justified by the subsequent achievements of Mr. Goswami.
- 5. Another valuable contribution of Mr. Goswami was the publication of the texts of some old Assamese copper-plate and rock inscriptions with historical prefaces. The bulk of these articles was contributed to the seventh and eighth volumes of Alochani, and included the texts of the inscrip-



or Durbar Hall, the Barphukan's Victory Pillar, Sukreswar Temple, Samdhara Fort, Siddheswar Temple, Rudreswar Temple, Phatasil Duar or the western entrance of Gauhati, Kanai-barasi-boa Rock, Durga Temple, Janardan-Phalgutsav Temple. In 1925 Mr. Goswami recovered a second copperplate of King Indrapala from a villager in Kamrup, the first one being published in the Journal of the Asiatic Society of Bengal by Dr. Hoernle in 1897. It is now in the worthy hands of Mr. K. N. Dikshit who is engaged in its decipherment.

- 6. Another contribution of great importance was the publication of the texts of some historical epistles exchanged between the Ahom court and the courts of Cachar and Jaintia. They were published as a serial in the seventh and eighth volumes of Banhi. They embody specimens of the diplomatic diction and court language of the time, whereas the letters addressed by the Cachari and Jaintia Rajas have an additional importance as they are written in Bengali prose, though somewhat quaint and adulterated. Before his death Mr. Goswami was engaged in the translation of the historical letters in execution of the scheme inaugurated by Mr. Barnes and himself.
- 7. Besides the above Mr. Goswami also contributed a number of historical articles to periodicals. He wrote on Chaitanya in Assam and on the construction of the Kamakhya temple in the twenty-second volume of the Bangiya Sahitya Parisat Patrika. His description of the battle of Saraighat where the Assamese troops under Lacit Phukan routed the Mogul army under Aurangzeb's general Ram Singha, Raja of Amber, was published in the first volume of the Usha. It was an epoch-making contribution reminding the Assamese of the heroism and chivalry of which their ancestors were capable. Mr. Goswami also translated into Assamese Mr. (afterwards Sir) Bampfylde Fuller's Land-Revenue Policy of the Govern-



ment of India, and it was published by the Assam Government. He translated with Col. Gurdon the story of the Prodigal Sonin standard Assamese for Dr. Grierson's Linguistic Survey of India. Mr. Goswami also wrote an introduction to the first edition of the present writer's Life of Anundoram Borooah, published in 1920. He gave there a short account of the biographical literature of ancient Assam, and referred particularly to the biography of a female saint named Ai-Lakshmi.

Conclusion .- Thus lived and worked Hemchandra Goswami, affable and inspiring in personality, versatile and catholic in scholarship, undaunted and unflinching in the service of his country's history and literature, an ardent patriot, a true Indian and a truer Assamese. Diverse are the ways of serving one's motherland; and Hemchandra's mission was to make his countrymen realise their past greatness specially in its cultural aspects; and this he regarded as the stepping stone to the revival of his country's consciousness and all endeavours for its regeneration. Inspired by this noble ideal Hemchandra worked unceasingly for its realisation, devoted all his leisure which his heavy official duties could permit, sacrificed his health and comfort, worked when others slept, and died before his time and before his life's goal was finally reached. But he wakened his countrymen to a phase of patriotism which posterity will not let willingly die. He has sown the seeds of possibility which in time will yield a rich harvest to the delight and amazement of all beholders. When Assam will be culturally discovered by Bengal and the rest of India, Hemchandra's contributions will serve as guide-posts suggesting lines of research and investigation. To repeat the words of Lt.-Col. P. R. T. Gurdon, "truly a great and good man has passed away and one whose place it will be extremely difficult to fill."

GAUHATI, ASSAM.
- 3-9-1929.

SURYYAKUMAR BHUYAN



A NOTE ON

ASSAMESE LANGUAGE AND LITERATURE.

BY SRIJUTS HEMCHANDRA GOSWAMI AND PADMANATH GOHAIN-BABUA.

[The following concise and succinct note on Assamese language and literature was compiled by Srijuts Hemchandra Goswami and Rai Sahib Padmanath Gohain-Barua, and was submitted in 1907 to Mr. F. W. Südmersen, B.A. (London), Principal Cotton College, Gauhati, and sometime Fellow of the Calcutta University, who was then engaged in writing a short monograph on the Assamese language for the Government of Assam. The covering letter over the signatures of the two collaborators, dated Tezpur, July 8, 1907, ran as follows,—"We beg to forward herewith a note on the Assamese language and literature as requested in your letter of the 8th May, 1907. In the preparation of this note a number of authorities had to be consulted which will explain the delay." Mr. Südmersen, before he left Gauhati for good in December, 1926, handed over to me the typewritten manuscript of the original note with Mr. Goswami's corrections and additions, saying it would be of use to me in future.

Mr. Südmersen's book was published by the Assam Government in 1908 under the title Notes on the Assamese Language. Though small in bulk it helped in dispelling many of the erroneous notions relating to the identity and status of the Assamese language, and practically set at rest the controversy which had long tended to undermine the very existence of that sweet and dignified speech. Mr. Südmersen's opinions and suggestions couched in his characteristically terse and vigorous style drew the attention of the powers that be, and were partly responsible for the inclusion of Assamese in the list of the Indian Vernaculars up to the B.A. stage of the Calcutta University.

The two writers of this note are men of outstanding position in the domain of modern Assamese literature. Mr. Gohain-Barua is the author of a large number of Assamese historical dramas as well as of vernacular text-books, and is the first Assamese man of letters to receive a special literary pension from the Government. Though the present note of Messrs, Goswami and Gohain-Barua was written long before the former's



liv

decease, before he had access to the Assamese manuscripts he collected during his deputation in 1912-13, and before he studied them minutely and systematically for compiling his Typical Selections from Assamese Literature and his Descriptive Catalogue of Assamese Manuscripts, it has an intrinsic value of its own, as it embodies the trained and careful opinions of two very responsible and eminent Assamese litterateurs whose names are bound to go down to posterity, and because, in the absence of the constructive and critical history of Assamese language and literature from the mature pen of Mr. Goswami which was to adorn the first volume of his Typical Selections, this note affords the nearest available approach to what he would have written. We have here opinions which he might subsequently modify or retain. But the broad and general outline which he adopted in this note was virtually followed by him in the divisions of the periods for the Typical Selections. Having regard to the length of time that intervened the compilation of this note and the death of Mr. Goswami, it is, however, evidently necessary that his opinions and statements in certain places should be treated with due caution and discrimination before they are accepted or declared as his last word .-S. K. Bhuyan.

ON ASSAMESE LANGUAGE AND LITERATURE.

1. THE EARLIEST BEGINNING OF THE LANGUAGE.

The Assamese language, which belongs to the Eastern Group of the Indo-Aryan vernaculars, is a direct descendant of the Sanskrit language, which was the speech of the first Aryan settlers of the Brahmaputra Valley. Rev. Mr. Brown, an eminent scholar and the first grammarian of the Assamese language, has ascertained after a careful examination of the language, that no less than 63 per cent. of its words are derived from Sanskrit. No doubt its vocabulary has an

Rev. Nathan Brown who founded a branch of the American Baptist Mission in Assam in 1836 was a great authority on Indo-Chinese languages as well as Assamese, as evidenced by his numerous contributions to the J.A.S.B. In his biography written by Mrs. Brown we read,—"Mr. Brown admired the Assamese language; its open agreeable vocalisation, its picturesque Sanskritic characters, its quaint inflections and idioms, became almost native to him. Above all he delighted in its marked family likeness to the European tongues. He vindicated its independence of Bengali, and maintained its legitimate descent from the ancient Sanskrit."—S. K. B.



infusion of Non-Aryan words picked up from the neighbouring hill tribes; but that has in no way affected the structure of the language, which has remained always Aryan. To ascertain the beginning of the language, therefore, we must go back to the time when the first Aryan settlement took place in the country. The ancient history of Assam has yet to be written, and what goes by the name of its history helps us but little in fixing the date of the earliest Hindu colonisation with any degree of certainty. But from the mention of the Kingdom of Pragjyotisha in the great epics of India, and in several Puranas of great antiquity, it can fairly be presumed, that this valley was long known to the great Hindu race, and so its fertile soil and the inferiority of its original inhabitants and their want of religion could not have failed to attract the early attention of the adventurous Hindu warriors and priests, as affording the best field for their action. In fact, some copper-plates are still extant recounting a long line of kings, who ruled over Kamarupa, descending from Bhagadatta, the contemporary of the great Yudhisthira.

The first authentic account of ancient Kamarupa has been left by Hiuen-Tsiang, the Chinese traveller, who visited the country in 640 A.D. He found abundant Deva temples; the people adoring and sacrificing to the Devas, and having no faith in Buddha; he found the manner of the people simple and honest, their nature very impetuous and wild, and their memories retentive. Then, the reigning King was Kumar Bhaskaravarman, and from the time that his family seized the land and assumed the government, there elapsed a thousand generations, so the Buddhist pilgrim says. Men of high talent from distant regions seeking after office visited his dominions. The language of the people differed a little from that of Mid-India. This account

Dr. Suniti Kumar Chatterji is of opinion that this "differing a little" as noticed by the observant pilgrim may have reference to the modifications of Aryan sounds first



lvi

corroborates the fact that the country enjoyed the influence of Hinduism from long before the visit of Hiuen-Tsiang. . Mr. Gait has stated in his History of Assam,-" The Indian King Samuda who according to Forlong was ruling in Upper Burma in 105 A.D., must have proceeded thither through Assam, and so must the Hindus who led the Tohampas or Shams in their conquest of the mouths of the Mekong in 280 A.D." From this Mr. Gait infers that "it is, therefore, by no means improbable that other adventurers found their way at a still earlier period to Northern Bengal and Assam." All these things point to a very early settlement of Hindus in Assam. Mr. R. C. Dutt, in his Ancient India, has collected evidences to prove that Hindu settlement extended over Bengal and Orissa sometime between 500 and 200 B.C. It is probable that the Hindus came to Assam before that time, as the fertile highlands of Assam must have had greater attractions for them than the swampy plains of Bengal. The Hindus of Assam claim to have come here from Mid-India and not from Bengal. Their language also corroborates this view. Dr. Nicholl, on page 72 of his Assamese Grammar has correctly observed that "Assamese is not, as many suppose, a corrupt dialect of Bengali, but a distinct and a co-ordinate tongue, having with Bengali a common source of current vocabulary. Its Sanskrit did not come to it from Bengal, but from the Upper Provinces of India-this, all who carefully examine the matter will readily admit."

The Chinese pilgrim discovered little difference between the language of the people of Kamarupa and that of Mid-India. In many matters social and religious, the Hindus of Assam resembled more the people of Northern India than

brought about in the Magadhi Prakrit or Apabhramsa dialect current in Kamarupa with its predominantly Tibbeto-Burman population wherefrom the modified pronunciations might have spread to the contiguous tracts of Bengal, where, however, they do not seem to have become regularly established in the way they have done in Assamese. Vide Dr. Chatterji's "Origin and Development of the Bengali Language," Vol. I, p. 79.—S. K. B.



lvii

the people of Bengal. The Assamese Hindus recognise the authority of the Benares school of Pandits, whereas the Bengal Hindus submit to the authority of the Nadiya school. Mitakshara was the law which regulated the division of property in Assam, whereas the Dayabhaga was the law of Bengal.

The court language of the Hindu kings of Kamarupa was always Sanskrit, and all the businesses of the state used to be transacted in that language. The written language of the people also remained Sanskrit for a very long time; they, however, being cut off from their parent stock and having been confined in a valley their speech gradually changed forms, till at last it was stereotyped into a separate tongue. This, of course, did not happen in a day or at a particular moment, but the process of change went on and on till at length it gave birth to the Assamese language.

2. Its Earliest Literature, Puthis, Names of Chief Authors.

The Assamese language, though it existed from a very long time as a separate form of speech, had no written literature till a comparatively recent time. The earliest puthi in the language is supposed to be the aphorisms of Dak, a native of Lehi-dangara village in Barpeta. The date of Dak's writings has not yet been fixed, but the peculiarity of his language leaves little doubt that it belonged to a time much prior to that of Sankar Deva, the father of Assamese literature. Dak's aphorisms are more widely diffused and much more popular with the Assamese people than even the writings of Sankar Deva. After Dak's writings come some of the Buranji puthis. In the beginning of the thirteenth century, the government of the country passed into the hands of the Ahom kings who introduced a system of recording the principal events of their reign. At first this



lviii

was no doubt done in the Ahom language, but soon after their language was replaced by the Assamese, and the Buranjis began to be written in that language. Although these Buranjis have greatly enriched Assamese literature and constituted the chief glory of our language, it is a matter of great regret that they do not contain the names of their authors and the dates on which they were written.1 As far as we are aware these writings have not yet been examined by any expert with a view to ascertain their dates on the paleographic grounds. But it must be admitted that the regular literature of Assam begins from the time of Sankar Deva who flourished in the fifteenth and sixteenth centuries. It is true that a few writers of note like Madhava Kandali and Mahendra Kandali appeared in the field before Sankar Deva, and translated the whole of the Sanskrit Ramayana into metrical Assamese, and that Sankar Deva has acknowledged himself to have written into Assamese in imitation of Madhava Kandali and others; 2 but it must be admitted that it was Sankar Deva who gave the greatest impetus to the cause of Assamese literature by his voluminous and varied writings. His contemporaries, Madhava Deva and Rama Saraswati, also contributed very largely for the improvement of Assamese literature by their numerous writings. A list of the chief Assamese authors with their works was published by the Society for the Improvement of the Assa-

It is not always true. Several Buranjis contain the names of their authors and the dates of their compilation, or the names of sovereigns under whose patronage they were written. The general tendency was, however, towards anonymity, as chronicles had to narrate deeds which did not always bring credit to their perpetrators, in which case the writers ran the risk of retribution in the hands of the parties aggrieved. Vide Prof. S. K. Bhuyan's New Lights on Mogul India from Assamese Sources, pub. in the Islamic Culture for Oct., 1928, pp. 544-546.—S. K. B.



lix

mese Language, a copy of which we beg to submit with this note. The list will show that "Assamese literature is as old, if not older, than that of Bengali, and down to the commencement of the present century was as copious," as observed by Dr. Grierson, the greatest living authority on the languages of India.

3. THE CHIEF PERIODS OF ASSAMESE LITERATURE.

Assamese literature may be divided into three chief periods:—

- (1) From the earliest time to the birth of Sankar Deva.
- (2) From the birth of Sankar Deva to the British occupation of the country.
 - (3) From the British occupation to the present time.1

First period.—The first period which extends from the earliest beginning to the birth of Sankar Deva may be called the dark age of Assamese literature. In the first part of this period the language existed only as a form of speech. The marriage songs of Assam and a few pastoral ballads are the only literary productions that have come down to the present age. Some of the marriage songs are supposed to be as old as the rape of Rukmini, the daughter of Bhismaka who ruled over Sadiya as a contemporary of Narak and Bana, and they have kept green the memory of that pre-historic event of Assam. The aphorisms of Dak, some Buranjis and the writings of Madhava Kandali and a few other poets belong to the latter part of this period. The Buranjis have preserved the prose style of that age, whereas the writings of Madhava Kandali and others represent the poetry of the

The three chief periods mentioned here have been expanded into six in the Typical Selections. The first period of this note has been further sub-divided into three periods, the lyrical period, the mantra period, and the prak-Vaisnava period; the second into two periods, the Vaisnava and the expansion, periods, while the last period has remained the same.—S. K. B.



age; their style was improved upon by the writers of the next period.

Second period.—This was the most prosperous period of Assamese literature. Under the patronage of the native rulers, a host of writers appeared in this period and wrote numerous books in Assamese language enriching various departments of its literature. Almost all the eminent authors in the Assamese language belong to this period, amongst whom the names of Sankar Deva, Madhava Deva, Chandra Bharati, Ananta Kandali alias Rama Saraswati, and Govinda Misra stand forth in bold relief. The literature of this period is religious, poetical, and mostly consist of translations from Sanskrit.

Third period.—The third period is the modern age of the Assamese language which was inaugurated by the members of the American Baptist Mission in Sibsagar. They began by publishing in homely Assamese many Christian tracts and the translation of the whole of the Bible. But their illustrated monthly magazine Arunodai, which was the first journal in our language, imported a new life to the language by creating a taste for reading amongst the people and by introducing the conversational prose style in writing. It is in one sense the most remarkable period of the Assamese language, since, during this period, for some time, the fate of the Assamese language was trembling in the balance. The right of the Assamese language to be ranked as a separate language was seriously questioned by some interested persons, and the Government of Sir George Campbell instituted an enquiry into the matter (in the 'seventies of the last century). Some patriotic Assamese like the late Mr. Anandaram

¹ The consensus of modern opinion is for making Ananta Kandali and Rama Saraswati two separate poets. Mr. Goswami seems to have shared this opinion later in life as we can easily infer from his account of Rama Saraswati in his Descriptive Catalogue of Assameze Manuscripts, pp. 13-14. In the Typical Selections, they have been treated as two different poets.—S. K. B.



lxi

Dhekial Phukan and the Christian Missionaries of Sibsagar upheld the cause of the Assamese language, and the verdict of the Government was given in favour of Assamese and it was recognised in the courts and the schools of Assam.

All the periods have been discussed and described at length by Srijut Hemchandra Goswami in his essay entitled "The Assamese Language" published in the third volume of Jonaki, an Assamese monthly journal now defunct.

4. Its Direct Descent from Sanskrit. Its similarity with Hindi.

Competent critics are of opinion that 63 per cent of words of the Assamese language are of Sanskrit origin. Some of these words have no doubt come directly from Sanskrit but others have come through the medium of Prakrita and Brajabuli and more specially the latter. The eminent writers of the second period were all expounders of Vaisnavism and as such they wrote chiefly on the sacred theme of Radha and Krishna, and very naturally they took delight in introducing as many words from the Brajabuli, as they could, in their compositions, on the belief, that Brajabuli being the language of Radha and Krishna, was most suited to express anything relating to Radha and Krishna. This, on one hand, increased the stock of words in the Assamese language, and on the other, made the resemblance between Hindi and Assamese closer and more pronounced. The nasal twang so common in both these languages and a large number of common words of everyday use cannot fail to impress even a casual observer with a strong resemblance between the Assamese and Hindi. Dr. Brown has very ably supported this view in the introduction of his Assamese Grammar.



lxii

5. DISTINCTION BETWEEN BENGALI AND ASSAMESE.

This question was very ably discussed by capable judges and they all came to the conclusion that both these languages Assamese and Bengali, are as distinct from each other as two co-ordinate languages belonging to the same stock can be.1 Comparative philology has taught us that the mutual intelligibility is the true test for judging the similarity of two languages. If an Assamese peasant from an interior village is allowed to exchange thoughts with a Bengal peasant of similar description both unaided by any gestures or signs, they will scarcely be able to make one understand the other. The Assamese language widely differs from Bengali in its inflections, idioms, phrases and proverbs. Mr. J. D. Anderson of the Indian Civil Service had truly observed in an article published in the Calcutta Review for July, 1896,-" Assamese differs materially from Bengali in grammatical forms : its plural is formed in a different manner from the Bengali plural; the feminine gender is shown in a different way: there is much difference in the conjugation of verbs, specially in the present and the future tenses; it differs also in idioms, in syntax and collocation of words." There is also an important difference in its vocabulary; it retains a considerable

Mr. Sudmersen's words in this connection may be quoted,—"That Assamese has descended directly from Sanskrit no longer admits of doubt. The claim that the language was but a patois of Bengali was so devoid of foundation that it was no sconer seriously considered and studied than it was seen to be entirely untenable. Bengali and Assamese are both descendants of Sanskrit as French and Italian are of Latin......In structure of sentences, in inflection, in pronunciation, these languages show marked differences. In use of the negative as a prefix instead of an affix as in Bengali, in the formation of its plurals and its feminine, in the conjugations of its verbs specially the present and the future tenses, in its pronunciation of certain sounds, and even in its alphabets, in its idioms and in its vocabularies there are such important differences that only the theory of a common origin can afford any adequate explanation. Assamese, resembling Bengali as it does through its common parentage, resembles still more the languages of Orissa and Upper India."—S. K. B.



lxiii

proportion of Prakritic words, for which, Bengali has substituted Bengali words. There is a further difference of pronunciation which more than anything else tends to make interchange of ideas difficult. In this connection we can do nothing better than quote some of the best authorities on the subject. Mr. Needham Cust, the renowned linguist and ethnographist, in his book A Sketch of the Modern Languages of the East Indies has observed, - "The grammar of the Assamese language is quite different from that of Bengali, as far apart as Italian and French are from each other." In another place of the same book he has stated,-"The Assamese language existed in its present form for centuries and the pronunciation corresponds with the Hindi language—the field whence came the emigration of its colonists, than with that of Bengali, who had no access to the valley until after the Muhammadan invasion."

From the resemblance of certain words the superficial observer runs at once to the conclusion that both the languages are one and the same, that Assamese is a mere patois of Bengali. Such observers forget that every language is at liberty to admit into it any number of words from different languages. There is scarcely a language on this earth which has not adopted some words from the neighbouring tribes or foreign nations, but few have adopted the grammar of a foreign dialect. In English dictionaries the number of Latin words would perhaps far exceed the number of Saxon words, and an English sentence may contain a large proportion of Latin words, and still it may be the sentence is not a Latin one. Professor Huxley is credited with the assertion that "the primrose is a corollifloral dicotyledenous exogen with a monopetalous corolla and a central placenta." Now

Dr. Grierson gives a similar passage, English in structure but Latinised in vocabulary, of course in a different context in Vol. I, Part I of his "Linguistic Survey of India," page 152n.—"A certain vir had two filiuses. And the junior filius medio of them said to his pater,—'Pater, give me the pars of the substantia that falleth to me,' etc.—8. K. B.



lxiv

this is an English sentence inspite of its every word being Latin, because its grammar is English and not Latin. Besides, the Assamese language has a literature as old and rich as the Bengali, and in the department of history it is perhaps the richest of all the Indian dialects. Srijut Benudhar Rajkhowa, Extra Assistant Commissioner, published a small pamphlet containing expert opinions on the distinction between the Assamese and Bengali, which may be referred to in this connection.

6. THE GREATEST PERIODS OF PROSPERITY OF ASSAMESE. DO THEY CONCUR WITH SIMILAR PERIODS OF BENGALI LITERATURE?

As has been already stated the second period is the most prosperous period of Assamese literature. In this period all the important Sanskrit religious books were translated into Assamese. Books were composed on medicine and arithmetic. The histories, the biographies of eminent persons, dramas and kavyas were written: the great epics of India were translated into the Assamese language. Then the dominion of the Assamese language extended as far as the kingdom of Cooch-Behar. We regret to have to say that we are not familiar with the periods of the Bengali literature, and are, therefore, not in a position to offer any remarks on the point, whether the second period of Assamese literature concurs with similar periods of Bengali literature.

7. THE BURANJIS, THE CHIEF ONES WITH THEIR AUTHORS, GENERAL CHARACTERISTICS OF STYLE, EIC.

The chief Buranjis have been described by Mr. Gait in his Report on the Progress of Historical Research in Assam. But it is greatly to be regretted that the names of their



lxv

authors are not to be found in them. In all probability they were written by the court scribes. From a careful study of their style their dates can be ascertained with a certain degree of precision. They were written in current prose and the ancient style is quite different from the modern, and one can be easily distinguished from the other. In the older ones the style was a conversational one, and the sentences were simple, but in the later productions a more literary style seems to have been introduced, and compound sentences seem to have replaced the old simple style.¹

8. WHAT DOES ASSAMESE OWE TO BENGALI?

The Assamese language owes very little to the Bengali language. As has already been stated its Sanskrit came to it directly from Mid-India, and not through Bengali. Before the occupation of the British the Bengalis had very little access to the Province, and the communication between Bengal and Assam was extremely difficult. Assam had an independent and self-contained government from time immemorial, and in no period of history both the countries were governed by the same monarch.²

It is true that in ancient time the boundaries of Assam extended as far as Karatoya, and included a large slice of the land now called Bengal, but the seat of the government

¹ For a critical examination of the Buranjis of Assam, see Prof. S. K. Bhuyan's (1) New Lights on Mogul India from Assamese Sources, published in four parts in the Islamic Culture, Hyderabad, Deccan, for July, 1928 to July, 1929: and (2) Assamese Historical Literature in Indian Historical Quarterly for September, 1929.—S. K. B.

There are several instances of Assam and Bengal, or at least a portion of Bengal, being under the same sovereign. Samudragupta's empire evidently extended over Bengal and Assam, and so did that of Yasodharman of the Mandasor Inscription. After the death of Sasanka Narendragupta, Emperor Harshavardhana handed over Karna-suvarna to his friend and ally Kumar Bhaskarvarman, King of Kamarupa. Harshadeva, father of Rajyamati,—"sprung from the race of Bhagadatta," consort of Jayadeva II, the Lichchavi King of Nepal,—was the 'lord of Gauda, Odra, Kalinga, and Kosala, If Harshadeva was a king of Kamarupa, as most likely he was, then his begemony passed beyond the limits of his own kingdom.—S. K. B.



lxvi

being always in Assam, the manners and customs of the people were least affected by anything Bengali. But with the advent of the British a large number of Bengalis came into the Province, seeking employment. Their education and acquaintance with the methods of British administration made them more suited for employment in the new Government. These people found it difficult to transact the business of the Government in the vernacular of the country, while their false pride prevented them from acquiring a knowledge of it. It was their interest, therefore, to represent the Assamese language as a corrupt form of their own vernacular with a view to get it replaced by Bengali, if possible. They had nearly succeeded in their attempt; but for the timely intervention of the noble missionaries at Sibsagar and some patriotic Assamese gentlemen it would have been crushed out of existence long long ago. We learn from the General Report on Census of India, 1891, that the same game was played with Uriya. It has been stated there,-" For some years an attempt was made to degrade Uriya into a dialect of Bengali so as to exclude it from schools and public offices, but fortunately history and philology prevailed over political ambition and the elder language has held its own against its hybrid sister."

The same Report has the following words about the Assamese language,—"Assamese has had like Uriya the experience of resisting an attempt of the ambitious Bengali to reduce it to a patois, and thus open a wider field of employment to the studious youths of the Lower Provinces, and like Uriya, too, Assamese has been hitherto successful." It is

James Moffatt Mills who knew the conditions of Orissa and Assam so well, being first Commissioner of the Orissa Division, and then special officer appointed by the Bengal Government to investigate into the administration of Assam thus wrote,—"The people complain, and in my opinion with much reason, of the substitution of Bengalee for the vernacular Assamese. Bengalee is the language of the courts, not of the popular books and shastras, and there is a strong prejudice to its general use. It is because instruction is imparted to the youths in a foreign tongue that they only look to Govern-



lxvii

true, the just cause of the Assamese language was vindicated at last, but the Government was persuaded to replace the Assamese language by the Bengali in the courts and schools of Assam which continued till the time of Sir George Campbell. The deplorable results that ensued this mistaken policy have been beautifully described by the late Anandaram Dhekial Phukan in a brochure entitled A Few Remarks on the Assamese Language, published in 1855, a brief abstract of which was published in the Indian Antiquary for 1896, page 57.

From the above it will be seen that the Assamese people have no grateful recollections of their first contact with their Bengali brethren, and therefore, it was their earnest endeavour to keep their language as far away from the influence of the Bengali as possible, and they adopted a policy quite different from that of Bengal for the culture of their language. The Bengali writers succeeded in making their standard language quite different from their colloquial by gratuitously abusing their power of borrowing Sanskrit

ment for employment. Assumese is described by Mr. Brown, the best scholar in the Province, as a beautiful simple language, differing in more respects from than agreeing with the Bengalee, and I think we made a great mistake in directing that all business should be transacted in Bengalee, and that the Assumese must acquire it..... An English youth is not taught Latin until he is well grounded in English, and in the same manner an Assumese should not be taught a foreign language until he knows his own."—From Mills' Report on the Province of Assum, 1854, quoted in Prof. S. K. Bhuyan's Early British Relations with Assum, p. 43.—S. K. B.

Mr. Phukan said in one place, page 27,—"In speaking of the results that have attended the use of Bengali in the Government schools in Assam, we do not think we could convey to our readers a correct idea on the subject, in more appropriate and concise language, than to say, that the introduction of Bengali books into the Assam schools, has been productive of consequences, precisely similar to these that would have followed had the Latin or French been adopted as the medium of instruction in the elementary schools of Great Britain, and had French or Latin Grammars been given to the first beginner, instead of Grammars of the English language; Latin spelling books in lieu of English Primers; or French Juvenile Tales in the place of English Nursery Stories."—S. K. B.



lxviii

words, while the Assamese escaped a similar fate by conducting their language on their own national line.

9. Modern Assamese Literature.

Dr. Grierson is of opinion that "Assamese literature is as old, if not older, than that of Bengali, and down to the commencement of the present century, was as copious." Mr. Gait has stated on page 329 of his History of Assam, first edition,—"Assamese is believed to have attained its present state of development independently of, and earlier than Bengali." But in the modern time it has not been equally fortunate; it has fallen far behind the Bengali literature. While the Bengali language grew rapidly under favourable circumstances, the Assamese language lagged behind having had to fight hard to assert its very existence. The unfortunate controversy, took much of its time and energy, and

that Assamese writers should avoid the error of their Bengali brethren and make a larger use of the vigorous material at their own disposal. They should avoid the constant incorporation of Sanskrit, which resulted in modern Bengali literature differing so widely from that of the eighteenth century. The effect of this in Bengal has been the fatal dissociation of language from literature, so that it can ever be said that the grammar of colloquial Bengali actually differs from the grammar of its literature. Literature growing thus alienated cannot remain vigorous or national." Seventeen years after, Lt.-Col. P. R. T. Gurdon pointed to a similar tendency among Assamese writers in his review of Prof. S. K. Bhuyan's Barphukanar Git in the J. R. A. S. for October, 1925, p. 767. Dr. Suniti Kumar Chatterji is, however, of opinion that "during the last two or three decades there has been quite a revolution in literary Bengali.......and that there has been a constant attempt to bring the literary language more in line with the colloquial,"—quoted in Addenda Majora, in the Linguistic Survey of India, Vol. I, Part I, Introductory, 1927, p. 222.—S. K. B.

The handicaps under which Assamese writers have to labour are described in S. K. Bhuyan's The Assamese, pub. in the Assam Review for April, 1928, p. 14.—"The progress of Assamese literature has been seriously hampered by the numerical inferiority of the reading public. For several decades after the British occupation of the country Bengali was the language of the schools and of the courts; and the influence of Bengali literature thus introduced has not been eradicated entirely from the land. The Assamese author publishes a book at a loss, and he is naturally shy in repeating his financially unprofitable experiment by publishing another book. The Assamese are not whirled by the remote traces of any world movement, and no Assamese litterateur of the present day



lxix

the progress of the literature was seriously checked. It is no doubt making some progress now, but it has been necessarily slow, as it has not yet been able to recover its lost grounds completely.

10. Is there an Increase or Decrease in the Production of Literary Works in Assamese?

There has no doubt been an increase in the literary productions in recent years, but the increase is so slight that it is not worthwhile to take any account of it. The expansion of Bengali literature in the present age is chiefly due to the growth and prosperity of the Bengali people and the spread of high education amongst them. All these elements are wanting in the case of the Assamese people; they are proverbially a poor people; there is no leisured class in Assam who can devote their time and money for the advancement of their national literature. They have been decimated by the Kala-azar. Every year a large number of them are carried away by cholera, by small-pox and other epidemics. Their resources were seriously crippled by the earthquake of 1897.

has occupied a position in the world-wide republic of human letters. To ensure a large circulation of his book the Assamese author has to adjust the manner and matter of his writings to suit the mind of all readers ranging from the most highly educated scholar down to his semi-illiterate countrymen. Every man has to struggle hard for bread and cannot participate in the economically unprofitable amenities of a cultured life, by expanding the scope of his knowledge or 'voyaging through the realms of thought alone.' The only effective remedy will be the establishment of a central publishing organisation, with a network of branches all over the Assam Valley........The cumulative effect of all these bandicaps has been the concentration of Assamese literary activities in Assamese periodicals."—S. K. B.

To this should be added the existence of a city of eleven hundred thousand souls in the heart of the Bengali nation, and the presence of a wealthy leisured class among the Bengalis.—S. K. B.



lxx

There are very few men who can give their high education. There are very few men who can give their sons high education without the aid of Government. Such conditions are hardly conducive to the growth of their national literature, and it is, therefore, small wonder that Assamese literature has made so little progress in recent years.

11. THE FUTURE OF ASSAMESE LITERATURE: HOW IT MAY BE ENCOURAGED.

The future of Assamese literature is indissolubly linked with the future of the Assamese nation. As Dr. Grierson has stated—"Assamese literature is essentially a national product. It always has been national and it is so still. The genius of its people has led it along lines of its own and its chief glory—history—is a branch of study almost unknown to the indigenous literature of Bengal. Whether the nation has made the literature or the literature the nation, I know not, but, as a matter of fact, both have been for centuries and are in vigorous existence." So long the language has survived the hostile attacks and has maintained its own against its enemies. But how it will fare in future, the future will only show.

The unequal competition with a more advanced nation may lead to the extinction of the nation and its language; under favourable circumstances and the fostering care of the Government they may thrive again, and attain their pristine glory. On the whole, there do not exist sufficient grounds, to be despondent about the future of the Assamese language. If the Government continue the same wise policy, which it has hitherto followed in respect of the Assamese language, it is bound to grow and expand. In the recent years the Government have done much for the furtherance of the



lxxi

cause of Assamese language and literature. By publishing the Hema-kosha, the only authoritative dictionary in the language, they have established the language on a very firm basis, and by getting the language recognised by the Calcutta University, they have given it a status and a new impetus. The necessity of imparting education to the Assamese boys through the medium of their mother tongue was long recognised in principle, but it has been given effect to only quite recently. These facts have led the promoters of the Assamese language to hope that Assamese literature has a bright and cheering prospect before it.

There are various ways in which Assamese literature can be encouraged. We beg to suggest a few of them below:—

- (a) Only a few puthis belonging to Assamese literature have yet seen the light of publication. Steps should be taken to preserve them from the hands of decay, and the valuable ones should be published.
- (b) The stringent rules about the submission of textbooks should be relaxed in favour of Assamese.
- (c) Rewards should be offered for exceptionally good text-books on different subjects, as was done some years back.
- (d) Reading libraries should be established at important centres of rural areas, where Assamese books, magazines and newspapers should be kept.
- (e) Small libraries of Assamese books should be attached to all the important village schools.
- (f) Good Assamese books of real merit should be published by the Government, e. g., Hema-kosha, or a number of copies subscribed.
- (g) The literary magazines should be subscribed by the Local Boards for the village schools:



lxxii

- (h) Rewards should be offered for publishing translations of the standard English or Sanskrit works.
- (i) Authors of special merits should be honoured by titles like Rai Bahadur and Rai Sahib, Khan Bahadur and Khan Sahib, and Kaisar-i-Hind medals.

TEZPUR.

8th July, 1907.

H. C. GOSWAMI.

P. BOROGAH.



গীতি যুগ।

পাই-নাম।

(ক) লবা শুওৱা নাম।

ভামোল খাই মইনা .. সেলেঞ্চি লাগিলে

। দোলা কাতি হৈ পৰে।।

শিয়ালী এ নাহিবি ৰাভি। >1 তোৰে কাণে কাটি লগামে বাতি॥ আমাৰে মইনা শুব এ। এতিয়াই গৰু লৈ যাব এ॥ আমাৰে মইনা শুব এ। 21 বাৰীতে ৰগৰি ৰুব এ ৷ বাৰীতে বগৰি পকি সৰিব। মইনাই বুতলি খাব এ॥ লাই হালে জালে, আবেলি বতাহে 9 1 लका হালে জালে পাতে। আমাৰে মইনা হালিছে জালিছে কালি ছুপৰৰে ভাতে। ভাত খাই মইনা দোলত উঠিলে 8 1 পানী খাই মইনা শোৱে।

ে। আমাৰ আইটী শুব, বাপেক আহি কলা ৰুব। ঠোক মেলিব খাব॥

2

- ৬। গা হেলি মেলি কৰিছে আইদেৱৰ হল শয়নৰে বেলি। চকু তিৰে বিৰে কৰিছে আইদেৱৰ লোৱাহি পাটীতে লেটি॥
- গণকাটী এ নাহিবি ৰাতি।
 তোৰে কাণে কাটি লগামে বাতি॥
 কাণকাটীৰ মূৰতে মৰুৱা ফুল।
 কাণকাটী পালেগৈ ৰতনপুৰ॥
- বাপুকণ ধুনীয়া পাটবে চুৰিয়া,
 মূৰত হেঙ্গুলীয়া ছাতি।
 বাটৰ বাটকৱাই, বৈ বৈ শুধিছে,
 কোনে বিষয়াৰে নাতি॥

নাতিৰ নাতি জপনাৰ কাঠি,
লৰালে মাখুন্দী হাতী।
আমাৰ বাপু শুইছে গধূলী বেলিকা,
নাহিবি কাণখোৱা ৰাতি ॥

- ৯। ধেমু চাৰি মইনা মোৰ গুচাইলেক আঁত।

 ৰদ পাই জিলিকিছে মুকুতাৰে দাঁত॥

 দৈ থৈছো তৃথ্য থৈছো থৈছো আৰু লাক।

 শুবৰ শ্যা পাৰি থৈছো তাতে থৈছো গাক॥
- ১০। কাণথাতী এ নাহিবি ৰাতি।
 তোৰে কাণে কাটি লগামে বাতি॥
 কাণথাতীৰ মূৰতে মুকৱা ফুল।
 কাণথাতী পালেগৈ বতনপুৰ॥

ধাই-নাম।

১১। বাপা এ নলাবি ৰাতি
বাটতে জলিছে ষোলটা চাতি।
চাতি জলক বস্তি জলক,
পোহৰ নহয় ভাল।
বিয়াৰ সময় মহলা দিলি
পোহৰ হব ভাল॥

১২। আজিৰো চানা মাই, কালিৰো চানা মাই,
চানা মাই তীয় হৰ জালি।
আজি কালি কৰি, চানা মাই ডাঙ্গাৰ হল,
বিবাহৰ বাতৰি পালি॥

(थ) नवा निष्टूरकाढा नाम।

যশোদা মাও মাথনি থোৱা ।
 কৃষ্ণাই কান্দিছে কোলাতে লোৱা ॥

২। বতাহতে হালে জালে চন্দনৰে চৰা।
শৰাইতে বাগৰি কান্দে, আইদেৱৰ লৰা॥

৩। আমাৰ মইনা সক, ৰাখে বড় বড় গৰু

এছাৰি হেৰুৱাই কান্দে এ। লোকৰ ধানে খাব, কিলাব কোবাব

ঘৰলই আনিবা গৰু এ ॥

8। নেকান্দিবা সক আইটী নিছিঞ্চিবা মণি।

সত্যে সত্যে বিয়া দিমে মাধরক আনি ।

৫। জোন কাকা এ আই আই।

ভাত দিম মাছ দিম

ছাক্সৰ তলত বাহা দিম (আমাৰ) বাপাৰ মূৰত টুপুৰ কৈ পৰ ॥

७। (नकान्मिया, त्नकांप्रिया,

নকৰিবা ৰোহ।

সত্যে সত্যে গুণৱতী,

এড়ি নৈযাওঁ তোক।

৭। মোৰে বোপাই লাহৰি,

নেপাইছো আহৰি।

বৰা জুৰিছো আন্ত, সেই বৰা বানি, পিঠা গুড়ি সানি, বোপালৈ লৈ যাম লাৰু ॥

আইকণৰু মন্ত্ৰা, কোৱাই লই গলে, কোনে আনি দিব পাৰে।

আইকণৰ ককায়েক দীঘলে ডাঙ্গৰে,

ट्रिंय जानि पित शास्त्र ॥

কুলি আছে গোলাপ কুল,

61

201

নেভাঙ্গিবা দাল।

আমাৰ মইনা বহি আছে.

प्रिविवरेन छान ॥

১ । বড় চৰাৰ মুখতে 🤚 বকুল ফুল ফুলিছে,

নিতে তিনি পাহি সৰে।

মাইনাৰ চকুলৈ 🕟 চাবকে নোৱাৰি,

হীৰা কি মুকুতা জলে।

১১। বাপুৰে বাৰীতে পকা কৰদৈ,

চকুড়ি ভাটোএ খায়।

তাৰে এটি কোনে , আনি দিব পাৰে,

লোহাৰে ডাঞ্চে কোবাই॥

১২। জোনা বাই এ বেজী এটি দিয়া।

दिकौरना दकलाई त्माना जिवरेल।

মোনানো কেলেই ধনে ভড়াবলৈ।

ধনেনো কেলেই হাতা কিনিবলৈ।

হাতীনো কেলেই উঠি ফুৰিবলৈ।

বাঁহৰ মুঢ়া বগৰীৰ গুড়া।

সৌতো আহিছে চকুচেলোৱা বুঢ়া।

জোনা বাইএ এটি তৰা দিয়া।

এটি তৰা নেলাগে ছটি তৰা দিয়া #



ধাই-নাম।

পাত নাই চোত নাই কিহতকৈ দিম ?
হালধীয়া চৰায়ে বাও ধান খায়।
শহুৰৰ পুতেকে নাও মেলি যায়।
নাৱে বোলে তুল তুল, বঠায় বোলে তুল তুল,
গধূলীতে ডবা কোবায়।

(গ) লবা ওমলোৱা নাম। ধিনিকি ধিন্দো দৌ মাণিকী কুপৌ। ককাই নৌ ওপজেঁতেই

তिनकनी (व) ॥

২। নাম ধৰা নাম ধৰা কচু পাতৰ ধোলা। বুঢ়া গোঁসাই নামি আহে হেকোৰ কেকোৰ দোলা

> 1

ত। মাৰৰ নিচিনা নহলি। বাপেৰৰ নিচিনা নহলি। বাৰীতে আছিলে ভেকুলী বেন্দ। ভাৰে নিচিনা তুখনি ঠেন্দ।

8। চিলনীয়া, বিলনীয়া, আমাৰ আইটীৰ ছুলি বঢ়াই নিয়া। চুছি মাজি দিওঁ মই আঢ়ৈহতীয়া হবি তই ॥

ধুলে ধুলে ধুলা লাগি পৰে।
 ধুলা লাগিল গাটি।
 আইকণ হল কাতি॥

৬। হৈ হৈ এ চিহৈ পোৱালী।
 লোনে মাছে ভাত খাই কি কৈ খিনালি॥
 হৈ হৈ এ চিহৈ পোৱালী।
 বাঢ়ৈটোকাই লৈ যায় টিকা জোকাৰি॥
 ৭। লাও কলি কলি, জিকা কলি কলি,
 মইনাই ভাত খালে বৰ পিড়াত বহি।

> মইনাই ভাত খায়, ককায়েকে চক, মাহীয়তী পেহীয়তী ঠেন্দৰ তলে যক্।

একাঠ পানীতে কুহুম ফুল ফুলিছে,

মেলিব নোৱাৰে পাহি।

আমাৰে আইটা নিচেই কুমলীয়া,

মুখতে মিচিকি হাঁহি॥

व्यादिन (दिनका, चाउँदेन दिन्यांवा 21 ঘাটতে গধূলি হব।

> চিলাই থাপে মাৰি, মদাৰত তুলিব, বুঢ়ীমাৰ বাউলী হব ॥

সকতে সকৰাম গৰু ৰাখিছিলা, >01

मक्रभारे गक्रारेल गला।

মাৰাক পুহিবৰ একো চিন নেপালোঁ, বড় হৈ ধিতিকা হলা।

বাপাৰ বাড়ীৰ মধু সোলেন্দ, 221

ছাগে বেঢ়ি খায়।

বাপাৰ বায়েক লীলাৱতী "मङ्बिटेन याग्र ॥

নাচ বাই জেতুকী এ 156

হাতে মেলি মেলি নাচ।

নাচ বাই জেতুকী এ

ভৰি মেলি মেলি নাচ॥

তয়ো বগী ময়ো বগী

একে খন বিলবে মাছ।

প্ৰথীয়া নাম

31 ত্ৰ ত্ৰ বটা চৰাই। মোৰ ধান নেখাবি তোক দিম গোটা কড়াই। ধানো খাম চাউলো খাম. তোক বিয়া কৰাই ঘৰলৈ যাম। টোকোৰা এ আমাৰ ধান নেখাবি 21 লোকৰ ধান খাবি। व्याक (विलिटेल करे पिम, দালত পডি পডি খাবি ॥ मानपून ভाकि उरे ट्विनीब जारेन यावि তেলীয়ে দিব তেল খাৰণী মালীয়ে দিব ফুল। भानिकी এ बर्छो रही। 91 ভাত হল শাক হল শালিকী বাই বা কেহেলৈ গল ? এই খিনিতে আছিলে জাবৰ খুচৰি, কোনোবাই লৈ গল ডিজি মুচৰি॥ बमालि अ बम (म। 8 1 আলি কাটি জালি দিম বড় পিড়া পাৰি দিম. ভাতে वहि वहि बन (म ॥ বদালিৰ মাকৰ কুটকুৰা ছুলি। কাহানি পাবগৈ বিৰিন্ধাৰ গুৰি। বগলী এ সবাহলৈ নগলি কিয় ? 21 গৈছিলো গৈছিলো বাটত বৰখুনে পালে। ৰঙ্গদৈৰ ঘৰতে সোমাব পুজিলো **(** क्येंप क्कूरव शाल। চেই কুকুৰ চেই নাহিবি জপনা দেই ॥

इंग्रकनि इंग्रकनि,

91

অতক ধান চাউল কত পালি। পোরে খালে, জীয়ে খালে. থাক্ থাক্ থাক্ ॥ কুপো কু কু, 91 খুদ থৈছে। খাহি আহ। **क्निटेक** याम ? বেক্সেনা গছত ডোকা থৈ দেও দি দি আছ। বেজী সিওঁ সিওঁ গ 41 নিসিবাঁ নিসিবা। পাত বাওঁ বাওঁ ? নেবাবাঁ নেবাবাঁ। এই পিনে যাওঁ গ এই পিনে চুৱাপাতনি। এই পিনে যাওঁ १ এই পিনে যম ৰজাৰ ঘৰ॥ পেহী ও পেহা, আমলখি কেহা, 21 জাল বাই জুলি বাই যাওঁ সিপাৰত। আবতনী পলাই গল মনৰ বেজাৰত ॥

4

টেকেলি পেটা গোবিন্দ ও জাল বাওঁ গৈ আহা। 3 . 1

व क्न व क्न युक्त किय ? গৰুৱে যে আগ খায় ফুলিমনো কিয় ? অ গৰু অ গৰু আগ খা কিয় ? গৰখীয়াই যে মোক নৰখে আগলো নেখাম কিয় ? অ গ্ৰথীয়া অ গ্ৰথীয়া গৰু নেৰাথ কিয় 🤊 ৰান্ধনীয়ে যে ভাত নিদিয়ে মইনো ৰাখিম কিয় ? অ ৰান্ধনী অ ৰান্ধনী ভাত নিদিয় কিয় ? খড়িকটীয়াই যে খড়ি নিদিয়ে মইনো দিম কিয় ? অ খড়িকটীয়া অ খড়িক্টীয়া খড়ি নিদিয় কিয় ? कमार्व दय मा निमित्त महेरना मिम किय ?

গदशीया नाम।

2

অ কমাৰ অ কমাৰ দা নিদিয় কিয় ?

এঙ্গাৰকটীয়াই যে এঙ্গাৰ নিদিয়ে মইনো দিম কিয় ?

অ এঙ্গাৰকটীয়া অ এঙ্গাৰকটীয়া এঙ্গাৰ নিদিয় কিয় ?
কাটি থৈছো বড়গছ সুশুকাইনো কিয় ?

অ বড়গছ অ বড়গছ সুশুকানো কিয় ?

মেঘে যে বৰপুন দিয়ে মইনো শুকাম কিয় ?

অ মেঘ অ মেঘ বৰপুন দিয় কিয় ?

তেকুলীয়ে যে টোৰটোৰাই মইনো নিদিম কিয় ?

অ ভেকুলি অ ভেকুলি টোৰটোৰা কিয় ?

বোপা ককাৰ বিৰ্ত্তি এড়িম নো কিয় ?

- ১১। দীঘলতিৰ দীঘল পাত
 গৰু কোবাওঁ ঝাঁত ঝাঁত।
 মাৰ সৰু বাপেৰ সৰু
 তই হবি বড় বড় গৰু॥
 লাও খা বেক্সেনা খা
 দিনক দিনে বাঢ়ি যা।
 মাৰ সৰু বাপেৰ সৰু
 তই হবি বড় বড় গৰু॥
- ১২। উকুলি মুকুলি ছুকুলি কাঁহী।
 আদৌ দৌ ডোমৰ দাঁহী ॥
 খেতি বাতি শাক তোল।
 কি কি চৰাইৰ কি কি নাও
 সোনৰ চৰাইৰ কথা কওঁ॥
 আম পাত জাম পাত
 পদ্ম পাতে বুড়াই পেলাই।
 জপা থুৰি উনৈচ কুড়ি
 সাত ভাই কপিলীত পড়ি॥

বিশ্বা-নাম।

(क) माधावन।

১। আম মলে থোপা থুপি, কদম মলে হালি। বেইৰ মাজত शचा करन, মেঘে ঢালে পানী ॥ ২। চৰাইৰ নাও শবালি, মাছৰ নাও বৰালি, সাপৰ নাও পানামড়লী। বাপেকৰ চৰাতে আইকণ বহি আছে, যেনে পদুমৰে কলি। ৩। মাৰাৰ আছিলা, লাচনি পাচনি, বাপেৰৰ কাচলি ধৰা। ভায়েৰৰ আছিল৷ সমান ভাগেখোৱা, আজি পৰৰ জনে হলা। ৪। আমি তিনি ভনীৰ, তিনিটি যঁতৰে, আয়ে সৰু সূতা কাটে। আমি তিনি ভনী, যাওঁ তিনি ঘৰে, আয়ে ৰাও কাঢ়ি কান্দে। আয়ে যে কান্দিছে পেটৰে যাতনাত, বোপায়ে কান্দিছে কিয় ? যদি হে বোপাইৰে মৰমেই আছিলে, আমাক বেচি খালে কিয় ?

বহি বৈ আছিলা তাঁত।

অগ্নি জলিছে গাত ॥

আজি এতে বেলি, অ চন্দ্রারলী,

विया-नाम।

ই বোলে চন্দ্ৰিকা সি বোলে চন্দ্ৰিকা, 91 **চ**न्मिका श्रुगरब निधि। বাপেকৰ চড়াতে, চন্দ্ৰিকা বহিছে, সোণৰ গলপতা পিন্ধি। ওড় ফুল ফুলিলে, জগতে জানিলে, 91 बान्नल कुल कुलिएल बन्ना। আইটীৰ বিয়াতে, ৰক্ষা ৰদ ওলালে, বাপেকে খুজিলে ঠকা। চাউল চালিবৰে, ৰূপহী চালনি, 41 বহি জাৰিবৰে কুলা। জীয়ৰীৰ ধনেৰে, কিনো পৌল বান্ধিৰা, উড়ি যায় শিমল তুলা। আয়ে চাউল চালে, চালনি মুঘূৰে, বোপাই তামোল কাটে সক। সৰুটো ভায়েকে, ধৰম বিয়া দিলে, नगरजा निमित्न गक । চড়ায়ে তুলিলে, ছঅঁৰা পোৱালী, 21 গছৰ দাল শুৱনি কৰি। আইটিক তুলিলে, মাকে বাপেকে, লোকৰ ঘৰ শুৱনি কৰি ॥ আগ ফাল শুৱনি, ডাব নাৰিকল, >01 পাচ ফাল শুৱনি পান। বড়ঘৰ শুৱনি, क्षीयबी (ছांबानी উলিয়াই দিবলৈ টান ॥ স্থবৰ্ণ মণ্ডিত বেই তাতে প্ৰবেশিলা গৈ। 221 বেইতে আইদেও ঘূৰে পাৰ বুলনেৰে বুলে॥ স্থবৰ্ণ ভূকাৰ লৈ ঘনে চাতি মাৰে দৈ। সোণৰ চিৰি মৰা পিড়া, কপেৰে বন্ধোৱা খুড়া।

বহা হেঙ্গুলীয়া পিড়াত হালধি ঘহিব গাত।

ৰত্বৰ ভূজাৰ আনি মাতৃয়ে ঢালিব পানী॥

মূৰত পানী দিবা, 251

ধাৰ নিচিঞ্চিবা,

বেইতে কলচি থবা।

তেলে হালধা

घं हि तोशा तम अतक,

ভালকৈ স্থান কৰাবা ॥

গা চাই গামোছা,

আনগৈ লগুৱা

ককাল চাই আন কাচুটি।

মুখ চাই আৰচি,

আনাগৈ আইটা

সতৰ ফোট লব পাই আজি ॥

আগত দিয়া পাচত দিয়া পাঞ্চ আয়তীয়ে। 201

তুৰ্বা ঘাটৰ পানা আনি ৰামৰ মূৰত দিয়ে।

হাৰ পিন্ধে টাৰ পিন্ধে পিন্ধে সাতসৰী।

দেবাক্সভুষণ পিন্ধে ইন্দ্রে দিছে আনি।

পুখুৰীৰে পাৰে পাৰে ইকৰাৰে বেড়া।

দলি মাৰি পেলাই দিয়ে ফটিকৰে মালা॥

क्रिम मिवा किंकि माला आमि मिर्म कि ?

ধৰম কৰি বিয়া দিমে সভাভায়া জী।

পুখুৰীতে পানী নাই পাৰকে মুবুৰে।

বিৰিখতে পখী নাই ঝাকে ঝাকে উড়ে ॥

পুথুৰীৰ চৌপাশে কলীয়া তুলসি।

সেই ঘাটে পানী আনে ৰামৰে কলচি।

পুথুৰীৰে চৌ পাশে মৃগ পত্ত চড়ে।

তাকে দেখি ৰামচন্দ্ৰ শৰধেমু ধৰে ॥

ठात्मा किकरण, 186

সৃক্যো চিকণে,

চিকণ সৰগৰে তৰা।

এতাইতকৈ চিকণে দেখি আহিলো,

বাহি চন্দনৰে দৰা।

পূবে দিলে ৰেণু, উঠা খ্যাম কাণু, 301

কতনো শয়ন কৰা।

विधि वाद्यशास्त्र, देनस्म पिव लार्श,

यारे थबमरवं देवला ॥



বিয়া নাম পানে আনিছে পান বৰীয়াই श्रुवालय चयव देन । প্রভাত কালতে, দৈয়ন দিছেহি, সিংহদ্ভৱাৰতে থৈ। শৰায়ে শৰায়ে, কাঞ্চন ফুল গাঁঠিছে আই দেওৰ খোপালৈ চাই। সেউতা পিন্ধিছে, মালতী পিন্ধিছে পিন্ধিছে খড়িকা জাই। সেউতাৰ এচাকি, মালতাৰ এচাকি, ্ আৰু চম্পাকলিৰ চাকি। মাকে বাপেকে, আই দেওক সজাইছে, একোকে থোৱা নাই বাকী। কালি এতে বেলি, আছিলা আই দেও, মাৰাৰ পালেকত শুই। আজি এতে বেলি, যাবলৈ ওলালা भावाक व्यक्ति थि॥ কালি এতে বেলি সখী প্রভাৱতী

100

391

বহি বৈ আছিলা তাঁত।

আজি এতে বেলি, যাবলৈ ওলালা

মাৰাক লগাই যোৱা মাত॥

আগৰে পৰাই, গুৰিলৈ লাগিছে,

লাগণি গছৰে ঔ।

व्यारम्भादनकान्मिया, वारम्भादनकान्मिया

আমি জিৰণীয়া মৌ।

১৮। ঔৰে গছতে, মৌৱে বাহ ললে,

আমাক পাৰি দিয়া খাওঁ।

মুখৰে কাপোৰ, গুচোৱা বোপা দেউ,

ডাতি পকিছেনে চাওঁ ॥

চতিয়াই লইছে, ওলমি পড়িছে,

ফুলাম কাপোৰৰে দহি।

যিমান কি নোলোৱা, ফুলাম বড় কাপোৰ

তেও বুঢ়ামুৱা দেখি॥

১৯। বিধি খন পঢ়িব নেজানে বাপু দেউ

विधि थन आभारेल निया।

পুৰং পচিমং উতৰং দখিণং

সহাই বুলি এথোলা দিয়া॥

২০। বিধি পঢ়ে বাপু দেৱে মাজে মাজে এবে। প্ ঘৰত আছে খালৈপেটী তালৈ মনত পৰে।

(थ) इबरणीबीब विशा।

আগৰ খন ভাৰতে ধি যি আনিছা

বড়চৰাৰ মুখতে থোৱা।।

হিমালয়ে আজি কি কাৰ্য্যে আহিলা

হেমৱন্ত ৰাজাক কোৱঁ। ॥

हर्वा व्यवकार देव ।

ওলাই আহা গোৰী, পিন্ধাহি সাদৰী

মেনকাৰ আগতে কৈ ॥

হৰৰে ঘৰৰে, অয়ে অলক্ষাৰে

আনিছে শৰাই ভৰাই।

ভিতৰৰে পৰা, ওলাই আহা গোৰী

লোৱাহি মাথা দোৱাই।

গছ সৰু সৰু পাত চিৰিলিয়া

মাণিক থোপা থুপি লাগে।

हबरेल रंगीबीरक, निमिश्च यूर्नुलिया

श्रष्ठि वाण्वि नार्ग ॥



विया नाम ।

কৈলাসৰে পৰা মহাদেউ আহিছে
ব্ৰভ বাহনত উঠি।
আজি বাৰ বছৰ, বাহি গা ধোৱা নাই
গোন্ধে প্ৰাণ যাই ফুটি॥
শিব আহি পালেহি হেমৱন্তৰ ঘৰ।
ভাঙ্গপুন্দা সজুলিৰে জুৰিলে নগৰ॥

(গ) বাম সীতাব বিয়া।
ওলাই আহা কোশল্যা বজাব মহা দৈ।
ভঙক্ষণে যাত্ৰা কৰি যোৱা জোৰণ লৈ ॥
থাক লোৱা মণি লোৱা কুণ্ডল সাভেসৰী।
তেল সেন্দুৰ ফণি ফালি লোৱা শৰাই ভৰি ॥
অযোধ্যাৰ যত নাৰা জোৰণ লৈ বোৱা।
বামৰ অলন্ধাৰ আজি জানকীক পিন্ধোৱা।
কৈকেই ওলোৱা

ওলোৱা ৰামৰে মাও।

জনকৰ জীয়াৰী জানকী স্থন্দৰীক জোৰণ পিন্ধাবলৈ য'াও ॥

সীতা সৰু বুলি কোনেনো কলেছি

ৰামৰ লাগি আছে চিন্তা।

চিন্তা নকৰিবা আমি চাই আহিলে।

তোমাৰ কাণ সমানে সীতা॥
সীতাক লৈ ৰামচন্দ্ৰ অযোধ্যালৈ যায়।
নগৰৰ প্ৰজাসবে বেড়ি বেড়ি চায়॥
ধন্ম ভাঙ্গি ৰামচন্দ্ৰে সীতাক লৈয়া যায়।
পশুৰামে যুদ্ধ কৰে বাটত লগে পায়॥

জনকৰ ঘৰতে আছে বড় ধেমু

ৰামৰ লাগি আছে চিন্তা।
পাৰোকি নোৱাৰো ধেমুকে ভালিব,
বৰে কি নবৰে সীভা।

36

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

বিশ্বামিত্রে বোলে বাপা ৰাম গদাধৰ।
বাট চাই আছে সীতা জনকৰ ঘৰ॥
মিথিলাতে সীতা দেবী আছে বাট চাই।
ধন্মভান্দি বিয়া কৰাও বিদাই দিয়া আই॥
মাকে বোলে ৰাম তুমি যোৱা শীত্রকৰি।
ধন্মভান্দি লৈ আহা জানকী স্থন্দৰী॥
জনক নন্দিনী আই এ, স্বামী বৰিবলৈ যাই এ।
গন্ধপুপ্পৰ মালা লৈ এ, স্বামীকে বৰিব গৈ এ॥
ঐলোক্য মোহিনী, গজেন্দ্ৰ গামিনী

জনক बोकांब वाला।

সমাজত গৈ

মেৰুত উদয়.

থেনে চন্দ্ৰমাৰ কলা ॥
স্বৰ্গৰ পৰা কিবা, আহিলে উৰ্বৰসী,
কিবা ৰতি তিলোন্তমা।
ইন্দ্ৰৰ ইন্দ্ৰাণী, চন্দ্ৰৰ ৰোহিণী,

কিবা অপেশ্বৰী হেমা ।
শুভকার্য্যে বিলম্ব নকৰা ৰঘুপতি ।
গলে মালা দিওঁ ৰাম দিয়া অনুমতি ।
ৰাঘবৰ ওচৰ চাপিল বৰবালা ।
সাদৰে মাথাত দিলে স্থবৰ্গৰ মালা ॥
বৰিলে ৰামক আনন্দৰ নাই পাৰ ।
চৰণত পড়ি সীতা কৰে নমন্ধাৰ ॥
বহিলে জানকা গৈ ৰাঘবৰ কাৰে ।
চল্লৰ লগত যেনে ৰোহিণী আকাশে ॥

(ঘ) কৃষ্ণ-কক্মিণীৰ বিয়া।

কক্ষিণীৰ ৰূপৰ কৰিব কোনে সীমা। সৰ্ববান্ধ স্থন্দৰী কন্মা সোণৰে পতিমা ।



विया नाम।

অতি স্থকোমলী নৃপতিৰ বৰবালা। प्ति पित्न वार्ष् एयन नद: **ठ**त्सकना । मनीপ्रका (वार्ल कोग्रांव इल कमाकाल। মতাই আনি মাধৱক বিয়া দিলে ভাল। কত ভাগ্যে পাইবো আমি কৃষ্ণক (জাঁৱাই। স্থতে থাকিব মোৰ ৰুক্মিণী জীয়াই। কক্ষ বীৰে বোলে ভনী নিদিও মাধৱক। ৰজা নহয় কৃষ্ণ উগ্ৰসেনৰ সেৱক ॥ শিশুপাল ৰজাক মাতি দিম মই বিয়া। কাৰ যে শকতি আছে মাধৱক দিয়া। শুনিয়া করিনী পাচে বচন নির্ঘাত। পড়ি মূচ্ছ। গৈলা দেবী মুখে নাই মাত। हा देवत विधि त्यांव कविला आभा एक । भाभिष्ठे टेडग्रांडे किरना मिलि कमि (अम II কৃষ্ণৰ চৰণ চিন্তি এৰিম মই প্ৰাণ। কদাচিতে। স্বামী মই নবৰিবো আন ॥ স্থান কৰি করিগীয়ে ধ্যান ধৰি আছে। পত্ৰ লিখি ক্ষিণীয়ে বেদনিধিক পাছে ॥ যোৱা বেদনিধি গুৰু ঘাৰকাক যোৱা। প্ৰভূৰ হাতত মোৰ পত্ৰখানি দিয়া ॥ व्यक्तिस्य स्यादारेश হে গুৰু বাপু,

কাইলৈ আহিবা ঘূৰি। কুষ্ণৰ হাতে ধৰি কৰা কাৰো কৰি,

মাতিছো চৰণত পড়ি॥
বেদ নিধি দৃত পাচি মাধৱৰ ঠাই।
আহিব আহিব বুলি আছে বাট চাই॥
ক্ষিণীয়ে বোলে মোৰ কপাল নহয় ভাল।
নাহিলেক বেদনিধি নাহিলে গোপাল॥
একো সাৰ নিসাৰ নেপালো বাৰ্ত্তা ভাল।
কানিলোহো শিশুপাল হল যমকাল॥



পাটীত বহি ক্লিণীয়ে মনে মনে গুণে।

ক্ৰীকৃষ্ণ আহিছে বুলি কাণ পাতি শুনে।
ক্লিণীয়ে বোলে মোৰ কপ দেখো ভাল।
কিয়নো নাহিল কৃষ্ণচন্দ্ৰ অত কাল।
ক্লিণীৰ পত্ৰখানি দিলে বেদনিধি।
ক্ৰীকৃষ্ণে পাই ললে হৃদয়তে বান্ধি।
পত্ৰ খানি পঢ়ি মহান্তখে জগন্নাথ।
স্থদীৰ্ঘ নিশ্বাস ছাড়ি চপৰালে মাথ।
ক্লিণীৰ আগতে

কবা বেদনিধি

মনে নকৰিব তুথ।
কালি এতে বেলি হৰি লৈ আহিমে
দেখিব আমাৰে মুখ ॥
পাটীত বহি ৰুক্মিণীয়ে মাটিত মঞ্চল চায়।
কেতিয়া আহিব কৃষ্ণ সোণৰ বাংশী বাই॥

(ঙ) উষা অনিৰুদ্ধৰ বিয়া।

পাটীতে বহিয়ে, **डिया मृ**ष्ट्। गतन, অনিৰুদ্ধক স্বপ্নত দেখি। চিত্ৰলেখা সখী, जुलि धविरह, উঠা উঠা প্রাণ সখি॥ সপোন দেখিয়া **उ**वा मुर्फ्श गत्ल, সখীত সোধে যুগুতি। স্বপ্নতে বৰিলো, স্থন্দৰ পুৰুষ সখি মোৰ কি হব গতি। সপোনত দেখিলো স্থন্দৰ মৃক্তি, আগতে আছিলে ৰৈ। আনি দিয়া স্থি. সেই কোঞৰকে त्मरे नगबरेल रेग ॥



विद्या नाम।

চিত্ৰলৈখি সখী

भछ (मथुबारम

কোন জন বৰিলা সখি।

ভূবন মোহন

কুমৰৰে ৰূপ,

বিমোহিত হলে দেখি

চিত্ৰলেখা বোলে সখি তই বৰে আজলী।

সাপোনতে পুৰুষ দেখি হৈ গলি পাগলি॥

নাকান্দিবা প্ৰাণ সখি নকৰিবা শোক।

কুমৰ হৰিব মই যাও দাৰকাক ॥

বাটত লগে পাই.

নাৰদে শোধই

करेल यां कि कितलिय।

কিবা সোধা ঋষি

কুমৰক নেদেখি,

কান্দি মৰে উষা স্থী।

মোৰ উপদেশ

লোৱা চিত্ৰলেখি

মোৰ উপদেশ লোৱা।

অনিৰুধ কোএঃৰক

হৰিলৈ আহাগৈ

ভোমোৰা পোক এটি হোৱা।।

লোহাৰ গড়ে বান্ধি

অনিৰুধ কোঞৰক

থৈছে সিংহাসনত তুলি।

কুন্দ্ৰাক্ষৰ জলাৰে

হৰি লৈ আহাগৈ

उषा युन्पबोरेल वृलि ॥

বাণ ৰজাৰ জীয়ৰী

সৰ্ববান্ধ স্থন্দৰী

বহিছে কেপকৰা পাড়ি।

ওচৰতে বহি

অনিৰুধ কোঞ্ৰৰে

আছে ধেনু শৰ ধৰি॥

সৰ্বব অলফাৰে

সর্ববান্ধ জলিছে

নেপুৰে ধৰিছে তুলি।

অনিকধ কুমাৰে ধনুশৰ ধৰিছে

कारनावाई श्वित तूलि ॥



বিহুৰ নাম।

১। ওপৰ উড়ি যায় কালিন্দা ভোমোৰা ঠিয় হৈ আছিলো চাই। তোমাৰে আমাৰে পিৰীতি লাগিলে চকুৱে চকুৱে চাই॥

২। ধানে বহাবৰ গোটোং ঠালিটি শোভন বিৰখৰে খড়ি। তোমাকে আমাকে কোনেনো ভঙ্গালে এদাল কেশ হুদালি কৰি।

ত। কোনেও ভক্ষা নাই কোনেও ছিক্ষা নাই
 আপুনি ভালিলো মন।
 ম্ব গা ধুবলৈ ঘিলা খুজিছিলো,
 সিও হল বুক্ৰে ধন।

ব। সজাত বন্দী হল, সজাবে মইনা,
শালত বন্দী হল হাতী।

মকৰা জালতে মোৰ ধন বন্দী হল,
টোপনি নাহে মোৰ ৰাতি॥

হাত মেলিট্রনেপালো তুবুকি লতা মই
 ভিৰি মেলি নেপালো পাটী।
 আতি চেনেহৰ পিৰীতি কৰিলো,
 শুবলৈ নেপালো ৰাতি॥

প। ধন যেন দেখোঁ মই তোমাকে বহনা,
প্রাণ যেন দেখোঁ মই তোমাক।
প্র ১৯৯০। কেচা খুমতিত হেৰাই যেন দেখিলো
কাক পাই তেজিলা আমাক।



বিহুব নাম।

৮। আতি চেনেহৰ ফুল বাড়ি পাতিলো তাৰ মাজত খৰিকা জাঁই। আতি চেনেহৰ পিৰীতি কৰিলো থাকিবলৈ নেপালো চাই॥

ন। এই পিনে কোন গল, বুকৰে ধন গল খোজত মৰি গল বন। নেমাতি নেচালে এ কোটি নকলে, কেনেবা কৰিছে মন॥

১০। এই পিনে কোন গল, মৰমৰ ধন গল, মূৰত পোনোৱালী টুপী।
আছে সাত শতৃক, মাতিব নোৱাৰো,
চাও বেৰ জোলোলাই জুপি।

১১। অজাতি কুকুৰ। থাক দূৱাৰ চুকত, ভুকুৱাই মাৰিমে তোক। ৰাতি নৌ পুৱাওঁতে কিয় ডাক দিলি, ধনে এৰি গলে মোক॥

১২। তোমাৰ বাড়িৰে ইন্দ্ৰ মালতী আমাৰ বাড়িত পৰিল ছা। দিনৰে দিনটো নেদেখো বছনাক

ৰাতি পুড়ি মাৰে গা ॥

১৩। কাউৰীৰ শতুৰু মুগা ছুপ্সিয়া, পৰিব নিদিয়ে ডালত।

> আয়ে বোপায়ে আমাৰে শতুক ফুৰিব নিদিয়ে গাঁৱত।

১৪। হাঁচতী লাহৰে, টেমিটি কাঁহৰে, কটাৰী মহৰে শিক্ষ।

> আমাৰ পত্নলীত তামোল নেকাটিবা, নাকলিত ধৰিব চিন ॥

BCU 1502

| হ অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি |
|---------------------------|
|---------------------------|

১৫। হেৰা মোৰ লাহৰী নেপাঁও মই আহৰি ভোমাকে দিবলৈ গুৱা। কাবোটি কৰিছো, ছুটি ভৰিত ধৰিছোঁ, আজিলৈ উভতি যোঁৱা।

১৬। চাক্সৰ মৰাপাত শুকান কলা পাত,
থুৰীয়া তামোলক বান্ধো।
থুৰীয়া তামোলক দিবলৈ নেপাই মই
গাঁথিত বান্ধি থৈ কান্দো॥

১৭। চড়াইহাগী বিলতে চড়াইটি পৰিল হি

মাছ আহি পৰিলহি জালত।

ৰাত্তিৰ ভিতৰত সপোনত দেখিলো

মাখি হৈ চুমা খায় গালত।

১৮। ধনে দি পঠিয়াই লং ফুলৰ হাঁচটী
আমি দি পঠিয়াম কি ?
ধনৰ আগতে বাতৰি কবাগৈ,
আমি দুখীয়াৰে জী॥

১৯। ধনৰে গামোচা মুখত ফুল বচা লাহৰী কাঠৰে মাকো।

> কিনো মায়া মোহত পোলা বহনা, নেমাতি কেনেকৈ থাকোঁ।

২০। থূৰিয়াই থূৰিয়াই দি যায় তামোল কাটি, বাটত মেলি মেলি থাবা।

> যেতিয়া পাবাগৈ ভোমাৰে চহৰ খন আমালৈ পাহৰি যাবা॥

২১। ন পানী আহিলে, ধেকনি লাগিলে, বহনাই বৰশী বাই।

> মোৰ হাততে, শিল্পৰাই বিন্ধিলে ধনে বেজ বিচ্চাৰি যাই ॥



বিহুৰ নাম।

২২। গজে পানী খালে হোৱাকে দৈয়াকে,
যোড়াই পানী খালে ৰৈ।
ধনে পানী খালে পিৰীতি নিঝৰাত
ঠিয় গৰাত খোপনি লৈ।

২৩। আইটি বোলো তোক, এবেলি চাবি মোক জুতুলী জেতুকাৰ তলত।

চক। পিতলৰে, আন্তৰী গঢ়াই দিম, গলপতা গঢ়াই দিম গলত॥

২৪। ও তলৰ ধেকিয়া, নিচেই কুমলীয়া,
ভৰি দিলে মুচুকাই ভাগে।
ককাল খামুচীয়া খোপা উধনীয়া,
চাই থাক চাই থাক লাগে।

২৫। নৈৰে সিপাৰে কোনে জুই দিলে, ওপৰে উড়ি গল চাই।

> মোৰেনো হিয়াতে কোনে জুই জালিলে, বিচনী ধৰোতে নাই॥

২৬। চতত চঁপা কলি বহাগত ৰগৰী জেঠতে মলিয়াই আম।

> সাউদৰ লগতে, ধনে উজাই গলে কাহানি উলতি পাম॥

> আহাৰত কঠাল শাওণত শঠা, ভাদতে অমনা বাও।

> আশাত নিৰাশা নকৰা ঐ বহনা, ৰাতি দিন বাটলৈ চাঁও ৷

২৭। আশা দি নিৰশা কৰিলি বহনা, সুখেৰে খাবি কত কাল।

> থাচ থাচ কৰি ভাগিব লাগিছে গজলা গছৰে দাল ॥

₹8

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

২৮। বন্ধাল বন্ধাল লৈতেৰা বন্ধাল ঐ
বন্ধালক নিদিবি ঠাই।
ৰাতিতে উঠিয়ে চুৱা চৰু এৰি
বন্ধালে নাও মেলি যাই।

২৯। বাইৰে মৰমে নেজানা ভিনিহি

ঘপৰাই মাৰিলা ভুকু।

বাইৰে সলনি মোকে লই যোঁৱা,

সোণেৰে বন্ধোৱা বুকু ॥

০০। জাতি বাঁহৰ জকাই ঐ নেলাগে ককাই ঐ নেখাওঁ দৰিকণা মাছ। তিৰী মৰা বৰলাত ছোৱালী নৈদিবি কথাৰো নেপালো সাঁচ॥

৩১। কলৈনো গৈছিলি হেৰেই পাণেসই ঘৰতো মুশুনো মাত। কলৈকো যোৱা নাই বুকৰে বহনা বহি বৈ আছিলো তাঁত॥

৩২। পর্বতে পর্বতে বগাব পাৰে। মই লভা বগাবলৈ টান।

> সৰুটী সোনাইকে বুজাব পাৰো মই তোমাক বুজাবলৈ টান।

৩৩। কলৈ যা এলনী কলৈ যা পেলনী মোকে গৰু বাটত থৈ।

কোনোবা মুনিহে ফুচুলাই নিবগৈ কলীয়া ভোমোৰা হৈ।

৪। তোৰে মূৰ চাই ফনীখন গাঁথিলো
লগাই ৰাজলীয়া বেট।
থোপাত পিন্ধিবলৈ আনিছোঁ বহনা,
নিজনি বিলব্বে তেট॥ .



विछ्व नाम।

৩৫। নদীয়ে এৰিলে সাছ ঐ বহনা,

মাছেও এৰিলে নৈ।

গঙ্গা চিলনীয়ে বাহাটো এৰিলে,

বহনাই এৰিলে পৈ।

৩৬। আলি বাট ঘেঁলাতী চাকিফুল পিন্ধতী
কথালৈ নকৰ কাণ॥
মাৰেই তোৰ আছিলে ৰাক্ষত ৰূপ চৰোৱা
ভইনো কিয় হবি আন॥

৩৭। এই ফালে কোন গল বুকৰে ধন গল,
থোজত মাব গল বন।
চকুলৈ চাওঁতে মুখলৈ নেচালে,
কেনেবা লাগি গল মন॥

ত৮। জাকৈয়া জাকৈয়া মূৰতে তক্ষা,
ককালত ওদালৰ ফই।
হেৰা জাকৈয়া, এটি মাছ দি যোৱা,
ৰজাই পতা বৰলা মই॥

৩৯। মাটিৰ নেবাবি খলপা খলপি,
গৰুৰ নেবাবি গাই।

ঘন আনজৰ ছোৱালী নানিবি,
বছেৰেকত একোটা পায়॥

80। হালবাই হালধী ঘঁহিলি মালতী ভৰি মেলি ঘঁহিলি তেল। কচুৱা হাতলৈ নাথাবি মালতী এতাই বেয়া কথাৰ মেল।

8)। হেৰ বগী বাই কলম্পৰ গৰা পাই ৰঙ্গামাটিৰ মাৰিলি ফোট। অজলা লৰাপাই বিহৰাই পেলালি কেইটা সলালি মোট॥

8২। কলীয়া খাগৰি কাট ছেৱ ধৰি,
কুন্দত কাটিলি কেৰু।
বাটলু তিৰুতাক ডাঙ্গৰ যেন দেখিলি,
ভকতক দেখিলি সকু॥

80। ঔ ফুল ফুলিলে জগতে জানিলে,
ঠেকেৰা ফুলিলে ৰাতি।
গাভক আইচু আহিছে ওলাই
যেনে হালধীৰে গাঁখি।

88। আঁঠিয়া কলৰে পাত নেকাটিবা ছিটিকি পৰিব এঠা। লোকক দেখুৱাই কেটেৰাই মাতিবা ভিতৰি নেড়িবা বেথা॥

8৫। আলি ঢাকি পৰিলে শালিকা চড়াইবোৰ
পথাৰ ঢাকি পড়িলে কাইম।
বহাগৰ বিহুতে নাচোঁতে নাচোঁতে
বৈ গল জুকলি ঘাম।

৪৬। আইটা চেনি মাই কাটে সৰু সূতা জঁতৰত মুঘূৰে শলা। ৰচকী গাভৰু ৰসৰ মেল পাতিছে পাবি তাৰ কি তলা নলা॥

89। উজনি ৰাইজতে কান্দে ভীমৰাজে কৈৰাই কান্দিলে স'াঝত। হালৰ গৰু বেছি আনিলো ধনকে চকু চাই নেমাতে লাজত।

৪৮। আমলৈ বুলি মাৰো কৰমুটি কি বুলি তেতেলী সৰে। ভনীজোৱঁ হৈ বুলি ওৰণি টানিলো কি বুলি চুপতি কৰে॥



বিভৰ নাম।

- ৪৯। কাঁহৰে বাটিতো তেক্সেৰাই উঠিলে
 নেজানি বুলিলো কোন।
 আহিব দিছিলো গধূলা পৰতে
 ভটিয়াই গলগৈ জোন।
- ৫০। আমৰে দিনতে
 কঠালৰ দিনতে মুচি।
 গছগছনীয়ে
 কু হি পাত মেলিলে
 ধন গল উজানে গুচি॥
- ৫১। হাতৰে আঙ্গুলী লোহোৰা শুভ্ৰী
 ভৰিৰে আঙ্গুলী ঘন।
 কি খাই মাৰে তাকেনো তুলিলে
 চাই থাকিবৰে মন॥
- ৫২। উলি তামোলৰে পুলি ঐ বহনা উলি তামোলৰ পুলি। তিনি ডাল ছুলিকে বান্ধ তুলি তুলি গৰাকী নেলাগে বুলি॥
- ৫৩। কি খাই তুলিলে লাহৰী মাৰে কি দি বঢ়ালে ছুলি। জাঠিৰ কুড়া যেন লাহৰী ককালটি ঘোড়াৰ ফান যেন ছুলি।
- ৫৪। হাত মেলি মেলি দাবলৈ নেপালো পথাৰৰ মাগুৰি ধান। হাঁচতী ভৰাই দিবলৈ নেপালো আমাৰ পুলি গছৰ পান॥
- ৫৫। চাই চাই বুলিবা বাট ঐ লাহৰী
 চাই চাই বুলিবা বাট।
 দেহৰ ভিতৰতে আছে খালে বাম
 পিচলি পৰিবা তাত॥

> ৫৬। ই নৈত বুৰ মাৰি সি নৈত ওলালে কাৰে পোহনীয়া উদ। মাটি ফুটি ওলাল তবাৰে গজালি

हिया कृषि अलात्न इन ॥

৫৭। হাঁচতি বলোঁ মই শৰাইতে থলোঁ মই উড়ি গল বগলীৰ লগত।

> নেখাই চাৰি সাজি থাকিব পাৰে৷ মই চেনেহৰ ধনৰে সঞ্জ ।

৫৮। পকি নেমু টেকা সবিল ঐ বছনা পকি নেমুটেকা সৰিল। ধিয়াঁওতে ধিয়াঁওতে বাটলৈ চাওঁতে চকুৰে। পৰালি পৰিল।

৫৯। জোনে ওলালে ওলাবি তৰাবল रकानरब मूथरेल हाई। তুমি যে ওলালে ওলাম মই বহনা পঁইতা জকৰা থাই ॥

৬০। জোনৰে সাৰ্থি তৰা ঐ গাভৰু জোনৰে সাৰ্থি তৰা। আমাৰে সাৰথি গাঁৱৰ ডেকা লৰা লৈ যাম হাঁচতী ধৰা ॥

৬১। হাঁতা নো হাঁতা ঐ পৰলা হাঁতা ঐ শু ড় মেলি মলহা থাই। পারকি নেপার ধনক দেখিবলৈ ৰাতি খপিবলৈ যায়॥

৬২। চতাই পৰ্বত , ধুৱ'লী কুৱ'লী কোনে ভাত ৰান্ধি খাই। মাক নাই মাউৰা তিৰী নাই বৰলা हाँजी धविवर्रल याहे ॥



বিভ্ৰ-নাম।

৬০। কলৈ লৰ মাৰি যাবি তই বহনা কলৈ লৰ মাৰি যাবি। কৰবাত কোনোবাই থেঁকেৰু পাতিছে তাতে গৈয়ে বান্ধ্যাবি॥

৬৪। তোমালৈ চাঁওতে ডেওনা ডেও°তে বিক্ষিলে অঘৈয়া হলে।

> তোমাৰ মন খালে আমাৰ মন খালে কি কৰিব জাতি কুলে॥

৬৫। পানীতে বাঢ়িলে পানীৰ কলমৌ তেল পাই বাঢ়িলে ছুলি। মাকৰ ঘৰতে জীয়াৰী বাঢ়িলে যেনে দাম কলৰ পুলি।

৬৬। বগৰীৰ ডালতে কুপতি বিনালে
ঠেও ধৰি বিনালে কুলি।
মাকৰ গলত ধৰি জীয়েকে বিনালে
লাগে লগৰীয়া বুলি।

৬৭। নাচনী ছোৱালাৰ দীঘল ছুলি তাৰি হাঁহে বুঢ়ীমাকে তেল। হালৈকে নেহাঁও মই ততে যে শুনো গৈ নাচনী ছোৱালীৰ মেল।

৬৮। শিমলুৰ লেলেঞ্চা ভাল ঐ বহন।
শিমলুৰ লেলেঞ্চা ভাল।
ছোৱালী লেলেঞ্চা ধোল বছৰীয়া
কোনে নো বুলিব ভাল॥

৬৯। মাকৰী ঘিলাৰে ফাক ঐ বহনা মাকৰী ঘিলাৰে ফাক। জীয়াই থাকোঁ মানে ভোমাকে ধিয়াঁমে • মৰিলে ধিয়াঁমে কাক॥ 00

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

বি হাতৰে থাৰুএ
 হাত মেলি আছিলো চাই।
 তোমাকে আমাকে শুৱাই কি মুশুৱাই
 তাগাপিচা কৰি যাই।

9)। আলি বাটে বাটে মহে লালী পাতে
গুৱাল বা কেহেলৈ গল।
ওদালৰ তলতে নাকী জৰি বাটোতে
মহে বনৰীয়া হল।

9২। ৰাতি পানী খালে হাতী ঐ বহনা,
ৰাতি পানী খালে হাতী ।
তোমাৰ বেহৰূপ ভাবোঁতে চিতোঁতে
টোপনা নাহিলে ৰাতি ॥

৭৩। আমনি ধানকে দাবলৈ গৈছিলো,
বাউলি বতাহে পালে।
কাছি দলি মাৰি হাবিতে সোমালো,
ওঁঠতে বৰলে খালে॥

৭৪। চেনেহৰ চুমায়ে নাকটি ছিক্সিব নাকৰ বৈ যাব তেজ। মাৰে কান্দিব, বাপেৰে কান্দিব ককায়েৰে বিচাৰিব বেজ।

৭৫। ভটিয়াই যাবাগৈ কলবাড়ি পাবাগৈ ছপাই নেকাটিবা পাত। আলহীৰ নিচিনা, খাবা চাউল সিধা কাৰো গাত নিদিবা হাত।

৭৬। গছতে আছিলে মাকৰী ঘিলাটি তলত পৰি পৰি ঘূৰে। ককাল সক সক ছোৱালী নচাবা, উঘা ঘূৰা দৰে- ঘূৰে॥



বিভ্ৰ নাম।

৭৭। লবৰে মন গল, জালি কটা ৰিহা,
হাতেৰে নহলো কাজী।
সোমাবৰ মন গল, বৰে গৰখীয়াত
কপালত নাহিলো সাধি।

৭৮। কলীয়া কলীয়া হলি নে বলীয়া এড়িলি পথাৰৰ কাম। ঘৰৰ মহ গক হেদাক্ষি মেলিলি শুনি ৰক্ষিলীৰে নাম।

৭৯। লাহৰ ছুলি মেলি তেলকো নেপালে।
পাত পাৰি নেপালো ভাত।
বৰে আশা কৰি মইনা পুহিলো
শুনিবলৈ নেপালো মাত॥

৮ । তোকে আনিবৰে মোৰে মন গল তোকে কেনে কৰি পাম। যাবি পানী ঘাটত নিবি ধৰি হাতত ময়ো কান্দি কাটি যাম।

৮১। কাক বাঁহৰ গজালি চিৰি মৰা কটাৰি তুলাব নেপালো দৈ। খাবলৈ নেপালো, এখনি তামোল ঐ লাহৰী হাতৰে লৈ।

৮২। তোমাৰে মৰমত, মৰো মই লাহৰী তোমাৰে মৰমত মৰো। দিনৰে মূৰতে এবাৰ দেখা দিবা তালৈকে কাকৃতি কৰো॥

৮০। হাবিতে গোঁজৰে চেকিয়া পতীয়া জঁতৰত গোঁজৰে শলা। মাছৰ গোন্ধ পাই বিড়লী গোঁজৰে পিন্ধি ভকতীয়া মলা। 20

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

৮৪। বিহুৰে বিৰিক্ষা পাত ঐ বহনা বিহুৰে বিৰিক্ষা পাত। গাভৰু ছোৱালী নাচে জুমে জুমে চতৰ বিহু লাগিছে গাত।

৮৫। কাইমে কুমলীয়া উড়িব নোৱাৰে পাথী গজলীয়া হল। ধনাই কুমলীয়া, বুলিব নোৱাৰে বাটতে টোপনী গল।

১৬। কাৱৈ কাঁঞৰী, খলিহনা বনৰী, গৰৈ এ টোকাৰী বাই। দীঘল দৰিকণা, গলত ঢোল পিন্ধি নাচনী বিচাৰি যাই॥

৮৭। উন্ধনি ৰাইজত বড় কাঁহ বজালে ভাটিতে বজালে ঢোল। ছেক্সেলীয়া লৰা ৰাখিব নোৱাৰি ছিন্দি যায় ওদালৰ দোল।

৮৮। চাই থাকিলেও হাবিলাস নপলাই নেথালে সুগুচে ভোক। যেনে বালী ঘাটৰ ভোলা নো বেক্সেনা দলিয়াই দি যাবি মোক॥

৮৯। শলে ভুমুকিয়াই শালে ভুমুকিয়াই, আৰু ভুমুকিয়াই ছেলা। শহৰৰ পছলীত ধনে ভুমুকিয়াই আচলত লগালে জেলা॥

৯০। ধনে ধেমেলীয়া মোৰ মূন বলিয়া থাকে ঘিলা খেলি বাটত। মোৰ মনৰ কথা কব নোৱাৰিলো ভোমাৰ কেটেৰা মাতত॥



বিতৰ নাম।

৯১। বড়ঘৰৰ মৃধতে কুপৌ কুকলিয়াই সাইলাথ মদনৰ মাত।

খেদি দে খেদি দে অজাতি কৃপৌ ঔ শ্ৰণ খেৰ মাৰিছে গাত॥

৯২। পৰ্বতত স্থগৰী কান্দিলে লাহৰি হৰিণা কান্দিলে বনত।

> ভোমাক নেদেশি, থাকিব নোৱাৰে। মৰি যাওঁ শদিয়া ৰণত ॥

৯৩। চতে মহীয়া বদে চৌএ চৌএ কিনো তুপৰীয়া ভোক।

> তি য়হো নহলি, ছি ৰালো নহলি কেচাই খালোঁহেতেন তোক॥

৯৪। কোৱাই কা নকৰা বিলি ঝ'। নকৰা শদিয়া পাৰৰে আলি।

> কেচায় খাঁও কেচায় খাঁও নকৰা বহনা নহওঁ মই তিয়ঁহৰ জালি।

৯৫। হাঁহ হৈ পৰিম গৈ, তোমাৰে পুণ্ৰিত পাৰ হৈ পৰিম গৈ চালত।

> বীৰা হৈ ধৰিমে তোমাৰ শৰীলত মাখি হৈ চুমা দিম গালত।

৯৬। পৰ্বতত মাৰি যাওঁ ৰান্ধলী হৰিণা পেলাওঁ ভৈয়ামলৈ টানি।

> হাঁহিবৰ ছলেৰে কান্দি পঠিয়ালোঁ চেনাইক পানীঘাটত দেখি ॥

৯৭। ইঘাটে দূৰৰি সিঘাটে দূৰৰি ভোলো কোন ঘাটে পানী।

লাহৰি চেনায়ে যেনি গা ধুলে ভোলোঁ সেই ঘাটে পানী॥ 98

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

৯৮। দিনৰে চিকণ পূৱাৰে বেলিটি ৰাতিৰ চিকণে জোন।

> তাতোকৈ চিকণ মোৰ ঐ লাহৰি থেনে পূৰ্ণিমাহৰ জোন॥

৯৯। লাহি কাপোৰৰ পাহি ঐ মইনা লাহি কাপোৰৰ পাহি।

বুকত দিয়ে গলি জলা জুই একুড়া মুখত দিয়ে গলি হাঁহি॥

১০০। চাউলৰ চিকণ খুদ ঐ লাহৰি চাউলৰ চিকণ খুদ।

ডেকাৰে চিকণ ভৰিৰ কলাফুল গাভকৰ চিকণে ছুদ্॥



নাও খেলোৱা গীত।

(3)

আ মোৰ মলুৱা বে।

মোৰ মলুৱাক কোনে মাৰিলে,

আমোৰ মলুৱা ৰে॥

নেঠা নেঠা কৰে তাই নেঠা আনি দিলেঁ। মই,

নেঠাত ধৰি ধৰি কান্দে আ মোৰ মলুৱা ৰে।

কপাহ কপাহ কৰে তাই কপাহ আনি দিলেঁ। মই,

কপাহছ ধৰি ধৰি কান্দে আ মোৰ মলুৱা ৰে।

যঁতৰ যঁতৰ কৰে তাই যঁতৰ আনি দিলেঁ। মই,

যঁতৰত ধৰি ধৰি কান্দে আ মোৰ মলুৱা ৰে।

শাল শাল কৰে তাই শাল আনি দিলেঁ। মই,

শালত ধৰি ধৰি কান্দে আ মোৰ মলুৱা ৰে।

স্তা সূতা কৰে তাই সূতা আনি দিলেঁ। মই,

সূতাত ধৰি ধৰি কান্দে আ মোৰ মলুৱা ৰে।

সূতা সূতা কৰে তাই সূতা আনি দিলেঁ। মই,

সূতাত ধৰি ধৰি কান্দে আ মোৰ মলুৱা ৰে।

(2)

ৰাম বোল হৰি বোল হে।

যেতিয়া আছিলোঁ মই মাও বাপৰ ঘৰে,
তেতিয়া নগৈলা কেনে লঙ্কাৰ বনিজে হে।
ধনৰ কন্ধাল সাউদ ধনকে কৰা সাৰ
বাপ মাও ধন দিব বলধে উঠিয়া।
বাৰীৰে ভলুকা কাটি নাৱৰ দিলা ছৈ,
নালাগে সাউদ বনিজে যাব যাউক ছোট ভাই।
বাৰীৰ বগৰি কাটি নাৱৰ দিলা গুড়া।
নালাগে সাউদ বনিজে যাব যাউক ছোট ভাই।
নালাগে সাউদ বনিজে যাব যাওক শছৰ বুঢ়া।



মাঝিক দিব টকা টকা গুৰিয়ালক দিব সোণা।
আমাৰ সাউদ বনিজে ধায় সবে দিও মানা।
লীলাবতীৰ কান্দনতে সাউদৰ চাপিল দয়া।
বনিজে নগৈল সাউদ লোকে বুলিবে বেয়া।
লীলাবতীৰ কান্দনতে গর্ভে গ্ৰভ লবে।
কেচা বিৰিখৰ পাত সিও সৰি পৰে।
আমি যাইবো দূৰ দেশে মনে বৈব ধান্দা।
আমাৰ হাতৰ মোহন বাঁশী থৈয়া যাব বান্ধা।
বালিৰ ওপৰ থাইবা ভাত নৌকাৰ ওপৰ শুইবা।
ৰজনি প্ৰভাত হইলে কাৰ মুখ চাইবা।

(0)

কানীয়া ভাই কি কই কি কই বধিলি মোক।
হেৰেই হেৰেই কানীয়া তিৰী, কত গল তোৰ ঘৰৰ গিৰী
মোক এটা আধলি দিবা আছে।
ধনী আহিবৰ বাতৰি পাই বেড়া ভাঙ্গি লৰ দেয়
গড়খাইত পৰি কেঁকো জেঁকো কৰে।
কানি খাওঁতে কানি খাওঁতে ৰাটি গল বেচা।
কানীয়াৰ ঘৰত নাই ঘৰ মোচা লেচা।
ভগাই নিলা ভগাই নিলা লগাই নিলা লোটা,
কানীয়াৰ ভাগত পৰিল গৈ ঢেঁকীখোৰা এটা।

(8)

কানাই পাৰ কৰ ৰে, বেলিৰ দিকি চাৱা।
নক্ট হৈল ছধেৰ ভাণ্ডাৰ বাজাৰ গৈল বৈয়া।
কাঠৰ দেশত থাকা কাঠৰ কিবা ছখ।
ভঙ্গা নৌকাত পাৰ কৰি কিবা পোৱা স্থখ।
ভাঙ্গা নহয় ছিপ্পা নহয় গামেৰীৰে সাৰ।
হাতী খৌড়া পাৰ কৰোঁ বাধাৰ কিমান ভাৰ॥
নালাগে তোহাৰ কড়ি নকৰো মই পাৰ।
জক্ম ঘাটে গৈয়া ৰাধা হৈয়ো তৃমি পাৰ॥



নাওখেলোরা গীত।

অন্য ৰাধাক পাৰ কৰিলে লৈবোঁ আনা আনা। ভয় ৰাধাক পাৰ কৰিলে লৈবোঁ কাণৰ সোণা।

(a)

এ বিনন্দ বাঁশী ৰাধা ৰাধা বুলি ডাকাছে।
হালে মৰিল হালোৱা গক, পথাৰে মৰিল গাই।
পানী খাওঁতে ডমৰা মৰিল কটি ঠেকচা খাই।
চালে মৰিল চাল কুমুবা বেৰাই মৰিল পুঁই।
দেশৰ বন্ধু দেশে গৈলা বুকে দিয়া জুই॥
এ বিনন্দ বাঁশী ৰাধা ৰাধা বুলি ডাকাছে।

(6)

আবেলি বেলিক। বানে বৰপুণে সাতো সাগৰৰে ৰেৱা।

পাৰোনে নোৱাৰো ভাৰসা কৰিলো, দিলো সাগৰতে খেৱা ॥

নাও শালে কাঠৰ, থোৰালি মহুৰা, শিলা দিলে ভাতে ভৰা।

থাউনি পানা এড়ি, এথাউনিত পড়িলো, প্ৰভু হাতে মেলি ধৰা।



ৰাৰমাহী পীত।

(क) মধুমতীৰ গীত।

অঘোণৰ মাহতে নাকাটিলা পাত। খাবলৈ নাপালা প্ৰভু নৱান ধানৰ ভাত॥ আঘোণৰ মাহতে নাৰীৰ উতপতি। হাতত তমুৰা লৈ নামিল সৰস্বতী॥

পুহৰ মাহত পূৰণৰ জীয়াৰী। স্বামীসবে ভক্তি কৰে ভাগ্যৱতা নাৰী॥

মাধৰ মাহতে ধৰমৰ তিথি।
ডাক দালিম শ্ৰীফল খাইতে নেদে বিধি ॥
তুলি পাৰে গাৰু পাৰে আতি বিপৰিত।
তাতে বহি মধুমতী জুৰিলেক গীত ॥
তুলি পাৰে গাৰু পাৰে সোণৰ সিংহাসন।
তাতে বহি মধুমতী জুৰিলা ক্ৰন্দন॥

ফাগুণৰ মাহত ফান্তৰ বাতৰি।
দেউলৰ ওপৰত দেউল তুলিয়া মগৰি॥
তাৰ ওপৰত নাগপাশ জৰি।
ধৰণীত পৰি কান্দে সুমৰি সুমৰি॥
সকল সাউদে ফাগু মাৰে ৰান্ধি ভাত খাই।
মই নাৰী অভাগিনী থাকোঁ পৰৰ মুখ চাই॥
বনৰ বমুৱা পথী সিও থাকে জোৰে।
মই অভাগিনী থাকো অকলশৰে॥
বনৰ বমুৱা পথী সিও বান্ধে বাহা ঘৰ।
মই নাৰী অভাগিনী থাকো অকলশৰ॥



বাৰমাহী গীত।

তিতৰ মাহত পকি সৰে বেল।
সেই বেল লৈ স্বামী বনিজক গেল।
বনিজক গৈ স্বামী কিবা পালে নিধি।
ডাক দালিম শ্রীফল খাইতে নেদে বিধি।

বৈহাগৰ মাহত ডাউকী কান্দয়। ডাউকীৰ কান্দন শুনি হৃদয় নসহয়॥ বৈহাগৰ মাহত কুলিয়ে কৰে ৰাৱ। কলিৰ কান্দন শুনি মুজুবাই গাৱ॥ জেঠৰ মাহত আবৈ ধানৰ বাবা। ডাউকীৰ কান্দন শুনি শৰীৰ ভৈল। স্থৰা॥ জেঠৰ মাহতে জেঠৰ বাবে খৰ। যাকে বোলো আপোন আপোন সেয়ে হয় পৰ। আষাত্ৰ মাহত আহৰে আহু ধান। নদী নলা ভাহি যায় সিও এটা বান॥ খেতিয়াৰ লোকে পাৰিছে কঠিয়া। এৰি গল প্ৰাণ স্বামী আহিব কেতিয়া॥ আহকে বহকে স্বামী দেখোঁ চান্দ মুখ। হেৰা গুচক মোৰ জনমৰ তুখ। শাওণৰ মাহত ৰোৱনৰ দিন। খাব নাপালে পুৰুষৰ ৰস হয় হীন॥ किवा थाला किवा लाला किवा करब मरन। গলত কটাৰি দি তেজিম পৰাণে॥ ভাদৰ মাহত শীতৰ খবালি।

ভাদৰ মাহত শীতৰ খবালি।
নদীনলা গুকাই গল পৰিল ঢৌৱা বালি॥
কোঢ়া ৰাৱে কুঢ়ী ৰাৱে ৰাৱে ৰাজ হাঁহ।
হেলায় খোৱালো মই বাৰিষা ছয় মাহ॥
আহিনৰ মাহত তুলদীৰ গোৰে চাতি।
বিধবা ব্ৰাহ্মণী পূজে হাতে লৈয়া বাতি॥

8.

ু অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

আহিনৰ মাহতে দেবীৰ অফ্টমী হাঁহ কাটে পাঠা কাটে পাৰ জাকে জাক। যতে আছে প্ৰাণস্বামী তৈতে ভালে থাক॥

কাতিৰ মাহত ওলাল ন শালীৰ থোৰ।
বাৰ মাহৰ তেৰ গীত গাই কৈলো ওৰ ॥
বাৰে মাহৰ তেৰ গীত লওৰে গণিয়া।
তাকে বৰ্ণাই কান্দে মধুমতী কন্যা॥
বাৰ মাহৰ তেৰ গীত মাহে মাহে তিপি।
গাওঁতাৰ খণ্ডে পাপ, শুকুতাৰ মুকুতি॥

(খ) কন্যা বাৰ মাহী।

আঘোণৰ মাহতে কন্তা সংসাৰে নৱান ধান।
কতেক থাইতে মধু কতেক পুৰাণ॥
যাৰ সঙ্গে প্ৰিয়া আছে ৰান্ধি ভাত থায়।
আমাৰ সঙ্গে প্ৰিয়া নাই (থাকিম) পৰেৰ মুখ চাই॥
আগ বাঢ়ি লোৱা কন্তা সাতসৰি হাৰ।
তুই বাহুত তুলি দিম সোণাৰ ঝাম্প টাৰ॥
কাণ চাই দিম কন্তা হীৰাৰ মদনকড়ি।
ককাল চাই দিম কন্তা ভাৰিৰে নেপুৰ।
কপাল চাই দিম কন্তা ভিৰিৰে নেপুৰ।

পৌষৰ মাসতে কন্মা পুষ্পে অধিকাৰী। স্বামীত ভকতি কৰে ভাগ্যৱতী নাৰী॥ ভাগ্যৱতী নাৰী যিতো সাক্ষল জীবন। স্বামী হেন ধন নাই ই তিনি ভূবন॥



বাৰমাহী গীত।

মাঘৰ মাসতে কন্সাৰ হৈল চাৰি মাস,
তিনি দেশৰ সাউদ আহি লগাইলা মাত।
চাউল দেওঁ পাতিল দেওঁ ৰান্ধি খোৱঁ। ভাত,
ভাল ভাল দাসী দেওঁ চুৱা ফেলাইবাক।
টৌ দেওঁ জান্তি দেওঁ বালুত মাজিয়া,
ভোগ ধানৰ চাউল দেওঁ হুধত পথালিয়া।
ভাত কল্পালী নহওঁ কন্সা ভাত ৰান্ধি খাম,
ধনৰ কল্পালী নহওঁ কন্সা ধন লৈয়া যাম।

ফাগুণৰ মাদতে কন্যা বসন্তৰে কাল,
জাই যৃতি ফুলে ফুল বেলি তৰুৱাল।
জাই যৃতি ফুটে ফুল তপত নয়ান,
জাই যৃতি ফুলে ফুল খোপাতে ফুলাম।
ফাগুণৰ মাসতে পাই মনে বৰি ছখ,
স্থামীৰ কটিত ভুকা কেনে ভপুৱা কুকুৰ।
কুকুৰ ভুকিলেৰে গিৰুস্থে পাইব সাৰি,
তেখনে বুলিব আমাক পুৰুষ বধা নাৰী।

চৈতৰ মাসতে কলা চতুৰ দিশে মন,
বিলাওৰে বিলাওৰে কলা নৱান যৌবন।
খাওৰে কলা কৰ্প্ৰ ভাস্থল বাঢ়োক পিৰীতি,
শুচাও মনৰ কৈটব মাগিছোঁ স্থৰতি।
কি বিলাইবো কি বিলাইবো সাউদৰ নন্দন,
কাঠেৰে বান্ধিছো হিয়া সুভোলাইবো মন।
শাশুৰী তুলালী কলা স্বামীত পৰাণ,
পৰ পুৰুষক দেখোঁ বাপ ভাই সমান।
সাউদ বোলোঁ সদাগৰ বোলোঁ ভাই ভোমাকে,
ধৰমক চিস্তি তুমি যোৱাঁ ৰাজপথে।

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

বৈসাধৰ মাসতে কল্যা কল্যা পছমিনী,
চন্দনে চিটিকা দিয়া ভূপাৰৰ পানী।
ভূপাৰৰ পানী নোহে উত্তম গলাজল,
বাড়ি ভৰি আছে আমাৰ ডাব নাৰিকল।
আতালত আছে আমাৰ শুকান নাৰিকল,
লাৰিতে চাৰিতে দাসীৰ ককাল দুখাল।
গোহাল ভৰি আছে আমাৰ সাত পাঞ্চ গাই,
দৈ দুধ মৃত মধু ঘিণতে নাখাই।
সাউদ বোলোঁ। সদাগৰ বোলোঁ। ভাই তোমাকে,
ধৰমক চিশ্তি ভূমি যোৱা। ৰাজপথে।

জেঠৰ মাসতে কন্সা ভৰিয়া উঠে বান,
কোন দেশৰ সাউদ তুমি কিবা তোমাৰ নাম।
কোন দেশে থাকা সাউদ কোন দেশে ঘৰ,
কি নাম তোমাৰ মাৰ আবুৰ কি নাম বাপৰ।
বাপৰ নাম বিশ্বৰণ মাৱৰ নাম বায়াল,
জীৱ গুৰু দিছে নাম নাম তাৰ গাৱৰ।

আষাতৃ মাসতে কন্মা আহকরা বাতি,
তোমাৰ স্বামী কাটা গৈছে কাঞ্চন পুৰৰ ভাখি।
নাযাইছে নাযাইছে কাটা আমাৰ টিকৰ পতি,
আউলিল হয় মাথাৰ ছুলি ছিন্দিল হয় বজ্ৰ মুঠি।
হাতৰ দুই মুঠি শাখা ভান্দি হল হয় চুৰ,
মোলান পৰিল হয় মোৰ কপালৰ সিন্দুৰ।

শাওণৰ মাসতে কন্সা শাওণীয়া ৰাতি, আজি ৰাতি কন্সা মই ভুঞ্জিবো স্থৰতি।



বাৰমাহী গীত।

আজি ৰাতি চোৰ মই যাকে লাগল পাওঁ,
হাতে গলে বান্ধি তাকে ৰাজঘৰে পথাওঁ।
চাৰি ফালে ৰাখি থম পহৰী চাৰিটি,
ছৱাৰ মুখত বান্ধি থম মন্ত গজহাতী।
শিথানে পৈথানে লগাম স্তৰ পাক্ষ বাতি,
তীক্ষ খাণ্ডা হাতে ধৰি জাগিম চৌপৰ ৰাতি।
দাবৰি মাৰিম কল্মা মন্ত গজ হাতী,
থাপ দি কুমাম কল্মা স্বতৰ পাক্ষ বাতি।
চটকি মাৰিম কল্মা ই পালি প্ৰহৰী,
তীক্ষ খাণ্ডা ভাঙ্কিম কল্মা মই টিপামাৰি।

ভাদৰ মাসতে কন্মা মাসৰ পৰিল শেষ,
হাসি খেলি বিদায় দিয়া যাওঁ নিজ দেশ।
তুমি হলা ভিন পুৰুষ আমি ভিন নাৰী,
বাপৰ শকতি নাই বিদায় দিতে পাৰি।
আমি ভিন নাৰী সাউদ নাভাবিবি আন,
আপোনাৰ দোষে সাউদ হাৰাইবি প্ৰাণ।
বাপ বোলো ভাই বোলো সাউদ তোমাকে,
ধৰমক চিন্তি তুমি যোৱা ৰাজপথে।

আহিনৰ মাহতে কথা নিৰমল ৰাতি,
পৰ পুৰুষ নোহোঁ কথা তোৰ টিকৰ পতি।
পৰ পুৰুষ নোহাঁ যদি আপুন ঈশ্বৰে,
খানিক ৰহিয়া থাকা ডিপ্লাৰ উপৰে।
সোণাৰ বাটায় গুৱাপান জাৰি ভৰা পানী,
ধীৰে ধীৰে গেল কথা বাপৰ বিভ্যমানি।
কাৰ খাইছা গুৱাপান কাক দিছা বিয়া।
ছই মুই ভোমাৰ জোঁৱাই লওৰে চিনিয়া।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

সোণাৰ বাটায় গুৱাপান জাৰি ভৰা পানী,
ধীৰে ধীৰে আসিল খণ্ডৰ জোঁৱাই বিছ্যমানি।
কোন চহৰে থাকা বাপু কোন চহৰে ঘৰ,
আইৰ নাম কমলমালা বাপা ধনেশ্বৰ।
শিশুকালত বিয়া কৰাইছো মাণিক সদাগৰ,
নানান আড়ম্বৰে আসিছিলোঁ। তোমাৰ ঘৰ।
ব্ৰাহ্মণ সজ্জনক আনি জিজ্ঞাস কৰি চাৱা,
প্ৰথম কাতি মাসে আমাক দিছাঁ। বিয়া।
প্ৰদীপ লগাই কন্যা ঘাটৰ কুলে যাই,
স্বামী স্বামী বুলি কন্যা চৰণ ধুৱাই।
চৰণ ধুৱাই কন্যা মাগি লৈয়া বৰ,
স্বামীক বেঢ়িয়া নিলা মন্দিৰ ভিতৰ।

কাতিৰ মাসতে কন্যা কাতিয়ান ধানৰ থোৰ, ৰাৰ মাসৰ তেৰ গীত গাইয়া নাপাও ওৰ । বাৰ মাসৰ তেৰ গীত লওৰে গণিয়া, ইতো গীত গাইছে কোন জয়ধন বনিয়া। জয়ধন বনিয়া নোহে শ্ৰীধৰৰ বাপ। গাওঁতাৰ মুক্তি হোৱে শুনাৰ খণ্ডে পাপ।



পাৰ লীয়া গীত।

(क) कूल दर्काक्षर।

মাছৰ কুমলীয়া শল।

দিন তুপৰিয়া,

মাউৰা কোঞৰে

वूढ़ोमाकव छिबिटेल गल ॥

পোৱালা হাতীৰে শুঁড়।

বুঢ়ীমাকৰ গুৰিতে, বহি ফুল কোঞৰ,

उलरेल कबिरल मृब॥

কি খড়ি পুৰিব চোৱা।

(करहरेल कान्मिहा नां क्रियलीया

ছখৰে বাতৰি কোৱা।

किছू मृद्य छात्र,

বুঢ়ীযে মাককে

নামাতি আছিলে চাই।

লুইতে উজালে, দিহীকে ভটিয়াই,

নিশ্মল ডুবিতে যায়।

মনেকৈ উজালে, চিতেকৈ ভটিয়াই,

তৃখৰে বাতৰি কথা।

कित्ना देकरम याम, कित्ना छनि यावि

মনতে লাগিব বেথা।

আইনো মোৰ আছিলে, ধনে পাঁচতুলি,

বোপাই মালিনীৰে নাতি।

তাৱৰ কাপোৰক, ঘিণত নিপিন্ধিলো,

এতিয়া ফটা লাং গাঠি॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

কবৰ শুনিছো, বোপাই মণিকোঞৰ, চকুৰে নেপালো দেখি।

× × × × ×

বোপাইক লৈ গল, শুকুলা হাতীয়ে,

পাতে আপোন দেশত ৰজা।

আইক লৈ গল সাউদৰ মুদৈএ,

থাকে নাও গাতৰ পজা।

পোৱালা হাতীৰে শুড়।

সেই নো কথা শুনি কাচঁন কুঞৰীয়ে, তললৈ কৰিলে মূব।

ভেকুৰী নোথোকে থোক।

বাপেৰ নৰকীয়ে, ইয়াতে এড়িলে মাউৰা কৰিলে তোক।

ফুলতে মাউৰা হলি ফুলে কোঞৰ কি খুৱাই তুলিম তোক।

ভৰুণ হাট পাতিলো, বেহাবলৈ নেপালো, বিধতায় দড়িঁলে মোক॥

চড়াএ খাবৰে ধান মোৰ বোপাই উফৰি পৰিবৰ কণ।

আতি চেনেহৰ বড়কলা নগৰত গজিছে দূবৰি বন ॥

সেইনো যে বুলিয়ে কাচঁন কুঞৰীএ, মুখতে ফুৰালে হাত।

মূৰত হাত দিএ কান্দিব ধৰিলে, চকুএ নেদেখে বাট।

হাই দি ভুলিবৰ লাই।

কালৰ কথা আহি মনত পড়িছে, তথ যে নকৰা আই ৷ '



গার লীয়া গীত।

বোপাইক নেদেখি গাকে সু**জু**ৰাই, গাতে লাগিছে জুই।

× × × × ×
কিমান কলীয়া হওঁনো বুঢ়ী আই

কিমান কলীয়া হওঁ।

বোপাইকে নেদেখি, গাকে সুজুৰাই ভাটিলৈ ভটিয়াই যাওঁ॥

উজাই চৰিবৰে, শিহুকৈ ঘঁড়িয়াল ভটিয়াই চৰিবৰ গেঠু।

ছখৰ কথা কৈ, ফুলৰ কোঞৰে, বুঢ়ীমাকক ললে আঠু।

লাফ মাৰি আনিলে, ডেফা গছৰ তামোল, মৈ পাৰি আনিলে পান।

মূৰৰ ছুলী ছিন্সি, আশীৰ্বাদ কৰিলে তাৰ যেন হওক কইলান।

কমাৰে সাজিলে লোহাৰ শল মাছ, কামি কাটি খুৱালে কাঠি।

ডিন্সিৰ হাইঠা মণি, চকুত খুৱালে, নেগুৰে মাৰিলে ছাটি॥

জাপ মাৰি উঠি, বাঢ়ৈ কণা কৰি, পুথুৰীত পৰিল গৈ।

দেও মাৰি গল, লোহাৰ শল মাছ পোনাও মেলিলে গৈ॥

দেৱে যে মানিছে বুঢ়া বিচুকৰম, নৰ মনিচলৈ কি।

বাঢ়ৈএ মানিছে, বুঢ়া বিচুকৰম শুকাণ শীঠাগুড়ি দি ॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

মানিবি মানিবি, বুঢ়া বিচুকৰম, দেৱলৈ সাজিলে পুৰি।

আকাশে পাতালে, লস্তি ৰাখিছে, মাজওনো ৰাখিলে কি ।

সৰগৰ ওপৰত, সৰগ তুলি তুলি, সাজিলে সাত তাল সৰগ।

সাতোটা ঘোঁড়াৰে সূৰ্যে ৰথ ডকাই, পোহৰ দি ৰাখিছে নৰক ॥

দিন যে ৰাভি ঐ, ছই বাই ভনী, কাৰনো পেটৰে জী।

মানিবা মানিবা বুঢ়া বিচুক্ৰম নেমানি কৰিবা কি॥

কদম কুঞৰী, বনৰে বাবৰী, ফুলে জকমক কৰে।

বাঢ়ৈএ সাজিলে, কাঠৰ পথী ঘোঁড়ো, আকাশে উড়াৱত কৰে॥

চকুতে ভৰালে, জুইৰে আঞ্চণি, নাকত বলি যায় ধোঞা।

নেজৰ ছাটিতে বিজুলী সচাঁৰে, কৰিলে আলাসত ৰোৱা।

হালৰে এ হাতী, সূক্ষৰে নাতি, তেজে চিকি মিকি কৰে।

নিৰ্পতি ৰজায়ে, ঘনাই মাত লগালে, ইয়াত কোন উঠিব পাৰে।

কদম কুঞৰী, বনৰে বাবৰী, ফুলি জকমকে হল।

সেই কথা শুনি, নমি ফুল কোঞৰে পথী খোঁড়াত উঠিব গল ॥



গাৱঁ লীয়া গীত।

উঠিবা উঠিবা কাঠৰ পথীৰ্ঘোড়া

আকাশে উড়াৱত কৰি।

ভোমাকে বুলি যাওঁ জীউৰ ফুলে কোঞৰ,

পাচলৈ নেছাবা ফিৰি।

মোৰে বধে চোৱে লাহৰী কোঞৰ ঐ

८नहावा शहरेल कि ब ।

গুৰুৰ দোষে চুব বিঘিনি মিলিব

ঘৰলৈ নাহিবা ঘূৰি ৷

নেজৰ চাটি মাৰি উড়িবি পথীৰাক

মুখেৰে মাতিবি চিঁউ।

জানিবি জানিবি কঠিৰ পখী ঘোঁড়া

ভোৰে মোৰে একেটি জীউ॥

তোকে বুলি যাওঁ কঠিৰ পশ্বী ঘোঁড়া

উহুৱাই খুৱাই যাওঁ মাহ।

আকাশে পতালে উড়াৱত কৰিবি

তোৰে মোৰে একেটি সাহ॥

কাঠৰ পথী ঘোঁড়াত উঠে ফুল কোঞৰে

মাৰি যায় চাবুকৰ চাট।

আকাশে পতালে উড়াৱত কৰিলে

আলাসত কৰিলে বাট॥

দেও দি এড়ালে দেও দনিকণা

লুটি দি এড়ালে শল।

নগৰ সাত পাক ঘূৰি পখী ঘোঁড়া

চমাহৰ বাটলৈ গল ॥

কাঠৰ পথী ঘোঁড়া পাই ফুল কোঞৰ

পিতাকৰ দেশকে এড়ে।

मनिट्र नम्दन दम्द्व नम्दन

विक्लो मकार्य हरन।

ক অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

বিধিয়ে বিছিলে কপালত লিখিলে সাইধ কাৰ একৱাই।

কিমান বাট আহিলো বুলি ফুল কোঞৰ ঘূৰি পাচ কালে চাই ॥

গুৰুৰ দোষে চুলে ঠনৰাই ছিগিলে ধোঁড়াৰে এখনি পাখী।

দেৱে নেৰাখিলে মনিচে নেৰাখে কাঠৰ পখী ঘোঁড়া সাখী ॥

কাঠৰ পথী ঘোঁড়া জেউতি চৰিলে উড়ি যাওঁ উড়ি যাওঁ কৰে।

চমাহৰ বাটকে গল একে দিনে মালিনীৰ বাড়ীতে পৰে।

কাঠৰ পখী ঘোঁড়া এড়ি ফুল কোঞৰে ভৰিৰে মাৰিলে টিপা।

সেউতী মালতী টগৰ গুটিমালী - সবেও ধৰিলে শিপা॥

কাঠৰ পথী খোঁড়া এড়ি ফুল কোঞৰে মুখেৰে বজালে শুখা।

সেউতী মালতী টগৰ গুটিমালী সবেও ধৰিলে পোথা ঃ

কাঠৰ পথী ঘোঁড়া এড়ি ফুল কোঞৰে সবালৈ মাৰিলে শাল।

সেউতী মালতী টগৰ গুটিমালী সবেও মেলিলে ডাল ॥

কাঠৰ পথী ঘোঁড়া এড়ি ফুল কোঞৰে সবালৈ মাৰিলে দলি।

সেউতী মালতী টগৰ গুটিমালী সবেও পেলালৈ কলি ॥



গার লীয়া গীত।

কাঠৰ পথা ঘোঁড়া এড়ি কু**ল কোঞৰে** সবালৈ মাৰিলে শূল।

সেউতী মালতী টগৰ গুটিমালী

সবেও মেলিলে ফুল ॥

ফুলনি বাড়ীতে ফুৰে ফুল কোঞৰে ইপাহি সিপাহি লেখি।

বাটৰ বাটকৱাই কৰে হৰি হৰি ফুলৰ ভিৰিবিৰি দেখি॥

ই বোলে মালিনী সি বোলে মালিনী তোৰ দশা ভাল হল।

বাৰে বছৰীয়া শুকান ফুলনি ফুলি তমস্বাৰ হল ॥

ই বোলে মালিনী সি বোলে মালিনী তোৰে দশা ভালে হল।

ফুলৰ মলা গাঁথি কাৰেক্সত যোগাবি ধনেৰে বান্ধিবি দল॥

মাৰৰ মূৰে থাঁইতী মোৰে মূৰে থাঁইতী শুনালি কিনো বাতৰি।

ফুল যে মৰিবৰ হলে বাৰ বছৰ হালোৱাই লুড়ি গল খৰি॥

বোৱাৰী জীয়াৰী হাঁহে খিলি খিলি মালিনীৰ ফুলনি চাই।

ভোমোৰাই গোঁজৰে ফুলৰে ওপৰে চৰহি ফুলৰ মৌ খাই ৷

থাকিব নোৱাৰি দিজাই বাই মালিনী ভাততে আঁকুছি ধৰে॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

চোতালৰ আগৰে গোলাপ ফুলে জুপি গোন্ধতে আমোল মোল কৰে। মালিনীক দেখি জীয়াৰী বোৱাৰী

সবে খিলি খিলি হাঁহে।

ইফালে সিফালে চাওঁতে চিতোতে

পৰিল কোঞৰত চকু।

দেওনে মনিচ বুজিব নোৱাৰি ললে কোঞৰত আঁঠু ॥

মোৰ নাও মালিনী দিজাই শাঁখিনী ফুলনি পৰিছিল জয়।

ভৌমাৰ চাঁতে পাই উঠিল ঠনে ধৰি কিনো ভাইগ কৰিলো মই ॥

कित्न। पि स्थिम महे पिकाह भौथिनी कित्न। पि स्थितम महे।

কোন পোৱাঁতীৰ বুক্ জুৰ কৰিলা কাৰ পাপ কৰিলা খয় ॥

কোননো গোসাঞে এনে হেন কৰি সাঁচতে মাৰিলে ভোক।

যতে চকু দিয়াঁ ততে চকু ৰয়, গুচি যায় পিয়াহে ভোক।

দেও নহঁও মই, দানৱে। নহঁও মই নহও মই সৰগৰ তৰা।

হও নৰে মনিচ, নাও ফুল কোঞৰ, আহিছো এদেশৰ পৰা॥

তোকে নো বুলি যাও, দিজাই মালিনী সমন্ধত বুলি যাও আই।

পেটে আঁতে লাগি, মাতিব নোৱাৰো তিনি সাজ প্লেটত ভাত নাই ॥



গাৱঁ লীয়া গীত।

পিড়া পাৰি দিলে, পাও পথালিলে ছুলিৰে মছিলে ভৰি।

খাবলৈ দিলেহি, চিৰা মথা দৈ মজিয়াত খৰধৰ কৰি॥

খাই বৈ কোঞৰে, মৃহদি কৰিলে, পাটীদৈৰ ধৰাতে বহি।

ফুলৰে কৰণি, আগতলৈ মালিনী গাঁথিছে মালা ৰূপহী।

কালৈ নো গুঁথিছা, ফুলে আই মালিনী, কালৈ নো গুঁথিছা ফুল।

খোপালৈ এধাৰা ডিঙ্গিৰ তিনি ধাৰী পিন্ধোভাৰ নেজানো কুল।

বকুলৰ এধাৰী, টগৰ তিনি ধাৰী মালতীৰ এধাৰী সিম।

নিৰ্পতি ৰজাৰে আলাসৰ জীয়ৰী, ধনেপাঁচেতুলীক দিম ॥

তোকে বুলি যাও দিজাই আই মালিনী, তোৰে মোৰে একেটী জিউ।

খহুৱা মহুৱা, নাতি কুমলীয়া, এধাৰি মলাকে দিও॥

ধনেপাঁচতুলীক, দিবি আই মালিনা ফুলতে ফুল দি সিও।

থছরা মহুরা, নাতি কুমলীয়া এধা**ৰী** মলাকে দিও।

কি কৱ নাতি ঐ ঠানুৱা কোঞৰ ঐ কি কৈনো গুঁথিবি ফুল।

নিৰ্পতি ৰজায়ে, জানিব পাৰিলে, ভোৰে মোৰে একে ডাল শূল ॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

তোকে বুলি যাঁও দিজাই মালিনী সমস্কত বুলি যাঁও আই।

ঢাপৰ কাণ কটা সিজু আই মালিনী, ঢাপৰ কাণকটা সিজু।

সেই মলা ধাৰা, দিবা পাঁচতুলীক, খোপাতে খাই যাব ৰিজু ৷

পিছলি পৰিবৰ কাঁহী ।

বাগৰি পৰিবৰ কাঁহী।

এই ধাৰী মলাকে দিবা পাঁচতুলীক মিচিকাই পেলাব হাঁহি

ফুলকে গুণিলে ফুলতে লিখিলে, ফুলতে বাতৰি দিলে।

দিজাই মালিনীয়ে, গুঁথি থাকোঁতেই কোঞৰে কৰণতি থলে।

মালা লৈ মালিনা, গল নগৰলৈ চাপিল পাঁচেতুলীৰ পাশ।

ভেটিলে কৰণি আঁঠুলৈ মালিনী চৌভিতি ফুলৰে বাস ॥

আন দিনা মালা এধাৰী ছুধাৰী ফুলতো গোকভাপ নাই।

আজি যে মালিনী ফুলৰে কৰণি গোন্ধতে আমোল মোলাই॥

এড়িলি চুবুৰি বাটত হল দূবৰি নদীয়ে এড়িলে কুল।

তোকে বুলি যাওঁ দিজাই মালিনা কোনে গুঁথিছিল ফুল।



গার্ব লীয়া গীত।

চাঁদ সৃকজলৈ চাবি বাই মালিনী চাঁদ সৃকজলৈ চাবি।

বটায়া নোহোৱা মালতীৰে মলা কোনে গু'থিছিলে কবি ॥

খহুৱা মহুৱা তাছে নাতি লৰা সেয়ে গু°িথ দিলে মালা।

হাকে। মুশুনিলে বাধা নামানিলে আত্তকাল লগালে ভালা॥

ঢাপৰ কাণ কট। সিজু ঐ মালিনী ঢাপৰ কাণ কটা সিজু।

খোপাৰ মলা ধাৰী পিন্ধিব খোজোতে খোপাত খাই গল ৰিজু ॥

উভালি তুলিবৰ কচু ঐ মালিনী উভালি তুলিবৰ কচু।

বুকৰ মলাধাৰী পিক্ষিব খোজোতে পড়িল আখৰতে চকু ॥

"কেলৈ ফুলিলি কপহী মদাৰে কেলৈ পেলালি কলি।

গুৰুতো নেলাগ গোসাঞিতো নেলাগ থাক তলে ভবি সৰি ॥"

তাও কাপোৰৰে গাঁঠি ঐ মালিনী তাও কাপোৰৰে গাঁঠি।

তই বিঐ <u>বাজী</u> জীয়েৰ কাঠ <u>বাজী</u> কত পালি কুমলীয়া নাতি॥

চাঁদ সূৰজলৈ চাবি ঐ মালিনী চাঁদ সূৰজলৈ চাবি।

গৈছে ছুই কাল আছে যে একাল সইত সইত কথা কবি॥



অসমায়। সাহিত্যৰ চানেকি।

কলেও কটা যায় নকলেও নেড়ে পাঁচতুলী কোটোহাৰ গাঁঠি।

কলে ভাঙ্গি পাতি সকলো বাতৰি কেনেকৈ কোঞৰ হল নাতি॥

চাঁদ সূকজলৈ চাবি ঐ মালিনী চাঁদ সূকজলৈ চাবি।

খহুরা মহুরা
সেনকালে পঠিয়াই দিবি॥

ৰজাৰে নগৰ খান চাৰিকৈ চুকীয়া হেজাৰী বৰুৱাই ৰখে।

চড়াই চিড়িকটি পশিব নোৱাৰে কোঞৰনো কেনেকৈ পশে।

কান্দি ফুৰিমে কভো নেপামে স্থ ।

আও মৰণেৰে মাৰিলি মালিনী এতিয়া নেচাৱ মুখ ॥

তোকে বুলি যাও দিজাই বাই মালিনী কিয় আনিছিলি মালা।

বেল হৈ আহিলি সাপ হৈ খুটিলি ভাল বুকত দিলি জালা।

ওলাই মাৰ গলে থুপী থুপী তৰা আকাশৰ নেজালী তৰা।

কতেক ৰঙ্গে চাই থাক বাই মালিনী কোঞৰক পাউনি কৰা॥

লাটিম বৰুৱাৰে চাটিম বাই মালিনী লাটিম বৰুৱাৰে চাটিম।

কোঞৰক নিদিলে তিনি সইত খাইছোঁ। তোৰে নাকে ছুলি কাটিম ॥



গার লীয়া গীত।

আগলৈ নেচালো পিচলৈ নেচালো কুঞৰীক বাতৰা কলো।

যদি হে কোঞৰক নানিমে এতিয়া নিগমে তললৈ গলোঁ।

ৰজাৰ নগৰে দেখি দৰ লাগে কেঁকোৰা কেঁকুৰী গড়।

হেজাৰী বৰুৱাৰ হাতে আগম নিগম কোনে পাব তাবে থব॥

থৈয়ে কি অথৈয়ে থৈ এ ৰখীয়া থৈয়ে কি অথৈয়ে থৈ। পাঁচতুলীৰ নগৰ সোমাল ফুলে কোঞৰ কালিন্দী ভোমোৰা হৈ॥

(থ) মণি কোঞৰ।

শক্ষল দেৱ ৰজাৰে পুতেক মণি কোঞৰ কিছুত খতি খনে নাই। এবেলা দোলাতে এবেলা ঘোঁড়াতে এবেলা সেনৰ ৰং চাই॥

আন কাল পতি ঘোঁড়া চেকুৰাই
নগৰৰ চোমেৰে ঘূৰে।
আজি কোঞৰৰ ঘোঁড়াই গা ঘেলাইছে
কাচনৰ পধূলী মূৰে॥

মন্ত্ৰীৰ জীয়েক কাঞ্চন কুঞৰী দাৰ বান্ধি মেলাওঁতে ছুলি। সোণৰ ফনিয়েৰে মূৰ ফনিয়াওঁতে কোঞৰৰ নিলে মন হৰি।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

ষোঁড়া ওলোটালে সেনৰ ৰং নেচালে সোনাবৰ তামূলীক পাই।

পৰলা ঘোঁড়াটি বাটতে সপি দি পড়িল ৰোহ ঘৰত যাই ॥

উলটি যাওঁতে বৰচা কুঞৰীৰ পড়িল সোনাবৰত চকু। চৰায়ে কৰিলে চিউ।

যেতিয়াই দেখিলে সোনাবৰ তামুলীক আকাশে উড়ি গল জীউ।

আমগুৰি থাতৰে শুকান খৰিচা বলমা বিলৰে মাছ।

তুমি যে আহিছা সোনাবৰ তামূলী মণিধৰ কিমানৰ পাচ ॥

কিনো নকমে কিনো সুশুনিবা এনে কথা দেখা নাই।

আন কাল পতি ঘোঁড়াত উঠি মণি নগৰৰ চোমেৰ চাই॥

আজি কালে পতি ঘোঁড়া চেকুৰোতে মন্ত্ৰীৰ পধ্লী মুখে।

পাকতে যুৰাই পৰলাক এড়ি ৰোহ ঘৰত সোমাল গ্ৰুখে ॥

সৰগৰ তৰা পতালৰ নাগিণী কোৱা বাপা লাগে কিক্।

সইত সইত বুলি তিনি সইত থাইছো তাকে আনি দিম ঠিক॥

নৈতে গা ধুই এ গৰাহ খাম যাকে খোজো যদি দিয়া।

মন্ত্ৰীৰ জীয়ৰী কাচন কুঞৰীক আনি মোত ছিয়া বিয়া॥



গাৱঁ লীয়া গীত।

মণিৰ কথা শুনি বৰচা কুঞৰী তামুলীক লগালে মাত।

যোৱা হেৰা ভামূলী মন্ত্ৰীৰ ঘৰলৈ এই বাৰ সেনৰ এক জাত ॥

আগো চোৱা নাই পাচে। চোৱা নাই মন্ত্ৰীত ললেগৈ আঁঠু।

কেলেই আহিছ। সোনাবৰ তামুলী ভান্ধি কথা কোৱা বাৰু ॥

বিলৰে মাঝতে পদ্ম ফুলি থাকে ভোমোৰাই গুঁজৰি আহে।

দেউতাৰ জীয়ৰী কাঁচন কুঞৰীক আমাৰ মণি ধৰক লাগে॥

গায়নে বায়নে সেন্দুৰী আলিয়ে কেঁকুৰী দোলাতে উঠি।

হীৰা মুকুতাৰে মণিধৰ কোঞৰে কাচনক আনিলে তুলি ॥

অনা বতাহত হালিছে জালিছে গোবৰৰ ভেৰৰে লাই।

ছঅঁৰা মাদৈয়ে দাল পাহ মেলিছে তেওঁ পো কপালত নাই॥

(গ) পগলা-পাৰ্বভীৰ গীত।

তেতেলিৰ তলতে কৰো তাঁতে বাতি
পাহৰি আহিলো কুচি।
কুচিৰে লগতে পগলাই কিলাব
যামৈ আইৰে ঘৰে গুচি॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

মাৰৰ ঘৰলৈ যাবি তঞি পাৰ্ববতী বাটত খাপে দিয়ে ধৰিম।

বাটত খাপে দিয়ে ধৰ তঞি পগলা হাবিত লবে মাৰি পৰিম ॥

হাবিত লৰে মাৰি সোমা তঞি পাৰ্ববতী হাবিত জুয়ে দিয়ে ধৰিম।

হাবিত জুয়ে দিয়ে ধৰ তঞি পগলা ধোঁৱাৰে লগতে উড়িম ।

ধোঁৱাৰে লগতে উড় তঞি পাৰ্ববতী হাঁকুটি জোৰায়ে ধৰিম।

হাকুঁটি জোৰায়ে ধৰ তঞি পগলা তোৰে বড় বিলত পড়িম #

মোৰে বড় বিলত পড় তঞি পাৰ্ববতী জুপুকী বাই মঞি ধৰিম।

জুলুকী বায়ে ধৰ তঞি পগলা শামুক শেলুৱই হম ॥

শামুক শেলুৱৈ হবি তঞি পাৰ্ববতী তোকে চুন পুড়ি খাম।

মোকে চুন পুড়ি খাবি তঞি পগলা তোৰে ছই গাল ডাকিম॥

মোৰে ছই গালে ডাক তঞি পাৰ্ববতী তোকে তেলে ঘঁহি গুচাম।

মোকে তেল ঘাঁহ গুচা তঞি পগলা সৰিয়হ জনমে ধৰিম ॥

সৰিয়হ জনমে ধৰ তঞি পাৰ্ববতী তোকে তেলীশালত পেৰিম।

মোকে তেলীশালত পেৰ তঞ্জি পগল। খলিহৈ জনমে ধৰিম ॥



গাৱঁ লীয়া গীত।

খলিহৈ জনম ধৰ তঞি পাৰ্ববিতী
তোকে বাড়িৰ চুকত পেলাম।
মোকে বাড়িৰ চুকত পেলা তঞি পগলা
বাড়িৰ বড় গছে হম॥
বাড়িৰ বড় গছ হবি তঞি পাৰ্ববিতী
তোকে নাও কাটি বাম।
মাঝতে বুৰায়ে মাৰিম॥

(घ) হাল বোৱা গীত।

হাবিতে আছিলে আঁকোৰা কঠি। বাঢ়ৈয়ে পাই তাত লগালে চাঁচ॥ हैं। हि हुक्कि माजिल नामन । দেও দি উঠিলে হালোৱাৰ কান্ধত **।** নান্ধলে বোলে মোৰ পিঠিতে কুজ। পূৱা হলে পিথবীৰে লাগি যাওঁ যুজ। कारन त्वारन मिंध वाँहरव एक । পুৱা হলে উলিয়াওঁ বড় বড় কেচু ॥ **जिलाभावित्य त्वांत्ल मिळ मवाउरेक त्थान ।** মোৰ সমানে নবয় কোন ॥ বেন্সাই বুলিলে মঞি বাঁহৰ আখি। মঞিহে নাম্বল আৰু ডিলা থওঁ ৰাখি। সলমাৰিয়ে বোলে মোৰ চাৰি ভাই ককাই। আমি থাকো সদাই সৰগ চাই ॥ আউত জৰিয়ে বোলে মঞি তৰাৰে চিটা। মোত বিনে ডিলা জুঁৱলী নেযায় জোতা। গৰুৱে বোলে মঞ্জি দীঘল নেজা। আমাৰ ওপৰত সবেও ৰজা ॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

এচাৰিয়ে বোলে মঞি সবাতকৈ সৰু।
মঞি নহলেযে নবলে গৰু॥
বোঁতে বোলে মঞি দীঘলকৈ কঁই।
মঞি নাথাকিলে গৰু কত ৰয়॥
মৈয়ে বুলিলে মঞি সবাতকৈ বলি।
মঞি নহলে নেভাগে দলি॥
মৈটকাই বোলে মোৰ আঙ্গুলি বেকা।
মঞিযে নহলে নহয় বোকা॥

(ঙ) যঁতৰৰ গীত।

भक कनोएम वृलिएल वर् कनी वारे। পিজলি কপাহ খিনি কত কত পাই। পিজলি কপাছৰ মঞি জানো বুধি। চাউল ছ পুৰাব পিঠাগুড়ি খুন্দি। মৰুৱা হাটৰে কপাহ আনে কিনি। কপাহ কিনি আনি তাই আছিলেক গুণি। নেওঠনি আনি ভাই পেলালে পেৰি। নেওঠা কপাহ তাই থলে ছাঙ্গত তুলি॥ ধেমুখন আনি তাক পেলালে ধুণি। এসেবা কাটিলে বেতেওঁ তেওঁ। এসেৰা কাটিলে পচলাৰ কেওঁ ৷ এসেবা কাটিলে মাজ নিশা বাতি। তাৰে বান্ধিলে দঁতাল হাতী। এসেৰা কাটিলে সবাডকৈ সক। তাৰে বান্ধিলে ভটৰা গৰু॥ সূতা থিনি কাটি ডাই থলে ছাঙ্গত তুলি। হালোৱাই লৈ গল মৈ অৰি বুলি ।



গাৱঁ লীয়া গীত।

লৰাহঁতৰ বাপেক বহি কি কৰা।

চাঁছ খন ধৰি পেলাই সূতা সৰু কৰা।

ওচৰ চুবুৰীয়াই মুকলিলে খড়ি।

ছমাহলৈ পুৰিলে সূতাৰ চলি।

গধূলি বেলিকা ভৰিলে তাঁত।

উজুতিত লৈ গল শহুৰেকৰ দাঁত।

তাঁত খন তবি তাই নঘাঁহিলে তেল।

তাৰ মাঝে সৰকিল জুৰিয়া বেল।

কত দিনৰ মূৰত তাইৰ কাপোৰ খন হল।

হেন কালে মিবিৰে কাপোৰ বিচাৰি গল।

কাপোৰ দেখি মিকিৰে দিলে উঠি লৰ।

লৰালুৰী দিলে খেদা বুলি ধৰ ধৰ।

ডাঙ্গি পাৰি কাপোৰ তাই থলে ছাক্বত তুলি।

দাল শলীয়াই লৈ গল বাহা বান্ধো বুলি।

E. Rige - Ad. Oak



ভৌকাৰী নাম।

যেতিয়া বিৰিখে ছই পাত মেলিলে তললৈ মেলিলে শিপা।

সেই গছে জুপি খোজে মহাদেৱে টোকাৰী সাজোঁ গৈ দিয়াঁ ॥

মহাদেউ গোসাঞে টোকাৰী সাজিলে বাটে পাৰেবতী গুণা।

ইঙলা, পিঙলা, চিত্ৰা স্থ্মুমা এই চাৰি গছি গুণা॥

নেবাজে চেবাজে ছখনি টোকাৰী আহিল ভাৰস্তলৈ নামি।

এখনি গলগৈ পগলাৰ সঞ্চলৈ এখনি ভাৰস্তত থাকি ॥

ছাঙ্গৰ ভাঙ্গএ মুঠি নমাই আন পাৰ্ববতী আঁঠিয়া কলেৰে খাওঁ।

কৈলাসৰ টোকাৰী নমাই আন পাৰ্ববতী ভিথা মাগিবলৈ যাওঁ॥ তুখৰে উপৰি তুখ।

কুকুৰে কামোৰে ছৱালে দলিয়াই ভিখাতো নিমিলে খুদ ॥ কিনো অমাতৰে মাত।

কাঠৰে টোকাৰী লয় হৰিনাম মনিষে নেপালে তাক ॥

বাটে বাটে যাবা, মূৰ ডাঙ্গি নেচাবা, বেইচাত নকৰা ৰতি।

সাতে। সাতে। পুৰুষ, নৰকত পড়িব জীবৰ হব অধ্যোগতি॥ •



গাৱঁ লীয়া গীত।

মাতিলে মাতিবা, নমতাক নেমাতা,
দন্দুৱাত নহবা সাখী।
বাটৰ বাটকৱাক, বাট ছাড়ি দিবা,
আপোনাৰ মানকে ৰাখি।
দালত বন্দী হল, দালৰে হৰিতাল,
লালীত বন্দী হল মাখি।
কামিনীৰ লগতে পুৰুষ বন্দী হল,
ধুৰত বন্দী হলে হাতী॥
দাল কাটি মোকলা দালৰে হৰিতাল,
পানী দি মোকলা মাখি।
হৰিৰ নাম দিয়ে পুৰুষ মোকলাবি
ধুৰ কাটি মোকলা হাতী।



হুচৰি নাম।

ত্ৰাই ল হাটটি বাই। আভি চেনেহৰে বহাগৰ বিহুটি হাততে মলঙি ধায়॥ ওপৰৰ দেৱতা শুনা কাণে পাতি আজি যে হু চৰি গাওঁ। বিহুৰ বৰন্ধনি আজি ভালে কৰি পুচৰি পুচৰি খাওঁ। আজি বাৰে বছৰ হুঁচৰি গোৱা নাই ভিঙ্গি চেৰ চেৰ কৰে। ঢোলত ভালে কৰি কোবকে নপড়ে কাষৰে পাজৰে পড়ে॥ ওপৰৰ দেৱতা শুনা কাণে পাতি তালেও নিদিয়ে মাত। ডিজিটো খজালি গাবলৈ ধৰিছো তেওঁ জানো উঠিছে জাত ॥ আজি বাৰে বছৰ হুঁচৰি গোৱা নাই হু চৰি ভটিয়াই গল। হাতে মেলি মেলি নাচিব লাগিছো ককাল মূৰ ঠৰকা হল ॥ আমি যে হঁচৰি গাওঁ ঘূৰি ঘূৰি খুচৰি খুচৰি খাম। ডিঙ্গি ফালি ফালি ৰাগকে টানিছে৷ জানো দহে টকা পাম ॥ আমি যে হঁচৰি পেলাম ঐ মুচৰি नाहिवि कायरेन हाथि। ওচৰৰে পৰা চাবা ভালে কৰি মূৰত সকদৈয়া ঝাপি।



क्ठिब नाम।

বিহুৱা চৰায়ে কৰে বিহু বিহু
গছৰে ডালতে পড়ি।
আমি যে বছকা খুজিছো পঁচকী
ডিজিতে ঘুমুচা জবি ॥
বিহুৱা চৰায়ে কৰে বিহু বিহু
বীণৰ নলা যেনে মাত।
গছতে লভায়ে হালিছে জালিছে
ধৰি সেউজীয়া পাত ॥

(2)

क्रिव वाहे छे मत्नो हवाहै। ৰূপ চাৰিটকা তামোল শৰাই। कृति वाहे छे एतथा नित्न तिरात । কেনেকৈ নো পাতিছিলি বাপেৰে পুতেৰে। হেচি হেচি পাতিছিলো চপৰা দলি দি। চোৰ পেয়েৰে লৈ গল মই কৰিম কি॥ হুচৰি বাই ও গৰু নিলে চোৰে। क्तिरेक त्ना वाक्षिष्टिल वात्थर श्रुख्य ॥ বান্ধিছিলো বান্ধিছিলো গলগাঁঠি দি। काब भरश्रव देल शल मारव दबश मि ॥ क्रवि वारे छे धन नित्न क्रांव । क्टिनरेक त्ना थिहिलि वूड़ी मानीरग्रद ॥ থৈছিলো থৈছিলো দূৱাৰ চুকত। চোৰ বাপেৰে লৈ গল চুৰিয়া কোচত । क्रिव वाङ्खे नवा नित्न क्रांव । কেনেকৈ নো শুৱাইছিলি মাৰে বাপেৰে॥ শুৱাইছিলো শুৱাইছিলো জাপ কাপোৰ দি। कांब भारताब के अन कि **ए**

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

क्रिव वारे छे जभा नित्न क्रिव। क्तिके त्ना थिছिनि वृद्धी मानीरग्रद ॥ থৈছিলো থৈছিলো নাওৰা তলত। চোৰ আহি লৈ গল দিন ছূপৰত। कृ वि वारे से दुधाना नितन दुधार । কেনেকৈ নো থৈছিলি বাপেৰে পুতেৰে ॥ থৈছিলো থৈছিলো খুটাৰ কেপত। চোৰ আহি লৈ গল কোনোৱা ছেগত। **हा हा दांबाबी कि कि निर्द्ध** । কেৰু নিলে মণি নিলে আৰু নিলে ছাই। চাৰি মুনিহা শিল নিলে দুৱাৰ চুকত পাই॥ bl bl বোৱাৰী कि कि निल । চৰু নিলে হাডি নিলে আৰু নিলে খডি। সোপাকে লৈ গল মৰাপাতৰ জৰি ॥ **हा हा दांबाबी कि कि निल्ल।** माथन भारताकार नाना नितन। এধা পোড়া আঙ্গঠা এটাইবোৰ নিলে। क्रेय हारे यव नवानुवी त्नर्था। চোৰে নিলে হব পায় নিচেই ভাকৰ দেখো। জুইধৰ ছাই ধৰ কাঁহী বাতি লেখোঁ। চোৰে নিলে হব পায় নিচেই তাকৰ দেখোঁ ॥ खूरेश्व ছारेश्व मुबव ছुलि लार्था। চোৰে নিলে হব পায় নিচেই তাকৰ দেখোঁ॥ थव थव বোৱাৰী গাকে ৰোৱালি। বোৱাৰী ঐ গাকে ৰোৱালি ॥ क्किका नियानि मिरिका नियानि। ধাৰিকো নিয়ালি পাটীকো নিয়ালি বোৱাৰী ঐ গাকে ৰোৱালি ॥



তচৰি নাম।

(0)

মাধৈ তেল ঘঁহিলো সেওঁতা ফালিলো स्मानान देन के बाह याँ ७ अम्ला देश। **मोघल** के शृथ्वि খনালো বান্ধৈ ঐ वकारला रमन्द्रवो व्याल । ফুলনি পাতিলো দাঁতিয়ে দাঁতিয়ে बाथिला। काक्द्रा माली ॥ কেৰেপা কেৰেপি • ছিলিফি দিয়ালে। ওপৰত বগালে লতা। চিৰিলি চিৰিলি मीघनी वहनी পাতত পানকটা কটা 🛭 আছে कुनि कुनि চম্পা গুৱামালী গোন্ধতে মলয়া বলে। নিলগৰ পৰা সৰগৰে তৰা জানো বিমানতে জলে । वकुल वन्मुलि वार्ड कृति कृति ফুলিছে মাধৈ মালতা। জাতি জুতি জাঁই টগৰ গোলাপ ফুলিছে ৰান্সল সেউতী। মোলান দৈ ঐ আহ যাওঁ ওমলো গৈ।

(8)

হুঁ চৰি বাই ও দলো চৰাই।
আমি যে আছিছোঁ হুঁ চৰি গাই॥
হুঁ চৰি বাই ও দলো চৰাই।
তামোল পান আনিছে ৰূপৰ শৰাই॥
ই বাড়িৰ বাঁহও সি বাড়িৰ বাঁহ।
ছুই মাহ থেকা লাগি যায় চত মাহ॥

্ অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

लाख मिवब दश्मालि शिका मिवब दक्षः। চতৰ বিহুত দেখা দিয়ে হুচৰিৰ ঠেং। এটা বাঁহৰে তেৰটা কামি। চতৰ বিহুতে আহিছো আমি। ওপৰে বৰখুন তলে ও বোকা। চিনা জোকে খাই মাৰে অাঠুৰে জোখা। দ পথাৰতে পড়িছে বগ। মূৰৰ পাগুৰীয়ে খুজিছে লগ। ভৰানিৰ কুচিয়া হবে হৰাই। জপাটো মেলিছে খৰে মৰাই। পোৱালি হাতীৰে শুৰ ঐ। পেৰাৰো মেলিছে মূৰ ঐ " थन व्यानिवरेल रेगरह। বাটতে খুন্দা খাই ৰৈছে। চোতালৰ আগৰে তুলসী। গাটো আহিছে উলহি। চোভালৰ আগৰে কেঞা বন। এই ঘৰ মানুহৰ বেয়া বন । ভলুকা বাঁহৰে আখি। আমাকো নথবা ৰাখি ॥ विख्नी वाँश्व गाँक। আমক নেপেলাবা লাজ।



আইৰ নাম।

(>)

আই ভগৱতী আই, তোমাৰ মান স্থন্দৰী নাই।
অম্বিকা চণ্ডাকা ভৱানা কালিকা এই কপে ফুৰা বেড়াই॥
আই ভগৱতা আই, বসন্তে বা বলাই।
তোমাৰ সেৱা পূজা আছে আগ বাঢ়ি লে'াৱা চকুমেলি চাই।
আই ভগৱতী আই, তোমাৰ নীলাচলে ৰতি।
ছখানি চৰণত পাৰ্থনা কৰিছে। ৰক্ষা কৰা ভগৱতি।
আই ভগৱতী আই, ৰাতিকো কৰিলা দিন।
এক হাতে লৈলা কৈলাসৰ টোকাৰী আৰ হাতে লৈলা বীণ॥
আই ভগৱতী আই, সুব সুব ডম্বক বাই।
কাৰ্ত্তিক গণপতি নাচে ভক্সি ধৰি আই থাকে আনন্দ চাই।
আই ভগৱতী আই, আকাশে আছিলা উড়ি।
বহিবাক লাগি আসন পাৰি থৈছে। শিবৰ ওপৰত তুলি॥

(2)

গধূলিতে আই আহি বাটত আছে বৈ।
তুতি কৰি মাতি আনা আমাৰ ঘৰলৈ ॥
গধূলিতে আই আহে পধূলীলৈ চাই।
মহামায়া আই আহে সোণৰ বাংশী বাই ॥
চহৰ ফুৰি আই আহে হাতত কমল ফুল।
আমৰ পাতৰ চাটি মাৰি হিয়া কৰে জুৰ ॥
স্বৰ্গৰ পৰা আই আহে লগত আহে তৰা।
দুখীয়ালৈ পেলাই দিছে স্থুপিল ফুলৰ মলা॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

(0)

আসন পাৰি দিয়া বহক মহামায়া থাকক হৰি কথা শুনি। সকলো গোপীয়ে একান্ত চিতেৰে, বোলা দুৰ্গতি নাশিনী 🛭 আইৰে চেনেহৰে, মৈৰা চৰাই হালি मोलव ठडेकार्य कृरव। হস্তীৰ গমনে, আই নামি আহে চহৰ ফুৰিবৰে মনে। পিচলাৰে ঘাটে আইয়ে স্নানে কৰে, লাহৰ কেশ টাৰি মেলি। যাউতি যুগীয়া আইৰে শৰণীয়া পৰলৈ নিদিবা এৰি। উজাই আহিলে, আইৰে সাতো ভনী বালিতে পুতিলে খুটি। ভটিয়াই যোঁৱাগৈ আইৰে সাতো ভনী গোপিনী কৰিছে তুতি ॥ উজাই আহিলে, আইৰে সাভো ভনী চাৰি পৰবতে জুৰি। তিৰিণ তৰু লতা, সবেও দোৱাই মাথা আই আহিবৰে শুনি। উজাই আহিলে, আইৰে সাতো ভনী, পুইতত মাৰিলে খেৱা। ভয় নকৰিবা, ভয়াতুৰ নহবা আইয়ে কৰি যাব দায়া॥ উজাই আহিছে, আইৰে সাতে ভনী নাৱত গুটি ফুলৰ ঝপা।

গুটিকৈ আনিছে মুঠিকৈ বিলাইছে

নৰক কৰি গৈছে কুপা ॥



আইৰ নাম।

তলে বোকা পানী, ইনো ক্তহে কালি কেনেকৈ আহিলা আই। সোণৰ নাও খানি, কপৰ বৈথা খানি देवहाई जानित्न वाई ॥ পিছলাবে ঘাটে, আয়ে পানী তোলে, তামৰে কলসি লৈ। ছজঁড়া বামুণে, চণ্ডী পাঠ কৰিছে ভৱানীক আগতে থৈ ৷ হল বহু দিনে আই আহিবৰে মহাদেউ পঠাইছে খেদা। যোৱানে নোযোঁৱা আই ভগৱতী किलाम इरेड छुना ॥ তুখীয়াৰ ঘৰলৈ, আহে সাতো ভনী, দিবলৈ নাইকিয়া একো। পার মলচিমে মূৰৰ কেশ ছিঙ্গি, দেহক পাৰি দিমে স**াকো** ॥ তুখীয়াৰ পুতলা, আয়ে তুলি দিলে, আইৰ মান ধৰ্মী নাই। আইৰ নাম শীতলা, তৃখীয়াৰ পুতলা, मि याँबा तुक् ख्वारे॥

(8)

আসনতে বহি আয়ে নমাই দিছে ভৰি।
গোপিনীয়ে তৃতি কৰে চৰণতে ধৰি।
আসনৰে চউপাশে চম্পা নাগেশ্ব।
মলমলি গোন্ধাই আছে আইৰে বহাঘৰ।
আসনৰে চউপাশে ফুলিছে টগব।
আসনতে বহি আয়ে ভাঙ্গিছে জগৰ।
আসনৰে চউপাশে ফুলিছে কেতেকী।
দাল ভাঙ্গি ফুল পাৰে হৰৰে পাৰ্বতী।

18

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি

আসনৰে চউপাশে ঘটৰ শাৰা শাৰী।
ঘট বুৰাই ৰস ঢালে শীতলা স্থানৰা ॥
আসনতে বহি আয়ে ফুলৰ ললে লেখা।
ছথীয়াৰ ঘৰত আহি আয়ে দিছে দেখা ॥
আসনতে বহি আয়ে মনত ৰঙ্গে আছে।
সোণৰ খড়িকা লই নিৰ্মালি বাচে ॥
আসনতে বহি আয়ে চউপাশে চায়।
অস্ত্ৰৰ পাঞ্চ সেনা বিভক্তে পলায়॥

(a)

আইৰে সাত ভনী, বড় আই ৰান্ধনী ভোজন বা কিহেৰে কৰে। খৰিচা পকনি, মোৱা মাছ শুকনি, আই ভোজন সেয়েৰে কৰে॥ ৰামকল এজুপি চোতালৰ আগৰে মৰমত নেকাটো পাত। আইৰে সাতে ভনী, ষেতিয়া আহিব ভোগলৈ লাগিব পাত ॥ আসনৰ আগতে, তামোল কাটি থৈছো, আহোঁতে যাঁওতে খাব। আসনত বহিব, চৰুত পাৱে ধুই, দাসক দায়া কৰি যাব॥ ছাইবে পাৱে মচা, কপাহি গামোচা, আইৰে কলিকটা পিড়া। বড় আই পাচিছে সক আই আহিছে ফুলবাড়ি নগৰৰ পৰা। আইতৰ পাততে ञार्य छोल त्थरम সোণ পোৱালৰ মণি।

আইৰে সুমলীয়া ভনী।

कुक्ना ट्वांबर

ধুলাই আনিছে



আইৰ নাম।

(6)

আহিছে শীতলা দেবী কেতেকীৰে পাহি। বহিছে শীতলা দেবী মুচুকিয়া হাঁহি। সিপাৰতে বংশী বাজে ই পাৰলৈ ধনি। ঢোপ খেলি আহি আছে শীতলা গোসানী॥ শীতলা শীতলা আই পদতলে লাগোঁ। ভকত বৎসলা আই শুভ বৰ মাগো। আই তুমি এই নামে সম্ভোষ হবা। কি দিয়া পূজিম আই চৰণ হুখানি। তোমাক পূজিবৰ বস্তু নেদেথোঁ গোসানী। ফলদি পূজিলো হয় ভোমোৰাই চুমিলে। इस मि शृक्तिला इय **जाम्बोर**य शिल । ধন দি পূজিলো হয় আপোনাতে আছে। জল দি পৃজিলো হয় বিতালিলে মাছে॥ बाह्म मि शृक्षित्व। इय गक्रे थिहत्व। বস্ত্ৰ দি পৃজিলো হয় মাৰ দি সিজালে। মন দি পৃজিলো হয় মনৰ নাই থিত। **हिंड मि পृक्षिता इग्र भाग्य कर्क्ड विंड**। ষেই বস্তু দিওঁ মাতৃ দেই বস্তু চুৱা। আপোনাৰ নামে মাতৃ সন্তুষ্ট হোৱা। বিদায় দিয়া নিৰমালি মাণা ভৰি লও। বিদায় দিয়া আই মাতৃ ঘৰাঘৰি যাঁও ৷



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

সক্ত আৰু ভণিতা মুগ।

পক্ষীৰাজ মন্ত্ৰ।

শ্রীকৃষ্ণায় নমঃ।

নাভি পদ্মো হস্তে ব্রহ্মা উপজিলা। যৈসানি ত্ৰহ্মাদেৱে গৰ্জন কৰিলা॥ স্পৃত্তিৰ মধ্যত এক পক্ষি উপজিলা। দেখিয়া তাহাৰ পক্ষিৰাজ নাম থৈলা। পক্ষিৰাজ মন্ত্ৰ পঢ়ে ডাতি। সাত্থান দেৱৰ মায়া পেলাইলেক কাতি। ৰাওদি পক্ষি স্বৰ্গক গৈলা। সাত্থান স্বৰ্গ মধ্যত পৰিলা॥ যেবে পক্ষি ৰাজ ইন্দ্ৰক পাইলা। খাত সহিতে বান্ধিবাক লৈল।। অনাদি সহিতে হৰোৰ ঠাই। তাক পক্ষি ৰাজে পেলাইলা খাই ॥ স্থনি পক্ষি ৰাজে দেৱজাক। দেখি পক্ষি ৰাজে দিলা ডাক । তাক ধৰি আসিলা ধাই। তাক পক্ষি ৰাজে পেলাইলা খাই ॥ স্বৰ্গত আছে দেৱ সমাজ। দেখি পক্ষি ৰাজে পদিলা মাজ॥ স্বৰ্গৰ দেৱতা ভৈলা নিপাত। চন্দ্ৰ সূৰ্য্যক দেখিলা ভাত।



মন্ত্ৰ আৰু ভণিতা যুগ।

(मिथला हत्स विश् आहि। তাক পক্ষি ৰাজে বান্ধিলা পাচে। সূর্য্যক বান্ধিবে গইলা ধাই। চাৰি ও ঘোৰাক পেলাইলা খাই॥ ৰথত বহিবা জেবে নপাৰি। চন্দ্ৰ সূৰ্য্য ভৈলা এক সাৰি I চক্ৰক সূৰ্য্যক বান্ধিয়া থৈলা। তেবে পক্ষি ৰাজ কৈলাস গৈলা॥ দেখি পক্ষি ৰাজে মহেশ্ব বিচুৰ্ত্তি ভৈলা। কৈলাস সহিতে ব্যক্ষিবে লৈলা। পাৰ্বতী আছে তাহান ঠাই। তাক্ষ পক্ষি ৰাজে পেলাইলা খাই। বান্ধ পাই মহেশ্বৰ মাতিলা কিসৰ কাৰণ। বাপ পক্ষি ৰাজে বুলে জুনা মহেশ্ব। কোন কোন দেৱ আনি আছে আমাৰ ওচৰ। পাচে মহেশ্বৰোক কোপ কৰি চাইলা। কৌটি এক দেৱতা মাতিয়া পঠাইলা। তাক স্থান কুবিৰ আসিলা ধাই। তাক পক্ষি ৰাজে পেলাইল। খাই। পাৰ্বিতী বুলে স্থনা পক্ষি ৰাজ। এতিক্ষণে পাইলা দেৱোৰ সমাজ। স্থনি পক্ষি ৰাজে ৰঞ্গ উপজিলা। মাথাৰ উপৰত নিয়া কাচিলা। আকতা বিকতা গলাই গতা আছে। তাক পঞ্চি ৰাজে বান্ধিলা পাচে। যেবে পক্ষি ৰাজোৰ বাঙ্কোৰ চোত পাই। অসংখ্যাত গলাইক বান্ধিলা জাই। জটীয়া গলাই বান্ধো মটীয়া গলাই বান্ধো। যতেক গলাই আছে মানে চুৰ পাচে পক্ষি ৰাজে যমপুৰে গৈলা। যম ৰাজা আছে পাতি সমাজ।



অসমায়া সাহিত্যৰ চানেকি

যমে বেলৈ সুনা পখি ৰাই। কিসক আসিলা আমাৰ ঠাই ॥ যি কাৰ্য্যে আসিলা সি কাৰ্য্য কও। তোমাৰ তুতক বাহ্মিয়া থও। যেবে পথি ৰাজ আগে ঠিয় ভৈলা। যমৰ ছতোক বান্ধিয়া পেলাইলা॥ যমে বোলে মই কি কাৰ্য্য কৰে।। তোমাৰ বান্ধত সমূলি মৰো। বান্ধো হাত বান্ধো বাত। বান্ধিলো যমৰ তৃতক কৰিলো বন্দি : ন পাইলা যমে পলাইবাৰ সন্ধি। বান্ধো মঠৰ ছৱাৰ বান্ধো কৈলাসক বান্ধো॥ একে সৰি কৰি যেবে পখি কৈলাসক বান্ধিলা। সাগাৰ মধাত তেখনে পৰিলা। সাগৰে বুলে স্থনা পথি ৰাই। কি কাৰ্য্যে আসিলা আমাৰ ঠাই ॥ স্থনি পখি ৰাজে উঠিলা দাতি। যমোৰ মায়াক থৈলাহা বান্ধি। স্তুনিয়া সাগৰে খলক লাগিলা। যমোৰ মায়াক বান্ধিয়া পেলাইলা। বান্ধিলা সাগৰে নেদিলা উত্তৰ। তেখনে গৈলা কালিকাৰ ঘৰ ॥ কালিকায়ে আছে তুই শাখা পিন্ধি। তেখনে কালিকাই পেলাইলেক বান্ধি। বান্ধ পাই কালিকাই আচম্ভ চাই। কিসক বান্ধিলা আমাক পাই। স্থনিয়া পক্ষিৰ ক্ৰোধিত মন। বসিবা তেখনে দিলা আসন॥ कुइ रगाउँ ठक्क् करल अगनि ममान। থোঠ গোট জলে যেন হিঙ্গুল প্রমান।



মন্ত্ৰ আৰু ভণিতা যুগ।

তুইখান পাথি আকাশে সম্বল। বজ্জনথৰ ঘাৱে বোস্তমতী ফালে। কালি বোলে স্থনা পথিৰাজ। মোক কেনে কৰা এত মানে লাজ। যত দেৱ আছে মোহোৰ লগত। বান্ধি আনি দিও তোমাৰ হাতোত। স্থান পথিৰাজে মহা ক্ৰোধ ভৈলা। তেখনে দেৱ সবোকো বান্ধিলা ॥ कालि (मरवांक रथिमग्रा रेगला। কালিকাৰ মায়া মানে সবাকে। বান্ধিলা । ব্ৰহ্ম নখোৰ ঘাৱে বোস্থমতী কম্পিলা। কাম্পে বোস্থমতী তাহাত মুচিলা। বোস্থমতী বোলে স্থনা পথিৰাজ। কিসক আসিলা আমাৰ সমাজ। পথিৰাজে বোলে স্থনা বোস্থমতী আই। আসিয়াছো মই তোমাৰ ঠাই । যত দেৱ আছে তোমাৰ কাসে। বান্ধি আনি দিবা আমাৰ কাসত॥ স্থুনি বোস্থমতী কম্পামান ভৈলা। একশ গোলাইক বান্ধি আনি দিলা॥ আনিবাক দেখি মনে ৰঙ্গ ভৈলা। তেখনে গলাইক চপাই বান্ধিলা॥ বোস্থমতী বোলে বান্ধিয়া থৈলা। বোলে বোহুমতী ভোমাৰ গুণ গাওঁ ॥ থিই ভক্ত গলাই আছে তোমাৰ কুল দেওঁ। দেখিলা ব্ৰহ্মা মহেশ্বৰে ডৰে। নাম তাৰ জটীয়া মুণ্ডে আছে জটা। পেত তাৰ ভৰা পেত চক্ষু কটাৰতা। আকত গোলাইক বান্ধো। দপ্তআ গোলাইক বান্ধে।

60

আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

আৰা গোলাইক বান্ধো। খৰা গোলাইক বান্ধো। জনা গোলাইক বানো। মাটিয়া গোলাইক বান্ধে।। (तका (शालाईक वास्त्रा। কোঞ্চা গোলাইক বান্ধো ॥ স্থকিলা গোলাইক বান্ধো। ডাকু গোলাইক বান্ধো॥ ববৰা গোলাইক বান্ধো। অতলা গোলাইক বান্ধো॥ কালা গোলাইক বান্ধে। মমৰ গোলাইক বানো ॥ গাওঁৰা গোলাইক বান্ধো। জপৰা গোলাইক বান্ধো ॥ (भान (शानाहेक वास्त्रा। অখলা গোলাইক বান্ধো ৷ कलिया (शालाहेक वारका। পিপৰা গোলাইক বানো ॥ হেলা গোলাইক বান্ধো। धनक निर्वाक वारका ॥ মায়ান্ধ বিৰোক বানো। অধিৰান্ধ বিৰোক বান্ধো ॥ **ह** छक्क विद्वांक वादका । অঞ্চিৰান্ধ বিৰোক বান্ধো॥ বান্দ্ৰ বিৰোক বান্ধো। চর্বিসন্ধ বিৰোক বান্ধো। একে সৰি কৰি তাক পথিৰাজে বান্ধিল। চপাই।



মন্ত্ৰ আৰু ভণিতা যুগ।

छमर्गन मख।

সৰম্বতি দেবি মাত্ৰি মোৰ কণ্ঠাগত। বৈকণ্ঠ ভুবনে বসি আছে নাৰায়নে। হাতত প্ৰকাস কৰে চক্ৰ স্থদৰ্শন। জগতৰ সাক্ষি প্ৰভু ভূমি চক্ৰধাৰি। মনত গুনিলা প্ৰভু হেঠ মাথা কৰি। মমুক্তক মাৰি যেবে দেৱে কৰে ঠাই। নৰ মনুস্থক প্ৰভু ৰক্ষা কৰা জাই। গসাই বলে চক্র মনুষ্ঠক জায়া। দত্য দানবক কাটিয়া পেলায়া॥ গোসাইৰ ভূক্ষাৰে চক্ৰ গৈলা ধাই। जृत्म (मद्र ভाष्ट्रिया भनारे। প্ৰিথিবি লৰিলা মেৰু গিৰি টলিলেক। मागव টेलिला मन्पाव लविला ॥ किल्लिला वर्ग मधल। বৈকুঠৰ পৰা প্ৰভু কৰিলা ভঙ্কাৰ। हल हल हल हक गणन मकाब। গোসাইৰ জ্বাৰে চক্ৰ প্ৰচণ্ড। यार्ग हिल रेगना करूल पर्श्व ॥ যত দেবগনক চক্রে লাগ পাইলা। थल थल कवि काछिश (कलाईला। কুজ্ঞান কুমন্ত খেদি লাগ পাইলা। তৈৰ পৰা চক্ৰ পাতালক গৈলা ॥ (प्रिचि नागगन भलाङेवांक देलला ॥ স্থদৰ্শন চক্ত মহা কোপ কৰি। নাগ নাগিনীক কাটিল৷ ধৰি 』 তৈৰ পৰা চক্ৰ সাগৰক গৈলা। জনৰ জন্তুক কাটিয়া ফেলাইলা। ভবে বিষ্ণু চক্রে পর্বব ভক গৈলা। সমস্ত দেবক কাটিয়া ফেলাইলা II



আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

তবে বিষ্ণু চক্র পুব দিশে গৈলা। পুবৰ দেৱক কাটিয়া ফেলাইলা। তবে বিষ্ণু চক্ৰ পাত যমপুৰে গৈলা। যমৰ ছুতক কাটিয়। ফেলাইলা ॥ তবে বিষ্ণুচক্ৰ গৈলা বৰুনৰ ঠাই। কাটিয়া বৰুন বান কৰিলা খণ্ড খণ্ড। উত্তৰে কুবিৰৰ ঠাইক চলিলা। वान विष व्याधि काषिया (कलाइला ॥ তবে চক্র খণ্ড ব্রহ্মলোকে গৈলা। মহাত্ৰাসে ত্ৰহ্মা আসি পৰিলা। চক্ৰৰ আগত ব্ৰহ্মা দন্দবতে পৰি। কৰিলা অনেক স্তুতি ভকতি॥ তুমি নাৰায়ণ তুমি বিষ্ণু মূৰ্ত্তি। দৈত্য নিপাতক তুমি নিৰঞ্জন । কি কাৰ্য্যে আদিলা আমাৰ ঠাই। চক্রে বুলে মোক পাঞ্চিলা হবি॥ দেবতাৰ কুজ্ঞান কুমন্ত দিয়া বাজ কোৰি। শুনি ব্ৰহ্মা পাচে বৰ ভয় ভৈলা। সৰ্গৰ দেৱৰ কুমন্ত্ৰক ছক্ষাৰিলা। চক্ৰৰ আগত দিলা আনি ধৰি ॥ কাটিলা চক্ৰে খণ্ড খণ্ড কৰি। **তবে विक्रु ठक किनामक रेगना** ॥ ন্তনি মহেম্বৰে বৰ ভয় ভৈলা। আঠে ব্যেঠে কৰি আসিলা লৰি ॥ মহেসৰ সঙ্গে আসিলা গৌৰি। বিষ্ণুৰ চক্ৰক কৰিলা সেৱ ॥ কুতাঞ্চলি কৰি মাতে মহাদেৱ। দানৱ নাসক তুমি দেৱ নাৰায়ণ। কি কাৰ্য্যে আসিলা আমাৰ ঠান। চক্রে বোলে হুনা তুমি হুলপানা।



মন্ত্ৰ আৰু ভণিতা যুগ।

যত দেৱ আছে সিত্রে দিও আনি। স্থান স্থলপানা বৰ ভয় ভৈলা। यङ एमव আছে विहाबित्व देलना। সবাকে আনিলা হুদ্ধাৰি । বিষ্ণুৰ চক্ৰক দিলা আগকৰি। তাক বিষ্ণু চক্ৰে কাটিলা খণ্ড খণ্ড কৰি। তেবে বিষ্ণু চক্র স্বগ্নি কোনে গৈলা। যত দেব পায় কাটিয়া ফেলাইলা । তৈৰ পৰা চক্ৰ ঐপানক গৈলা। ঐসানৰ দেৱ ৰোগ কাটিয়া ফেলাইলা। তেবে বিষ্ণু চক্র যম কোনে গৈলা। যত দেব কুজ্ঞান কুমন্ত কাটিয়া ফেলাইলা। তবে চক্ৰ গৈলা নৈৰিত কোনক। কাটিয়া ফেলাইলা সমস্ত দেবক। মহাতেজে চক্র দেৱস্ত গেৰি। ত্ৰিদশ দেবতা পলাইলা লৰি॥ চন্দ্ৰ সূৰ্য্য ছুইৰো তেজ ভৈলা খিন। পাই মায়া ব্যাধি কুজ্ঞান কুমন্ত্ৰ প্ৰিথিবি বিচাৰি। পলাই দেবগন নাহি স্থিতি স্থান। विकु हत्क त्थिष त्थिष त्नग्र श्रान ॥ जिम्म (मद्व नाशा शेश । কানি কান্থা বান্ধি ভিক্ষা মাগি খাই। जिम्म दमवब हिन्छ। कव देखना। স্বৰ্গতপ লোক কম্পিবাক লৈলা। তবে চক্ৰ পাত কৰিলা গমন। থৰথৰি কম্পে চৈধাঅ ভূবন। কম্পিলা মন্দৰ কম্পে হেমগিৰি। ব্ৰহ্মা মহেশ্বৰ কম্পে হেমগিৰি। थवथिक काल्ला हन्त्रव मधल। প্রেথিবিক যিনি যিনিলা পাতাল।



আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

मदि नसे कविना कांत्रि कुछान क्वांक । रेक्ट्र याहरत कविला भग्नान ॥ সেহি বেলা ক্ষা বোলে বাক্য সিত্ৰ কৰি। আহা মোৰ হাতক শুনি চক্ৰে পাচে নাথাকিলা ৰৈ। বিষ্ণুৰ পাসক সিত্ৰে পাইলা গৈ ৷ নিৰঞ্জন হৰি হাতে চক্ৰ ধৰি। প্ৰিথিবিক লাগি আসিলা দেবছৰি ॥ প্ৰিথিবিক লাগি আফিলা নাৰায়ন। নৰকান্ত্ৰক বধিবাক মন ॥ ভানিলা নৰক আসিলা হৰি। উঠিয়া ধাইলা গজ কন্ধে চৰি ॥ গোৰুৰক লাগি প্ৰহাৰিলা স্থল। চক্ৰে কাটি হৰি কৰিলা নিমুল। দেখি নাৰায়নে হাতে চক্ৰ ধৰি। প্ৰহাৰ কৰিলা হৰি ভক্কাৰ কোৰি ॥ বিষ্ণু চক্রে খেদি জাই কুজ্ঞান কুমন্ত্র কাটি ফেলাই ॥ ञ्चमर्भन চক্রে খেদি লাগ পাইলা। নৰকৰ সিৰ কাটিয়া ফেলাইলা ॥ গজ কন্ধে হন্তে পৰিলা ঢলি। কম্পিলা মহি খণ্ড খণ্ড কোৰি। অন্তৰৰ বধ স্থানি জত বিৰ। আসিলেক খেদি ঝঙ্কাৰি সিৰ ॥ হাতে স্থল ধৰি আসিলা ধাই। সবাক কাটিলা চক্রে লাগ পাই। আৰু অৱসেষ জত বিৰ আছে। मद्वारक। विकृत्रक कारिना भारह ॥ কুজ্ঞান কুমন্ত্ৰ কাটিয়া ফেলাইলা। তেরে চক্রপাট নিজ থানে গৈলা। চক্ৰৰ জন্ম সমাপতি ভৈলা। ছং হুংকাৰ স্থদৰ্শন চক্তৰ হুংকাৰ ॥



মল্ল আৰু ভণিতা যুগ।

বিসবান ব্যেধি হাড়া মন্দকড়া। সমস্তে মন্ত্ৰ তন্ত্ৰ কাটি কৰু বুন্দামাৰ। छः छःकाव **छ अः शः याश** । স্বাহা হুকাৰি সুদর্শন চক্রে কাটি নিলা মাৰি॥ হৰ চক্ৰ হৰ হৰ। স্থদর্শন নামে চক্র তৃজগতে ভয় চিত। জাক জপনে কাটে বান বিষ মন্ত্র॥ পুনৰ্ববাৰ চক্ৰপাট প্ৰহৰন কৰি। ৰক্ষ পিসাচ কুবিৰ গলাইৰ মায়া কাটো। পুতুৰ্ব্বাৰ চক্ৰপাত প্ৰহাৰ কৰো। হৰি চক্ৰক মুক্ষ কৰি দস খেত্ৰৰ মায়াক কাটো। পুমুৰ্ববাৰ চক্ৰপাট প্ৰহাৰ কৰি। গোযক্ষক মুক্ষ কৰি ॥ যাবত জক্ষৰ মায়া কাটো। পুসুৰ্ববাৰ চক্ৰ প্ৰহাৰ কৰু ॥ धन क्विबक मूक्त कवि। व्यर्वे कृतिबंब माग्रा कारणे। ধন কুবিৰক মৃক্ষ কৰি পুনুৰ্ববাৰ চক্ৰ প্ৰহাৰ কৰো। অঠৰ গলাইৰ মায়া কাটো॥ পুসুৰ্ববাৰ চক্ৰ প্ৰহাৰ কৰো। জগধজ চুই দৈত্যক আদি কৰি॥ চৌৰাসি দৈত্যৰ মায়া কাটো। इकाबि ठक कविरला প्रश्ने। সলো জাতি চামানৰ মায়া কাটি কৰিলু দহাৰ ॥ ভুষাৰি চক্ৰ কৰিলো প্ৰহাৰ। তেৰটা বাকৰ মায়া কাটি কৰিলো পানিধাৰ ৷ ভুকাৰি চক্ৰ প্ৰহাৰ কৰে। কালোৰ অতি কালোৰ মায়া নিবাৰণ কৰো। তং ভংকাৰ চক্ৰ প্ৰহাৰ কৰো। বৰো কলিয়া সৰু কলিয়াৰ মায়া কাটো।

20

আসমীয়া সাহিত্যর চানেকি।

তং তংকাৰ চক্ৰ প্ৰহাৰ কৰে।। বৰ হাজাপক সৰু হাজাপক। মুক্ষ কৰি উনু কোটি দেৱৰ মায়া কাটো। তং ভন্ধাৰ চক্ৰ প্ৰহাৰ কৰো। বৰ পানি পুনিয়াক সৰু পানি পুনিয়াক। তেৰোলাথ দেৱ পাৰ্ববভিয়াৰ মায়া কাটো। তং তংকাৰ চক্ৰ প্ৰহাৰ কৰো। বৰহাকনা জক্ষ আউঠ্ কুটি ॥ অৰণ্যৰ দেৱৰ মায়া কাটো। তং তংকাৰ মহা চক্ৰৰ তোমাৰ ভংকাৰ। ডাকিনি স্থািনি ভুত ডাহিনি। ভুত নিদানৰ পিচাস॥ জখিনি বিৰানি কৈইবৰি দৈত্যানি আলক্ষনি বিলোক্ষনি। সাসান সালি অন্ত কৰালিক। व्याप्ति किं नमेख (पद्मक भाषा कारहा ॥ তং তংকাৰ স্থদৰ্শন চক্ৰ তুমাৰ ভ্স্কাৰ ।

বুক্ষ আবোপণ।

শৃক্তত শ্ৰমণ শৃক্তত থান, যোগ মত্ৰে কৰে বৃক্ষ আৰোপণ, আয়ত মেচাৰি বাফ। আয়ত আয় মেচাৰি, কাকলে ধুমা আয়, বিমুখিয়া আয়, সড়াউ আয়, বিড়ায়ো আয়, চফলে আয়, গমনে আয়, বিফা সিঞ্চা পণ্ডুয়া আয়, অভায় আয়, গকুলা আয়, হৰি চক্ৰ আয়, যেমন তং কিত আয়, বিং বিং বিং বিং ফট্ ফট্ লং লং যেমনে সাধ্য তেমনে আয়, যেমনে শিৰ তেমনে আয়, আকাশে সঞ্চাৰ পৃথিবী পায়। সহবে চলিয়ো আমুকিৰ গায়, তহা লংঘয় মন্দ মন্দ আমুকৰি গায়, আমুকৰি বিচাট মন্দং, বং লং দং ৰং জং পং হং হং তং মিং ওং ওং অমুকত্তং তদং সাহা।



মন্ত্ৰ আৰু ভণিতা যুগ।

গৃহকম্পন মন্ত্র।

হস্তী বন গৃহ চাল কম্পে গগন মণ্ডল। কতো আকাশত শ্রমে কতো বন পর্বতত, যেনেকে ভ্রমৰি ফুৰে তিনিয়ো লোকত। ভূত ভবিষ্কৃত দেবতাৰ আগে কয়। চণ্ডকুমাৰ লাভি বেতাল চণ্ডীৰ তনয় ঘাদশ বংসৰ তপ কৰিলি বিস্তৰ। তুইট ভ্য়া মহাদেবে দিলা ইফ্ট বৰ। নাট হন্তে জন্মিলি কৈলাস সিখৰে সত্যে সত্যে দেবীৰ অক্সিকাৰ। সত্যে সত্যে নথাকিবি তুৰাচাৰ।

চৌমোখাবাট। তাতে দেবী পাতিলা নাট। নাচন্তে নাচন্তে উঠিল ধুলি, দেবী লৈলা বাম হাতে কোচে তুলি। সেহি ধুলিত কাল ধুমা উতপতি বুলি। হাতত আমনি ডিক্লিত কল্লাক্ষ কান্ধত ঝুলি। তাহাৰ কনিষ্ট বিশ্বধিয়া ভাই। পৰৰ জ্বীক ধৰিবি জাই। কিছু ধুলি দেবীৰ বন্ত্ৰত ৰৈলা, সড়াউ বিড়াউ ছয়ো জন্মিলা। পৰৰ জ্বীক সদায়ে হৰি। বন্ত্ৰ অলঙ্কাৰ নিয়ে চুৰি কৰি। ৰজত পিতল আৰু তাম কাস। খল খলি দেবী তুলিলা হাস। যেবে স্থানিবি মায়েৰ দোহাই, হৰণ বস্তুক পেলাই দিবি ভই। বস্তুৰ ধুলি মলয়া চাৰি পেলালা। বিষ্টা সিঞ্চা পণ্ডয়া অভায় গকুলা জন্মিলা। স্থান হৰি চন্দ্ৰ ভাই যাকে তাকে অপুত্ৰ কৰিবি ভই। উপজিলা সবে নাটৰ খান। মোহোৰ বচনে চাৰিবি ছুজ্জন।

তাম্বুল ঝৰা।

চিলি মিলি সাগবে মেঘে আন্দোল সাগবে কৰে বালি। ফল ধৰি ডাক পাৰে দেবী গোসানী। ভুতুনী প্ৰেতনী পিসাচিনী বিড়ালি কিল কিল ধনি আই বিড়াক বন্দি কৰোঁ দেবীৰ আজ্ঞাক মানি। ওং দেবীৰ সপত। দেবী ভবানীৰ সপত।

পুপ্প ঝাৰা মন্ত্ৰ।

ভাহিন হাতে মালতী বাম হাতে পুষ্পাচয়। আচোক মসুষা দেৱতা কাষ্পায়। কম্পে অন্তৰ্গিৰি কৰে টলবল। পাতালৰ পৰা আসি নিকালিণ জল। লং ইতি পুষ্প ঝাৰণং ।

কদলী পত্ৰ ঝাৰা মন্ত্ৰ।

চিৰল পত্ৰ বিৰল দন্ত, তুৰ্গাৰ তলপে ঝাৰিলোঁ পত্ৰ। স্থাকিলা চামৰে মাৰিলো চাটি। আমুকীৰ গায়ৰ মায়া পেলালোঁ কাটি। জং ইতি স্বাহা।



আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

চিকনি ঝৰা মন্ত্ৰ।

এক দিনা ব্ৰহ্মা কামধেতু ছহিবাক লৈলা। ত্ৰিদশ দেবতাগণ সেহি থানে গৈলা। ব্ৰহ্মাদেৱে ঝাৰিলা জেলা। ত্ৰিদশ দেৱতা ক্ষেত্ৰ বিড়াৰ লাগিল চলা। ৰং ইতি ব্ৰহ্মাৰ শাপ ও। ফং ইতি ছুৰ্গাৰ তলপ জং ইতি জটা চিলা। সং ইতি গাঠি। জং ইতি ৰৈক্ষা। ভং ইতি ভবানীৰ শপত। বং ইতি ক্ষেত্ৰ বনিদ। কং ৰং কতেং কিং। ডিং ইতি মন্ত্ৰতা ক্ষেত্ৰ পালায় নমঃ।

সূত্ৰ ঝাৰা।

ব্ৰহ্মা বিষ্ণু ৰুদ্ৰ তিনিজন হৈবা সাখি। মই আমুকীৰ গা বান্ধো ইথানত বিস মহামাই দেবা কাটি দিলা হত। মই আমুকীৰ আঠ ক্ষেত্ৰবিড়াউ চিৰাউ বিদ্দি কৰো দেবীৰ পুত। আকাশত দেবতাক বান্ধিলোঁ ভীম জৰি। পাতালত নাগিনী বান্ধিলোঁ খৰ কৰি। আমুকীৰ গায় বান্ধিলো অনেক যতনে। দেবীৰ চৰণ চিন্তি বোহো এক মনে। এহি গাঠিৰ উপৰে যি কৰিব যায়। খাণ্ডা ধৰি কাটিব, তাক কালিকা চণ্ডী মায়।

সৰিসা ঝৰা মন্ত্ৰ।

এক দিনা কার্ত্তি গণপতিৰ জন্ম ভৈলা। জন্ম হৈয়া যক্ষ কপক দেখিলা। কপ দেখি ব্যামোহিত ভৈলা মন। তুইকো যাই লংঘিলা তেতিক্ষণ। সৰিসা শুঠি সৰিসা মুঠি দেবী আনি দিলা সহিসা বাটি। সেহি সৰিসাৰ জাৰিলা ভেল। ক্ষেত্ৰ বিড়াব ভাজিলা মেল। শুন সৰিসা তোৰ কহো জন্ম জাতি। মলয়া গিৰি পৰ্ববতত ভৈলা উতপতি। সোনাৰ লাক্ষল কপাৰ কাল। কৈলাসৰ গোসাই জুৰিলা হাল। হাল বাহন্তে উঠিল মাটি। গজিল সৰিসা মেদিনী কাটি। চল সাৰিসা চল। দেবীকাৰ বৰ। যি ঠাই আছে ক্ষেত্ৰ বিড়া তাহাক খেদি ধৰ। তাহাক জাৰি আনক জাস। গঙ্গাতীৰে বর্ত্তিস কপিলা বধ। পাঞ্চ পাশুবৰ শৰত প্রস। মহাদেৱৰ জটা চিক্ষস হন্তুমন্তৰ লাঞ্জত ধ্বস। সীতা আইক ঘৰ কৰস। দেব ক্ষ্বিগণ ব্রহ্ম ক্ষ্বিগণৰ সপত। এহি বাক্য লাৰস দেবী মায়ক ঘৰ কৰস।

দিশ বন্দি মন্ত্র।

অহে। ৰাত্ৰি প্ৰমানে পুতিলোঁ চাটু। পুবে বন্দি পশ্চিমে বন্দি উত্তৰে বন্দি দক্ষিণে বন্দি। আন মন্তে ভাৰ নপাবেক সন্ধি। আমুকীৰ গায় বন্দি ঘৰ

66



মন্ত্ৰ আৰু ভণিতা যুগ

বন্দি ছুৱাৰ বন্দি কৰি থওঁ। চুলত ধৰিয়া সেৱা কৰাওঁ। আমুকিৰ জপৰা বিড়া। উঠা বিড়া ডালুয়া বিড়া। নামতো বিড়া থামাচা বিড়া। দগন্ধা বিড়া। টুপনিয়া বিড়া। ওং নাভি কুগুলী দেবী ভবানীৰ সপত। মোৰ বচন সুহি ছুৰ্গা দেবীৰ ডাক। মেলিলা আঠ বিড়া অন্তৰী থাক।

দক্ষিণত বন্দি কৰে। যমনাম। পশ্চিমত বন্দি কৰে। বহুণ অমুপাম। উত্তৰত বন্দি কৰে। কৈলাস সমে হব। পুবে বন্দি কৰাে ভামু ভাস্কৰ। উত্তৰত বন্দি কৰাে ভবানী পাৰ্ববতী। পভালত বন্দি কৰাে মাত্ৰ বস্থমতী। অৰাত্মি প্ৰমানে পাতিলাে চাট। দেবা দিছে ভাকে নিৰ্ভয় বাট। চল বেটা চল মেক গিৰি পৰ্ববতে চল। হিলে দলে চল গ্ৰাম নগৰে চল। যৈকে ইচ্ছা তৈকে চল। অৰত্মি প্ৰমানে পুতিলাে চাট। অক্ষাৰ নাগ পাশে বান্ধিলাে বাট। দেবাৰ আক্ষালে মহাদেবৰ জট। এহি ঔষধে মাৰিলাে চাটি। অক্ষকাৰ কৰিলাে তােৰ দিন কি ৰাতি। তুৰ্গাৰ শপত অক্ষাৰ নাগ পাশ মহাদেবৰ জট দেবাৰ তলপ।

धन्त्रविति मञ्ज।

উচ্চ ঘৰ ওৰ মাটি দেবী আনিলা কাটি। খচি গুলি দিলা হাতত। বাটলি হৈ গেল দেবীৰ পাকত। শুন বেটা শুন। ত্ৰহ্মা দেবীৰ গুণ। মাৰ বাটলি যাহা চলে আঠ বিড়াৰ যাই মাথাত পৰে। ত্ৰহ্মা দিলা ধনু খানি কদ্ৰে দিলা গুণ বান। আঠ বিড়াৰ দলি মায়া শব্দ কৰিলোঁ নিৰ্জ্ঞান।

গঢ় মন্ত্ৰ।

কাল কিল কৈল মেচাৰ বাণী। কৈত আছে কোন দেৱতা লীলায়ে নজানি।
মই কৰো গুণ ভোক লাগি। তই থাক মোক লাগি। মই কৰে গণ গণ দেবীৰ
আজ্ঞায় গুণ। তই দক্ষিণ কৰ্ণ পাতি শুন। জয় জয় নৰসিংহ গগণ সমতা।
মই কৰো গুণ দেউ বিড়া পলাই চতুৰ্ভিতা। গৃহ খনৰ উপৰে উঠি, চাৰি কোনে
চাৰিটি মাৰিলোঁ খুটি। এহি খুটিৰ ভিতৰ পশ যেবে, হন্মুমন্তৰ লাগুত ধৰদ তেবে।
সীঙা মাৱক ঘৰ কৰস তেবে। বাপ হন্মুমন্ত কৰো হাত যোৰ। লক্ষাৰ বিভীষণৰ
হুক্ষাৰ। লাকুলে বান্ধিলোঁ সাতখানি গড়। হন্মুমন্তৰ লাগু কৰিলোঁ সম।
ছুৰ্গা আচোক দেৱতা নলভেষ যম। এহি বাক্য লবে দেবা মাৱক ঘৰ কৰে।
মহাদেবা দুৰ্গাদেবা পাতি আছে খেড়ি। সভাৰ দোহাই লাৰস যদি তাতে পৰি মৰি।

আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

20

বিড়া বন্ধ মন্ত্র।

বাপ আদিয়া মায় অদিতি। মন্তে বিড়া বান্ধো নাহিকে সন্ধি। মহাদেৱৰ গণ অধিতিৰ পো। মন্তে বন্দি কৰোক সুযাইবি পো। মহাদেৱৰ আজ্ঞা ছুৰ্গাৰ বৰ। বান্ধিলো বিড়া পশি থাক ঘৰ। মোহোৰ হুন্ধাৰ মহাদেৱৰ বব। উত্তৰে বান্ধো কুবেৰৰ গড়। আকাশে বান্ধো দেৱতাগণ পাতালে বান্ধো ধনপতিগণ। জলে বন্দি কৰো জল কোৱাৰ সখ্যে বন্দি কৰো চুচিয়া গণ। শুনিকী মেনিকী চুই বহিনী পুত্ৰ বন্দি কৈলা মনুষ্য গণে। নৰসিংহৰ হুন্ধাৰ মহাদেৱৰ বৰ। বান্ধিলোঁ বিড়া পশি থাক ঘৰ। তোৰ উপদ্ৰব সহিব নপাৰি বন্দি কৰিলোঁ বাপৰ আজ্ঞা পালি। নাগপাশে হুনুমন্ত কেন ভৈলা বন্দি। হাড়িৰ মুখে সমা বেটা নাহি সন্দি। নৰ সিংহৰ হুন্ধাৰ বান্ধিলোঁ সপ্ত ছুৱাৰ।

কৰতি মন্ত্ৰ।

অনস্ত শ্যাত স্তিয়া আচন্ত চাৰি বেদ বাজ ভৈলা নিখাসত হস্তে। ওকাৰ শবদে অথৰ্ব বেদ ভৈলা। অথৰ্ব আছে কৰতি কহে। কৰতিৰ হত্তে জগত ৰছে। কৰতি মধ্য বেদ কৰতি বেদ কৰতি ওঙকাৰ শবদে কৰতি ব্ৰহ্ম কৰতি। মাৰে চৰিটা কৰতি কাটি কৰে পানি ধাৰ। ওঙকাৰ শবদে গোসাই জপিবাক লৈলা। ওঙকাৰ শবদে আছে যম যিতো বেদ কৰতি নাম থৈলা। ওকাৰ শবদে গোসাই চাৰিলেক ডাক। ওন্ধাৰ শনদে চাৰি বেদ বাঝ। ওন্ধাৰ শবদে ব্ৰহ্মাকে স্মৰিলা। চাৰিখান বেদ ব্ৰহ্মাৰ আগত পৰিলা। ওঙ্কাৰ শবদে ব্ৰহ্মা দিলা ডাক। অপোনাৰ বিছা এৰি বাপৰ বিছা কাট। আপনাৰ বিছা এৰি পৰ विद्या थि । भव (भनात्मा कार्षि । वायू भव कार्षि । वायू वान कार्षे । इस বান কাটো। চন্দ্ৰ বান কাটো সূৰ্য্য বান কাটো। চন্দ্ৰ শৰ কৰো খণ্ড খণ্ড। মহেশ্বৰ আজ্ঞা কুমন্ত্ৰ কাটি কৰো ৰগু ভগু। কুৰু মহেশ্বৰ শৰ কাটো। বায়ু শৰ কাটো। বহ্নি শৰ কাটো। মুষ্ঠি শৰ কাটো। উলতা শৰ কাটো। পালটা শৰ কাটো। উভতা শৰ কাটো। থল শৰ কাটো। সপা শৰ কাটো। ফুটা শৰ কাটো। সাত শৰ কাটো। খান্ত শৰ কাটো। ভ্ৰুয়া শৰ কাটো। নচয়া শৰ কাটো। আৰ শৰ কাটো। অনু শৰ কাটো। খোড়া শৰ কাটো। বস্তু শৰ কাটো। ভূগ্ধ শৰ কাটো। বজ্ৰ শৰ কাটো। কুমন্ত কাটি কক নিৰ্যান। ত্ৰহ্ম কৰোতি ধৰিলোঁ ডাটি। চুৰচণ্ড পেলালোঁ



মন্ত্ৰ আৰু ভণিতা যুগ।

काि । इन्मब हुब कारिं। हन्म हुब कारिं। त्रृशं हुब कारिं। खन्न हुब कारिं। বায়ু চুৰ কাটো। বিষ্ণুচুৰ কাটো। মাত চুৰ কাটো। আতচুৰ কাটো। দাতচুৰ কাটো। ভৰিচুৰ কাটো। মৃষ্টিচুৰ কাটো। মাটিচুৰ কাটো। গৰ্ভচুৰ কাটো। গৰ্ভৰ নাভিচুৰ কাটো। দেখাচুৰ কাটো। খোজচুৰ কাটো। সংসাৰৰ কুমন্ত্ৰণা সকলো কাটো। মহেশ্বক শ্বাৰি সমস্তে শৰ মাৰি থৈলোঁ জান্তি। দেব অগ্নি মনুষ্যৰ শৰ কৰিলোঁ পানি। চল চল শৰ চল গুৰুৰ আজ্ঞায়। যি হানিছে শৰ সেই শৰ সমস্তে পৰ। নাচিল থিৰ যৈসানি উতপতি ভৈলা, কালকুট শৰ। ৰামৰ শৰ। লক্ষণৰ শৰ। নাগ শৰ। পোতা শৰ। চিক্লিয়া শৰ। পিক্লিয়া শৰ। দেবশৰ। মনুষ্যৰ শৰ। ইন্দু শৰ। চন্দ্ৰশৰ। বায়ুশৰ অগ্নিশৰ। উলতা শৰ। পালতা শৰ। দৈত্য শৰ। ইন্দ্ৰশৰ। যিহানিছে আমুকাৰ গাৱৰ শৰ। সেই শৰ তাৰ শৰীৰে পৰ। গুৰুক স্থুমৰি কৰতি ধৰিলোঁ ডাটি। আপোনাৰ মন্ত্ৰ ৰাখি আনৰ মন্ত্ৰ পেলাইলে । কাট। জয় জয় কৰতি উতপতি ভৈলা। গোসাই বৈসানি সৃষ্টি আৰম্ভিলা তৈসানি কৰতি উত্তপতি ভৈলা। নাছিল জল থল নাছিল আকাশ নাছিল চন্দ্ৰ সূৰ্য্য কাৰো প্ৰকাশ। তৈসানি কৰতি উত্তপতি ভৈলা, দেৱতাৰ শৰ পেলা ইলা কাটি। দেবতাৰ শৰত যি ভৈলা। কৰতি মত্ত্ৰে দৈত্য দানৱৰ বান। শৰ কাটি কৰিলোঁ উচ্ছন। কৰতি উত্তপতি হুই ধাই। ত্ৰন্ধাৰ শৰ ত্ৰন্ধাৰ বান কাটিয়া পেলাই। যুগুনীৰ শৰ কাটো। বাহিৰে ত্ৰহ্মা মেলিলা বান। কৰতি মন্ত্ৰে কাটি কৰে। খান খান। অধে কাটে। উধে কাটো। মহাদেৱৰ আজ্ঞা পালোঁ। कालकृष्ठे वाक्षि भानि कर्दा। यह यह भानि वक्र दाश मव कबिरला भानि। কৰোতি মন্ত্ৰ পঢ়ো মহাদেৱৰ আজ্ঞা পালোঁ। নাৰানি শৰ নিচকি শৰ গৰ্ত্তকি শৰ মাৰ শৰ কবিলোঁ পানি। ত্ৰহ্ম কৰতি পঢ়ো। গুৰুৰ আজ্ঞা পালোঁ। অধে কৰতি উধে কৰতি পঢ়িলোঁ। যেবে বজু হাৰা পানি কৰু তেবে। মসুষ্য বত্ৰিশ শিৰত কৰোতি মন্ত্ৰ পঢ়ো যেবে কালকুট হাৰা মানে পানি কৰু। তেবে চন্দ্ৰ বান্ধো সূৰ্য্য বান্ধো। বত্ৰিশ নাৰিৰ পৰাই ব্যাধিক পানি কক। বাহিৰক याहै। कबिंड मख পঢ़िल श्रेय পानि छहे। यह यह शाल याहै। कांगिली হাৰা সবে আছে চাই। মেলিলোঁ বান কাটি কৰো নব খান। প্ৰথমতে দেবীয়ে মসুষ্টে কালকুট শৰ কাটি কৰে। নব খান। বত্ৰিশ শঙ্কৰ কৰোতি মন্ত্ৰে কাটি পানি কৰো। চুন কৰতি পঢ়িলে শৰ সহস্ৰ ৰোল সিয়ো পানি হুই। ৰজে বজে কাটো হাৰা শৰ। সেগশৰ। লেগশৰ। চাহনি শৰ। অমিশ্ৰ শৰ। উৰ্দ্ধশৰ।

আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

25

ভোক্তশৰ। পোৰাশৰ। চটকিশৰ। শনিশৰ। লুটিশৰ। লুটা শৰ। **ঢেলাশৰ। মা**টিশৰ। ভ্ৰমবাশৰ। ভূমিশৰ। ৰাঞ্চলিশৰ। ঠকিশৰ। হেঙ্কুলিশৰ। ভাণ্ডশৰ। প্ৰুয়াশৰ। তালশৰ। সকল শৰ দিলেঁ: থৈয়া। চুন কৰতি পঢ়ি পানি কৰোঁ। মহাদেৱৰ আজ্ঞা কৰোঁ। গৰ্ভচণ্ড। পগলাচণ্ড। বায়ুচণ্ড বনিয়াচণ্ড। কৰতি পঢ়ো ত্ৰহ্মাক ধিয়াই। মণ্ডক কৰো। পাখাৰ মাৰো চাটি, অনন্ত শ্যাত গোসাই সৃতিয়া আছন্ত। নিছাস কৰন্তে চাৰি বেদ বাজ ভৈলা। ব্ৰহ্ম কৰতি বিষ্ণু কৰতি ৰুদ্ৰ কৰতি দেব কৰতি চাৰি কৰতি উত্পতি ভৈলা। স্থান কৰতি কিবা চাওঁ স্বৰ্গৰ গাঠি মানে কাটিবাক যাওঁ। এহি শুনি কৰোতি মহা ক্ৰোধ ভৈলা। স্বৰ্গৰ গাঠি মানে কাটিবাক গৈলা। ইন্দ্ৰৰ গাঠি কাটো চন্দ্ৰৰ গাঠি কাটো সূৰ্য্যৰ গাঠি কাটো জনেকৰ গাঠি কাটো। মই যেবে হাতে কৰতি ধৰো ডাটি। পেলালো অমুকাৰ কুজ্ঞান মন্ত্ৰক কাটি। নিসা নার শবী সন্থাসীৰ বচন লবস মহাদেৱৰ চক্ৰত পৰি মৰস। বায়ুৰ গাঠিক কাটো। থলৰ গাঠিক কাটো মাংসৰ গাঠিক কাটো। যেবে মই কৰতি মন্ত্ৰ খান ধক ডাটি চৌষষ্টি কুজ্ঞান কুমন্ত্ৰ পেলালোঁ কাটি। শুনি বিষ্ণু কৰতি মই কিবা চাউ। পাতালৰ গাঠি মানে পানি কৰি কাটিবাক যাওঁ। এহি বুলি বিষ্ণু কৰতি মহাক্ৰোধ ভৈলা। পাতালৰ গাঠিক কাটো। লক্ষ্মণৰ গাঠি কাটো। ৰাক্ষ্যৰ গাঠিক কাটো। চৌষপ্তি গাঠিক কাটো। যেবে মই কৰভি মন্ত্র খান হাতে ধক ডাটি। চৌষষ্টি কুমন্ত্র কুজ্ঞান কুমর্ম্ম সমস্তে পেলালোঁ। কাটি। শুনি ৰুদ্ৰ কৰতি মই কিবা চাউ। স্বৰ্গৰ গাঠি মানে কাটিবাক ষাওঁ। এহি বুলি ৰুদ্ৰ কৰতি মহাক্ৰোধ ভৈলা স্বৰ্গৰ গাঠি মানে কাটিবাক গৈলা। ব্ৰহ্মাৰ গাঠি কাটো। বিষ্ণুৰ গান্তি কাটো। ৰুদ্ৰৰ গাঠি কাটো। থলৰ গাঠিক কাটো। দেৱতাৰ গাঠিক কাটো। সমস্ত গাঠিক কাটো। হাতে কৰতি মন্ত্ৰ খান ধৰু ডাটি। আৰু মেলো জাঙ্গ মেলো মেলো বতিশ নালা।

চন্দ্ৰ সাখি, সূৰ্য্য সাখি। আমুকাৰ মুখ ৰাখি অন্তচুৰ মেলো। দাশুচুৰ মেলোঁ। চুলি চুৰ মেলোঁ। স্বৰ্গ চুৰ মেলো। ভৰি চুৰ মেলো। জল চুৰ মেলো। খল চুৰ মেলো। পাতালি চুৰ মেলো। চৌষপ্তি চুৰ চণ্ড মেলি পানি কুত্য কৰো। ব্ৰহ্মা মহাদেবৰ আজ্ঞা পালো। কুমন্ত কজ্ঞান কুকৰ্ম্ম হাড়া মন্দ্ৰ কৰা ৰোগ ব্যাধি চুন কৰতি পঢ়ি সমস্তকে পানি কুত্য কৰো।



প্ৰবিপ সন্ত।

ধৰণি কটকট ধৰণি চাল। মোৰ ধৰণিৰ উপৰে বিষ নাই আৰ ॥ नाया धवि नाया कल। বিষ নামি যা পাতালপুৰ ॥ त्यर्व हावि विष উপৰে याम। আই পদ্মকুমাৰীৰ মাথা খাস॥ ধৰণি বান্ধো ইঠা ধৰণি বান্ধো সিঠা। ধৰণি বান্ধো চান্দ সূৰ্য্য ছই দেৱতা। মোৰ ধৰণিৰ উপৰে কৰস ঘাৱ। আই পদাকুমাৰীৰ মাথা খাৱ। কোথি গেলা কোথি গেলা শংখৰ মার। শংখে বোলে খাইছে ভাগা দংশেৰ ৰাৱ ৷ কি দংশিলা ৰূপক পহিল ৰাত্ৰ। কোন কোন সৰ্পে কাঢ়িলে ৰাৱ॥ ডাক দিয়া বোলে শংখেৰ মাৱ। শংখে বোলে কৰিম কি। घुटे ठीटे भाक कालकुछ विय। সৰ্পৰ মেজেলি সৰ্পৰ শ্ৰেষ্ঠা॥ কোন কোন সৰ্পৰ কোন কোন জাতি। সৰ্পত বসিছি দাৰুণ কলি ৰাজা॥ এক ডেলি ফুল ফুলে দক্ষিণৰ আগে। এক পাসি ফুল লাগে সাঠি সহস্র নাগে॥



আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

সেই ফুল যেবে ঔষধিক পাই। জাৰিয়া গোম গোমুনীৰ বিষ এখনে নোমাই॥ ওৰে গোমা তোৰ মাক জাতি। মাঘ মাহা পঞ্চমি তিথি। কৈক মাৰি কৈক পঠাইলা সমস্তে ৰুচি ৰাজ। শক্ষৰিয়াৰ কটৰি জাৰি। মই বিষ জাৰো জলে মন্তে॥ আকাশত পানী নাই। कुक पिटला विष नाइ॥ विष विष वृति महे मिला शिव। বিষ গেল আকাশৰ ধনি ৷ বিষ আছে ফন ফনস্তে ভন ভনন্তে। ক্ষিৰ পানী খিৰ খিৰত্তে । **ठक्**रे आथि ठारेना विष। ত্ৰিভুবনৰ সন্ধিৰ বিষ । ৰামৰ আজ্ঞাই কাৰু। গুৰুৰ আজ্ঞাই কাৰু। কালকুট বিষ টিপতে মাৰো॥ ट्यांटिन्मिव ट्यांटिन्मिव ट्यांटिन्मिव नाडि । भवीवज विषय करन अरमक देशमालि॥ আদ বংশৰ পদাকুৱৰী হাতে মগাৰ খাক। এক হাতে আছে খটাঙ্গ ওম্বক। এক হাতে আছে বিষৰ লাৰু। विरुष्य नाक लिया मार्ड मरन मरन शरम । অন্য ধর্ম্মে কি ফুল ফুলে সি ফুল গন্ধতে ভাষে। পানী বসন্তি তকণি কাশে ভাঙ্গিল যুং॥



মন্ত আৰু ভণিতা যুগ।

ভাক দিয়া প্ৰচাৰে চুঙাৰে ডুং কানিব ভাকিল ঘুং।
চুবে শঙ্কৰ চৰিল মাথে।
চুবে জাক অমৃত হাতে।
ফুটিল জল কুচিল পানা।
মৈস্টেকস্থে কৰে ভাঠি উজানি।
গণ্ডুবত কৰি ধৰিলে জল।
আই পদ্মকুমাৰীৰ মাথা খাও।



গু কৰতি।

গু কৰতি নিজ গুৰুৰ বচন শুনি। আদি আজ্ঞা অনাদি আজ্ঞা। একেশ্বৰে আছো মই আদি নিৰঞ্জন ॥ স্প্তি নাহিকে মোৰ নকৰে শোভন। এহি বুলি গোসাইৰ মন ভৈলা। প্রকৃতিক কটাক্ষে চাহিলা। নাভি কমলতে ব্ৰহ্মা উলজিলা। হৃদয় কমলতে বিষ্ণু উপজিলা। ললাটতে ৰুদ্ৰ উপজিলা॥ रुष्टि कविवाक আদেশিলা। আজ্ঞা শুনি সৃষ্টি তেখনে কৰি নিৰ্য্যান। চৈধতলা পৃথিবীৰ যাৰ যত ধৰ্ম। তেতিক্ষণে সৃষ্টি কৰিলা নিৰ্মাণ। ব্ৰহ্মায়ে প্ৰজন্ত বিষ্ণুৱে পালন্ত ৰুদ্ৰে সংহাৰন্ত। চৈধতলে পৃথিবীৰ হৰেক ৰকম বিষ ব্যাধিগণ। উপক পকে গাঠিগণ। বেদৰ বাহিৰে খেত্ৰ একে ঠাই হুই ॥ মনুষ্যক খাই হৰেৰ ভিতৰে নাভিৰা সৈন্তাসিৰ। ভেশ ধৰি আছে মহেশ্বৰ॥ সেহি বেলা বৈছা ধনন্তৰি গৈলা মহেশৰ ঠাই। তাক্ষ দেখি ধিয়ান ভক্ষ ভৈলা ॥ दिछ धनखरीक ऋधिवाक टेलना। কি কাৰ্য্যে আসিলি মোৰ ঠাই।



ণ্ড কৰতি।

বৈভা বোলে শুনৰে জীৱকো যে মনুক্তক হিংসা करब रमरब रेमरजा। আৰু এক কথা ভৈলা শুনা তাক কও ॥ সবাহাৰ মন্দকৰ বেদৰ বাহিৰ চুৰ চণ্ড বান আমাক নামানে বেদক মুগুনে। নৰ মনুষ্যক ৰক্ষা কৰো কেন মতে । **(इन छनि महाएम्ब खन्ना शास्य देशना ।** মহেশ্বক দেখি ত্রক্ষা শুধিবাক লৈলা। বেদৰ বাহিৰে গাঠি শ্ৰজিলা কোন ঠাই ব্ৰহ্মা বোলে চাৰি বেদ জানো মই॥ ইহাৰ বাহিৰ গাঠি নাজামু নিশ্চয়। অলোচিয়া ভূয়ো জনে বিষ্ণু পাশে গৈলা। ত্ৰকাক হৰক দেখি আসন দিয়াইলা। তাতে বসি ছুয়ো জনে কহিবাক লৈলা। হে বিষ্ণু ভগৱন্ত জগত অধিকাৰী। চৈধ তালে পৃথি সবে আছে:জানি। নানা ব্যাধি ৰোগ ভূত প্ৰেত পিসাঞ্চ দৈত্য দানৱগণ। বেদোৰ বাহিৰ গাঠি যত ইসব মনুষ্যক মাৰি কুৰে । नरमारल विक्रु वारल देश करे। ইসব কথা নাজানু মই । আলোচিয়া তিনি জনে উত্তৰ দিশে গৈলা। লোকালোক এৰি পাছে জলখান পাইলা॥ বসিয়াছে পূর্ণকৃষ্ণ অনস্ত শ্যাত। হাজাৰেক স্তম্ভ ফটিক প্ৰকাশে উপত বহল घब ञ्चवर्गब दकांि চন্দ্ৰভাপ উপৰত জিলি মিলি দেখিতে স্ভন। আঠভুজ বহু শ্যাম শৰীৰ যে কপ। বেদ ভগৱস্ত ৰোলে হে ত্ৰন্মা হে বিষ্ণু হে ক্স তিনি কি কাজে আসিলা আমা ঠাই। ভিনি জনে ভৃতি কৰি কহিবাক লৈলা।



আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

হে পিতৃ অধিকাৰী পাতিলা আমাক। বাখিবাক নপাৰো স্থপ্তি সবাকে এৰি আইলো। মৰোভিয়া গাঠি বেদৰ বাহিৰ উপক গাঠিগণ। নকৰে মান বেদক মুশুনে॥ व्यक्तिना देवना धनस्त्रवी। অৰ্থ বেদ দিলে। তাৰে হাতে। গুৰুক স্থুমৰি সেহি মন্ত্ৰ গাই। তথাপিতো গাঠিৰ ভুৰি ভঙ্গ নাই 6 ইখৰে বোলে শুনিয়ো কাহিনি। তিনি জনে সৃষ্টি কৰিলা ঘৈসানি। চাৰি সন্থাসি মোত মাগি নিলা চাৰি চহৰ। খৰ্ববহাজাৰ ধৰণি ॥ এহি বুলি ঈশ্বৰে নামেতি ৰৈলা। নাজাও নাজাও সত্যে সচ্চেত্ৰ স্পৃতিত নাহি কাজ 1 বেদৰ বাহিৰ গাঠি আমাক কৰে লাজ। হেন শুনি ঈশ্বৰ ক্ৰোধ জুলি গৈলা। গু, গু, গু বুলি তিনি বেলি দিলা ডাক তন্ত্ৰ মন্ত্ৰ বেদৰ বাহিৰ গাঠি গু হুই থাক ॥ বিষ্ঠা যেন গু কৰু। গাহ গণ গু কৰু ॥ তিনি কো বুলিলা। পেন্ত বিগুম। আমাৰ অমোঘ বাfণ খানিতে পাই। সবেয়ে কহিলো নিচয়। হেন বাক শুনি ৰঙ্গ ভৈল। তিনি জনে গুৰুক প্ৰনামি মন্ত্ৰখান শিকি লৈলা। গৰ্ভতাকৰ ত্ৰিগুণ ভৈলা ৷ সমস্তোৰ গাঠি গু ছুই পৰ ৷•

লৈলা কৃষ্ণক প্রণামি উঠিলা তিনি জনা ॥



গু কৰতি।

ভগৱন্তে বোলে হৈব অজৰ অমৰ। তিনি জনে আজ্ঞা লৈয়া উঠি গৈলা। আঠ দিশি অনস্ত ফেনা বিস্তাৰিবে লৈলা। আস্তৰিয়া গাঠি পাই ॥ গু কৰতি কাটি পেলাইলা। তন্ত্ৰ মন্ত্ৰ পাতলোত গুকৰি থৈলা। হৰ বিষ হৰ নৰ মনুষ্যৰ বেদৰ বাহিৰ। ব্ৰহ্মা গু কৰতি ছৈপা কৰ। মনুষ্যৰ গৰ্ভে দিয়া আতি। ইসব গাঠি মুঠি চুৰ ব্যাধি কাটি থৈলা। এতেক গুকৰতি প্ৰখ্যাত ভৈলা। ৰাম গৈলা বৈকুঠে কলি যুগ ভৈলা। অস্থুৰে দেৱদৈত্যে পিড়া কৰিবাক লৈলা। এহি মন্ত্র খান সভা যুগে গুপ্ত হুই। क्रेयबब शारन रेशला। তেতিক্ষণে মনুষ্যক অধর্মে যুবিলা ॥ ব্ৰহ্মাই পৃথিবীৰ দেৱতা শ্ৰজিলা। ব্ৰহ্মাৰ তুতিত ঈশ্বৰ তুষ্ট ভৈলা। পাচে আসি কৃষ্ণ অৱতাৰ ভৈলা। অসংখ্যাত অহ্ৰৰ সংহাৰিলা। मवारक निर्धान कवि विक्रिक हिल्ला। পুনৰ্বাৰ আসিয়া ধৰ্মে যুৰিলা ৷ পাচে যোগ ধৰি দৈন্যাসি আছে তপ কৰি। সেই বেলা সৰ হাড়াকৰমা গাঠি মৃঠি উবান ॥ কৰণে উপকে ধনু চাক। চুৰ গাঠি মুঠি ইসবে মনুষ্ঠক মাৰি ফুৰে। যোগ বলে ৰাম গিৰি গুকৰতি পাই। সকলোক কাটি কৰিলা ঠাই ঠাই। তৈৰ পুৰা তিনি জনে পৃথিবীক আইলা। বৈছা ধনস্তৰিক মাতি এহি মন্ত্ৰ খানি দিলা ৷

200

আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

গুৰুক প্ৰণামি বৈছে মন্ত্ৰ শিৰে তুলি লৈলা উলটা পালটা গাঠি কাটিবাক লৈলা। সবে তোলে পাতালৰ মাটি। নৰহৰি কুমৰে আনিলা কৰে কাটি ॥ খচি গুলি দিলা চাকত কলহ হল ব্ৰহ্মাৰ পাগত। সেহি কলহত জাৰিলো পানী॥ চলিশ কোটি গাঠি সর্বব কাটি ব্যাধি নিথর্ববক। চুৰ কাটি কৰিলো পানী। হৰ গাঠি মুঠি মূৰ। সমস্ত গাঠি গুতুই পৰ। এহি মন্ত্ৰ খানি সত্য যুগে গুপু হুই ৰইলা। ছাপৰ যুগে ৰাম অৱতাৰ ভৈলা॥ এহি মন্ত্ৰ খান উচ্চাৰিবে লৈলা। ৰামৰ আজ্ঞা লক্ষ্মণৰ আজ্ঞা আদি গোসানীৰ আজ্ঞা বিভিয়নৰ আজ্ঞা হুমুমস্তৰ আজ্ঞা সবাকে নমস্বাৰ কৰি আঠ দিলে আঠ দেশ। ছৰ গাঠি কাটি গু কৰে। ॥



ভাক-ভণিভা। জন্ম প্রকৰণ।

এক দিন ডাকে জন্ম লভিলা। ভূমিত পৰিয়া মনে গুণিলা। দেখে অন্ধকাৰ প্ৰদীপ নাই। চক্ষু টেৰ কৰি মাৱক চাই। প্রসর হঃখত মাতৃ অত্থ। চকু মেলি চাই পুত্ৰৰ মুখ। ওচৰৰ চুই ভিৰী আসিয়া। জলাৱে অগ্নিক ভূষে ফুকিয়া 🛭 পিৰিক পাৰাক কৰে আগুণ। नालाटरश दमिया छेठेय अन । হেন দেখি পাচে মাতিলা ডাক। পোঁৱাতী ৰাখিয়া চা পুতাক ॥ একে কাঠে লাড়ি চাৰি। ছই কাঠে ফুপাৰি॥ তিনি কাঠ কৰি এক। যেনে লাগে ভেনে সেক। धुवारे मुवारे टकाटन टेन्टर टक्टर । ভালে ভালে ফুল পরিল যেবে। জয় ধ্বনি কৰি নাড়ি কাটিব ৷ দৃঢ় বৃদ্ধি কৰি নাভী বান্ধির। গোবৰ খুটি সচলু কাঠ। সেকিলে নাড়ী নোছে অনাথ ৷

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

लोन कानूरकरव थ्वाव कान। তেবে স্তন ৰস হৈবেক ভাল। কলিয়া তুলসা বেলৰ পাত। মুঠায়ে সহিতে বাটী পটাত॥ তপত কৰিয়া জননী খাইব। তেবেসে নাড়ায়ে দুঢ়ক পাইব। যেবে স্থৃতিকাৰ ৰাখিব জীৱ। যতন কৰিয়া ঔষধ দিব ॥ বাসি জয়ন্তীৰ পুষ্পক লব। তাৰ কুদ্ৰশিপা অল্ল মিলাইব॥ অল্ল বেন্দেনা শিপা তাহাকো দিব। ক্ষৃধাত খুৱাইবে তেবেসে জীব। অপৰাজিতাৰ একেটি ফুল। জানি শুনি দিব দশৰ মূল। অহিত জনে শিশুক নেদেখি। অভ্যন্তৰে থৈব স্থহ্নদে ৰাখি পূবলৈ শিৰে শিশু শুৱাই। পোৱাটী ৰাখিব আগে জ্বলাই ৷ দিনত শিশুক নেড়িব জনে। ৰাখিব নিশাত মাৱে যতনে ॥ म्भु जिनो नावी मन त्निविव। মাজে মাজে মারে জাগি দেখিব॥ নিসম্ব তমু তৃঞ্চাতৃৰ জানি। স্থৃতিকা নিকটে নথৈব পানী॥ স্থৃদৃঢ়ে বান্ধিব কটিৰ বস্ত্ৰ। স্থৃতিকা নিকটে ৰাখিব অস্ত্ৰ। গৃহ চাৰিচুকে দ্বাৰ মুখত। বচ সিজু আনি কইব শকত। অশোচ বাজে মজল কৰি। সূষ্যক দেখাইব নয়ন ভবি ॥



ডাক-ভণিতা।

তেবেসে পুত্ৰৰ হৈব কুশল। জয় হৰি বুলি কৰা মন্তল॥

ধৰ্ম প্ৰকৰণ।

ব্ৰাহ্মণৰ পিতৃ দেৱ অৰ্চন। ক্ষেত্ৰিয় সবৰ প্ৰজা পালন 🛚 💂 বৈশ্যৰ বাণিজ্য ধন আৰ্জ্জন ! শূদ্ৰৰ স্বধৰ্ম নীতি সেৱন॥ তেবেদে ধৰ্ম্মক কৰিব জানি। পুথুৰী খানিয়া ৰাখিব পানা ॥ বৃক্ষ ৰোপণত অধিক ধৰ্ম। মঠ মণ্ডপ গুৰুতৰ কৰ্ম। যিহকে দিবে তাহাকে পাই। পৰলোকে গৈয়া বসিয়া খাই। অনিতা দেহত নাহিকে আশ। ধন জন বন্ত্ৰে কিক বিশ্বাস। यि क्रांत पित्रय अञ्चय गांवी। সিজন ন্যাই যম নগৰী॥ অল্ল জল জানা অধিক দান। তাত কৰি নাহি শ্ৰেষ্ঠ যে আন। ভাল দ্ৰব্যক যেখনে পাইব। দেৱতা দ্বিজক তেখনে দিব॥ কালিৰ ভাগক ৰাখে যিজনে। প্ৰশংসে তাহাক ৰবি নন্দনে । সোণাৰ তুল্য কন্মাৰ দান। ভাকে বোলে তাৰ স্বৰ্গেসে স্থান। मि प्रश्न (महे अब विश्रुल। क्षेष्रभ मान्छ नाहित्क जून । ভাকে বোলে জানা সেহিসে সাৰ। আপুনি মৰিলে কিকৰে আৰ ॥

অসমায়া সাহিত্যৰ চ্যুনেকি।

ব্ৰহ্মা হৰ আদি যতেক দেৱ। সকলে কৰ্য় গলাক সেৱ n গয়া প্ৰয়াগ বাৰাণদী যাই। গঙ্গাৰ স্থানত স্বাকে পাই ৷ ৰূপ সোণা হীৰাৰ মূলা। গলাৰ জলত সুহিকে তুলা। ষিজনে যত পাপ আচৰে। প্ৰধন পৰ নাৰীক হৰে। यि रिशया शका जान करन । সকলে পাতক তেখনে হৰে। প্ৰথমে ঘৰে উপবাস কৰি। তীৰ্থ যাত্ৰা কৃৰি যাইকেক লড়ি ॥ গন্ধাৰ জলত ছাড়িলে প্ৰাণ। হোৱন্ত মুকুতি স্বৰ্গ প্ৰধান। বুঝিয়া স্থজিয়া বান্ধিয়া আৰি ৷ তেবেসে শত্ৰুক জিনিতে পাৰি॥ সাক্ষী মুখে কথা কৰাই বাজ। यमि धर्म कवि (भाधस बाक ॥ দৃঢ় কৰি থৈব সাক্ষী সকল। সাধিব স্থায়ত তেবে কুশল ॥ যেবে ভাল ৰূপে সাক্ষী কহিব। তেবেসে সভাত ন্থায়ে জিনিব॥ ডাকে বোলে আগে নিয়াই সাজ। স্থায়ত হাৰিলে অধিক লাজ ॥ স্বধৰ্ম কথাত যাৰ গোচৰ। **ভাল সাক্ষা** দিয়া চাপ ওছৰ । সাক্ষী নৱ সাতাধিক চাৰিজন। তিনি চুই হোৱে যেৰে ব্ৰাহ্মণ। এক এক কৰি ভূষিব কাষ। বসিয়া ধাকিব সভাৰ মাঝ 🛭



ডাক-ভণিতা।

ধন আশ এড়ি স্থৃধিব সাকী। ৰাজাক তেবে ধৰ্ম্মে ফুৰে ৰাখি। যিজনে ধর্মত নকহে সাক্ষী। ডাকে বোলে তাক থৈবাহা ৰাখি॥ সত্য কৰি যদি সাক্ষী নকৱে। যম দূতে নিয়া নৰ্কত থৱে। ধর্মক এড়িয়া কহয় যেবে। ডাকে বোলে নৰকে পড়িবে তেবে। অসন্ত জন যদি হয় সাকী। শপত কৰাব ভাহাক ৰাখি॥ তথাপিতো যদি অসত্য কয়। পৰিবে নৰকে নাহি সংসয় ॥ **माको मूर्थ यमि ভঙ্গक कानि।** মধ্যস্থ জনৰ বচন মানি। माकीक प्रिथाই अनक मिव। পত্ৰত নাম লেখি ৰাখিব ৷ अनव माकी यपि नाहिकछ। পৰীক্ষণ কৰি তত্ত্ব বুঝিবস্ত ॥ স্বামীৰ দোষত ভূত্যৰ দণ্ড। ন্ত্ৰীৰ দোষে স্বামী লগু ভগু। ভেদ দণ্ড সাম্য কৰম্ভ দান। চাৰি ৰূপে ভায় কৰিয়া জান। वार्थ र्थारव यमि कन्मन वार्य । পুত্ৰক দণ্ডিবে পণ্ডিত ৰাজে। भूज करन यपि वर्ध विश्वक। বধিব নৃপতি সিতো শুদ্ৰক ॥ मञ्ज्ञान यनि छक तथ करन। ভিক্ষা ভুঞ্জি ভ্ৰমে বাৰ বছৰে। গঙ্গাত পৈয়া যেবে স্নান কৰে। সমস্ত পাপত তেবে নিস্তবে॥

1000

আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

প্রায়শ্চিত হুই গৃহক যাই। তেবে অন্ন জল জাতীয়ে খাই॥ ধৰ্ম প্ৰকৰণ এছিদে গৈল। নীতি প্ৰকৰণ উদয় ভৈল। শুনা সর্ববন্ধন ডাক ভণিত। ৰাম ৰাম বুলি তৰা কলিও॥

वित्थ वृष्टि करव यांशव शास्त्र । প্ৰত্যেক দিবদে ভোজন ক্ষীৰে ৷ ভক্ত গুৰু বিষ্ণু নাম নিচিনে। কাহাত বলে ছয় শত্ৰু জিনে। পিতৃ মাতৃ ছুইৰো বন্দে চৰণ। বোলস্ত ডাকে সার্থক জীৱন॥ ষাঠি বছৰত বোলে আই। আহাৰ শাওনত দোহে গাই॥ পুহত আহু জেঠত শালি। তেবেসে জানিবা গৃহস্থালী। তেবেসে যশ বখানে আনে। তেবেসে গৃহস্থৰ আটিব ধানে॥ যিতো পুত্রে পিতৃত পুছে কাজ। জানিবা নৃপতিয়ে লৱে ৰাজ ॥ সৰ্বব গুণীয়াক নাটয় ভাতে। হুষ্ট পুত্ৰ যাৰ নিতান্ত কান্দে॥ অপুত্রক মন্ত্রী নোহয় ভাল। দন্ত খসিলে কিহৰ গীতাল। জ্যোভিষ পঢ়ে গ্ৰহ্নৰ নাই খিত। দণ্ড ভুক্ত বিনে কিকৰে ৰীত।



ডাক-ভণিতা।

বৈছা ভয়া মৰে আপুনি বিষে। নৃপতি হুই প্রজাক হিংসে॥ निर्व नवरम्म भाषत्व शाव। সবে বিড়ম্বনা জানিবা মার॥ ৰান্ধন শালত নবাজে পটা। স্নান অবসানে নতৈল কোঁটা॥ শীতকালে যাৰ নভৈল বস্ত্ৰ। যুদ্ধ সময়ত ধুকাইল অন্ত। ষজ্ঞ অবসানে নাই দক্ষিণা। বোলস্ত ডাকে পাঞ্চো বিভূম্বনা। অগভীৰ স্থু নাহি একো কালে। **ठ्रथक** ভाল নেদেখে মতোৱালে । চোৰে ভাল নেদেখে চন্দ্ৰৰ জ্যোতি। ত্বফী জীৰ নাই পুত্ৰত ৰতি। জুইক দৃষ্টি সূর্য্যক পিঠি। মাহক খুতি কৰাইক মুঠি। ছাইত পজিলে স্বত হয় নম্ট। দস্তহীন হৈলে গঢ় হোৱে ভ্ৰম্ট । वांच ठांव नाशिल वानाक ठांना। ভাল মানুহ চাব খুজিলে আলিলৈ যাবা ॥ চিত লো খণ্ডে গঢ়ি কুঠাৰ। বক্ৰ ভাৰত কৰা ব্যৱহাৰ॥ উৰুখা ঘৰত বাৰিখা থাকে। যুবতী কন্তাক ঘৰত ৰাখে। আতুৰ গ্ৰাদে খাৱয় ভাত। **४क्डा शृंहरूक निप्तिय भा**छ ॥ চোৰে এৰে কৰে সন্ত। ইতিনিৰ জানিবা ভক্ত। তিক্তাৰ গৃক ৰখা দেখিবলৈ কুচিত। মুনিহৰ ভাত ৰন্ধা মৰণ উচিত।

Job.

আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

निक्कल कौद्रम निर्क (लार्व अफि। निश्चल को बन थकडा निरम् धवि॥ নিস্ফল জীৱন পৰত কৰে আশ। নিক্ষল জীবন খাটে প্রবাস । সবলে নিবলে কিহৰ নিয়া। পঞ্চে পঞ্চ কিহৰ বিয়া॥ বাঘৰে ছাগৰে কিহৰ মতামতি। হাতৰে মুৰৰে কিহৰ হতাহতি॥ তুষ্টা জ্ৰীহলে কিহৰ মাৱ। অক্ষমী জনত কিহৰ ভাৱ॥ অপৰাধী হলে নকৰে ৰক্ষ। অকাটন কটাৰিত উঠে খক ॥ धनीब कय्र मकलारव बन्न । ডাকে বোলে হৈল নিধনী ভন্ন। निधनी कन यि घटन याहै। আছোক ভাত মাতকে নপাই॥ ছাগ পাৰ পোহে হাঁহ। ছুই সীমাত ৰোৱে বাঁহ। বোলস্ত ডাকে মোত দোষ নাই। নিভ্যে নিভ্যে সিভো বিষাদ পাই। ভাপি লাঠি টনা। ইয়াক এড়িলে দিনতে কণা। আহে যাই বহে উকুৰ। কৰ্ণে আহে চহাল কুকুৰ॥ অপৰাণী হলে নপাই মাক্ততা। বেলি পৰি গৈলে নোহে সোধোতা ॥ খেৰো পীড়া ফটা পত্ৰ। মুথ চাই ৰান্ধনী হাঁহে মাত্ৰ॥ ছৱাৰ চুকত দিলে ঠাই। খালেনে নাখালে সোঁধোতা নাই ॥



निधनीय कका, त्याक्रमांव शका, দৰিদ্ৰৰ সোদৰৰ ভাই। ঐকাহি দিয়োতে, গল ফাটি গৈল, ভাই বোৱাৰীয়ে মুখ চাই ॥ मक्ठे रेशन कृषि मर्पा रेशन वाछ । मचे रेगल नावी रवहार हाउँ॥ নষ্ট গৈল আঠুৱা ঝাপত গোৰে। নষ্ট গৈল মাগুৰ জুইত পোৰে। মৰে অলপ পানীৰ মাছ। মৰে नদो কুলৰ গাছ॥ বুঢ়া গৰুৰ শিক্ষেই ভাৰ। ঘৰণীৰ মুখে ৰূপ যুৱাৰ ॥ वानु करू विहाद वबा। বামুণে শগুণে বিচাৰে মৰা॥ বপুৱা ধনুৱা পঁইতা কৰকৰা। গণকে বিচাৰে নৰিয়া পৰা # পাইকক পিয়ল, ভাটোক নিহল। অন্ত্ৰক শীল, তিৰীক কিল ॥ यि घवव रेघनी नय सूत्रक । সি গৃহস্থক মৰণে মজে। পানীৰ বাটত নহবা অগা। ছুখী কুটুমৰ নহবা লগা। ছुछ। তিৰীক নিদিব। ঠাই। ঘন পোঁৱাটীৰ নহবা জোঁৱাই ॥ নাহালে নপৰে কিহৰ আন্ত। মাত বোল নহলে কিহৰ শান্ত। অকাৰ্য্যত তৃন কাটে। অনালোৱে কমাৰ শাল পাটে। অকাৰ্য্যত, ফুৰে ৰাতি। জুই কাষত বান্ধে গাটা।

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

টুলুক্ষা নাৱৰ ওপৰে ভৰা। বোলন্ত ডাকে তিনিও মৰা ৷ কি কৰে শৰৰ শিল। কি কৰে খোৰাৰ বিস । कि करब दशालाव डांडि। কি কৰে অন্ধৰ চাহি॥ কি কৰে গুতৰ ঘোল। कि करब निधनीय दोल ॥ আঁঠত তিতা দাতত লোণ। উদৰৰ ভৰিবা তিনি কোণ॥ চকুত পানী নাইত তেল। বোলন্ত ডাকে সিদ্ধৰ মেল। আদাৰে ভোজন, শিলিখাৰে শুদ্ধি। তেবেসে লভিবা আয়ুস বৃদ্ধি। যাৰ নাই তৰ্জ্ভুল। সি কিজানে বাণিজ্যৰ মূল। ৰাগৰ মিঠা বড়াৰি। যুবাৰ মিঠা সহাৰি॥ তিৰীৰ মিঠা স্বামী। ডাকে বোলে বেশ্যাৰ মাততে জানি। লাজুকা বামুণ কহুৱা চোৰ। জাককৱা আলহি হাৰাম খোৰ। গাইৰ বৰ্জ্জিত ওলোমা বাহি। ন্ত্ৰীৰ বৰ্জ্জিভ সন্বনে ভোলে হাঁহি। আসনৰ বৰ্জ্জিড তিনি খুৰা। মিত্ৰৰ বৰ্জিক্ত যদি খাই স্থৰা। নৰৰ লঘু লেপ লেপোৱা। তিৰীৰ লঘু বাৰী বেৰোৱা। वनव लघू वज्ञीवान। ৰোগৰ লঘু কুকুৰি কাণ।



অনিতা দেহত নকৰা আশ।
হবিৰ নামত কৰা বিশ্বাস।
আক জানি সবে আলাস এৰি।
সঘনে ডাকিয়া ঘোষিয়ো হৰি॥

ৰাজ নীতি প্ৰকৰণ।

ডাকে বোলে বঢ়া টুটা নমাতি। লগত ফুৰিব দিনে ৰাতি। তেবেসে ৰজাৰ দয়াক পাই। धनकन युथ मर्व मिलारे। যৈতে ৰজা থাকি প্ৰজাক পালে। তহিতে বসতি কৰিবা ভালে। ৰজাৰ সেবাত সবাকে পাই। ছুগ্মত যেন গুৰ মিশলাই। এक মন কৰি সেবিবা ৰাজ। তেবেসে সিজিবে সমস্ত কাজ॥ (मन कान छात त्रिया मत्न। সেবিবে ৰাজাক বহু যতনে। নীচৰ সক্ষত নহৈব কথা। একো কালো ভাৰ নপাই বেথা। অসতি কথা লাগে খণ্ডিত। ধর্মক জানে মুর্থো পণ্ডিত। ফটা কঠাত উৰহ হয়। বেশ্যা তিৰীত থাপ থয়। খাতিব নৃপতিৰ পাশ। বেহা কৰিব লোকৰ শাস। विश कविव अक खुन्मबी। স্মৰণ কৰিব কেৱলে হৰি॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানে(ক।

তেবেসে মাণিক আন্ধাবে জলে। তেবেসে তব্দ হালি যাই ফলে। তেবেসে সতী স্বামী সঙ্গে যায়। তেবেসে বিভা ধনধর্ম পায়। वियु वाहे यमि कारम कुँछ। প্ৰজা মৰিব অনাযুজে ॥ নগৰ মাজত কুঁৱা কুঁই দেখি। নবৰ মুণ্ড গণ্ডা গণ্ডে লেখি। আকাশত ভাষে পানীৰ গছা। পৃথিবী বুড়াইব জানিবা সঞ্চা ॥ কটা নাকত কিহৰ ঢাকনী। যাচি গলে কিহৰ ৰান্ধনী। অশুদ্ধ হৈলে কিহৰ পাত্ৰ। তিনিকে জানিবা বৰ্ববৰ মাত্ৰ॥ ৰাজাক চিনিবা দানত। ঘোৰাক চিনিবা কাণত ॥ খুৰক চিনিবা শাণত। তিৰীক চিনিবা স্নানত॥ ভোজনৰ ৰস ভুঞ্জিয়ো ভোকে। বাণিজ্যৰ ৰস বেহাই লোকে॥ যাত্ৰাৰ ৰস আনে বয় ভাৰ। কথাৰ ৰস ত্ৰিভুবনে সাৰ ॥ নৰ গজ বিশ ছয়। বছৰ বত্ৰিশ ঘোৰা ৰয়। किंविन वन्धा त्यांन हांगन। পঢ়ি শুনি বৰাহ পাগল ॥ জন্ম লগ্ন যাত্ৰা জোৰা। বৰাহ মিহিৰে নপাৱে ওবা ॥ পঢ়ে পঢ়াই ৰোৱে পান। এই তিনি নিচিত্তে আন।



কমাৰৰ কালি, ধোবাৰ বাহি।
নটে বোলে পাক দিয়াহি॥
বাই নগলে কিহৰ লাঠি।
শাঁত নহলে কিহৰ গাঠি॥
ভাৰ্যা৷ নহলে কিহৰ ঘৰ।
ক্ষেহ নহলে কিহৰ সোদৰ॥
বাই মৰা ভিনিহি।
কঠিয়া মৰা কিৰিষি॥
কোন সাধু কোন চোৰ চিনা বৰ টান।
বিত পালে সকলোৱে এৰিবেক মান॥
কলিৰ লোকত নথাকিব চিন।
কথাত এক কাজত ভিন॥
হেন জানি লোকে এৰিআন কাম।
কলি দোষে মুক্ত হৱা বোলা ৰাম ৰাম॥

बन्धन প্रकर्ग।

চিত ক্লেৰোৱা চলি কাটি।
তেবে দেখিবা জুইৰ কান্তি।
উশাস দীৰ্ঘে দিবা ফুই।
তেহে চাবা জুইৰ মুই।
সোকোতাৰ পাত বেশুৱাৰ ঝোল।
তেলৰ ওপৰে দিয়া আৰু তোল॥
পোৰোলা শাক ৰোহিত মাছ।
ডাকে বোলে সেই বেঞ্জন সাঁছ।
মাগুৰ মাছৰ চিৰকুটিয়া।
হালধি মৰিচ হিন্দক দিয়া।
তৈল লোণ দিয়া কৰিব পাক।
ভাল ব্যঞ্জন বোলয় ডাক॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চ্যনেকি।

कारेब माइक हिबक्छिया। ত্রিকটু দিয়া তৈলে ভাজিয়া। ওলত পালত কৰিবা পিট। খায়া পাইবা ভোজন মিঠ ॥ ছেলা ছেলেলি জামিব ৰসে। কাহু দি দিয়া যেবে পৰিসে॥ মুখৰ অৰুচি দূৰক যাই। আচোক নৰ দেৱ মোহ যাই। ইলিহি মাছক চিৰকুটিয়া। ত্রিকটু দিয়া তৈলে ভাজিয়া। (महे ग्रञ्जन यिक्रान थारे। আমৰ সদৃশ মুখ গোন্ধাই। কচ বচ চিতলৰ আদ খান। নেমু লোনদি বুজি পৰিমাণ। আক খাই পাই ভোষ প্ৰচুৰ। আন ব্যপ্তন কৰিব দূৰ ১ চাউল দিবা যেতেক তেতেক। পানী দিবা তিনি তেতেক ॥ त्यत्व (प्रथा निमिष्क ठाउँन। তেবে বুলিবা ডাকক বাউল ॥ পকা তেতেলি বুঢ়া বড়ালী। বিস্তৰ কৰিয়া দিবাহা জালি ॥ काछि देथग्रा मिवा एउँचा एकान। খাইবাৰ বেলা মুগু নোতোল।

গৃহিণী লক্ষণ। 🌭

শুদ্ধ ভাব শুদ্ধবংশে উতপতি। পতি পদ বিনে আনওঁ নাই মতি॥



भध्व वहन द्वाटल मनारे। স্বামীৰ বচন কিছু নেপেলাই॥ সম সক দাহে লাবণ্য মাত। গুহে বাভি দেই সন্ধ্যা ৰেলাভ ॥ बक्षन कबय वहन मिठे। সেই গৃহিণীক বোলয় ইফ্ট। শাশুৰীত পুছি কৰে আয় ব্যয়। (म नाबीक मना लको त्न**बग्र**। গুৰু পদ সেৱা অতিথি পূজে। हिबकारल नाबी ख्रथक जुरक्ष । (बीज्र कां कि कृष्टि थर्द्ध अकारे। বৰ্ষা চাৰি মাসে বসিয়া খাই ॥ कड़ा कड़ा कबि माक्षय धन। ৰাখিব বিশ্বাস কৰি যতন। স্বামীৰ সেৱা গধূলী ৰাতি। ডাকে বোলে সেই লক্ষীৰ জাতি। যি নাৰা প্ৰভাতে নিদ্ৰাক যায়। বাসি শ্যাত সূৰ্য্যক পাই॥ উদয় কালত নিলিপে ঘৰ। ডাকে বোলে তাইক ছাৰিয়ে। নৰ ॥ श्वर्ग मस्त्र भाउन एठे। তাইৰ দেখিয়া দন্দৰ ছোট । ওঠৰ ওপৰে গোফৰ সাৰি। সিজনী জানিবা বিধবা নাৰী ॥ বাৰীত কুপ নদীক ষাই। সঘনে জ্রা পৰমুখ চাই। স্তন কোখ দৰশাৱে পিঠি। বোলস্ত ডাকে হেৰা তাই ছপ্তি। কুকু টা মুৰী চকলা পিঠি। খাইবই তাই মেলক দিঠি।

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

ধান বনাই আনোৱাই পানী। বোলন্ত ডাকে সিজনী ৰাণী॥ **८**इ भूबिया शिबी। লেৰুৱা ওঠি তিৰী। সাক্ষৰ কোবত গাজে দেৱ। ইতিনিৰ আশয় নেপাই কেৱ॥ সৰুসূতা কাটে বৱে তাঁত। চা চুবুৰিয়া সুশুনে মাত ॥ ৰন্ধন গাৱে নলাগে কালি। ডাকে বোলে সেই ৰান্ধনী ভালি। কাথত কলসি নদীক যাই। তলমুগু কৰি কাকো নচাই। যি পথে যাই সি পথে আসে। ডাকে বোলে ভাল মনত ভাসে॥ কুচ্ছিত নাৰীত যাহাৰ বাস। তাহাৰ কোন জীৱনত আশ। অল্ল বুলিলে পাৰয় গালি। ডাকে বোলে তাইক খেদা নিকালি। পৰৰ গৃহত যাহাৰ বাস। তাহাৰ কোন জীৱনত আশ। যিতোৱে মুবুজে ৰাজ কাজ। তাক নপঠাইবা সভাৰ মাজ। যি ঠাইত থাকে ৰাজ দৰ্ববাৰ। পুথুৰী পাৰত সাজিবা ঘৰ ৷ উঠন্না কপাল বকতা স্ত্ৰী। একোকালে তাইৰ নাহিকে 🕮 । দিবাভাগে যোগ্য মুহিকে ৰভি। নদীৰ পাৰক ন্যাইব ৰাতি ॥ শাক শুকলটি দিনত বাছে। সি ঘৰত জানিবা লখিমী আছে।



বাপে পোৱে ক্ষৌৰ কৰ্ম্ম কৰি মকলে খাবা কডাই। আঠে পথে খাবা তিতা যমে থাকিব ডৰাই ॥ যি ঘৰত অতিথি পূজ। নকৰে। লখিমা নাথাকে তাহাৰ ঘৰে। প্রতি দিনে যিতো বিপ্রক ভুঞ্চাই। তাহাৰ জানা সাফলে আয়ু যায়। গৃহিনী হৈয়া বোলে কটুৰ। আয় নাজানি কৰে ব্যয় প্ৰচুৰ। खनाइ रेश नारम रम कारन । ছুফা স্ত্রী বোলে ডাক গুৱালে। যি গৃহিনীৰ আউল কেশ। কন্দল কৰে বিপৰীত বেশ। অল্ল থাই পেলাই প্ৰচুৰ। ডাকে বোলে তাইক কৰিও দূৰ। কন্দল শুনিলে বাহিৰে যাই। নাচনী শুনিলে সত্বৰে ধাই। त्म नाबीव मरक यि करव वाम I ভাহাৰ কোন জীৱনত আশ। অতিথি দেখিলে খঙ্গেৰে চাই। সি জনী মৰিলে নৰকে ঠাই ॥ ভাল বস্তু পাইলে আপুনি খারে। যমদূতে তাইৰ মুখ নচাৱে॥ যি গৃহিণী সুবুজে ভায়। স্বামীৰ নজানে অভিপ্ৰায়। ভাল বুলিলে কৰয় খন্ন। তাইৰ সক্ষত নিমিলে ৰক্ষ॥ (बोज्जञ्बादक्ष कार्छ दश्द । বৰ্ষাত ৰান্ধে চালে বাৰে॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি

পাতত যি জনে পৰিশে লোন। তাইৰ ঘৰত হৰিব সোণ। এক বুলিলে ছগুণ বোলে। স্বামীৰ শ্যাক পাৱেৰে ঠেলে। ছুনাই বুলিলে কৰ্য় খল। পণ্ডিত নৰে নকৰে ৰক্স। অতি দাৰ্ঘ ভূজে হোৱয় ৰাণ্ডি। যুপগ ভূজে জানিবা বান্দী। পিকটা নয়নে চঞ্চলা আতি। কেৰা নয়নে কুলটা জাতি। যাৰ পেট পিঠি উচ্চ ললাট। তাইক দেখিলে চাৰিবা বাট । স্বামা বধে মাৰে দেওৰ। ডাকে বোলে তাইক চাৰিয়ো নৰ॥ দিনত যিজনী থাকে ঘুমাই। স্বামীক খলত বোলে বোপাই। ধৰণী কাম্পে পাৱৰ ঘাই। জানিবা সিজনা স্বামীক খাই। মুৰুছে যিজনী স্বামীৰ পাশে। পৰমুখ চাই মৃচুকাই হাসে । ঘৰত ঢেকি প্ৰঘৰে যাই। ভাকে বোলে তাইক পৰেসে বাই। টিক বলধা ওলাই মাটি। মাক ভালে জীয়েক জাতি । পৰ ঘৰ হত্তে ৰাখিব নাৰী। তেবেসে ধৰ্মক ৰাখিবে পাৰি। যিজনী নাৰী অতি দূৰে যাই। সিজনী সতীৰ ধৰ্ম নপাই ॥ কথা কহিতে ভোলয় হাসি। ডাকে বোলে আমি ভাল নভাষি।



धूर्मो मानिमी मिं (शादानी। সদা পৰিহাস বচন তালি 🛭 যাৰ কোন কথা হাসিয়ে সাৰ। ডাকে বোলে সেই চুফাক ছাৰ। ঘৰে ছুলি মেলি বান্ধে বাহিৰে। অল্ল ছুলি ফালি বান্ধয় শীৰে। ঘৰ ভাৰি যাই পৰৰ ঘৰ। **जारक रवारल छुछ। क्वानिवि नव।** বাটে ঘনে ঘনে উলভি চাই। পৰ পুৰুষত থাকে অভিপ্ৰায়। পলকে আহে পলকে যাই। ডাকে বোলে তাইক নিদিবা ঠাই। মানুহ নহলে গার্য গীত। পৰ পুৰুষত থাকয়ে চিত। অল্ল কৰি লই ওৰণী। लाम लाम याहे महे पूर्वज्ञी। তাইক মুবুলিবা নাৰীত সতী। যি জনী সততে পৰত ৰতি ॥ সততে হাসি মুখত কৰে। ডাকে বোলে তাইক নপৈবা ঘৰে। যি জনী দিনত নিজাক যাই। স্বামীয়ে দণ্ডিলে দোষে নপাই। যত কাৰ্য্য কৰে কাতে। সুপুছে। ডাকে বোলে ভাইক মনে সুকছে। ওচৰত পুথুৰী দূৰক যাই। পৰৰ আশায়ে বাটক চাই। ৰাণ্ডি তই কৰে ভোগক ইছা। ৰাতি ফুৰি মাতে দিনত মিছা। পৰত পুজিয়া গুৱাক খাই। ডাকে বোলে ভাল নহরে তাই।



অসমীয়া সাহিত্যর চানেকি।

আৰ দৃষ্ঠি কৰি হাসিয়া চাই।

অবসৰ পাইলে বাজক ধাই॥

যি নাৰী বাৰীয়ে কৰয় বাট।

যুৱতী হুই বেহাই হাট॥

চল চাই চাই দেখাৱে স্তন।

ডাকে বোলে বেশ্যাৰ জানিবা মন॥

বাৰিষাত জাপি এৰিয়া যাই।

পানী বুলি সিতো গৰাসে খাই।

গোক বোলে সিতো গৰাসে খাই।

ডাকে বোলে সিতো নিশ্চয় অবোধ॥

যিজনী আলাস সূতাৰ কাজে।

প্ৰভাতে দেখিবা গোহালি মাজে॥

ডাকৰ কথা সদায়ে আচৰা।

হৰি হৰি বুলি সংসাৰে তৰা॥

পৰিত্যাগ কথন। Ж

তিনি নাৰী যাৰ একেটী স্বামী।
তাক পৰিহৰ বোলোহো আমি।
পৰিহৰ সততে পৰ অন্ন আশ।
পৰিহৰ শৃত্য নগৰে নিবাস।
পৰিহৰ শুকটা মৎস্যৰ জোল।
পৰিহৰ অসতী জনৰ বোল।
পৰিহৰ মুবতা যি কৰে হাট।
পৰিহৰ যুবতা যি কৰে হাট।
পৰিহৰ যতনে নিদাৰুণী মাৱ।
পৰিহৰ থতনে বদাৰুণী মাৱ।
পৰিহৰ গুৱা কৰে বুন্ বান।
পৰিহৰ নুপতি যদি নাই গুণ॥



ডাক-ভণিত।।

পৰিহৰ অতি ধনী বান্ধৱৰ সূথ। পৰিহৰ ব্যঞ্জন বাসিৰ সুখ। পৰিহৰ কিৰিষি যদি নদী পাৰে। পৰিহৰ নাৰীত ৰতি থাকে যাৰে। পৰিহৰ তুতৰ গ্ৰামত বাস। পৰিহৰ হুষ্ট তনয়ৰ আশ ॥ পৰিহৰ কড়ি যদি নাই হাট। পৰিহৰ ছাতি বিনা চলে যিতো বাট। পৰিহৰ পুথুৰীৰ পিচলা ঘাট। পৰিহৰ কৃষি মধো যদি বাট ॥ পৰিহৰ বুদ্ধ বয়সত কাশ। পৰিহৰ দন্তৰ বিহিনে সবে আশ। পৰিহৰ দন্ত মেঘৰ মালা ৷ পৰিহৰ গ্ৰীমত মেঘৰ শালা ॥ পৰিহৰ অন্য দেৱতাৰ আশ। ধৰ হৰি পাৱে কৰি বিশাস॥

কুষি লক্ষণ। ८

হালোৱা লবা বিভাৰ মুৱা।
দোভাগ নিশাত বিচাৰে গুৱা।
শত ভাঙ্গি কৰ পঞ্চাশ।
দয়ে ৰামে কৰিয়া চাষ।
হাঁত আহিবি হাঁত যাবি।
তেবে ভাত আতি খাবি।
তেবে গৈ নহয় শালি।
তেবেসে পাৰিবা ডাকক গালি।
কি কৰিব চাহ পুৰণা।
যদি কৰে বতৰ কেনা।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

बर्फ वबशुर्ग मरम यहि। তেবেসে কৃষিৰ লাভক পাই॥ মাঘি সপ্তমীত বৰিষে দেৱ। বেহা এৰি কৰা নাম্বল সেৱ। এক মন কৰি ধৰিবা ডাটি। তেবেদে নাই কৃষিৰ ঘাটি॥ ৰবি ৰবিস্থত ভুমি নন্দনে। মাঘৰ আঁওদী তৃতীয়া দিনে। ইহাতে উত্তৰা যেবে পাই। অৱশ্যে জানিবা আন্ত হৰাই ॥ ফাগুণৰ শেষে চৈত্ৰ প্ৰবৰ্তে, যেই হৱে বাৰ। আকে শিতলা, শনিৰে পাতলি, ধুলি এন্ধাৰ। (भारम वह जल, কুষিৰ বিফল ডাকৰ বচন সাৰ। যদি হোৱে বুধ, বিৰচতি শুক্ৰবাৰ, মেদিনী নসহে শস্তৰ ভাৰ ॥ মাহ সৰিয়হ কপাহ বাঁহ। চাৰিকো খালে নাহিকে আশ যত লাভ পাই সৰিয়হ মাহে। তত লাভ পাই কলা কপাহে। যথাত কলা কপাহৰ বাৰী। তথাত লুভিয়া সকল নাৰী। কলা কপাহ আজিব দুৰ। ওচৰত ভৈলে দোষ প্ৰচুৰ॥ পুবে ৰেণু পশ্চিমে ছায়া। সেহিসে শস্তা ভ্ৰমৰ কায়া॥ रयरन कृषिक कविवा आन। তেবে নকৰিবা শাওণত চাষ। আহাৰ শাওণত নকৰে ধান।

তাহাৰ কৃষিত কিমতু মন॥



যদি স্বামী জন দিঠিকৰ হয়।
তেবেসে কৃষিৰ ফল সিজয় ।
শীত সৰিয়হ মিত মাহ।
শৰণত নাকাটি বেত বাঁহ ॥
ভাদৰ চাৰি আহিনৰ চাৰি।
মাহ ববা যিমান পাৰি ॥
শীত সৰিয়হ মীত মাহ।
গণ্ড যোগত ফুকইবা বাঁহ ॥
তিনি হাত তিনি মুঠি, কোৰৰ নাল।
আঠাৰ মুঠিয়া টোকোন ভাল ॥
কাচি খন্তিৰ হুটা মুঠি।
এহি বুলি ডাক গৈলন্ত উঠি॥

त्रुष लक्ष्मण।

গৰু কিনিবা চিকণ জালি।

তুই চাৰি ছয় দন্তীয়া তালি।

হৰিণৰ সমান জিহবা কাণ।

হেন বলদ বিচাৰি আন॥

বলদ কিনিবা বহু বুজিয়া।

বাচি স্থাধিবা ধোবা তেলিয়া।

দহ চাৰিত সোধা পোছা।

তেবেসে কিনিবা বলধ গোটা।

ছয় নব দন্তী ভাগোসে পায়।

সাত দন্তীক দেখি পলাই।

গাঁৱৰ বলদ নিকটৰ ভূঁই।

ইহাক নেৰিবা জানন্তা হুই।

কিকাক বিছাকি কিনিবা গাই।

সক মুই পাচ ডাক্সৰী চাই।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

(नक हेका मक मृब। লাওমুৰা হলে তেজিবা দূৰ। विছा निक्षिया किलया ठूठा। किनिवा विছाबि वलम (शांछ। যাৰ নাই ধাৰ ঝণ। সি গৃহত্তে বুঢ়া গৰু কিন। বলদক ভাই নিদিবা হুখ। ভাহাতে আছে ভাতৰ সুখ। গৰু কিন চিত পাথৰ। তাক মেলিবা একে আখাৰ। छेका त्मका ठूछेबी ठूछि। সেইটো জানিকা গৰিয়াগুটি। শৰথীৰাৱে পীয়ে পানী। গোমচকৰিয়াক ঘৰলৈ নানি ॥ তালজুৰিয়া বৱে হাল। ভাতে নাতে সর্বতি কাল। গৰু কিনিবা নিঘুণ বগা। বোলন্ত ডাকে মই হওঁ লগা। शक किनिवा मीचल (नका। মৈত উঠিলে নহয় কুজা। শিল্প ভগা গৰু মুধুৰি হালে। वन्ना ववनीयाक यूबिएया शाला॥ কাল বলদক যতনে যুৰি। আযুৰিব জোৰা তুই ডামুৰি। যদি হালে হৱে নাজল ভন্ন। বংসৰত তাৰ নিমিলে ৰঙ্গ। তাত যদি গোৱে যোক্ত চিৰে। মাৰে গৃহস্থক অভিশয় পীড়ে॥ # ॥



ডাক-ভণিতা। জ্যোতিষ প্ৰকৰণ।

মেঘত আদিতা তুলাতে খোৰ। যিমত ভৌম নাহিকে জোৰ ৷ বুষত চন্দ্ৰ অংশকে পাই। চতুৰ্দ্ধালে সিতো গাৱ ঘেলাই। অফ্ৰমে ৰাভ সপ্তমে ৰোহিত। তৰকা ভূমিত হৰাৱে বিত। একড়া কড়িয়ো সুহুইবে ঘৰে। সৰ্ববকালে তাক খাইবে পৰে। আক শনিয়া মঙ্গল সাতে। কৰ কন্ধালত ধৰিবে বাতে। ইহাক যাৰ গণিতাত পাই। হাতভৰি তাৰ শুকাই যাই। তুই ভিতি শুভ মধ্যে আক। হস্তীৰ কন্ধত দেখিবা তাক। জীৱস্ততে ধন জনক পাই। মৰিলেও হোৱে স্বৰ্গত ঠাই ৷ লগ্নৰ লগত শনিৰ মেলা। সকলো কাৰ্য্যত কৰাৱে হেলা। সপ্তমত মঙ্গলে দেখয় যেবে। মেঘৰ নাদত মৰিব তেবে ॥ দুই ভিতি মন্দ মধ্যে লুগা। তাৰ কোষ্টীৰ ছেদ যোগা। अस्टिम बाह्य हान्मक त्यत्व। তাৰ শিৰচ্ছেদ হৈবেক তেবে॥ भवन लाशित मामाजित घव। অগ্নিৰ যত ধানত খৰ। ৰাগ নাজানি গাই গীত। পৰৰ নাৰীত সদায়ে চিত।

256

আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

উৰে যাৰ খজাই খল । বোলন্ত ডাকে তিনিয়ো পত। দৈইৰ পানী পহিলৰ কানি। কায়স্থ জনৰ অপৰাণী॥ আপদ কালত স্ত্ৰী বাণী। নাইকিয়াত কৈ ভাল মানি। लघू रुलू लघूब मस्य । মৰিলো সপত ভঙ্গে॥ উতো বুক তল যাওঁ। মিচালৈলো শাল কাঠৰ নাওঁ ৷ মেষ কাকৰ তুলা মকৰ। এই চাৰি বাশি গণিত৷ সাগৰ ॥ इबि इबि रेम उरल याई रेम। আমাৰ কপালে যিভৈল সিভৈল পক্ষীগণ থাকিব কৈ । ডাল ভাঙ্গিলো ফল ভক্দিলো लारम शूषिरला कांग्र। স্থুক্ষক আশ্ৰয় কৰিলো মৰিতেও নেৰাইলো দায়। ৰে ৰে চন্দন নকৰ ক্ৰন্দন বৰতেসে বৰ পাই। আছিল নগৰে পশিল সাগৰে এবে ভৈল যুৱতী সহাই। আঁওদাৰ প্ৰতিপদ পুৰ্ণিমাৰ ৰাতি। মাকৰ ঘৰলৈ ন্যাই জী। হাঞ্চী জেঠি উজন্তি খালে। মিচা মাতে সর্বকালে॥ যাওঁকি নাযাওঁ কৰে মনত। যাত্ৰাকৰে শনিৰ ক্ষণত ॥ यि नम्द शांत्र छ्य । " ফুৰত্তে ফুৰত্তে হাৰ। শান্তি হয়।



দধি মধু রুত শুক্ল তওুল। শুকুলা চামৰ শুকুলা ফুল ॥ হংস দৈবজ্ঞ স্তুন্দৰী ক্যা। যাত্ৰাৰ কালত সকলো ধ্যা। चिक गृग गीन (मिथ्रा देशवा। অগ্ৰিৰ ভ্ৰম্প বামত পাইবা॥ আগ কৰি দক্ষিণ পাও। रेगरक लार्ग रेजरक यां । ক্রন্দন ভাল দীঘল কবি কান্দে। শকুনিয়ে। ভাল উড়ি যাই কান্ধে। স্থদা কুম্বো ভাল পানী লাগি যাই। সপোঁ ভাল ডাহিনত পাই। নাম অক্ষৰ তুই মাত্ৰ কৰি। নাম স্থিৰ কৰি পুৰুষ নাৰী॥ বেদে হৰি পাইব ভাগ। তেবে পাইব জীৱন মৰণ লাগ ৮ শূন্যে একে মৰে পতি। তই পালে মৰে যুৱতী। তিনি পাইলে উভয় মৰণ। ডাকৰ এই নিশ্চয় বচন ॥ যোগীৰ অক্ষৰ গ্ৰহে গণিয়া। তিনি বাৰ লৈব সম কৰিয়া। বস্থ দিয়া তাক হৰিব ভাগ। জীৱন মৰণ পাইব লাগ ॥ চক্রনেত্রে পাইব বান। যমৰ পুৰৰ বাহুৰি আন ॥ ভূত বেদ পাইব ছয়। দিনা চাৰি পাঞ্চ মিলন হয়। मश्र भृत्र भाहेत (यद । ৰোগীৰ মৰণ কহয় তেবে।



আছত্তে বৃদ্ধি কালে বিনাশিল।
নগাজাঠিয়ে ছুল বান্ধিল।
নগাজাঠিয়ে ছুল বান্ধিল।
সোমে শণি পূবে বাস।
ছটি গলে এটি নাশ।
উত্তৰে কৰিবা শন্ধা।
গাৰ লতি ঘটি ভৰিবা টন্ধা।
দক্ষিণে বুধে ন্যাই শন্ধা।
ডিত্তৰে মঙ্গলে কৰিবা শন্ধা।
গাৰ লটি ঘটি ভৰিবা টন্ধা।
দক্ষিণে বুধে ন্যাই শন্ধা।
গাৰ লটি ঘটি ভৰিবা টন্ধা।

বর্ষালকণ 💉

যেবে জলধৰে বৰিষে ধাৰে।
তেবে কি কৰিব গণিতা কাৰে।
তথাপিতো তিথি বাৰক চাই।
ডাকে বোলে কিছু বোলন যাই।
আহাৰৰ নবমী শুক্লা পক্ষত।
যদি নবৰিষে ভূমি তলত।
হাল ৰাখিয়া চিন্তিয়ো দেব।
ৰাজাৰ গৃহত কৰিও সেৱ।
যদি বৰিষয় জলৰ কণা।
ৰঙ্গ কৰি নাচে কৃষক জনা।
বোলন্ত ডাকে ঢিল মাটি পাই।
কান্ধত নান্ধল ধৰিয়ো যাই।।
মেঘক দেখিয়া হাল কোবাই।
জানা শস্ত তাৰ অধিক পাই।



डारक रवारल रकरन ध्वली हर। কঠিয়া নাঙ্গল নষ্ট কৰছ। মাঘ মাসত ৰোহিণী নক্ষত্ৰ यि नविदिस (प्रव। হাল ডোল বেছি কৰ সব লোক (मती **महा**(मतक (भत ॥ বৰ্গা কালত বেঙ্গৰ ৰাও। হাল গৰু লৈয়া পথাৰক ধাও। মাঘত ৰৌদ্ৰ বৈশাখত শীত। চাৰি মাহ অল্ল বৃষ্টি ভূমিত॥ মাঘৰ শেষত বৰিষে পানী। অল্ল বৃষ্টি আগলৈ জানি॥ উদয়ে সিন্দুৰ পচিমে কালি। তেবেদে হৈব বৰিষণ ভালি॥ প্রকাশিয়া ৰবি উঠিয়া নাসে। ডাকে বোলে বৃষ্টি হৈব আকাশে॥ ধমু মীন কন্মাত শনিৰ বাস। হাতী ঘোৰা গৰু মানুহ নাশ। নহরে নবীন পুৰাতনো নাশ। যুদ্ধত লোক যমপুৰে বাস ॥ আকাশত ভাসে পানীৰ গছা। পৃথিবী বুড়াইব জানিবা সঞ্চা। ভূমিক চহিবা ডাকে বোলয়। বীক পাব শালী বহুত হয়॥ মেষ কাকৰ তুলা মকৰ। এই চাৰি ৰাশি গণিতা ভিতৰ॥ ইহাত যদি উত্তৰা পাই। গহিন বাৰিষা আতু হৰাই ॥ ডাকে ঝেলে বাপু শুনা উপাই। বাণিজ্যৰ ফল কৃষিতে পাই।

200

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

यि नर्द मना कृषिक करव। বেহাৰ ফল পাইব ঘৰে। সোণা ৰূপা কিবা করি। ভাত নেখালে ভোকতে মৰি ৷ হীৰা মাণিক থাকে অপাৰ। খুদ নহলে মৰণে সাৰ॥ ধনৰ মধ্যত ধানেসে শোভন। ধান নহলে মৰা তেতিক্ষণ॥ এতেকে কৃষিক কৰিবা সাৰ। তুৰ্ভিক্ষত কৃষি কৰে নিস্তাৰ। নাজল বলদত সবাবে আশ। যাৰ নাই তাৰ সকলে নাশ। (कर्र भाम रेशन विना नाकरल। ভাহাৰ কি মতে কিৰিষি ফলে॥ কিৰিষিত যদি কৰিবা মন। হাল গৰু ৰাখি কৰা যতন। মাজে জান যদি যাই বহিয়া। খাই স্থুখে থাক ঘৰে বসিয়া॥ थान इरल (हार्व मर्व मांकल। थान नश्रल मकरल विकल ॥ দেৰিয়া ভূমিক লৱে স্থবুধি। ঘন আলি দিবা সবাক স্থাধ।। শাওনৰ কঠিয়া নহয় ধান। আহিনৰ গোছ বিফল জান॥ আহিন কাতিত ৰাখিবা পানী। **व्याप्तरेक बार्थ बकाई बागी ।** আলিৰ ওপৰে দিবাহা আলি। খেতি হল বুলি জানিবা ভালি। কিৰিষি কৰিব। একান্ত মনে। नक्टल कि विवि विना यउदन ॥



গোচৰৰ নিজল নকৰে কাণ। খেতিৰ নিক্ষল পথাৰত নহয় ধান ॥ লৰৰ নিক্ষল আগত আছে নৈ। তিৰীৰ নিজল পাটীত নাই পৈ। আন্ত কৰা খোজত বুৰি। শালি কবা বেগত জুৰি॥ আঠৰ ওপৰে থাকে পানী। হাতেকতে গোছ দিবা জানি। কৃষি ৰাখিবা বেজি যতনে। मक्ल कृषि मानिया मरन । কৃষি কৰিবা ওচৰ ভাগে। **डाटक ट्वांटन ट्यांब-यटन लाटग** ॥ ঘন সৰিয়হ পাতল মাহ। আৱৰণ দিবা কপাহ বাঁহ॥ তিনিশ যাঠি জোপা কবা কল। মাসেকে পথেকে চিকুনাবা তল ॥ পাত পচলা লাভত খাবা। লক্ষাৰ বাণিজ ঘৰতে পানা। আঠীয়াত গোবৰ মনোহৰত জাবৰ। পুৰাত খাই মালভোগত ছাই। সাতে পাতল পাঁচত ঘন। ছয়ত তামোল নদন বদন। জালুকত গোবৰ পানত মাটি। কলাপুলি কবা তিনি বাৰ কাটি। তিনি শাওনে পান। একে আছিনে ধান। পুবে হাঁহ, পচিমে বাঁহ। **উত্তৰে** গুৱা দক্ষিণে ধুৱা । डाकब वहन दबनब वांगी। পো नगा डिवी घवरेन नानि ॥



অসমীয়া সাহিত্যর চানেকি।

ভোকে। বঞ্চে মোকে। বঞ্চে। ভাল ভাল বস্তু পিতেকলৈ সাঞ্চে। ছাগ পাৰ পোহে হাঁহ। ছুই সীমাত ৰোৱে বাঁহ॥ যাৰ থাকে মহ গৰু। ইতিনি কথাত হবা সৰু॥ यि मक नार्शिता (शता शक्ता । লোকে বুলিব নিলাজ কুকুৰ॥ कांशि नाठी हेना। ইয়াক এৰিলে দিনতে কণা। नित्य भित्य नित्य । এই তিনি ওপৰতে জীয়ে। পঢ়ে পঢ়াই ৰোৱে পান। এই তিনি নিচিন্তে আন। তিৰীৰ চিকণ ওৰনি লোৱা। গৰুৰ চিকণ হামোৰে কামোৰে খোৱা। কটাৰি চিকণ গুৱা। টোপনি চিকণ পুৱা। वाक्षन हिक्श शलिश । কুটনে চিকণ খাৰ্ধি॥ লিখনে চিকণ কাপ। বাড়ীৰ চিকণ ধাপ॥ কমাৰৰ চিকণ অন্ত। ধোবাৰ চিক্ বস্ত্ৰ। মন্ত্ৰীৰ চিকণ ৰাজ্য। জলৰ চিকণ মংস্থা। খণিকৰ চিকণ লিখন। থাপত চিকণ ছিলনি॥ কত জন্মে পুত্ৰৱতী নাৰী। क्छ क्रम्य हारमाननी वाबी i



কত জন্মে ভাতে ভাতক খাই।
কত জন্মে পৰে পৰক বায়।
জ্ঞানীক ভাত দিয়ে তলমুকৈ খায়।
অজ্ঞানীক ভাত দিলে চাল বাৰ চাই।



333

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

প্ৰাক্ ৰৈক্ষৰ মুগ।

कड़ कन्मली।

মহাভাৰত। দ্ৰোণপৰ্বৰ

সাত্যকী-প্রবেশ।

জেনি বেন সুশুনিলা তোমাৰ নন্দন ॥
ভাল ভাল মেচ্ছ সেনা বাচি বাচি লৈলা।
আতি শীঘ্ৰ কৰি সাত্যকীক খেদি গৈলা।
আতি শীঘ্ৰ কৰি সাত্যকীক খেদি গৈলা।
জোণে পুণৰপি পাঞালত পশিলস্ত।
সোমক পাঞাল সঞ্জয়ক সংহাৰন্ত।
পোঞাল ৰাজাৰ তনয়ক বিৰক্ত।
জোণক মাৰিয়া বৰ দেখাইলা বীৰ্ত।
আগৰ ক্ৰমে ভেদিলেক পাঞ্চ শৰ।
সাত শৰে সাৰ্থিক কৰিলা সংহাৰ।
এক শৰ মাৰিয়া ধ্বজক কম্পাইলা।
চাৰি শৰ মাৰি তাৰ ৰথক তন্তাইলা॥
ৰথ তন্তিবাৰ দেখি সকলে পাঞাল।
শঙ্ৰ সিংহ নাদ কৰে কৰিয়া ঘঞাল॥



कप्त कन्ननी।

त्व तव नीरव मिरल अञ्ज सारक सारक। শব হানি গুৰু কণে কাটিলস্ত তাকে। ভাসম্বাক ভক্ষাই এক শৰ লৈলা তুলি। विबर्केट वोबक माबिरल हः वृति। বৰ ছোটে শৰ পাত পৰিল ক্ষদিত। ভূমিত পৰিল গৈয়া দাকণ বেগত॥ ভূমিত পৰিল গৈয়। মৰা কলেবৰ। বভাসে ভান্ধিল। যেন বৃক্ষ চম্পাকৰ। ৰাজাৰ কুমাৰ এক বাণে যে পৰিল। পাঞ্চাল ৰাজাৰ যেন কদয় লবিল॥ তানে চাৰি সোদৰ ভাতৰ সন্তাপত। দ্ৰোণক ধাইলেক আৰু সেনা অপৰ্যাপ্তি॥ শৰ ছোটে ভক্নাইলেক দ্ৰোণ সেনাপতি। ক্ষণেকতে কৰিলন্ত চাৰিকো বিৰথি। शुर्व हम् अमङ्गल हाबिरबा वनन । ভল্লে কাটিলন্ত ভৰদানৰ নন্দন। চাৰিৰে। বদন ধৰণীত পৰি ভাসে। लाल हिन्ना भएका (यन कर्य श्रेकार्म । আগত পৰিল যেন সোদৰ পঞ্চ ভাই। ধৃষ্টপ্ৰান্ন কান্দন্ত লোভক বহি যাই। है। कि कबिरली भेड़े किशाई मन्नार्य।। সহোদৰ পঞ্চ ভাইৰ সন্তাপ এবায়ে।। দ্ৰোণক নমাৰি কেনে থৈয়া আছোঁ ৰাখি। নিতে নিতে ব্ৰহ্মবধী ভাঙ্গে মোৰ পাখি॥ সাৰ্থিক বোলোঁ মোৰ জতে বাহা ৰথ। আবে ব্ৰাহ্মণক মাৰি পেশো যম পথ । সাৰ্থিও জ্ৰুত কৰি বাহিলন্ত ৰঙ্গে। ধুষ্টস্থান্দে জোণক মাৰিলা শৰ খঙ্গে॥ বাহু•ক্ষদি ললাটে ফুটিলা গুৰু দ্রোণে। হাহাকাৰ কৰয় সকলে কুৰুগণে।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

ভাচিয়। ভাচিয়। বীৰে হৃদয় ফালয়। গুৰু দ্ৰোণে ভাহাকে। কটাক্ষ নকৰয়। তুনাই তুনাই কোপে ধৃষ্টভাল বাৰ সাৰ। कविलाख मरेत भारत कामग्र दिनाकात ॥ বৰ ছোট পায়া দ্যোণে ৰথত পৰিল। ছুনাই দশ শৰে তাৰ ললাটে ভেদিল। হাহাকাৰ ভৈলে জুনাই কৌৰব দলত। ধুষ্টভালে খাণা ধৰি নামিলা ৰথত n খাণ্ডা তুলি ত্রাহ্মণক কাটিবাক যান্ত। সর্পক দেখিয়া যেন গৰুড়ে কাম্পস্ত। ट्यांग बाथिवाक मरन मव वीबगरण। নিৰস্তবে কৰিলেক শৰৰ সন্ধানে ৷ খন্সৰ বেগত শৰ কাটিয়া পথত। वान्त्र मिया हिन्द द्वागव वथड ॥ খাণ্ডা তুলি ঘার মাৰিবাক চান্ত নূপে। हक् रमिल पिथि काष्ट्र मिला प्रिट्ट हिट्ट I তেখনে ধৰিলা ধনু বিগত প্ৰমাণ। বিগন্থিয়া শৰ জতে কৰিলা সন্ধান ৷ लाएक लाएक इरमा तीव क्वम वथक। কাটিবাক নপাৰিলা শৰ সন্ধানত। কেটলা পশুৰ যেন ভৈলা কলেবৰ। জাম্প দিয়া নামিলন্ত দ্ৰোণৰ ৰথৰ ॥ ডাক্সৰ ধনুক স্লোণে তেখনে ধৰিলা। ধৃষ্টস্থান্নে: তেখনে আপোন ৰথে গৈলা। সেহিক্ষণে ধনু ধৰি জ্ৰুপদ নন্দন। দ্ৰোণক কৰিল। দশ নাবাচ সন্ধান । পুনৰপি ভৈলা ছইৰো সমৰ অভুত। তুইৰো শৰে সেনাগণ ভৈলা ভক্ষাভূত । ছিদ্র পাই দ্রোণে হানিলেক এক, বাণ। পাঞ্চালৰ সাৰ্থিৰ লৈলন্ত প্ৰাণ ॥



क्ष कन्मली।

সাৰ্থি পৰিল ঘোৰা ফুৰাৱে বীৰক। আন বীৰে দ্ৰোণক মাৰিলা শৰ ঝাক। Cप्राटन ट्रमरथ शासु वर्टन वृारु विश्वशिना। পাঞ্চালক এবি পাণ্ডবক খেদি গৈলা। দ্ৰোণক সন্মুখ ভৈলা যুধিষ্ঠিৰ নৃপ। তুঃশস্থা পাইলা গৈয়া সাত্যকী স্মীপ। ধনু টানি সাভ্যকীক ষাঠি বান হানি। দশ শৰ প্ৰহাৰিয়া বুলিলন্ত বাণী। অৰে বৃষ্ণি বংশ তুমি শৰ ছোট পাইলা। পৰৰ নিমিত্তে কেনে মৰিবাক আইলা শিলিৰ নন্দনে তাক মাতিবে নেদিলা। কৰ্ণৰ মূৰত চাৰি শায়ক ভেদিলা। উলভি উলভি আসি ভেটিলেক বাট। এহি বুলি চাৰি শৰে ভেদিলা ললাট । শৰ ছোটে যুবৰাজ মূৰ্কাগত ময়। তুর্য্যোধনে দেখি ত্রিগর্ত্তক আদেশয়। তৃত্যু সহস্ৰ গৈলা ত্ৰিগৰ্ভৰ ৰথ। তুহাজাৰ সংসপ্তকে কৰিলা সন্মত। পিপ্পৰাৰ বলে যেন দিল পটোৱাৰ। / ट्रोमिन ट्रविद्या करन नवन প्रशंब ॥ সাত্যকীয়ে সবাবে কাটিলা শৰ সঙ্গ। হস্তী হয় কাটিয়া বীৰৰো ভেদে অন্ন। अवादका विधः मि शकादक माबि वथ। তুই ভীতি মুকল নিলগাইলা পথ ॥ वर्ष्ट्रिक प्रतथा वृति नीट्य हिन याछ। তুনাই তুঃশাসনে নৱ শৰ হানিলন্ত। সাত্যকীয়ে। তাক হানিলম্ভ পঞ্চ বাণ। পুনঃ আঠ শৰে সাত্যকীক বৰ টান। সাত্যকীয়ে। বাহু মূলে ছুশবে তাৰিলা। क्रमांके असू (इपियांव दिएश त्य लिएला ।



আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

আগুয়ান সেনাগণ পলাই ভাগি ভাগি। তুঃশাসনে শকতি হানিলা পাশ লাগি। পাঞ্জৰিয়া হাতে শৰ হানি যুষুধান। কাটিলন্ত শকতি পৰিল সেহি থান। আন ধনু ধৰি পিচে পিচে খেদি গৈলা। তিনি শৰে ভেদিবাৰ আটাদেক দিলা। ক্রোধিয়া সাত্যকী হানিলন্ত যাঠি বাণ। ডঃশাসন হৃদয়ত কৰিলা সন্ধান॥ তঃশাসন বাৰ ঢলি পৰিলা ৰথত। আৰু দশ নাৰাচ হানিল। হৃদয়ত ॥ সুস্থ ত্য়া ছঃশাসন ছুনাই গৈলা খেদি : সিংহনাদ কৰিলেক কুৰি শৰে ভেদি ॥ তুনাই সাত্যকা বাবে হানি তিনি শবে। দৃঢ় কৰি ভেদিলেক ছুই স্তন ভিতৰে। চাৰি শৰ মাৰি ঘোৰা নিলা যমথান। একশৰ মাৰি সাৰ্গিৰ লৈলা প্ৰাণ ॥ একশৰ হানি তাৰ কাটিলস্ত ধনু। ছুই প্ৰাঞ্চি সাৰ্থিৰ বেলগাইলা তমু। একশ্ৰে ধ্বজ একশ্ৰ হৃদয়ত। ৰথ ভঙ্গে তযু স্থত ভৈল ভূমি গত॥ ধনুত জুৰিল নমাৰিলা দুই বাণ। ভীমৰ নিমিত্তে তাৰ নলৈলন্ত প্ৰাণ॥ ভীমে মাৰিবন্ত তর শতেক কুমাৰ। এহি বুলি নকৰিলা তুনাই প্ৰহাৰ ॥ যুড়িবাৰ শৰ পাত আনক মাৰিয়া। মৰ্জ্ন পাশক গৈলা শীঘ্ৰে ৰথ বায়া। ত্ৰিগৰ্ত্তৰ দেনাপতি নামত স্থৰত। দেখে তঃশাসন ত্য়া আছে ভূমিগত। আপোনাৰ ৰথে তুলি পলুৱাই নিল। চিৰকালে ছঃশাসন চেতন লভিল॥



क्ष कन्मली।

ঘোৰ যুদ্ধ কৰি চলে শিলিৰ নন্দন। সেনাৰ মাঝত ভৈল দাৰুণ ক্ৰেন্দ্ৰ n ছুৰ্য্যোধনে সাত্যকীক ৰাখিবাক মনে। মহাৰথীগণ সমে কৰিলা যতনে ॥ ৰাখিবাক নপাৰিলা থাকিলা জন্তাই। যেন দৰিদ্ৰৰ বাঞা মনত লুকাই। এতেকতে ব্যুহ মুখে শুনস্ত আৰাৱ। বাহ মুখে বিধংসিলা সকলে পাগুর॥ ব্যুহৰ মুখক গৈলা ছুৰ্য্যোধন ৰায়। দেখে ভাগি পলাই গৈল অবস্থা নলয়। তাতে ধনু ধৰি ধাইল ৰাজা তুৰ্য্যোধন। পাণ্ডবি দলত পশি কৰিলেক দন। থেন মত হস্তী গোটে সৰোবৰে নামি। আপোনাৰ মনৰক্ষে ভাজে কমলিনী। সকলে পাণ্ডবি সেনা পলাই ভাগি ভাগি। ভীমসেনে খেদি গৈল৷ নৃপতিক লাগি ॥ তাহাৰ লগত গৈলা সবে বাৰ গণ। সবাহাকে बाकारम करिला रघांव वन ॥ ভীমক কৰিল দশ শৰৰ সন্ধান। ভীমৰ পুত্ৰক তাৰিলন্ত পাঞ্চবান। সহদেব নকুলকো ভেদিলেক শবে। দশ শৰে হৃদয়ত ভেদি শিখণ্ডীৰে। তিনি শৰে ভেদি ধর্মা ৰাজাৰ ললাট। ছুই শৰে ভেদিলস্ত দ্ৰুপদ বিৰাট। তিতিনি সায়কে দ্রৌপদীৰ তনয়ক। পাৰ্বতক মাৰিলন্ত সত্তবি সায়ক। আনো বৰ বৰ বীৰ আগুয়ান ভেদি। হস্তা হয় পদাতি মাৰয় খেদি খেদি ॥ ধমুৰ মণ্ডলু কৰি বিছাত সঞ্চাৰ। আউলাইলেক গৈলেক'ভাগিয়া পটোৱাৰ॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানে ক।

যুধিষ্ঠিৰ ৰাজা তুনাই পাট ভল্লশৰে। ধনু খান কাটিলন্ত ৰাজাৰ হাতৰে। এক গোটা ভল্লশৰ হাতে তুলি লৈলা। কর্ণ মানে ধনু টানি কাটিয়া পেলাইলা। নুপতিৰ হৃদয়ৰ কৰ্চ কাটিয়া। ভূমত প্ৰবেশ ভৈলা উৰচাট হুয়া। আৰো নৰ পাত শৰ হানি গোটে গোটে। একশৰ হানি ক্ষেপিলস্ত বৰ ছোটে। ৰথতে কাম্পয় ৰাজা ধ্বজ গোটে ধৰি। আমি সবে ধাইলোহে। ৰাজাক পিচ কৰি। গোটে গোটে আমাক মাৰন্ত শৰ গগৈ। পাচে ৰাজা হুৰ্যোধনে ধাইল কোপ মনে॥ থাক থাক বুলিয়া ৰাজাক খেদি যান্ত। সকল পাঞ্চাল গণে ৰাজাক বেঢ়িলন্ত। সিহু পাঞ্চালক বেঢ়িলস্ত গুৰু জোণে। यू थिछि न मौ शक शाहेला पूर्या। धरन । পাণ্ডবৰ হৃদয়ত ষাঠি শৰে হানি। बथरका ध्वकरका भव कारल देथला जानि॥ **(मार्गाणे बाकांब युक्त टेल्ला धूमांकग्र।** ছভিতিৰ সেনা বোলে মিলিল প্ৰলয়॥ ছুয়ো বীৰে শৰ হানে কাটে ছুয়ো বীৰে। ধনু কাটি কাটি যুজে গদ। মুদগৰে। ছিদ্ৰ পায়। ধৰ্ম ৰাজে লৈলা বংশ দণ্ড। বোলে কৰি এৰে। আজি কলহৰ অন্ত। এ কৰ্ণ মানে ধনু টানি কৰিলা প্ৰহাৰ। নৃপতিৰ হৃদয়ত কৰিলা দোহাৰ। শৰ ছোটে ৰথতে পৰিলা কুক ৰায়ে। मिबल मिबल दूलि পाछरब टिक्शरब ॥ পলুৱাইলা সাৰ্থি ঘোৰাক বেগে টানি। দলে। দিশে শুনি মাত্র হাহাকার ধ্রনি ।



क्ज कन्मनी।

कोजूरल शास्त्रात बाकाक विष्ति। সাধু সাধু বুলিয়া ৰাজাক প্ৰশংসিলা॥ প্রযোধনে কভক্ষণে চেতনক পায়।। যুদ্ধ চাহি থাকিলস্ত দূৰত থাকিয়া। পাণ্ডৱৰ জয় কৌৰৱৰ ভক্ত দেখি। ক্রোধে গুৰু দ্রোণ ধাইলা থানিকো নপেখি। गत्न मत्न धारेला छक (जापब नन्दन। ত্ৰা মোক চায়া আছে ৰাজা তুৰ্যোধন। ইবেলাত যদি মই নকৰো সমৰ। বুলিবেক জোণে খতি খাইলে পাগুৱৰ ৷ মনে মনে গুণি পাচে সেনাত পশিল। ব্ৰহ্মান্ত্ৰক হানি হানি কৰম্ভ নিম্মূল। (यांश वीरव यूटक मिहि लाशांव नमरह। ভাগি ভাগি পলাই বীৰ আগত নৰহে। কৈকেয়ৰ ৰাজা ব্ৰহ্মক্ষেত্ৰ বুলি যাক। মাৰিলেক দ্ৰোণক লাগিয়া সাত জাক জোণে হানিলেক তাক ষোড়শ সায়কে। মহাবেগে চলি যাই কৈকেয় ৰাজাকে। ব্ৰহ্মক্ষেত্ৰে দেখে শৰ আসে আকশিতে। নৱ নৱ শৰ হানি কাটিলা বাটতে। কৈকেয় ৰাজাৰ বৰ বিক্ৰমক দেখি। আউৰ শৰ হানিলন্ত খানিক নাপেখি। তাকো শৰ হানি কাটি পেলাইলম্ভ পাচে। তুর্য্যোধনে দেখিয়া বিশায় হুয়া আছে। **ट्यार** यड शिमलस्र कांग्रिल टेक्टक्य । দ্ৰোণেও থোথোৰা বাটি থাকিলন্ত তয়। কতোক্ষণে ব্ৰহ্ম অস্ত্ৰ মনে গুণি পাইল। অস্ত্ৰ অভিষেক কৰি গুণত চৰাইল ৷ যেতিক্ষণে ত্রকা অন্তা গুণে আনি থৈল। ধমুগুণ হত্তে খৰ বঁজাইবাক লৈল।



আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

পৃথিবীয়ে। খলকিল সাগৰ কম্পিল। ত্ৰিদশ দেৱৰ মাজে বিস্ময় মিলিল। দশো দিশে উল্কাপৰে পৰয় নিৰ্ঘাত। 🗸 ক্ষাধ্বৰ বৃষ্টি ভৈলা পাণ্ডবা সেনাত। খৰ বায় বহে দিবা ভাগে অন্ধকাৰ। সকল সেনাৰ মাঝে শুনি হাহাকাৰ। বল দিয়া হানিলন্ত গুৰু দ্ৰোণে বাণ। গিৰ গিৰ শব্দে গৈয়া পুৰিল গগণ। বুহক্ষেত্রে দেখে ব্রহ্ম অন্ত্র আছে চানি। ব্ৰহ্ম শৰ নিবাৰিলা ব্ৰহ্ম অন্ত হানি। তুনাই পঞ্চাশ শৰে ভেদিলা দ্ৰোণক। দ্ৰোণৰ হৃদয়ে লাগি গৈলা থকবক॥ সুস্থ ত্য়া গুৰু দ্রোণে মনে গুণি পাইলা। কুষ্ণ বৰ্ণ সম শব হানিয়া পঠাইলা। ধৰণীক গৈল বাণ ভেদিয়া হৃদয়। শৰ ছোটে কাম্পে ৰাজ। থিৰ নোহে কায়॥ গুঞ্জ হেন চক্ষু ফুৰাই চাহিলা দ্ৰোণক। হৃদয়ত ভেদিলন্ত সন্তৰি সায়ক। সাৰথিকো ছুই শৰে বাহুত তাৰিল। পৰম আনন্দে এক আটাস কৰিল ৷ সিংহ নাদ কৰি জোণে তুগুণে কিটাইল। নিৰ্ভৰে কৈকেয়ক শৰ বৰ্ষিল। বিস্তৰ কৰিলা শৰ কৈকেয় নৃপতি। হানস্তে কাটন্তে বীৰ হৈল আশকতি। কৈকেয়ৰ বিহবল স্বভাব দেখি দ্রোণে। ষাঠি শৰে হৃদয়ত হানিলা সন্ধানে। প্ৰাণ ছাৰি গৈল তাৰ শৰৰ ছোটত। ৰথ হৈতে ৰাজা ঢলি পৰিল ভূমিত। ৰাজাক ঢালিয়া গুৰু পশিলা স্বেনাত। হয় হস্তী ৰথক মাৰম্ভ অসংখ্যাত।

11



कप्र कन्मली।

ধৃষ্টকেতৃ ৰাজা দেখে জোণৰ বিক্ৰম। সাৰ্থিৰ মুখ চাই বুলিলা বচন । হেৰা দেখা কৈকেয়ৰ সেনা যাই ভাগি। ৰথ খান আমাৰ বাহিয়ো তাক লাগি ॥ ৰাজাৰ বচন শুনি সাৰ্থি স্থজান। দ্ৰোণৰ সম্মুখে বাহিলন্ত ৰথ খান। ধনু খান টক্ষাৰ কৰিলা শীঘ্ৰ কৰি। যেন অগণিক লাগি পতন্তৰ ধৰি। ষাঠি শবে দ্ৰোণক তাৰিলা বাম কাখে। তুনাই পঞ্চিশ শৰে হানিলা সম্মুখে। ঘোটকক সাৰ্থিক ভেদি দোদোবানে। স্তপুত সিংহক যেন জগাইল চৰণে। গুৰু দ্ৰোণে তাহাৰ কাটিলা ধনুখান। হৃদয়ত কৰিলেক শৰৰ সন্ধান॥ আন ধনু ধৰি শিশুপালৰ নন্দন। দ্ৰোণৰ হৃদয়ে হানিলম্ভ যাঠি বাণ। ক্ৰোধে গুৰু দ্ৰোণে তাৰ সাৰথি কাটিল। চাৰি শৰ মাৰি চাৰি ঘোৰাক মাৰিল। কক্ষ পাথি চায়া আছে তীক্ষ পঞ্চবান। ৰাজাৰ হৃদয় মাঝে কৰিলা সন্ধান। ৰথ ভক্তে ধৃষ্টকেতু ভূমিগত ভৈল। বাপেকৰ মহা গদা হাতে তুলি লৈল। অস্ত্ৰৰ বিশ্বকৰ্ম ময় যাৰ নাম। নিশ্মিলন্ত গদা গোট আতি অমুপাম। সত্বৰে ধৰিল তাক অনেক প্ৰবন্ধে। অস্ত্ৰৰ হত্তে গদা পাইল জৰাসন্ধে। জৰাসন্ধে শিশুপাল ৰাজাক দিলন্ত। গদা ধৰি অনেক ৰাজাক জিনিলম্ভ ৷ স্থবৰ্ণে মাণিকে ৰত্নে দেখি জাতিকাৰ। সেহি মোক্ষ অস্ত্ৰ ধৃষ্টকৈতু যে ৰাজাৰ।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

আতোপ টকাৰ কৰি গদা প্ৰহাৰিল। गमा भारक कारक कारक अशि निकलिल II र्प्पार्थ (मिथलक य**ब भनाव अ**श्वाब । কৰিলেক হাজাবেক গদাৰ প্ৰহাৰ। খণ্ড খণ্ড হয়। গদা ভূমিত পৰিল। গগণ মণ্ডলে যেন তাৰা সঞ্চৰিল। गमा उन्न देखल छ श्रनाहेल नुभवन । শক্তি হানিয়া পাচে হানিলা তোমৰ ॥ ভৰম্বাজ তনয় যুক্ষত নঘাটিল। ভিভিনি সায়কে শক্তি ভোমৰ কাটিল। यम मम नव जूलि लिल छक ट्यारन ! খেপিয়া পঠাইল। তাক মাৰিবাক মনে॥ কবচ ভেদিয়া তাৰ হৃদয় ভেদিল। শৰৰ প্ৰহাৰে ৰাজা ভূমিত পৰিল ৷ ধৃষ্টকেতৃ মৰিলস্ত এক বাণ ঘাৱে। হাহাকাৰ কৰিলন্ত সকল পাণ্ডৱে। বাপৰ সন্তাপে ধাইল তাহাৰ কুমাৰ। দ্ৰোণক কৰিল দৃঢ় শৰৰ প্ৰহাৰ। তাকো এক শৰ হানি নিলা সঞ্জমন। পাণ্ডৱ দলত ভৈল হাঁহাকাৰ বাণী ৷ বাঘৰ আগত যেন মৃগৰ ছৱাল। 🗸 পতক্ষক ভুঞ্জে যেন বুভূক্ষিত ব্যাল। ধুষ্টকেতু মাৰিলেক পুত্ৰ সমন্বিতে। মহা ক্ৰোধে ধাইল পাচে জৰাদক্ষ স্থতে॥ দ্ৰোণৰ ৰথক ঢাকিলেক শৰ বৈগে। ভান্ধৰক ঢাকে যেন বাৰিষাৰ মেঘে। তাহাৰ বিক্ৰম দেখি দ্ৰোণৰ বিশ্ময়। শৰ ছোট পায়া বৰ শৰীৰ কাম্পয়। ধশু টানি টানি ভাক প্ৰহাৰয় লৰ। শৰৰ সন্ধানে ভাক নিলা যম ঘৰ॥



कप्र कन्मली।

জৰাসক স্থত যেবে যম ঘৰ গৈলা। তাৰ এক শত শৰ একেবাৰে ধাইলা। একশত শবে তাসম্বাৰো লৈলা প্ৰাণ। বীৰগণ মৰিল পলাইলা ৰথ খান চ সি বেলাত দ্ৰোণক ধাইলেক যেহি বীৰ। তাহাৰ নিবাস ভৈল যমৰ মন্দিৰ । প্ৰলয়ৰ বহিং যেন সংহৰম্ভ প্ৰজা। আনন্দে চাহিয়া আছে দুৰ্য্যোধন ৰাজা ৷ সকল পাঞ্চাল বলে হুয়া এক জুৰি। অস্ত্ৰ শস্ত্ৰ প্ৰহাৰিলা দশো দিশে বেঢ়ি। অস্ত্ৰ শস্ত্ৰ হানিয়া দ্ৰোণক পাৰে গালি। মৰিলে মৰিলে ব্ৰহ্মবধী পাপশালী ॥ কিসক লাগিয়া ব্ৰহ্ম কুলে উপজিলি। কিসক লাগিয়া তুমি তপ আচৰিলি । 🗸 পুৰাণ সংহিত। পৰিলাহা চাৰি বেদ। ধৰ্ম্মৰো শাস্ত্ৰৰো তুমি জানা অবিচ্ছেদ ॥ কোন শাস্ত্ৰ বলে ব্ৰাহ্মণৰ হিংসা ধৰ্ম। কিস লাগি এবিলাহা আপোনাৰ কৰ্ম। নিসঞ্চি কৰিলা তুমি পাঞ্চাল সেনাক। কত ধন ধাৰি ভৈলা কৌৰব ৰাজাক। স্থুজিবাক নোৱাৰিবা বাহুতে যুক্তিয়া। বাপুতেয়ো মৰি যাইবা বিত্ত মুস্থঞ্জিয়া। তপ জপ কৰি অন্ত বীৰ স্বৰ্গে যায়। ভোঠেৰ বাপুতেৰ বা হৈব কোন ঠাই। আমাক মাৰিলে জানো তুমি ৰক্ষা পাইবা। পেটৰ ভাতক লাগি অধোগতি যাইবা ৷ সপি মাৰিবাক পাৰা কেনে কৰা যুদ্ধ। কিসক লাগিয়া হাতে ধৰিলা আয়ুধ ॥ প্रका माहिवांव करल कोवंड नृशि । পুক্ৰ পৌত্ৰ মৰিয়া যাইবেক অধোগতি।



मर्ट्सा मिर्ट्स गलाबाद रक्तार्ग शक्तिलस्ह । উচিত জানিয়া তাক নেদন্ত সিদ্ধান্ত ॥ শুনি সুশুনিলা যেন পশিলা সেনাত। শৰ বৃষ্টি কৰি সেনা কৰম্ভ নিপাত ৷ মধ্যাক্ত বেলাভ যেন প্রচণ্ড মার্ত্তি। হয় হস্তী ৰথক কৰন্ত খণ্ড খণ্ড ॥ সকল পাণ্ডবগণে পাইল বিমুখে। ব্ৰহ্মা ক্ষেত্ৰে ধাইলা পাচে দ্ৰোণক সমুখে। দ্ৰোপদৰ পুত্ৰ ধৃষ্টত্বস্থৰ তনয়। যুদ্ধত কুশল শুভানয় আতিশয়। অৰ্দ্ধচন্দ্ৰ বাণ হানি কাটিলন্ত ধনু। দ্ৰোণৰো সহ বি শবে ভেদিলন্ত তমু॥ ব্ৰহ্মক্ষেত্ৰে তঞ্চি ভৰছাজৰ নন্দন। আছাৰিয়া পেলাইলস্ত কাটা ধনুখান ॥ আন ধনু ধৰিয়া তেখনে গুণ দিলা। যমদণ্ড সম শৰ গুণত যুৰিলা। কর্ণ মানে ধন্ম টানি পঠাইল খেপিয়া। হৃদয়ত পৰি শৰ গৈল উফৰিয়া॥ সেহি শৰে মৰি গৈলা ৰাজাৰ কুমাৰ। চেকিতান ভৈলা পাচে সন্মুখ জোণৰ ॥ त्मानव कार्य एकपिलक प्रभा भव। শৰ হানি বেগ ভম্ভাইল ঘোটকৰ ৷ তুই শৰ হানিয়া ধ্বজক কম্পাইলা। চাৰি শৰ মাৰিয়া সাৰ্থি ওফৰাইলা # থিয় হুয়া সাৰথি ৰথক কৰি থিব। ধনু ধৰি সন্মুখ ভৈলন্ত দ্ৰোণ বাৰ ॥ দশ শৰে হৃদয়ত কৰিলা সন্ধান। দক্ষিণ ভুজত প্ৰহাৰিলা কৰি বাণ ॥ ধ্বজক ষোড়শ বাণে কৰিলা সন্ধান। সাত শৰ হানি সাঁৰথিৰ লৈলা প্ৰাণ ॥



क्ष कमाना।

সাৰণি পৰিল ঘোৰা লৱৰ দিলেক। বিমুখত গুৰু দ্ৰোণে খেপিলে সায়ক ॥ শৰ পৰি চাৰি ছোৰা গৈল যম ঘৰে। চেকিতান ভূমি মাঝে কৰন্ত সমৰে॥ চাৰি শৰ হানিলন্ত তুনাই হৃদয়ত। লৱৰি চৰিলা গৈয়া দ্ৰোণৰ ৰথত ॥ সাত্যকীৰ ভাই যেবে ভৈলন্ত বিৰপ। ধুষ্টত্বান্ন তনয় সমৰে ভৈলা হত। সকলে পাঞাল দশ দিশ কপাইল। সাগৰে খলকে যেন মগৰে আউৰাইল॥ 🗸 এতেকে বেহুৰ মাঝে ৰোল উথলিলা। পাঞ্জন্ম ধ্বনি তিনি লোকক পুৰিলা। यि थांद्व यूक्त करन निनिन नन्मन। তথাতে শুনিয়া ঘোৰ দাৰুণ ক্রন্দন । শোকে অপমানে ধৰ্মৰাজা পাণ্ডু স্থত। সেনাৰ মাঝত চিস্তা কৰম্ভ বহুত॥ দ্ৰোণৰ সমুখে বৃদ্ধ ক্ৰপদ নৃপতি। ধুষ্টত্নাম্ন সমে পুত্র নাতি সমন্বিতি। आत्ना वब वब वीब लर्श टेलला वाि । সেনা পাচ কৰিয়া থাকিল যুদ্ধ কাছি॥ শ্ৰীমস্ত তাম্ৰধ্বজ অমুজে সহিতে। বুদ্ধৰ সমান ধৰ্মা শিশু বয়সতে। বুদ্ধিত গম্ভীৰ ক্ষেমাবস্ত স্থভনয়। ষাহাৰ যশক সৰ্ববজনে প্ৰশংসয়॥ বিষ্ণুৰ ভকত মহামায়াৰ সেৱক। পুত্ৰৰ সমান কৰি দৰিজ পালক ॥ তুই ভাইৰ ক্লেহ যেন ৰাম লক্ষ্মণৰ। সবান্ধবে জীৱস্তোক সহস্ৰ বৎসৰ॥ শুনিয়েক নৰলোক একচিত্ত মনে। মুক্তিৰ কাৰণ হৰি বিনে নাহি আনে ॥



শিশু মাধৱক তিনি লোকত বিদিত। ভকত জনাৰ নানাৰূপে সন্নিহিত # একৰূপে হৰি ব্ৰহ্মৰূপে অৱতাৰ। চক্ষুয়ে দেখিলে সংসাৰত পাই পাৰ॥ দ্ৰব ব্ৰহ্ম গ**ন্ধা**জলে তাতে কৰি স্থান। পাপক এৰায়া চলে বৈকুণ্ঠ ভুবন । আৰে। ব্ৰহ্মকপ বেদ পুৰাণ ভাৰত। পঢ়িলে শুনিলে থাকে বৈকুণ্ঠ পুৰত ॥ হেন জানি একচিত্তে শুনিবা ভাৰত। হৰিত ভকতি হৈব অচিৰে কালত। জ্ঞানে বা অজ্ঞানে যত পাপক সাঞ্চিয়া। ভাকে বিনাশিবা যম পুৰক বাঞ্ছিয়া। সাত্যকী প্রবেশ এহি মানে সমাপতি। হৰিৰ সেৱক ৰুদ্ৰ কন্দলা বদতি॥ মহা ভাৰতৰ পদ অতি মনোহৰ। কৰ্ণ ভৰি শুনা আক পাপ যাউক দূৰ॥



হেন সৰস্বতী।

প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ।

জয় নমো নাৰায়ন বৈকুণ্ঠৰ পোতি। তোমাৰ চৰণে লৈলে। সৰন সম্প্ৰোতি। বামন পুৰান ইতো প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ। হেম সৰোচতি বিৰোচিশ। ইতো কুত্য। এক দিনা দেৱগনে চিন্তিলা উপাই। জেন মতে তুৰাচাৰ দৈত্য বধ জাই। সবে দেৱ চলি গৈলা বিষ্ট্ৰ সভাক। আদেসিও প্ৰভূদের ৰাখিও আমাক। হিৰন্য দৈত্যৰ পাসে খাটে সৱে দেৱ। তুমি বিনে ৰক্ষাকৰ্ত্তা আন নাছি কেৱ॥ স্থনি নাৰায়নে দিলা দেৱক উপাই। থাকিও নির্ভএ দৈতা বধিবৃত্ত মঞিঃ॥ এহি বুলি নাৰায়নে সভা বিসোর্ভিজলা। আপুন থানক দেৱগন চলি গৈলা 🛭 হিৰনাৰ পুক্ৰ ভৈলা বৈষ্ণৱ প্ৰহ্লাদ। এক দিনা পিতা পুত্রে লাগিলা বিবাদ । সেহি দিনা প্রভূদের জগতৰ পোতি। আদৈসিলা বিবাদ লগাও সৰোচতি ৷ স্বামিৰ বচন দেবি কোৰি সিৰোগত। প্ৰবেসিলা সৰোচতি তাহান কণ্ঠোত। সেহি বেলা প্রহাদে বৈষ্টৱ ৰূপ ধোৰি। हिबनारब बार्ग रेगवा स्मिबना हिब ॥



ट्रिन ञ्चिन विदनाव कूथ रेखना मन। ত্ৰাচাৰ পুত্ৰ তঞ্জি কিনো অগিআন ॥ ৬ কোঠেৰ হৰিক স্থমৰস ছুৰাচাৰ। আমাৰ বংশত তঞি ভৈলি কুলাঙ্গাৰ ॥ পুনোৰপি প্ৰহ্লাদে সমৰে হবি হৰি। ৰাজা বুলে পুত্ৰ নতু পঢ়ে সিস্থ ধোৰি। ৭ সিকাৰণে মন্দ বাক্য উপজে মনোত। বয়স ভৈল সে জানিবেক সাৰ তত্ব॥ হেন মনে গুনি ৰাজা নপান্ত উপাই। দৈত্য গুৰু শুক্ৰক জে অনাইলা মতাই। ৮ জান্তে লৈআ জাহা গুৰু থৈবে মুজুৱাই। মোৰ পুত্ৰ প্ৰহ্লাদক দিওক পঢ়াই॥ ৰাজাৰ বচনে শুক্ৰ চালিলেক গাৱ। প্ৰহ্লাদক লৈআ গৈলা আপুনাৰ থাৱ ৷ শুক্ৰ জে বদতি স্থনা ৰাজাৰ তনয়। পিতৃৰ বচনে তুমি পঢ়িবে লাগঅ॥ প্রহাদে মাতন্ত পাচে শুক্র মুখ চাই। পোঢ়িবাৰ উপদেস দিওক বুজাই ॥ সন্টামৰ্ক নামে ছণ্ড শুক্ৰৰ ভনয়। প্রহাদক পঢ়াৱস্ত সাস্ত্র বামানয় 🛭 হেন স্থানি প্ৰহ্লাদে স্থমৰে হৰি হৰি। বামানয় শাস্ত্ৰ গুৰু পঢ়ো কেনকোৰি। কিবা শান্ত্ৰ পোঢ়িতে নাহি জ্ঞান। জন্মে জন্ম হৌক মোৰ হৰিতে ধিআন ॥ হৰি হেন বানি নচাড়োক সর্বক্ষন। স্থনি শুক্র গুৰু পাচে ক্রুধ ভৈলা মন। তাৱক্ষনে গৈলা গুৰু নৃপতিৰ ঠাঞি। তজু পুত্ৰ প্ৰহ্লাদক পঢ়ান নজাই। মঞি উপদেস জত দেঞো ভাল কোৰি। তাক এৰি প্ৰহ্লাদে স্থমৰে হৰি হৰি।



প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ।

হেন স্থান হিৰুগোৰ কুধ ভৈলা মন। প্ৰহ্ৰাদক মাতি আন অবে দৃতগণ । ৰাজাৰ আদেখে দৃত গৈলা সিত্ৰ কৰি। প্ৰহ্ৰাদক আনি ঠেকাইলেক দৰদাড়। সবে সমজ্যাৰ লোক আচে চাই চাই। তথাপিও প্ৰহ্লাদৰ ভুক ভক্ত নাই। তাৱক্ষনে স্থমবিলা সাতবাৰ হৰি। ৰাজাৰ আগত বৈলা মৌন ৰূপ ধৰি। অধিকে জলিলা কোপ হিৰনাকোসিপু। ত্ৰাচাৰ পুত্ৰ তঞি ভৈলি মোৰ বিপু॥ হৰি স্থুমৰস তঞি মোহোৰ আগত। স্থান স্থৃচি তাৰে জেন মোহোৰ কানত। একে জে অন্তৰ আমি বিধি বামানয়। হৰি স্থমৰনে পাপ অধিকে চাপয়। মোত খাটে হৰি হৰ ব্ৰহ্মা পুৰন্দৰ। কোন দেৱ আচে আউৰ মোহোৰ উপৰ। তিনিও ভূবনে দেখা মঞি অধিকাৰি। মোৰ পুত্ৰ হুয়া তঞি স্থমৰস হৰি। ছুৰাচাৰ পুজ্ৰ তঞি এভো হেন কৰ। প্ৰানখানি ৰক্ষা কৰ হৰি মুস্থমৰ । বিদেখোত হৰি মোৰ হস্ত ভাতৃবৈৰী। বামানয় শাস্ত্ৰক পঢ়িও ভাল কৰি। প্রহাদ বদতি বাপ নাসে আন বানি। হৰি স্থমৰনে মোৰ জাউক প্ৰান খানি। ক্ৰোধিলেক ৰাজাএ পুত্ৰৰ স্থান বানি। তুলাত লাগিলা জেন প্রচণ্ড অগনি ॥ ক্ৰোধৰ বেগত ৰাজা ন পাস্ত উপাই। থৰমৰ কোৰিআ পুত্ৰক আচে চাই। চাৰি किथে पृष्टि ভৰি চাহন্ত নিৰোখি। কৌটি সহস্ত্ৰেক হস্তি মাউতে আচে ৰোখি॥



হস্তিগনে আদেখিলা মাৰ জাস্ত কোৰি। দেখো কেনমতে আক ৰক্ষা কোৰে হৰি। ৰাজাৰ স্থানিআ হেন প্ৰচণ্ড বচন। কৌটি সহস্রেক হস্তি ধাইলা তেতিক্ষন॥ একো একো হস্তি জেন পর্বত সদৃথ। मास खिवि गर्डिका **धाउँ एक मरमा**पिथ ॥ ৰাজা বোলে জান্তে মাৰ বিলম্ব নোকৰি। প্ৰহ্লাদে বোলস্ত মোক ৰক্ষা কৰা হৰি ॥ অন্তকালে প্রহাদে স্থমবে বিথিকেশ। তেতিক্ষণে হৰি তাৰ হিআত প্ৰবেস। মাধৱত পৰে কোন আচে সংসাৰত। তাৱক্ষনে প্ৰবেসিলা তান সৰিৰত। তেতিক্ষনে হৈলা বজুসম কলেঅৰ। অচেদ অভেদ দেহা অজৰ অমৰ। হস্তিগনে বেঢ়ি দক্তে ভিৰি সিৰ কন্ধে। ভেদিতে নপাৰে তাক অনেক প্ৰবন্ধে। স্থতে মেঢ়াই আনি কতো চতকয় পাৱে। কিঞ্চিতে। নটলে দেহা হৰিৰ প্ৰভাৱে। দান্ত ভিবিলেক জিতো দান্ত গৈলা ভাগি। স্থুণ্ডে মেঢ়াইলেক জ্বিতো স্কুণ্ড গৈলা চিগি ॥ মাৰিবে নপাৰি হস্তিগন অন্তৰিলা। হেন দেখি হিৰন্যো জে ৰাজাএ ডৰিলা। মনে মনে গুনি ৰাজা কোৰিলন্ত সাব। হত্তি সাধা মন্ত্ৰ কিবা জানে তুৰাচাৰ। কৈৰ সৰ্পগণ জ্বান্তে আন শিঘ্ৰ কোৰি। দান্ত হানি পেথু আৰু জমেৰ নগোৰি। ৰাজাৰ আদেখ হেন স্থানি সৰ্পগণ। ফোল্কৰ কৰিআ সবে ধাইলা ভেত্তিক্ষন ॥ একো একো সর্পক দেখন্তে ভয়ঙ্কৰ। ফনাএ লভিবলা জেন মেঘ আকাসৰ ॥



প্রহাদ চৰিত।

আকাসত সবে দেৱগন গৈলা ভৰি। প্ৰহাদে বুলত মোক ৰকা কৰা হৰি ॥ দর্পগণে খুস্তিআরে বেড়ি দর্গো দিখ। ভেদিতে নপাৰে সৰ্প নলাগয় বিখ n খুন্তিভাস্তে দখন ভাগিলা সবাহাৰ। দান্ত ভাকা সৰ্পৰ ফোফেনি মাত্ৰ সাৰ। মাৰিবে মপাৰি দৰ্পগন অন্তৰিলা। হেন দেখি হিৰ্ম জে ৰাজাএ ডৰিল।। হৰিক সুমৰি পাচে প্ৰহাদ জে ৰৈল। মন্ত্ৰিক বুলন্ত ৰাজা তপ্ত কৰা তৈল। ৰাজাৰ আদেখ মন্ত্ৰি সিৰোগত কোৰি। জন্ধা গোট আমি তাতে থৈলা তৈল ভোৰি। সহস্রেক লোকে ধোৰি তৈলক ভারয়। বাহয় অগনি জেন স্বদ কৰ্য়॥ গিৰ গিৰ কৰি বহি তৈলত উঠয়। মন্তি বোলে জাত্তে আন ৰাজাৰ তনয়॥ নাৰিকল গোট আনি পেলাইলেক পাচে। ফুতি গৈলা নাৰিকল সবে দেখি আঁচে॥ ভৈলত পেলাইবে লাগি লৈআ জাই ধোৰি। প্রভাদক তৈলত পেলাইল ধক্ষা মাৰি। তাত পৰি প্ৰহ্লাদৈ স্থমৰে হৰি হৰি। जनामना डगदेख जनस भ्वावि॥ ৰক্ষা কৰা হে হৰি ভৈলো তজু দাস। ভক্ত বৎসল প্ৰভু নকৰা নৈৰাস ॥ জেবে হৰি স্থমবিলা ৰাজাৰ তন্ত্ৰ। তপ্ত তৈল জুৰ ভৈলা জেন জলময়। क्षिति के निना को छि एम मर्थ छत्। হৰি জাক ৰক্ষা কৰে মাৰে তাক কুনে। **(मिशिटाक बांका (करत शृद्ध नमेविता)** . प्रथम कामूबि क्रिथ वहन वृशिला ।



ভাল ভাল চাই বিখ এখনে আনিবু। ইহাক খুআই জম কৰনে পঠাইবু। তুনাই বিখ খুআইলেক বিখ নালাগিল। খাণ্ডা আনি কাটিলেক খাণ্ডাও ভাগিল। জনত পেনাইলা তাতো নগৈলেক তল। মাৰিবে নপাৰি ৰাজা ভৈলেক বিকল ॥ উদ্ধে সত জোজন পর্বত গোট আচে। তৈতে নিআ প্রহাদক তুলিলেক পাচে॥ তৈৰ পৰা পেলাইলেক ৰাজাৰ আদেদে। প্ৰহ্লাদে বুলন্ত ৰক্ষা কৰা ৰিখিকেসে॥ ধৰ্ম ধৰ্ম স্থমৰন্ত দেৱ ৰিখিগন। ইবেলি সে প্রহাদৰ নাহিকে ৰক্ষন॥ তৈৰ পৰা পৰি সিতো জিব কেন কোৰি। প্ৰহ্লাদে বোলস্ত মোক ৰক্ষা কৰা হৰি॥ তৈৰো পৰা প্ৰহ্লাদক পেলাইলা তেখনে। আলাগতে ঝাম্প দি ধোৰিলা নাৰায়নে॥ অলখিত ভাৱে নিআ থৈলন্ত ভূমিত। ৰাজা বুলে পুত্ৰ মৰি ভৈলা চুৰ্ণাকৃত ॥ আথে বেথে ৰঙ্গে ৰাজা চাহিলন্ত পাচে। দেখে হৰি স্থমৰি প্ৰহ্ৰাদ বসি আচে॥ মাতে হিৰৱাও জে মন্তিৰ মুখ চাই। একোএ প্রকাবে আক মাবন নজাই। এবেসে জানিলো মোৰ মিলিলেক মৃত্যু। মোহোৰ বংখত উপজ্ঞিল ধুমকেতু॥ মন্তি বুলে ৰাজা মঞি জামু বুধিখানি। কাঠ আনি এতিক্ষনে জালিও অগনি। তাতে পৰি ভজু পুত্ৰ নমৰঅ জেবে। আক মাৰিবাক ৰাজা বুধি নাহি তেবে। ৰাজা বুলে জেন জুআই কবিও আপুনি। জালিও অগনি তুমি কাঠ খৰি আনি॥



প্ৰহ্লাদ চৰিত।

কাঠ আনি তেতিক্ষনে অগনি জালিলা। সহস্রেক লোকে যুত কলসে ঢালিলা। যুত পাই তেতিক্ষনে জলিলা অগনি। গগন মণ্ডলে গৈতা লাগিলেক ধুনি। জলন্তে ভৈ গৈলা বহু পর্বত সমান। ৰাজা বুলে জান্ত কোৰি প্ৰহাদক আন॥ ৰাজাৰ আদেস পাচে স্থনি দূতগণ। হাতে গলে প্রহাদক বান্ধিলা তেখন। অগ্নিত পেলাইবে লাগি লৈআ জাই ধোৰি। প্ৰহাদে বুলন্ত মোক ৰক্ষা কৰে হৰি। দেহি সময়ত প্ৰভু জগতৰ বাপ। বহুিক বুলম্ভ এবে এড়িওক তাপ॥ তেতিক্ষনে সিতল ভৈলেক বৈখানৰ। বান্ধি পেলাইলেক তাক অগ্নিৰ ভিতৰ । সর্ববজনে দেখি আচে আতি অদভূত। ৰাজা বুলে পুত্ৰ মোৰি ভৈলা চূৰ্ণাকৃত ॥ हिंब প্রভাৱে নজলয় বৈশানল। প্ৰহাদৰ গাৱে জেন চন্দন সিতল ॥ বাহিৰে অগনি ভিতৰত জলময়। হৰিক স্থমৰি বসি প্ৰহ্ৰাদ আচয়॥ মাধৱে প্ৰহ্লাদে কিচো সুহিকে অন্তৰ। निबञ्जन (मिथ প্রবেসিলা দামুদৰ ॥ চাৰি হাতে ধৰি সংখ চক্ৰ গদা পদ্ম। প্ৰত্যক্ষে দিলস্ত দেখা নকৰিয়া চন্ম ॥ माध्यांक श्रद्धारम रमिथन रमि ठारव। অকপটে নমিলা হৰিৰ তুই পাৱে। চৰনোত পৰিমা প্ৰহ্লাদে কৰে তুতি। জন্মে জন্মে হৌক মোৰ তোমাত ভকতি॥ নমো নাৰায়ন প্ৰভু জগত কাৰন। নাহি আদি অন্ত প্ৰভু তুমি নিৰঞ্জন ॥



অনাদি পুৰুষ তুমি নাহি অন্ত ভেদ। তুমি চৈধ সাত্ৰ প্ৰভু তুমি চাৰি বেদ। न्ता नावायन প্রভু অনাদি ইচৰ। মৎস্ত-কুৰ্মা আদি কৰি দখ ৰূপধৰ। ত্ৰাহি আহি মহা হৰি সৰন দিওক। সংখাৰ দাগৰে বুৰু ৰক্ষা কৰিওক। মাধৱে প্রহ্লাদে বহু মিলিলা আলাপ। কৰজোৰ কৰি বহি এড়িলেক তাপ। এতেকতে অগ্নিএ জোগাইলা সিংহাসন। তাতে গৈআ আনন্দে বসিলা নাৰায়ন ৷ মাধৱ বোদতি স্থুনা হিৰ্ম্ম তন্ম। তোৰ ছুখ দেখি মোৰ নসহৈ হৃদয়। মুখোত চুম্বন দিল। প্রনোধিলা তাক। কুনে তোক মাৰিবেক কহিওক মোক॥ সত্যে সত্যে বাপু তোক দেএে। বৰ। আজি ধৰি হঞা তুমি অজৰ অমৰ। আৰু এক কথা কহু তোহাৰ আগত। ৰাজা হিৰ্মুক জে বধিবু প্ৰভাতত । আনে কেন্ত্ৰ নেদেখিবো দেখিবিহি তঞি। ফোটিকৰ তত্তে লুকাই থাকিবৃহুঁ মঞি॥ কতো বেলি অন্তৰে হিৰন্থে বুলে বানি। মোৰিল পুতাই মোৰ সুমাও অগনি ॥ হেন শুনি হবি পাচে অন্তর্ধান ভৈলা। প্রহাদক সম্বুধি আপুনি চলি গৈলা । অগনি মুমাই ৰাজা চাহিলেক পাচে। দেখে হৰি স্থমৰি প্ৰহ্লাদ বোসি আচে ॥ পুৰিবাৰ প্ৰভাৱে অধিকে জলে কাস্তি। তপ্ত স্থবৰ্নত কৰি অধিকে জলস্তি। দেখিআ হিৰম্ম আতি ভৈলা ভয়ে ভিত। কাম্পিলা ভদয় আতি দৈহা জঙ্ভবিত।



প্ৰহ্লাদ চৰিত।

আথে বেথে সাবতিয়া বুলে ধন্ম পুক্র।
এহিথানি কথা বাপু সিখিলিহি কৈত।
নমো নাবায়ন প্রভু দের জ্বোচুপতি।
তোমার চরনে মোর থাকোক ভকতি।
তোমার প্রসাদে প্রভু লভিলো চেতন।
কর জোর করি প্রভু করো নিবেদন।
হেম সবোচতি ভনে এরি আন কাম।
পাতেক চাড়োক ডাকি বোলা বাম বাম।

দোলড়ি।

নৃপবৰ অমুপাম। তাহান ৰাজ্যত, কন্দ্ৰ সৰোচতি, দেৱজানি কন্তা নাম। তাহান তনয়, হেম সৰোচ্ভি, ধ্ৰুবোৰ অমুজ ভাই। भमवत्क एडहँ, क्षांब काबिना, ৰামন পুৰান চাই। আত অনস্তবে, মাধৱে গুনস্ত, मत्न कवि विमिवित । হিৰক্স বিৰোক, কিমতে বোধিবু, নপাওঁ একো উদিস। পূৰ্বে হিৰম্মোক, হবে বৰ দিলা, কিচোতে নাহি মৰন। কেসৱৰ চক্ৰ, বজ্ৰ আদি কৰি, আচে অন্ত্ৰ যত মান॥ দেৱ অন্তৰ্ভ, কাহাতো নমৰে, व्यक्तम व्यक्तम कारे। ৰাতৃত দিনোত, একোতে নমৰে, मास्तिब वृधि मारे।



কতো বেলি হৰি, মনোত গুনিআ, পাইলম্ভ কিচু উপাই।

অদ্ধ কলেৱৰ, সিংহোৰ সদৃথ, অদ্ধেক মনিস্থ কাই॥

হাতৰ নথ জে, তৃত্ল সদৃখ, বুলস্ত হিয়া বিদাক।

দিনোত ৰাতৃত, একোতে নমৰে, সন্ধ্যা সময়োত মাৰু।

আতি ভয়ন্ধৰ, ৰূপ ধৰিলন্ত, দেখন্তে লাগে তৰাস।

সোৰিৰ থৈবাৰ, নপাৱন্ত ঠাই, জুৰিলা দিস আকাস ॥

দেখি দেৱগনে, আনন্দক পাই, হৰিস কৰে অপাৰ।

এবেসে জানিলু, প্ৰভু নাৰায়ন, সাধিবস্ত পোতিকাৰ ৷

হেন ৰূপ ধৰি, প্ৰবেসিলা হৰি, গৰুড়ৰ কন্ধে চড়ি।

দূআৰত পাচে, গৰুড়ক থৈআ, ভূমি পাৱে জান্ত লৰি॥

নৱ তুআৰৰ, ভৈলম্ভ ভিতৰ, কুপাময় দেৱ হৰি।

হিৰন্য জে বিৰ, জিথানত আচে, সিথানক গৈলা লৰি॥

বড় বড় দৈত্য, সহিতে সমাজে, বোসি আচে দৈত্যৰাজে।

সিতো ৰূপ গোট, কেহো নেদেখিলা, বৈষ্টৱ প্ৰহ্লাদ বাজে॥



প্ৰহ্লাদ চৰিত।

ওআৰি মধ্যত, তম্ভ গোট আচে, বিপোৰিত ফোটিকৰ।

সর্বদাএ তাতে, আরজি থাকয়, হিৰম্ম জে দৈতেচৰ ॥

সিতো ফোটিকৰ, ভস্তৰ ভিতৰ, পসিলস্ত দেৱ হৰি।

প্ৰহ্লাদে দেখন্ত, আচন্ত ইচৰ, নৰসিংহ ৰূপ ধোৰি।

পাচে হিৰন্তএ, মাভিবে লাগিলা, পুতাৰ মুখোক চাই।

ৰাতৃ দিনে তঞি, হৰি স্থমৰস, হৰি আচে কোন ঠাই।

ই তিন ভুবনে, মোৰ অধিকাৰ, জলথল আদি কৰি।

কেস গাচ জেবে, বিচাৰি চাহিমু, খুজিআ নপাইলো হৰি॥

ইন্দ্ৰ আদি কৰি, তৃদস দেৱতা, সবে থাকে সেৱা কোৰি।

তাসন্থাক সোধা, সবেও খাটয়, কিসক নখাটে হৰি॥

আমাৰ ভয়ত, পলাই থাক্স্ত, বিচাৰি নপাইলো মঞি।

তিনি ভূবনৰ, অন্তত থাকই, বতাসৰ আগ খাই॥

এহি দেখি পাচে, মঞি নেখেদিলো, পলুৱা ভঙুৱা বুলি।

হেৰয় হৰিক. তঞি স্থমৰস, তোহোৰ নপাইলো তুলি ॥ 300.

সসনীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

গজ সপ বিখ, সগনি পানি জে,

মোহোৰ ভূত্য সমান।

মোৰ পুদ্ৰ বুলি, কেঁছ নমাৰিল,

হেন খানি মনে মান।

এভো হেন কৰ, হৰি সুস্থমৰ,

থাক মোৰ আজ্ঞা পালি।

মোৰ পুত্ৰ তোক, দেঞো ৰাজ্য ভাৰ,

মাধৱোক পাৰা গালি॥

স্থনা নৰ লোক, প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ,

জি জাইবা সংখাৰ ভৰি।

হেম সৰোচতি, ৰোচিলা সম্প্ৰতি,

ডাকি বুলা হৰি হৰি॥

भन ।

ছেন স্থানি প্ৰহ্লাদে স্থমৰে হৰি হৰি। মাধৱোক গালি মঞি পাক কেন কোৰি। মাধবেদে পিতা মাতা মাধৱেদে প্রান। মাধৱোত পৰে কুন বন্ধু আচে আন। জত দেখা বাপ জল থল গিৰি বন। গজ ভুজ সবাতো আচস্ত মাৰায়ন ॥ তুমি আমি আদি কোৰি তিনিও জগত। সবাতে আচন্ত হবি মুহিকে বেকত। হিৰম্ম কৰিপু বোলে স্থলৰে বৰ্বৰ। পুনোৰপি নিন্দিলুছ ভোহোৰ উত্তৰ # तूल एक मनारवः गांध व्याटक मामूमब। সবে লোক মুহে কিল একে সমসৰ ; কেই স্থা কেই ছখি বোহত অন্তৰ। (कल कांक वादा (कल इत्यं लक्ष्य। কেন্ত ইন্তা কন্ধে চড়ি হুংখ তুলি সোঁএ। কেত কেত জনে কিন্তা তুপকো নপাএ।



প্ৰহ্লাদ চৰিত।

কেন্ত জনে ভুঞ্জে ঘোল কেন্ত ভুঞ্জে খিৰ। কেন্ত জে শ্ৰীমন্ত হোএ কেন্ত হোএ চুৰ। একৰ জিঅনে হৌক সবাৰো জিঅন। একৰ মৰনে হৌক সবাৰো মৰন। একৰ ভুজনে হৌক সবাৰে। ভুজন। তেবে জামু সবাতে আচন্ত নাৰায়ন॥ প্রহাদ বদতি বাপ নিন্দো তজু বানি। তুমি কিচো নজানাহা আমি আচো জানি॥ মঞি জে দেখুত হৰি আচন্ত সবাতে। मलह्यु निमिरखरम त्नरम्था माकार् ॥ कि जूना नकला किया यूटर नमनव। পাপ পুতা ফলে হুখ ছুখ ভুঞ্চে নৰ । আচাৰত ভিন হৰি বিচাৰত এক। ফোটিকৰ ডম্ভে তুমি দেখিও প্ৰত্যধ। হেন স্থান হিৰক্তই গাৱ চালি উঠি। ফোটিকৰ ভম্ভত বসাইলা এক মৃঠি॥ মুঠিৰ প্ৰহাৰে তম্ভ ভৈলা চিৰাচিৰ। বড় চোটে কাম্পে তাৰ সকল সৰিব। ফাটি বাজ ভৈলা পাচে নৰসিংহ ৰূপে। এক ডেৱে হিৰম্যক ধৰিলা আটোপে 🗈 হিৰন্যও হৰিক ধৰিলা আন্ধোৱালি। जाबकरन हिंचे धिना गांव ठालि ॥ ट्न प्रिथि नांबायरन छरन मरन मरन। মোক জে এমুআ চোটে আন সহে কুনে। शिव शिव नवरम नविना ज्यितिन। ঘনে ঘনে কাম্পন্ত পৃথবী সাত তাল। চোবারে দখন আতি তেজম আটাস। সৰ্গ মৰ্ত্ত পাতালত লাগিলা তৰাস ॥ থলে জেৰে যুজে থল জাই ৰসাতল। कल (काद यूटक कल स्थारे नकल ।

765

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

-গিৰিত যুক্তয় গিৰি খণ্ড খণ্ড হয়। **(मवाञ्च नरब दवारम मिलिम क्षमग्र ॥** কভো বেলি হিৰগুই কিচু চিক্ত পাইলা। উদ্ধক লাগিআ হৰি থেপিয়া পঠাইলা॥ সতেক জোজন মান উদ্ধ লাগি গৈলা। পৃথবিত পৰি হৰি অচেতন ভৈলা॥ দেখিখা অন্তৰ গনে কৰে জয় জয়। কৈৰ সিংহ পত্ন গোটে ৰাজাক যুজয়। পতল জে তুআ কৰে অগনিক সাস। এহিবুলি দৈতাগনে তুলিলেক হাস। অন্যে অন্যে বোলে কিন্তু মন্দ জে অৰিষ্ট। আমাৰ ৰাজাক আসি যুজয় পাপিষ্ট॥ এহিবুলি দৈতাগন নিজমে ৰহিলা। ৰাজাৰ চৰনে পৰি প্ৰনাম কৰিলা। আমাৰ বচন প্ৰভু স্থনা দৈতেচৰ। তোমাক বধিতে আইলা দেৱ গদাধৰ ॥ তাক্ষ মাৰিবাক লাগি কৰাহা জতন। তোমাৰ কি মৃত্যু আচে দেৱৰ বচন ॥ ছেন স্থান দৈতেচৰে গৰ্জ্জিবাক লৈলা। সেহি সময়ত আনো দৈত্য প্রবেসিলা॥ ধৰ ধৰ মাৰ মাৰ কাট কাট কৰি। কুধে খেদি আসে দৈত্য নচলয় ভৰি। কতো বেলি চেতন লভিলা নাৰায়ন। নসহে হৃদয়ে তান সোক অপমান। এক লাক্ষ দিআ হৰি হিৰ্মুক ধৰি। মাল-বান্ধে ধৰি পেলাইলস্ত চিত কৰি। অস্ত্ৰৰ ৰঙ্গ দেখি মাধৱৰ খন্ত। ছুও এক সম বিৰ জেহেন মাতজ। দিন গোট গুচি সন্ধ্যা ভৈলেক প্রবেস। िस कोल लिखलेख प्रत विशिदक्त ॥



প্ৰহাদ চৰিত।

ঘসাই নিলম্ভ পানি প্রোনিক লাগি। ঘসন্তে পিসন্তে তাৰ হাৰ গৈলা ভাগি॥ ছুই হাতে ধৰি অস্ত্ৰক আলগাই। জলথল কিচু নোহে উৰুত বৈসাই। অস্ত্রে সত্ত্রে নকাটিলা নথে বিদাবিলা। ৰাতৃ দিনে নামাৰিয়া সন্ধ্যাত মাৰিলা ॥ হৃদয় বিদাৰি পেলাইলেক মহিতলে। নগৰৰ লোক মানে পলাইলা সকলে । গিৰিক ভেদিআ জেন বহি জাই জল। হিৰন্মৰ তেজে বস্তব্ধৰা জাই তল।। হেনমতে দৈতেচৰ গৈলা জমঘৰ पिथि मान बन्ने टिला मकल लोकब ॥ আকাসৰ পৰা দেৱে পুষ্প বৰিখন। অপেচৰা নাচতা গন্ধৰ্বে কৰে গান ! লবঙ্গ মালতি সুগন্ধিত পুষ্প জত। হৰিৰ সিৰত বৃষ্টি কৰে অসংখ্যাত । হেনমতে নিসাচৰ গৈলা যম ঘৰ। সিতো কথা স্থান সৰ্বজন ৰুচিকৰ ॥ আক পদ বন্ধে হেম সৰচোতি ভনে। কহন্তা স্থলন্তা ৰক্ষা কৰে নাৰায়নে॥ পিতৃৰ মৰন পাচে প্ৰহ্লাদে দেখিলা। হৃদয়ত তান মহা সন্তাপ লাগিলা॥ হা প্ৰান পিতা মঞি কি কাম কৰিলো। তুমি কিন্তা নিজিলাহা মঞ্জি নমৰিলো। পিতৃ সে পৰম গুৰু পিতৃ ইফ্টদেৱ। পিতৃ বিনে সংখাৰত বন্ধু নাহি কেৱ। জাহাৰ প্ৰসাদে মঞি দেখিলো সংখাব। পিতৃ অবিহনে দেখো দিনতে আন্ধাৰ॥ প্ৰহ্লাদৰ বিলাপ দেখিয়া নাৰায়ন। আখাসিআ বুলিলন্ত মধুৰ বচন।



नाकान्मा नाकान्मा वाश्रु नकवा मखाश। কৈৰ ভাৰ্য্যাপুত্ৰ দেখা কৈৰ মাৱ বাপ ॥ জেহেন বৃক্ষত পোখি থাকে একে সঙ্গে। নিসা গোট বঞ্চে জেন মতে ৰজে ধজে॥ ৰজনি প্ৰভাত ভৈলে দসো দিদে জাই। পিতৃৰ পুত্ৰৰ জানা তেহুয় পৰাই ॥ হেন জানি বাপ তঞি সোক পৰিহৰ। গুনি চাহা বাপু তঞি সবে সমসৰ। আসন্তে নাজঠ জাঞতেও জাব সুস্থ। লগৰ সঞ্চতি জাব পাপ আৰু পুতা॥ আৰু এক কথা কহুঁ তোহোৰ আগত। তঞ্জি মঞি উপজিলু হিৰ্মা বধিত। তোৰ বাপে ধৰ্ম্ম এৰি হৈবেক ৰাবন। ৰাম ৰূপে তাক মঞি কৰিবু নিধন। সিম্পাল হৈব গৈআ জাদর বংখত। কৃষ্ণ অৱতাৰে তাক কৰিবৃত্ হত। সিকালত আমাৰ সৰিলে লিন হৈব। সৰ্গ পদ এৰিআ বৈকুণ্ঠ পদ পাইব॥ তোহোৰ ভক্তিত মঞি ভৈলু বৰ তুষ্ট। তোৰ মোৰ এড়াএড়ি নাহি কদাচিত। আপুনাক আপুনি নিচিন কেনে তঞি। প্রহাদ স্বৰূপে উপজিআ আচো মঞি॥ হেন বাক্য বুলি হৰি ভৈলা অন্তৰ্ধান। প্ৰহ্ৰাদে কৰিলা প্ৰেত কাৰ্য্য এছিমান ॥ ইচৰৰ বাক্য জন্ত লাগিল মনত। এড়িলন্ত সোক আচিলন্ত জত জত। माध्व रेशलख शार्ठ आश्रुनाव शारन। প্ৰহ্লাদ চৰিত্ৰ সমাপতি এই মানে॥ নমে। নাৰায়ন নিৰঞ্জন জছপতি। তোমাৰ চৰনে মোৰ নিমজোক মতি।



প্ৰহ্লাদ চৰিত।

ভকত বৎসল প্রভু ককনা সাগব।

মঞি অনাথক নচাড়িবা দামুদ্ব ॥

অভয় চবণে মঞি পসিলো সবন।

অপাব সাগবে পাব কবা নাবায়ন ॥

তোমাব চবন বিনে গতি নাহি আন।

মঞি অনাথক প্রভু কবা পবিত্রান ॥

নমো নিবঞ্জন প্রভু অনস্ত অচ্যুত।

তুমি অনাথব নাথ পবম প্রখ্যাত॥

কুষ্ণাব কিন্ধবে কহে স্থনা সর্বজন।

ভবিবা সংখাব স্থাবে ইহাব প্রজন ॥

হেম সবোচতি ভনে এবি আন কাম।

পাতেক চাড়োক ডাকি বোলা বাম বাম॥



সাধর কন্দলী।

আত্ম পৰিচয়।

कविबाक कन्मली (य आभारक रम वूलि कग्न, মাধৱ কন্দলী আৰো নাম। সপোনে সচিতে মঞি, জ্ঞানে কায়বাক্য মনে, অহনিশে চিস্তো বাম বাম। শ্লোক সংস্কৃতে আমি, গঢ়িবাক পাৰিছয় कविलाटा मर्वकन तार्थ। ৰামায়ণ স্থপৱাৰ শ্ৰী মহামাণিক্য যে, বৰাহী ৰাজাৰ অমুবোধে n সাত কাণ্ড ৰামায়ণ পদবদ্ধে নিবন্ধিলো, লম্ভা পৰি হৰি সাৰোদ্ধত। महामानिकाब त्वात्न कावा बन किट्डा मिला, ছগ্ধক মথিলে যেন স্থত। পণ্ডিত লোকৰ যেবে অসম্ভোষ উপজয়, হাত জোৰে বোলো শুদ্ধ বাক। পুস্তক বিচাৰি যেবে তৈত কথা নপাবাহা, তেবে সবে নিন্দিবা আমাক ।

ৰামায়ণ—অযোধ্যা কাণ্ড।

ৰামৰ বনবাস।

দোলড়ি।

ধৱলি ঘৰত আছন্ত জানকী

ৰাঘৱৰ মনোৰমা।

শ্বেত মেঘে যেন জগত বিদিত,

बाहिनी (मवी छेशमा ।

্গাৱে অলকাৰ ধৰি।

মোৰ স্বামী ৰাম ৰাজা হৈব আজি,

আমি হৈবো পটেখৰী।

মনে কুতুহল অনেক মঙ্গল,

किन्छ ठीरब ठीब।

মনত হাসন্ত নিয়মে আছন্ত,

শীতা জগতৰ মাৱ 🛭

প্রসন্ন ব্যবদন,

• কৰি ছুৱাৰক চাইল।

প্ৰাণনাথ ৰাম গুণে অমুপাম,

আসা দৰিশন পাইল 🛭

পৰিল ঝামৰ নোশোভে ৰামৰ,

মুখ অমুকপ দিন।

र्गार्थ्ति कालव यन मिनकब,

প্রভার ভৈলা বিহীন ৷

প্ৰদৰিণ কৰি স্বামীক নমিলা,

সীতা জনকৰ জীৱ।

হাত জোৰ কৰি ৰামৰ পাশত,

मक्सारम देखनख थिइ ॥



অন্তৰ্গতে পাছে কাৰ্জক লখিয়া, ৰাঘৱৰ বৰ নাৰী।

ধীৰে ধীৰে মাত্ৰ বুলিলা বচন, জনক ৰাজ জীয়াৰী॥

কি কাৰণে প্ৰভূ মনত আসুখ, মিলিল কোন প্ৰমাদ।

ক**হি**য়োক প্ৰভু হৰিষ কাল**ভ,** দেখিয় কেনে বিষাদ॥

আতি অপ্রমাদী মন্ত্রী পাত্র আদি, ব্রাহ্মণ আছম্ভ যত।

পঢ়ি মন্ত্ৰ মূল তুৰ্ববাক্ষত ফুল, নেদিলা তজু শিৰত ॥

তোক্ষাৰ লগত ধৱল চামৰ, নাহি ৰাজ অলফাৰ।

কিনো বিপৰীত অথিৰ চৰিত, দেখোহেঁ। চিত্ত তোক্ষাৰ ॥

ৰাজলক্ষী ধৰ প্ৰমন্ত কুঞ্জৰ, নাসিল কেনে লগত।

চলস্তে বেগত মেৰু পৰ্ববতক, তুলিতে দাস্তে শকত॥

আতি মনোৰম অফ তুৰক্সম, জুগুত কাঞ্চনময়।

হেন পুপ্ৰৰথ ভোক্ষাৰ লগত, কেনে প্ৰভু নচলয়।

তোক্ষাত ভকত মন্ত্ৰী পাত্ৰ যত, আনো ৰাজ সেনা গণ।

সমৰে শকত গোসাঞিৰ লগত, নকৰে কেনে গমন ॥ *



ৰামৰ বনবাস।

স্থৰণৰ ৰথ শুক্ল ঘোড়া যত, শোভন কৰি জুগুত।

কৰি কুতুহল কৰন্তে মঞ্চল,

নচলয় অদভূত।

আনো নানা মত তোকাৰ সক্ষত, নলখিয় ৰাজ্য অঞ্চ।

কৈয়ো অভিপ্ৰায় কি কাৰণে প্ৰভু, অভিযেক ভৈল ভক্ত।

হেন স্থানি পাছে প্ৰভূ ৰামচন্দ্ৰ, সীভাক দিলা উত্তৰ।

সাবধান কৰি স্থনা প্ৰাণেখৰী, যেন ভৈলা আথান্তৰ।

পৰম নিৰ্মাল ৰাজ ঋষিকুলে, ভূমি ভৈলা উত্তপতি।

সুশোভন চিত ধর্ম্মেসে চৰিত, শুদ্ধমতী শান্তী সতী।

অভিষেক বিধি বিহিয়া নৃপতি, গৈলা কৈকেয়ীৰ ঠাৱ।

বচনে চান্দিয়া বৰ ছই মাগি, লৈলস্ত কৈকেয়ী মাৱ॥

তেজিয়া ৰাজ্যক চৌধ বৰিষেক, আমি যাইৰো বনমাঝ।

আউৰ বৰ মাগি লৈলস্ত ৰাজাত, ভৰতক দিতে বাজ ।

পাপক সঞ্চিলে শৰীৰ দংশিলে, কৈকেয়ীএ কালসৰ্প।

মিলিল বিঘাত বাক্য বিষে চন্দি, হৰি গৈল বল দৰ্প # 390:

অসমীয়া সাহিতাৰ চানেকি।

মাৱৰ বচন স্থান আভিশয়,
তৈল চিত উপসাম।
কালে পাইলে আৰু নাহিকে জীৱন,
সাক্ষাতে লৈ যাই যম।
নাহি আন মন বাপৰ বচন,
আমি শিৰোগত কৰি।
জী কৈল চন স্থামি যাইকোঁ বন

প্ৰী ভৈল ছন্ন আমি যাইবোঁ বন, অযোধ্যাক পৰি হৰি ।

ন্থনা প্ৰাণেখৰী চিত্ত থিৰ কৰি, নোকৰিবা কিছো শোক।

আসিয়োক বান্ধে পৰিচেদা কৰি, দেখি আৰো মঞি তোক #

পৰম দাকণ বামৰ বচন, স্থনিয়া সীভা গোসানী।

হাঁ প্রভু বুলি পড়িলা ভূমিত, হদয়ত মুঠি হানি॥

বিষাদে মনত শিৱৰ আগত, থেহেন দেবা পাৰ্বতী।

যেন মহাদেৱ দহিলা কামক, বিলাপ কৰম্ভ ৰতি॥

আতি মহাভয় শৰীৰ কাম্পায়, হাতৰ খসে বলয়।

নাহি গাৱে ভত সিংহৰ ত্রাগত, যেন মৃগ নলবয়॥

চেতন লভিয়া সীতায়ে বোলস্ত, কতনো পাপ কৰিলোঁ।

মাটিৰ ভিতৰে প্ৰবেশি আছিলেঁ।, তথাপিতো নমৰিলোঁ॥



ৰামৰ বনবাদ।

কিনো অপৰাধে তুমি প্ৰভু মোক, শোক অগণিত দিয়া। আমি পতিত্ৰতা নাৰীক গোসাঞি, চলিলা কেনে তেজিয়া। ন্যাইবাহা প্রভু বুলিয়া জানেকী, অঞ্চলত ধৰিলন্ত। (यन लक्क्री (प्रवी निश्च विक्कृब, চৰণত পৰিলম্ভ। ৰাঘৱে বোলস্ত উঠা প্ৰাণেশ্ৰী, স্থনিয়োক হিতপক। বাপৰ বচন তেজিয়া বনক, নযাইবোঁ ইতো অশক্য । (कोमला। मांद्रक आमि कबि यंड, তেজিলোহেঁ। বন্ধুজন। মায়াময় ইতো গৃহ স্থু তেজি, আজি চলি যাইবোঁ বন॥ যাহাৰ উপাম, নমো নমো ৰাম নাহি ইতো ত্রিভুবনে। ত্থ উপসাম হোক ৰাম ৰাম, বোলা সামাজিক জনে॥

शन ।

তেজিলোহোঁ মিত্ৰ যত অযোধাা নগৰী।
মোহ এড়িলোহো সীতা সৰ্বাঙ্গস্থলৰী।
মুখচন্দ্ৰ হৈৰি অমৃতৰ অভিলাষে।
গ্ৰাসিবাক লাগি ৰাছ আসি ভৈল পাশে।
জবযুগ ধন্তুত কটাক্ষ যেন শৰ।
চমকিয়া ৰাছ গৈল গগণ উপৰ।
নীলোৎপল দল সম নয়ন যুগল।
দেখি মুনিগণো হোৱে মোহিত সকল।



नामा टेंडन जिल कुल वन्दू नि यथव । মুকুতা পংকতি দন্ত পান্তি মনোহৰ ॥ মনোহৰ অধৰ অধিক বিশ্ব ফল। তিনি ৰেখা সমে জলে স্থােভিত গল। বান্ত ছুই খান তোৰ মূণালৰ সৰি। উদৰত ত্ৰিবলি কামৰ সাতসৰি ৷ হৰ কোপ বহ্নি পীড়ে খুজি নপাই জুব। नां ि मरवां वर्ष कां मरमरत मिला वृद ॥ निक পूर शिं कारम मूनित छ्डार । উদৰৰ লোম পান্তি ধুম ভৈল তাৰ ॥ ডমকৰ মধ্যদেশ সদৃশ কলাল। কাঞ্চিয়ে ৰঞ্জিত আতি নিতম্ব বিশাল। অমৃতৰ কুপ সম মশাথৰ পুৰ। সৰস জঘন তোৰ প্ৰকাশে প্ৰচুৰ । স্থুকুমাৰ উক ৰামকদলীৰ সম। জঙ্বা ছুইৰ কান্তি আতি দেখি মনোৰম ॥ হুগুপুত গ্রন্থি আতি ৰঙ্গা চুই পার। নৱ কিসলয় দল সহজ স্বভাৱ॥ মন্থৰ গমনে কুঞ্জৰৰ তেজ হৰে। মুপুৰৰ শবদে সাৰস অনুসৰে। সূৰ্যাৰ উপমা ছুই কুণ্ডলৰ জ্যোতি। তাৰাগণ চমক মাণিক গজমতি॥ স্থৰগণ গন্ধৰ্বি নাগৰ তেজ হৰে। বেশ দেখি কমন যুবতে প্ৰাণ ধৰে ৷ জীৱন্তে মৃতক মঞি তোক পৰিহৰোঁ।। গলে শিলা বান্ধিয়া সাগৰে ঝাম্প কৰে।। পৰিহৰ ছুখ সীভা চিস্তা শোক ৰোগ। মৰন্তা জনৰ দূৰ নোহে হেন যোগ। বাপৰ বচন মঞি কেনে পৰিছৰো। গৃহ নেৰ ক্ষমা কৰ হাতে তোৰ ধৰে।।



ৰামৰ বনবাস।

সীতায়ে বোলন্ত প্রভু দেব নিজ নাহা। কোন দোষে তুমি মোক পৰিহৰি যাহা॥ পূৰ্বৰ জন্মে নাৰাধিলো পাৰ্বৰতীশন্ধৰ। সি কাৰণে মোক পৰিহৰে প্ৰাণেখৰ। সূৰ্য্য কুলে উভপতি অযোধ্যাৰ পতি। তুখৱতী নাৰী কৰেঁ। তোক্ষাত ভকতি। চৌদ্ধয় বৰিষ লাগি তুমি বনে যাইব। इक्रमक लागि (भाव भारन वृक्दाहेव। চপ্পাক কলিক। সম মোৰ কলেৱৰ। লুভি ঘুভি আছিলাহা যেহেন ভ্ৰমৰ। याद आति विकत्ति टेंडल कुल कल। উপভোগ এড়ি কেনে কৰ'হা নিক্ষল। সূৰ্য্য সবিহনে যেন নোশোভয় দিন। बक्रमी त्मार्ट्साट्ड एवन मामध्य होन । বসন্ত নোশোভে বিনে কোকিলৰ ৰোলে। নিক্ষল জীৰন প্ৰভু তুলি বিনে কোলে। স্থৰত্তে প্ৰস্তু মোৰ লাগে ছদি খেদ। বোলে সামী দেৱ নকৰিবা বন্ধু ছেদ॥ কমন অকত মোৰ খিন দেখিলাহাঁ। সি কাৰণে প্ৰভু মোক উপেখিয়া ঘাহা।। ভোক্ষাক বোলোহোঁ তুমি ৰাজাৰ কুমাৰ। দাৰুণ বনক কেনে যাইবা একেখৰ। যমৰ কৰণ সম তুৰ্গম তুন্তৰ। यूगबर्ख कृषि (अप शहन शह्तव॥ ৰাঘৱে ৰোলস্ত সীতা চিত থিব কৰ। আক্ষাৰ বচন তঞি দুঢ় মনে ধৰ ॥ आिम बदन रेगरल स्तब विक व्यावाधिया। উপৰাস ভ্ৰতে মোৰ কল্যান সাধিবা। ভাই মোৰ স্থবোধ ভৰত শক্ৰঘন। दमद दक्त आबांबिद मकक्ष मन ।



দৰ্প মান এড়ি তান চিত্তক তুষিব। তেবে অমুৰূপে তোক ভৰতে পুষিব॥ প্রভাত সময়ে উঠি চালিবাহা গার। কৰিবাহা প্ৰণাম আন্ধাৰ বাপ মার॥ হিত স্থহদতো ছাড়ি নেদেখিবা আন ! সব সাহ্ত দেখিবাছা কৌশল্যা সমান। সীতায়ে বোলন্ত প্রভু স্থনিয়ো বচন। মোৰ বাকা হেলা নকৰিয়া দিয়া মন। বাপৰ স্কুতে পোৰ নজলয় সুখ। পোৰ কৰ্মে বাপেকৰো নথগুয় চুখ। স্বামীৰ স্থকৃত ভুঞ্চে পতিব্ৰতা জন। প্ৰভূৰ লগত আৱশ্যকে যাইবোঁ বন ৷ বনক যাহাত্তে আগে মিলিবেক যত। ভাঞ্চিয়া কণ্টক বন চলিবো আগত ৷ মোৰ অভিপ্ৰায় যেন আপুনি জানাহা। অনুগত তেজি অপযশক পাইবাহাঁ।। কেশৰী কুঞ্জৰ বাঘ ভালুক মহিষ। তুমি সঙ্গে থাকিতে কৰিবে মোক কিস। नमी नम दर्भाश्यता विविध मरबावव। क्रमुमिनी निननी अरनक मरनाइव ॥ উৎস্থক মনক গোসাঞি নকৰিবা ভক্ষ। তুমি সমে বনক যাইবাক বড় ৰঞ্চ॥ जूमि मरम खमन कविरवा वन मारल। যেহেন স্বৰ্গত শচী দেৱী দেৱৰাজে॥ ৰত্নময় বিচিত্ৰ পৰ্ববত বনদেশ। বিবিধ পুষ্পিত বন স্থগন্ধি নিশেষ॥ স্থবিচিত্ৰ ক্ৰীড়া স্থান কুঞ্জৰ বিশেষ। কাম সমে ৰতি খেন ক্ৰীড়িবোঁ আশেষ 🛚 মাৱে মোক পূৰ্বত শিখাইলা হাতে ধৰি। নকৰিবা ভোজন স্বামীক পৰিহৰি॥



बामब वनवाम।

সি সব বচন আমি শিৰোগতে ধৰোঁ। নদী বনে তোঁকাৰ তুলতে অমুসৰে।। হেন স্থান বুলিলন্ত জগতৰ নাথে। সীতা দেবী আগত আছন্ত হেট মাথে। স্থনা স্থনা সীতা বোলো জনক জিয়াৰী নাৰা সমে বনবাস খাটিতে নপাৰি। সংহৰ নাদক স্থানি গিৰিৰ কন্দৰে। কাম্পে কলেবৰ চমকিত হৈব ডবে॥ পৰ্ববত সমান হস্তী গৰ্ম্ছে নিৰম্বৰে। বাদশ মাসৰ ভিতৰত সয় ধৰে। মহিষ বৰাহ বাঘ সৰভ গবয়। সিংহ ঘোঙ ৰাৱে আতি ত্ৰাসক জনয়। গোলাস তেৰঞ্চ গোম পৰ্ববতীয়া বোড়। মাওলীক অজগৰ যাক নাহি জোৰ। ইসবক আদি কৰি ভয়ন্ধৰ সৰ্প। দৰশন মাত্ৰেকতে হবে বল দৰ্প॥ কাট পতন্ত্ৰ জোক নেউল ইন্দুৰ। ইতো সব জন্ত আছে বনত প্ৰচুৰ। গুণুকুৰি পৰুৱা আছ্য় আস থান। যাহাৰ প্ৰহাৰ সিংহে নসহয় টান। বিহল্পম চতক বনত আসি মিলে। আছোক মনুষ্য হস্তী গোটে গোটে গিলে। ৰকত কমল সম তোৰ হাত পাৱ। সৰ্বক্ষণে নেত কামলিত যাৰ গাৱ॥ ৰত্ন গৃহে ফুৰন্তে শোণিত পাৱে বহে। উলু কণ্টকত ফুৰিবাক কোন সহে। অনেক দিনৰ পথ হৈব মৰুস্থল। মহাতুৰ্গ স্থান কতো অপবিত্ৰ জল ৷ কুশৰ কল্টক লভা গুলা যত দেশ। ঘোৰ অৰণ্যত কেনে হৈবাহা প্ৰবেশ।

293

আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

পৰিধান বক্ষল হৈবেত জটা কেশ। নথ লোম ছোৰ হৈব ভোভকাৰ বেশ । অস্থি চৰ্ম্ম নাম মাত্ৰ হৈব মোৰ সাৰ। কিনো প্ৰীতি হৈব তোৰ স্থৰত আহ্বাৰ॥ ঘৰ্ম্মকালে পঞ্চপ ব্ৰতক ধৰিবোঁ। শিশিৰ সময়ে জলে নিবাস কৰিবোঁ ৷ উপবাস কৰিতে লাগয় ঘনে ঘন। অন্নক তেজিয়া ফল মূলেদে ভোজন। আক্ষাৰ লগত বনকাসে ভুমি ষাইবা। উপবাস ব্ৰতে মহাতুখ মাত্ৰ পাইবা॥ कनक निमनी त्याव वहन नवाथ। গৃহে পতিব্ৰতা ধৰ্ম্মে পৰলোক সাধ। बामब वहन छाने कानकी शामानी। क्रमन कविया (पर्वी वृत्तिलख वांनी ॥ তুমি এড়ি গৈলে মোৰ জীবন নিক্ষল। কটাৰত ভৰ সুহি ভুঞ্জিবো গৰল ॥ সীতাৰ বিলাপে চিত ৰামৰ জৰিল। বনক যাইবাক ভাক্ষ অনুমতি দিল ॥ স্থন স্থন জানেকী লখিলো তোৰ কাজ। মোহোৰ তুলত বনে যাইতে হয়। সাজ। ৰাঘৱে ৰোলন্ত লক্ষণৰ হাতে ধৰি। পালটাও মন বাপু গৃহ পৰিহৰি॥ তুখী তুই মাৱ মোৰ বৰ তুখ পাইব। কৈকেয়ীত মান সাৰি লঘনক পাইব ৷ ञ्जिया नकर्ण शास्त्र वृज्ञिलस्य वांगी। नक्ष्मक भूषित्व भारत कोमना। त्यामानी ॥ ধন জন সমন্বিতে গ্রাম দশ শভ। ভোক্ষাত গৌৰবে তাক্ষ পালিবে ভৰত। তুলত যাইবাক মোক নিৰোধিয় কিক। कित्ना मन्म हिखिल्ला त्यांश्व आह्ह विक ।



बागव वनवाम।

প্ৰাণ মোৰ দহে আতি এত মান ক্লেছ। হৃদয়ত খাণ্ডা হানি তেজিবোহোঁ দেহ। যেন অভিমত কৰ ভৈয়াই লক্ষ্মণ। স্থুয়জ্ঞ প্রিক্ষক গৈয়া আন এতিক্ষণ । বশিষ্ঠৰ পুত্ৰ তেহোঁ ৰাঘৱৰ মিত্ৰ। তেখনে লক্ষাণে আনি কৈলা উপস্থিত। স্থত্তক ৰামদেৱে অৰ্চনা কৰিলা। আপুনাৰ অলঙ্কাৰ তান্ধ দান দিলা। ৰাঘৱক দেখিয়া সীতাৰ অভিমত। মিতিনীক আনি দিলা অলঙ্কাৰ যত ৷ শয়ন কামলি আবে। সিংহাসন খাট। ৰত্নৰ বাহুটি দিলা চতুঃষ্ঠি পাট । পাটপট কুণ্ডল কন্ধণ মণি হাৰ। মুপুৰ পগৰি দিলা নানা অলঙ্কাৰ ॥ কৌশল্যা স্থমিত্রা আদি মারগণ যত। ব্ৰাহ্মণ প্ৰমুখ্যে আনো যত অনুগত॥ বন্ধুজন নট ভাট দাস দাসী জন। गरनावथ भूवि बारम विलाइल सन ॥ এক বৃদ্ধ ব্ৰাহ্মণে ৰামক পাইলা ভেট। আমি পাঞ্চ বৎসৰে ৰাজাত কৰি জেষ্ঠ। শিশু স্থৃত মোহোৰ বিস্তৰ পৰিজন। পুষিতে নপাৰে। মোক কিছু দিয়ে। ধন। बाघरत दोन स भन आर्ग मिया देशन। সহত্রেক গুৰু তাৰ অৱশেষ ৰৈল ॥ ৰাখিতে পাৰিবা যত আপুনি লৈয়োক। विलय नकवि साल्डे लड़् धविरयाक । সুখাই গৈল চর্ম্ম সম পাঞ্জি হেন কেশ। দৃঢ় কৰি গাটি বান্ধি আগত প্ৰবেশ। হাতে লড়ু ধৰি চলিলাহা দ্বিজবৰ। পাৱ থিৰ নোহয় কাম্পয় কলেৱৰ ।

290

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি ৷

বাছৰিয়ে। গোসাতিঃ বুলি ৰামে দিলা ৰাৱ। পৰিহাস বুলিলোঁ লখিলোঁ তজু ভাৱ। গোৰকে সহিতে গো সকলক নিয়োক। আউৰ যত ধন লাগে মোত মাগিয়োক॥ युक्त कविरवार्टी वूलि माणि रेलग्रा धन। ৰামক আশংসা কৰি চলিলা ত্ৰাহ্মণ। যত ধন দিয়া বামে কৰিলন্ত শেষ। অন্ত আন লক্ষ্মণক কৰিল। আদেশ। বৰুণে পিতৃক দিলা ধনু ছুই খান। টোন তুই অক্ষয় সম্পূর্ণ যাত বান। আৰো দিলা অভেদ কৱচ হুই খান। বিম ল করচ তুই ঝাণ্টে গৈয়া আন ॥ দিব্য ধনু মোহোৰ আছ্য় গুৰু ঘৰে। তাহাকে। আনিয়ো গৈয়া লক্ষ্মণ সত্তৰ ॥ ৰা ঘৱৰ আদেশ শৈৰত কৰি লৈয়া। ত্ববিতে লক্ষ্মণে ধনু আনিলন্ত গৈয়া॥ ৰাম সাতা লক্ষ্মণ ধনক দান কৰি। ৰাজাক দেখিতে যান্ত থান পাৰহৰি। ওৱাৰিৰ নাৰী কান্দে সীতা পাৱে ধৰি। কৈক যাহা মার আমাসাক পৰিহৰি। নকৰিলোঁ পাপ অকালত মৃত্যু নাই। অংশ্বেষ পুৰৰ নাৰী এড়ি কৈক যাই। পুৰুব কালত আছোঁ খণ্ড তপ কৰি। তাৰ কলে সীতা মাৱ যান্ত পৰিহৰি॥ ধৱলা ঘৰত পড়ি কান্দে নাৰী জন। যেন হিমগিৰিত পড়িল তাৰাগণ ঃ ৰাজপথে প্ৰজা যত মাদি অন্ত নাই। চতুভিতি বেড়িয়া ক্ৰন্দন কৰি যাই। নিৰন্তৰে প্ৰজা সব কান্দয় চৌপথে। কিনো কৰ্ম কৰিল নৃপতি দশৰ্থে ৷



ৰামৰ বনবাস।

জানিলোঁহো ইহাক আপদে আসি পাইল। সি কাৰণে প্ৰিয় পুত্ৰ বনক পঠাইল। আমি সবো ৰামৰ লগতে চলি যাইবোঁ। ইছান পাশতে গৈয়া নগৰী বৈসাইবোঁ। নিৰস্তৰে লৈয়া যাইবো পুত্ৰ পৰিবাৰ। ইতো শৃক্ত নগৰী কৈকেইৰ হৌক সাৰ: ৰাজাৰ কুমাৰী তুলিলন্ত বাপে মাৱে। প্রজাগণে দেখে সাঁতা যান্ত ভূমিপারে। স্কুমলা সীতা দেবী ভূমিত চৰণ। কিসক নভৈল বিধি আক্ষাৰ মৰণ। নগৰী জনৰ বাক্য শুনি হেন কাণে। সিংহছাৰ পাইলন্ত মনত অভিমানে ॥ সুমন্তক বোলন্ত জনায়ে। মহাৰাজ। বাপৰ চৰণ দেখোঁ যাইবোঁ বনমাঝ। সংক্ষোপ কৰিয়া কহিলোঁহো ইতো কথা। দশৰথ নৃপতিৰ স্থানিয়ে বেৱস্থা। চেত্ৰন লভিয়া শোকে কৈকেইক চাইল। ৰোগযুত গজে যেন সিংহ ভেট পাইল। কাল ৰাতৃ স্থনিবি কৈকেইৰাজ জীৱ। ৰাম বন গৈলে মঞি তেজিবোঁছে। জীর। তোৰ পুত্ৰে কেন মতে কৰিবেক ৰাজ। ছৱাল চৰিত্ৰ কিছে। সুবুৰয় কাজ॥ মধুফল আশায়ে সেবিলো বৃক্ষ মূল। ফলকালে ভৈল সিয়ো সিমলিৰ তুল ॥ বিৰিধ কালত হেন নিকাৰুণ ভৈলি। মুখৰ গৰাস মোৰ তাকো কাঢ়ি লৈলি। এবেসে জানিলোঁ ভোক যেন পতিব্ৰতা। মোহোৰ ৰুধিৰ পান কৰিতে সকতা। জন্মে জন্ম হোৱে জানো ভোব সদগতি। ৰাজ্যলোভে বধ কৈলি মঞি হেন পতি॥



কীৰ্ত্তি কৰ্ম্ম ধৰ্মমানে সবে পৰিহৰি। অনাথ কৰিলি তঞি অযোধ্যা নগৰী॥ হাঁ প্ৰাণ পুত্ৰ মঞি পৰিহৰে । কিক। স্ত্ৰীৰ অধীন মোক আছে । ধিক ধিক । প্ৰতিপাল কৰে মোক স্থভাষিত ৰাম। তিনিয়ো তৈলোকো যাক নাহিকে উপাম। হা বিধি এবে মঞি কবিলোঁহো কিস। পাপিন্তীয়ে ঢালিলস্ত অমুতত বিষ। পাপিষ্ঠ নিষ্ঠ্ৰ মঞি ভৈলোঁ স্ত্ৰীৰ বশ। ৰামক বনক পঠাই পাইলোঁ অপ্যশ। কিনো অধোগামী তঞি পাপিন্তী দাৰুণী। বিহৈতা স্বামীত কেনে ভৈলি নিকাৰণী । বিলাপ কৰন্তে যেবে আছে দশৰথ। হাত জোৰে স্থমন্ত আগত উপগত। শ্ৰীৰাম লক্ষ্মণ সীতা ছৱাৰত থিত। বনে যাইতে আসিলস্ত চৰণ দেখিত। কান্দি ৰাজ। তুমন্তক বুলিলন্ত বাণী। মহাদই সমস্তক মিলায়োক আনি। পৰিছেদা দেখস্তোক পুত্ৰ ৰাম মুখ। ৰাম বনে গৈলে অন্তৰ্গতে পাইব ছুখ :. ৰাজাৰ আদেশে মন্ত্ৰী গৈল অভ্যন্তৰে। নিৰন্তৰে নাৰীগণ মিলাইলা সহৰে। বসিলা ৰাজাক বেঢ়ি ৰমণী সকলে। চন্দ্ৰক বেড়িয়া যেন তাৰাগণ জলে॥ দেৱতা ভূষিত যত স্থন্দৰী সমাজ। অপেচৰা বেড়িলে যেছেন দেৱৰাজ । স্বমন্তরে নৃপতিৰ বচন প্রমাণি। ৰাম সীতা লক্ষ্মণক ভেটাইলন্ত আনি ॥ वांशक प्रिविता (इम जिःशामाम थिछ। উদয় গিৰিত যেন জলস্ত আদিত্য ॥



কৈকেই কৌশলা। দুয়ো আছন্ত দুই ভিতি। কাশ্যপক বেঢ়ি যেন দিতি যে অদিতি। দশ্ৰথ আছা কলাগণৰ মাঝত। ছস্তিনী গণৰ মাঝে ধেন ঐৰাৱত ॥ ৰামক দেখিয়া ৰাজা চালিলন্ত গাৱ। সাবটি ধৰিতে লাগি বঢ়াইলন্ত পাৱ॥ শোকে সিহবিল গার নপাইলন্ত উলি। ঢলিয়া পড়স্তে ৰামে ধৰিলন্ত তুলি॥ শ্ৰীৰাম লক্ষ্মণে নিয়া থাপিলা আসনে। তিনি হত্তে কান্দিল। বিষাদ কৰি মনে। বিচিলন্ত অনেক চামৰ ধৰি হাতে। সুশীতল জল আনি ঢালিলন্ত মাথে। কৌশল্যাক প্ৰমুখ্যে ৰামৰ যত মার। হা প্ৰাণ প্ৰভু বুলি তেজিলম্ভ ৰাৱ ॥ হৰি হৰি বিধি কত কৰিলে সঙ্গতি ৷ দশৰথ নৃপতিৰ হেন সে বিপতি। সুখৰ ভিতৰে কেনে মিলিল অপাই। वकुरहम किंब बाम वनवारम यारे । কহি যাইবে সীতা আই সৰ্ব্বাঙ্গে সুন্দৰী। किक याहा लथाई वाश (मण शब्धिब । विनाम भिलिल जानि जायाथा। नगरी। কৈক ঘাইবে ৰমাই মোক অনাথিতি কৰি। কতো বেলি নুপতিৰ আসিলেক জীৱ। কৰজোৰে শ্ৰীৰাম আগত ভৈলা থিৱ। তুয়া সত্য পালিয়া চলিবে। বন মাঝ। শুভদৃষ্টি চাহি আজ্ঞা দিয়ে। মহাৰাজ। লক্ষ্মণ সীতাক মঞি বুলিলোহো ভার। গছ কৰি তেজিলন্ত আপুনাৰ ঠাৱ। भालपेटिंग्ड मभावित्ला कवित्राहा किम। जिन इरस **हिलाला** । जिस्साक आनीय ।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেক।

জগতৰ নাথ এহি বুলি ৰহিলন্ত। মাথা তুলি পাছে দশৰথে বুলিলন্ত। স্ত্ৰীজন বঢ়াই বড় ভৈলোঁহো হতাশ। रेकरकडेक वब मिया छिखिएला विनाम ॥ জন্মে জন্মে মঞি কৰিলোহোঁ মন্দ কৰ্ম। জেষ্ঠ পুত্ৰ বনে যাই কোন যোগ। ধর্ম। অযোগ্য কৰিয়া গলে সতা পাশে ধৰি। ৰাজ্য ভাৰ লৱয় নিগ্ৰহ মোক কৰি। দশৰথে বোলে স্থনা হৃদয় নন্দন। এড়ি যাইবে মোহোক বিকল কৰে মন। তুমি এড়ি গৈলে মোৰ নাহিকে জীৱন। ष्ट्रथ ভाগ टिलाता ट्याटका टेलाया ठल वन I প্রদক্ষিণ কৰি ৰামে বুলিলন্ত বাণী। আমাৰ জীৱন যেন পদ্ম পত্ৰ পানী। পিতৃদের তোক্ষাৰ সভাক ৰক্ষা কৰি। নিশ্চয় চলিবোঁ বন ৰাজ্য পৰিহৰি ॥ ধন্ম পথ বাথোঁ মোত তেজিয়োক স্নেহ। সংাক পালন কৰা দৃঢ় কৰা দেহ ॥ পুত্ৰ সঙ্গে ৰাজাৰ যাইবাক নোহে যোগ। বন্ধজন পালিয়ে। কৰিয়ো ৰাজ্য ভোগ॥ प्रभावरथ (वारल बाम कूलव नन्पन। মাৱক হাপক বোলা আখাস বচন # মাৱৰ বাপৰ পুত্ৰ সৰ্ববকালে ছোট। মাঝ কৰি গলে বান্ধি থাকেঁ। ৰাত্ৰি গোট । ৰাজাত বোলন্ত ৰাম বুঝিলোঁছোঁ চিত। এক বোল বোলোঁ তাক দেখিয়োক হিত। আজি থাকি অনুগ্ৰহ কৰিয়ো আক্ষাত। পৰিছেদ। একে থানে ভুঞ্জে। আজি ভাত॥ ৰাঘৱে বোলন্ত বাপ স্থনিয়ো স্থাপুনে। আজি ছুই ভাত খাইবো কালি খাইবে কোনে।



মোহোৰ বাসনা এড়ি পালিয়ো শপত। অবিলয়ে ৰাজ্যে আনি থাপিয়ে। ভৰত। মোহোৰ নিমিত্তে কিক শোকক জলয়। গন্তীৰ সাগৰ কদাচিতো নটলয় ॥ নি খাস কাঢ়িয়া ৰাজা মাথা তুলি চাইল। তুমন্ত আগতে আছে তাঙ্ক ভেট পাইল। বোলোহোঁ সুমন্ত সুন বচন আকাৰ। চতুৰক্ষ দল মোৰ সহৰে হান্ধাৰ॥ শ্ৰীৰামৰ লগতে চলোক সেৱা কৰি। ভৰতে আসিয়া লোক ই শৃন্ম নগৰী। প্ৰথম যৌবনী যত বিবিধ স্থন্দৰী। ৰাঘৱৰ লগতে চলায়ে। ঝাণ্ট কৰি॥ ভণ্ডাৰ বেহাৰ ধন জন যত দেশ। ৰামৰ তুলতে হৌক বনত প্ৰবেশ। পাত্ৰ মন্ত্ৰী সকল যতেক বীৰ সাৰ। একো একো বীৰে বাসৱকো দেই ধাৰ। ৰামৰ তুলতে গৈয়া বৈসাউ নগৰী। কৈকেইক ৰাজ্য ইতো দেএো শৃন্য কৰি॥ স্থান কৈকেইৰ মুখ জিহবা সুখাই গৈল। ক্রোধে নৃপতিক বাক্য বুলিবাক লৈল॥ সাব ভাগ কাঢ়ি লৈলা পাইলোঁ সত্য বোল। ঘুত কাঢ়ি লৈলা মঞি কি কৰিবো ঘোল। ৰাজাৰ চৰিত্ৰ দেখি ভৰতৰ মাৱ। **চমৎকাৰ জলিল কাম্পায় হাত পার** ॥ বিবৰ্ণ বদন ভৈল নিত্ৰীক কুচানদ। অমৃত পানক যেন ৰাহুগ্ৰস্ত চান্দ। তোকাৰ উপৰি বংশ সগৰ আছিল। স্থানি আছে। তেহোঁ শ্রেষ্ঠ পুত্রক ত্যাগিল। সেহি মতৈ ৰামক কৰিয়ো পৰিহাৰ। তাঙ্ক যোগ্য সুহিকে অযোধ্যা ৰাজ্যভাৰ॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

ধিক তোক পাপিষ্ঠী বুলিয়া মহাৰাই। লাজে শোকে থাকিলা ভূমিক লাগি চাই। হেন দেখি বুলিলন্ত বৃদ্ধ মহামাত্য। নামত সিদ্ধাৰ্থ তেহোঁ চিৰকালি পাত। আছিল অসমঞ্জস কুট বড়খল। শিশু মাৰি পেহলাৱয় সৰযুৰ জল ৷ শোকে বিনারয় প্রজা নৃপতিত কাজ। সি কাৰণে তেজিলা সগৰ মহাৰাজ ৷ গুণৰ সাগৰ ৰাম সৰ্বজন হিত। দেৱ দিজ ভক্ত পিতৃ মাতৃত বিনীত। জন মন কুমুদ প্ৰকাশ শশধৰ। কোন দোষে শ্ৰীৰামক গুচাইবে ৰাজ্যৰ। বাবে বাবে বোল তঞ্জি ৰামক গুচিত। মঞি জ্বানো তোক যেন কৰিতে উচিত। সব ৰাজে সাজিয়া ৰামৰ লগে যাউক। কুকুৰ শৃগালে তোক লাৰি চাৰি খাউক॥ ৰাজাৰ কুমাৰী ৰূপে আইলি ৰাক্ষসিনী। দশৰথ হেন স্বামী ভৈলি নিকাৰুণী। পৰম পাপিনী দেখিবাকো নোহে যোগ। অচিকিৎস্থ ব্যাধি ভৈল যেন গৰ্ভৰোগ ॥ নুপতি বোলস্ত স্থন হাঞৰে পাপিষ্ঠী। ভোক দেখি পড়ে যেন নৰকত দৃষ্টি॥ ৰাজ ভোগ তেজি মঞি ভৈলোহোঁ নৈৰাশ। স্থাৰ থাক ৰাম সঙ্গে যাত্ৰেগ বনবাস। ৰাঘৱে বোলন্ত পিতৃ চিত্ত কৰা থিব। বনগদে যোগা মোক দিয়া ৰাজ চিৰ । পুত্ৰৰ লগত বন যাইতে নোহে যোগ। বন্ধুজন পালিয়ো কৰিয়ো ৰাজ্য ভোগ। স্থ নিয়া কৈকেই আভি সহৰিধ মনে। তিনিকো বাকলি বস্ত্ৰ দিলা তেতিকণে।



बागब वनवाम।

লাজ এড়ি বোলয় নিষ্ঠুৰ মন কৰি। চিৰ পিন্ধি চল ঝাণ্টে দেশ পৰিহৰি। ভৰতে আসিয়া লৌক এহি দণ্ড পাট। চৌধ বৰিষক লাগি বনবাস খাট ॥ দেৱান্ত বস্ত্ৰক তেজিলন্ত তেতিক্ষণে। পিন্ধিলা বাকলি বস্ত জীৰাম লক্ষ্মণে । সীতা দেবী থৈলন্ত কান্ধত চিৰ বাস। মৃগী যেন দেখিয় গলত লৈল পাশ। লাজে নমাইলন্ত মাথ জনকৰ জীৱ। স্বামীৰ পাশত ধীৰে ধীৰে ভৈলা থিৱ । স্থনিয়োক প্ৰভু ৰাম মোৰ নিজ পতি। কেন মতে চিৰ পিন্ধে কহিয়ো সম্প্ৰতি। रहन तुलि ba ति छेशर धविल। মহাদই লোকে দেখি ক্ৰন্দন কৰিল ॥ हैं। हैं। विधि वृत्ति (बाल छेथितिल छाबि। সীতা গোসানীক লাগি নাহি পাট সাৰী। ৰাজা বোলে পাপিষ্ঠী অখ্যাতি বৰ থৈল। একে बारम वरन याइरा वर्ष माणि देनन । কিনো নিদাৰুণী তোৰ পাপৰ শৰীৰ। লক্ষ্মণ দীতাক কেনে পিন্ধাৱদ চিৰ॥ ৰাঘৱে বোলস্ত বাপ তজু পাৱে ধৰে।। একুটীৰ পুত্ৰ মঞি আইক পৰিহৰে।। মোহোৰ বিয়োগে আইৰ প্ৰাণৰ সংশয়। হেন কাজ কৰা যেন তান প্ৰাণ ৰয়। পড়িলা কৌশলা। মার শোকৰ সাগৰে। ইহান শৰীৰ ৰক্ষা কৰা নিৰস্তৰে। হেন স্থানি নৃপতি বিহবল আতি ভৈলা। ভূমিত পড়িয়া তেতিক্ষণে মুর্চ্ছা গৈলা। কভোক্ষণে চেতন লভিয়া মহাৰাই। কৰিলা আদেশ ৰাজা সুমন্তক চাই।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

মোৰ ৰথ খান আন শীঘ্ৰ বেগৈ সাজি। ৰাম বনে যাইতে সাৰ্থি তয়ে। আজি। ৰাজাৰ আদেশ মন্ত্ৰী মাথে তুলি লৈয়া। সব সাজে ৰথ সাজি আনিলম্ভ গৈয়া। ভণ্ডাৰীক নৃপতিয়ে কৰিলা হাস্কাৰ। সীতাক দিয়োক ৰাজ যোগা অলঙ্কাৰ । ৰাজাৰ বচন মন্ত্ৰী শিৰোগতে লৈয়া। তেখনে আনিল দিব্য অলঙ্কাৰ গৈয়।। নৃপতি বোলন্ত কুল বহাৰী আক্ষাৰ। পৰিছেদা দেখোঁ পিন্ধিয়োক অলঙ্কাৰ । তেতিক্ষণে সীতা বন্ধলক তেজিলস্ত। স্থনিৰ্মাল বন্ত্ৰ পৰিধান কৰিলন্ত । সাস্থ পাঞ্চসাতে পিন্ধাইলপ্ত অলঙ্কাৰ। মুকুট কুণ্ডল গ্ৰীৱে সাভসৰি হাৰ ॥ মুপুৰ পগৰি আনে। অলকাৰ যত। থানে থানে প্রতি প্রতি পিন্ধাইলা সমস্ত। कञ्चन कुछल बञ्जात्र्वी आरबा कांकि। সমস্ত শৰীৰ অলঙ্কাৰে নিলা খাঞি ॥ मधन कविन ভात्न कनकव कीरत। शांत हानि दकोननाारम धनिन औरत । माद्ध कोद्ध त्यन धिनस् शतन शतन । লোহে। মলচিল। সীতা বস্ত্ৰৰ অঞ্চলে। মাথাত চুম্বন দিয়া ৰামৰ জননী। বোলস্থ স্থনিয়ে। মার জনক নিদনী। নিগুণ স্থামী তোৰ চুৰ্গতি পতিত। তাৰ মান নসাধিয়া কৰিবাহাঁ হিত ৷ সীভায়ে বোলস্ত মার ভেক্সা চিস্তা শোক ইতৰ নাৰীৰ সম নেদেখিবা মোক ৷ স্থামী থাকিতে শোভে সর অলঙ্কাৰ। সামী হীন ভৈলে হোৱে সব ছাৰখাৰ।



পৰিমিত ধন মাত্ৰ দেশু বাপ ভাই। পুত্ৰ থাকিলে ধন হাততোলা পাই ॥ স্বামীৰ ধনক সূথ ভোগে কৰে দান। কোন চাৰি কৰাৱে স্বামীক অপমান। কোকিল শোভন হোৱে স্থশোভন বাৱে। নাৰীগণ শোভে পতিব্ৰতা ধৰ্মভাৱে। পুৰুষ শোভন গুণ বড় বিছা ভাবে। তাপস শোভন হৱে ক্ষমা অলঙ্কাৰে। স্থনিয়ো গোসানী বোলে সীতা পৰবাস্থ। জন্মে জন্মে ৰাম সামী তুমি হৈবা সাস্ত । কৌশল্যা স্থনিলা হেন বচন কুশল : হৰিষ বিষাদে পড়ে নয়নৰ জল ॥ ৰামৰ গলত ধৰি বুলিলা অশেষ। সীতাক ৰাখিবা ভালে দিলা উপদেশ ॥ স্তকুমাৰ বাপ মোৰ লক্ষ্মণ কুমৰ। তাহান্ধ দেখিবা ্যন নিজ কলেৱৰ॥ ৰাঘৱে বোলস্ত মাৱ তেজিয়োক চিন্তা। লক্ষ্মণ ডাহিন বাহু ছায়া মোৰ দীত।। আন্ধ পৰাভৱে পশে হৰত শৰণে। পাটি মলছিল তাৰ যমৰ কৰণে। মোৰ লগে শোভন লক্ষ্মণ বীৰবৰ। ৰবিভলে নাহিকে আমাক সমসৰ॥ একে মঞি অগ্নি আৰো লক্ষ্মণ পৱন। ৰিপু অৰণ্যক দহি কৰিবোহোঁ ছন। कोमला मूठिक धर्वि श्रामिल इदिया। চাপিয়া ধৰিলা গৈয়া লক্ষ্মণৰ গ্ৰীৱে॥ স্থন স্থন বাপু মোৰ লক্ষ্মণ কুমৰ। সীতাক ৰাখিবি ভালে বনৰ ভিতৰ। লক্ষাণে বুলিলা বাণী জোৰ হাত কৰি। हिसा एडिकरयाक त्याक मन शब्दिब ।

786

অসমায়া সাহিত্যৰ চানেকি

সীতাৰ নিমিতে মাৱ নকৰিবা ভয়। ধনু ধৰি ৰাখিবোহোঁ লক্ষ্মণ দুৰ্ভন্ন। অশ্বিনী কুমাৰে। মোক কুহিবন্ত সম। হাতে ধনু শৰ ধৰি জিনিবোহোঁ যম। কাল বিকালক জিনি কীৰ্ত্তি বড থৈবো মহেশৰ হাতৰ ত্ৰিশূল কাঢ়ি লৈবোঁ। একেখৰে জিনিবো সকলে দেবাস্থৰ। মুঠিতে কৰিবো বাসৱৰ বজ্ৰ চুৰ। হাতে ধৰি ছিণ্ডিবোহে। বৰুণৰ পাশ। গদা ভাঙ্গি কুবেৰক কৰিবো উদাস। শ্ৰীৰামে বোলন্ত মাৱ তেজিয়োক তাপ। আখাসিয়ো ভালে মোৰ দশৰথ বাপ। ভক্তি ভাবে তুষিয়ে। শঙ্কৰ দেব হৰি। সত্বে আসিবোঁ মঞি বনবাস তবি। স্থবিনয় স্থৰূপ পুত্ৰৰ স্থনি বোল। স্ত্ৰীসবৰ মাঝে ভৈল ক্ৰন্দনৰ ৰোল ॥ टकोक नम्ट (यन नामग्र व्याकाटन। ক্ৰেন্দনৰ উৰ্ণ্মি দশবথৰ আবাসে ॥ ৰাম শীতা লক্ষ্মণ বাপক নমিলন্ত। পুমু পুমু পাৱে ধৰি ধুলিক লৈলন্ত ॥ নমিলন্ত পাচত কৌশল্যা দেবী মার। অনন্তৰে নমিলন্ত স্থমিত্ৰাৰ পাৱ। **চৰণ বিদ্দলা লখাই বিনয় স্বভাৱে।** বৈসাইলম্ভ কোলাত স্থমিত্রা নিজ মারে॥ সাফল জীবন মোৰ কল্যাণ সাধিলোঁ। কত জন্ম পুণ্যে তুমি হেন পুত্র পাইলোঁ॥ উদ্ধৰিলি বংশক সাফল উতপতি। ক্ষেষ্ঠ ভাইত ভৈল তোৰ ইমত ভকতি॥ সীতা তোৰ মঞি সম ৰাম দশৰথ। অবিৰোধে চল বাপ কল্যাণৰ পথ॥



সুনা ৰামায়ণ মন সাৱধান কৰি। ভকতিক ইছা যাৰ ডাকি বোলা হৰি।

দোলড়ি।

অনস্তবে ৰাম সীতা একে ৰথে, চড়িলন্ত ৰঙ্গে গই। পাছত লক্ষ্মণ চড়িলা হৰিষে, হাতে ধনু শৰ লই। চৌধ বৰিষক লাগিয়া সীভাক, বস্ত্ৰ অলঙ্কাৰ লৈয়া। পেটাৰিত ভৰি লৈয়া ঝাণ্ট কৰি, স্থমন্ত চড়িলা গৈয়া॥ সমস্তে প্ৰজাৰ তিনি ৰতু সাৰ, চলিলা থান তেজিয়া। ওৱাৰি জনৰ গাৱত সাক্ষাতে, অগণি কুণ্ড জালিয়া॥ সিংহ ছুৱাৰক এড়াই অনস্তৰে, পাইলা গৈয়া ৰাজপথ। শোকে ছখে মৰ্ম্মে পৰিজন সমে, পাছে যান্ত দশৰথ। উছল প্রচল ভৈল টলবল, व्याधा यङ नगरी। ৰাম সজে যাই আগ পাছ চাই, পলাই যত দেশাস্তৰি ৷ জুগিৰ কান্ধত কানি ঝুলি যড, হাতে দোৱাদশ কাঠি। লৱড়স্তে লৱড়স্তে পাছক চাহন্ত, कञ्चा मात्न रेशन कारि।

300

আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

পাইলেক ভাগৰ ভোকণ্ডা কাথৰ, সবে পড়ি গৈলা থসি। মুখে শিৱ শিৱ স্থমৰন্তে আতি, পলাইলা যত তপসি॥ আছ বুলি জুগি আচাৰি পেহলাইলে, পূজাৰ দেৱতা মান ৷ পূজিবাক লাগি পাছে পাইবোঁ দেৱ, থাক্য যেবে প্ৰাণ ॥ ৰামৰ পাছত পঞ্চাশ ছাপন, कोिं याग्र कान्डक्ब। তাৰ সীমা সংখ্যা নাহিকে যতেক, চলি যাই ধনুদ্ধৰ ॥ বাৰু খাণ্ডা ধৰ যতেক যুঝাৰ, আদি অন্ত নাহি তাৰ। একৈ একৈ বীৰে সাগৰ পৰ্যান্তে, যুঝিবাক দেই ধাৰ। পুস্তক কান্ধত ধৰিয়া পাছত, **চ**िल्ला खाक्यश मारन । নট ভাট আদি কিন্ধৰ লড়িল, আছিলেক যত মানে॥ সূৰ্য্য দেৱতায়ো যাৰ ৰূপ দেখি, চলিয়া নযাস্ত ৰথে। ट्रनय ञ्चा नकल कान्मय, পড়ি পড়ি চতুষ্পথে। নয়ন কটাক্ষ কৰি ৰামদেৱে

পাছক লাগিয়। চাইল।
ভূমি পাৱে চলি আসম্ভ কান্দক্তে,
নৃপতিক ভেট পাইল।



হা বাপ ৰাম লক্ষণ জানকী, এড়ি মোক কৈক যাহা। ইজন্মক লাগি দেখোঁ পৰিছেদা, মাথা তুলি মোক চাহা। বাপৰ বচন স্থান ৰাম দেৱে, মন আকৰ্ষি আনি। মক মক কৰি ক্ৰন্দন কৰন্ত, মুখত নাসয় বাণী॥ ञ्भस मस्रोक वृत्तिलस बारम, শীঘ্ৰে ৰথ খান ডাক। স্থনৰে স্থমন্ত নডাকিবি ৰথ, দশৰথে দেন্ত হাক। নযা থাক থাক ডাক ডাক ডাক, उथिलिल हुई (बील। স্থমন্ত মন্ত্ৰীৰ মন দোধা ভৈল, কৰয় চিত্ত আন্দোল। খৰ্তৰ কৰি ৰাঘৱে বোলন্ত, মন্ত্ৰী আৰু কিবা চাহা। বাপৰ বচন সুস্থনিলা ভাৱে, ৰথ খান ঝাণ্টে বাহ। । স্থুনিয়া স্মস্ত মন্ত্ৰীয়ে ৰামক, চাইল কৰি হাত জোৰ। আতি শীঘ্ৰ বেগে কৰিয়া ৰথৰ, ডাকিলন্ত চাৰি ঘোড়। मन शद्भाव (वर्षा हरल वर्थ, ধৰি অৰণ্যৰ পথ। ক্ষণেকতে সবে পাছ কৰিলন্ত, নগৰৰ লোক যত।।

566

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

সবাকে। তেজিয়া শীঘ্ৰ বেগে আতি, চলিয়া গৈলস্ত ৰথে।

হিয়া ধাকুৰিয়া পড়ি বাহুৰিয়া,

नाबीशन कारन भर्य ॥

ৰাজা দশৰ্থ কান্দন্ত পথত,

চলি যান্ত ভূমি পাৱে।

भशान्हे यङ कान्मरस्य हलस्य,

बाम जुलि मीर्च बादा ॥

বশিষ্ঠ প্ৰমুখ্যে কৰিয়া যতেক,

আছম্ভ গুৰু ব্ৰাহ্মণ।

ৰাজাক সন্মুধি মধুৰ বচন,

বুলিলম্ভ তেতিক্ষণ ॥

ৰামৰ পুনৰা গমনে ভোকাৰ,

আছে যেবে অভিপ্ৰাই।

বহু দূৰ তাঙ্ক আগ বঢ়াইবাক,

এতিক্ষণ মুজুৱাই।

ন্থনিয়ে। নৃপতি আপুনি চিন্তিলা,

আপুনাৰ সৰ্ববনাশ।

আগে সভ্য কৰি বৰ ছুই দিয়া,

কৈকেইক দিলা আশ।

বশিষ্ঠে দেখন্ত ৰাজা দশৰথ,

মত গজ যেন আছে।

যুগুত বচন অঙ্কুশে তাহান্ধ,

পালটাইলা গুৰু পাছে।

গুৰুৰ যুগুত বচন স্থানিয়া,

ৰহিলা তথা নৰেশ।

ৰামৰ ভিতিক চাহিয়াঁ সৃপতি,

नकरव कक् निरमय।



কাঢ়ন্ত নিখাস ভৈলন্ত নৈৰাশ, পুনু পুত্ৰ দৰশনে।

মশ্মে পোড়ে হিয়া ভূমিত পৰিয়া,

মূর্চ্ছা গৈলা তেতিক্ষণে ।

হাহাকাৰ কৰি ভাৱে। ধৰিলা বিকল ভাৱে।

বাম পাশ চাপি ধৰিলন্ত পাছে,

ভৰতৰ নিজ মাৱে।

কতোক্ষণে পাছে ৰাজা দশৰথে, গাৱত চেতন পাইল।

ক্ৰোধ দৃষ্টি অতি কৰিয়া নৃপতি, কৈকেইক লাগি চাইল॥

হাঞৰে পাপিষ্ঠী পৰম অনিষ্ঠী, সুচুবি সুচুবি মোক।

গুচ ইঠানৰ জীঞো মানে আৰ, মঞিতো নচাইবোঁ ভোক।

স্থন ছাৰি এবে তোৰ বাক্যে যেবে, ভৰতে লৱয় ৰাজ।

নলৈবোঁ তোহাৰ পিণ্ড জলাঞ্জলি, আদি কৰি যত কাজ ॥

দেখিয়া স্থন্দৰী তোক বিহা কৰি, নষ্ট ভৈলোঁ মঞি সাৰ।

নথাক এথাত ভাহাৰ মাথাত পড়ি যাউক মহামাৰ ॥

ধিকাছোক তোক ৰাম হেন পোক, দিলি তঞি বনবাস।

স্থনৰে পাপিষ্ঠি! দূৰ যাহা তঞি, মোকো বধিবাক চাস ॥ 298

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি ৷

ৰামে তৈত বন ফলক খাইবস্ত,

মঞি ভুঞ্জিবোঁহোঁ ভাত।

ৰাজ্য ভোগ সবে তেজিবোঁ বাসনা,

ইতো পুৰী অযোধ্যাত 1

নাই মোৰ সিদ্ধি হৰি হৰি বিধি,

কি কৰিলি ভঞ্জি মোক।

म्बियां कारल शाहरलारही माक्न,

প্ৰিয় পুত্ৰ ৰাম শোক।

<u>(कोलला (भागानो अन अन वानी,</u>

বুলিলা ৰচন হিত।

কেনে মতিহীন ভৈলা প্ৰভু এবে,

থিৰ কৰিয়োক চিত।

নাহি তুল্য যাৰ ত্ৰিভূবনে সাৰ,

তুমি মোৰ নিজ পতি।

ভাল কাৰ্য্য আৰ নেদেখোঁহো প্ৰভু,

মিলি গৈল বিসম্পতি॥

বিধাদে মনত বুলিলন্ত পাছে,

অযোধ্যাৰ নিজ নাহা।

मांड नारम आव थारन रकोलनााव,

মোক আবে লৈয়া যাহা ।

किएहा अञ्च मन वाकाव वहन,

মন্ত্রীগণে থেবে পাইল।

কৌশল্যা দেবীৰ . ঠাৱত ৰাজাক

প্ৰবেশ নিয়া কৰাইল।

পটেশ্বৰী সব সহিতে নৃপতি,

পশিলা নিজ পুৰত।

ৰামৰ উত্তম ওৱাৰিক ৰাজা,

(मिथना कर**डा मृ**बङ ॥ ं



शंभव वनवाम।

মলিন পড়িল গৰুড়ে এড়িল, সপৰি যেন গহৰ।

কেশৰী খেদিল কুপ্তৰে তেজিল, যেহেন গিৰি কন্দৰ ॥

পাছে শোকে ছথে কৌশল্যা সহিতে, শয্যাত এড়িলা গায়।

হঁ। ৰাম বুলি বাহু ছুই ভুলি, কালৈদ দিয়া দীৰ্ঘ ৰাৱ।

হৰি হৰি ৰাম মোক শোক দিয়া, এড়ি কৈক লাগি গৈল।

কিনো তোৰ চিত মোহোক বধিত, লাগি উত্তপতি ভৈল।

পূৰ্বৰ জন্মে হুইবে মঞি পিতা পুত্ৰে, কৰায়া আছেঁ৷ বিয়োগ।

ভাৰ ফলে ঘোৰ মিলিল মোহোৰ, নিদাকণ পুত্ৰ শোক ।

প্রাণেশ্বরী মোৰ স্থনিয়ো কৌশল্যা, গ্রীরত চাপিয়া ধব।

তোহোৰ গৰ্ভত ভৈল উতপতি, ৰাম মোৰ পুত্ৰবৰ #

আৰ নেদেখিবোঁ। গৈল কৈক লাগি, মোহোৰ কুলনন্দন।

মহা বীৰ বৰ শৰীৰ স্থানৰ, গজৰ যেন গমন।

প্ৰম নিৰ্মাল নীল উত্তপল সমান শোভে বদন।

স্থৱলি বলিড় আজাপুলাস্বত, বাঁছ প্ৰিয় দৰিশন। 226

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

আতি স্থশোভন শিশু তিনি জন মোৰ যেবে বনে গৈল।

বিধিৰ বিঘাতে আমি হেন নাথে

পুত্ৰ অনাথিতি ভৈল।

কোমল তুলিত নেত কামলিত স্থৃতি উত্থাত কৰে।

তৃনৰ শ্যাত স্থৃতিয়া সাক্ষাত, এবে কেনে প্ৰাণ ধৰে।

আল্ল বয়সৰ সুখীয়া কুমৰ, ৰাজাৰ ভোগ উচিত।

তেজি গৃহ স্থথ বনবাস ভৈলা, ভুঞ্জিবেক নিতে নিত ॥

শৰীৰক ছানি পুত্ৰ শোক বহু, দহে ছুইকো নিৰন্তৰ।

শোকে সৰ্বক্ষণে ৰৰিৰ কিৰণ, যেন সোবে সৰোবৰ ॥

নিদ্ৰাক নপাইলা বিষাদে থাকিলা, ৰাজা আৰো পটেৰ্মৰী।

ৰামৰ শোকত ভৈল নিশবদ, অযোধ্যা সিতো নগৰী॥

স্থনিয়োক লোক সংক্ষেপি আছোক, ইতো কথা এহি মানে।

মহা লাভ জানি ৰামৰ কাহিনী, স্থানিয়োক বিভামানে॥

ঘোৰ কলি কাল নাহি আত ভাল, ৰামৰ বিনে ভকতি।

জীবা কত কাল তেজি আল জাল, ৰাম পাৱে দিয়া মতি॥



প্ৰম অথিৰ

মণিষ শৰীৰ,

পড়ে কেতিক্ষণ জানি। জন্মৰ সাফল হৌক লোক ডাকি,

(वाला बाम बाम वानी ॥

भन ।

অযোধ্যা তেজিয়া ৰাম গৈলা যেতিক্ষণ। নগৰীয়া লোক নাথাকিল একোজন। নিজ প্রাণ তিনি জন বনে চলি যাই। মৃতক শৰীৰে থাকিবোহোঁ কাক চাই। এহি বুলি প্ৰজা ৰাঘৱৰ লাগ লৈল। যাইবে কতো নপাৰি পন্থত পড়ি ৰৈল। ৰাঘৱে বোলন্ত স্থনা অযোধ্যাৰ জন। যদি দায়া থাকে মোৰ স্থনিয়ো বচন ॥ মোহোৰ বাসনা এড়ি অধোধ্যাক যাহা। ভৰতক ৰাজা কৰি ধৰ্মপথ চাহা ৷ মোহোৰ শোকেতে দগ্ধ ৰাজা দশৰথ। তাঙ্ক যেবে আশ্বাসিয়ো মোৰ হিত পথ। প্ৰজা বোলে ৰাম প্ৰভু ধৰ্ম চাহিয়োক। বান্ত্ৰায়ো মন অযোধ্যাক চলিয়োক॥ নোহে আমি ভেজিলোহো পুত্ৰ পৰিবাৰ। তোক্ষাৰ তুলতে বন কৰিলোহোঁ সাব॥ किटकइव वहनक मृह भरन कवि। কোথা চলি যাহা অযোধ্যাক পৰিহৰি। বাগ ৰোষ সকলে আক্ষাত ক্ষেমা কৰি। প্ৰতিপাল কৰিয়োক অযোধ্যা নগৰা ॥ পিঠি দিয়া প্ৰজাক নিৰ্দ্দয় বাম বাৰ। শীঘ্ৰ বেগে পাইলম্ভ তমসা নদীতীৰ। ৰাঘৱে বোলত স্থনা লক্ষ্মণ বিনীত। প্রথম প্রবাস আসি ভৈলা উপস্থিত ৷



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

আসুথ নকৰ বাস মন্যু পৰিহৰি। ৰাত্ৰি গোট বঞ্চিয়ে। প্ৰজাক ৰক্ষা কৰি॥ কেন মতে ফল মূল ভুঞ্জিবোহো আজি। वान्छे कवि ज्न भया। निरश भाक माकि। ৰামৰ বচন স্থান লখাই মহাবীৰে। তৃণ শ্যা। নিৰ্মিলা ভ্ৰম্যা নদীতীৰে॥ ৰাম সীতা পাছে তথা শয়ন কৰিল। নিদ্রা গৈলা ছয়ে। ছখ শোক পাসবিল। চতুৰ্ভিতি বেঢ়ি স্থইলা অযোধ্যাৰ লোকে ৷ নিচেষ্টে গৈলন্ত নিদ্রা পীড়িলেক শোকে। ৰামৰ বিবিধ গুণ কথা আতি কহি। সুমন্ত লক্ষণ জাগি থাকিলন্ত বহি ॥ সমধিকে গৈল যেবে নিশা ছুই পৰ। পাইলন্ত চেতন বিদ্ৰা ভাগিল ৰামৰ ॥ ৰাঘৱে বোলন্ত লখাই প্ৰজাৰ বিপতি। পুত্ৰ দাৰা গৃহ তেজি আন্ধাত ভকতি। দাৰুণ বনত আসি তমসা কুলত। মোত অনুৰাগে সুইল বৃক্ষৰ মূলত। প্ৰজাক আন্ধাৰ তুথ দিতে সুযুৱাই। সবাহান্ধ পৰিহৰোঁ চিন্তিয়ে। উপাই॥ স্থন বোলো বচন স্থমস্ত স্থন্ধভার। অযোধ্যাক লাগি মোৰ ৰথ বাহুডাৱ। কতোদূৰ গৈয়া পাছে আন পশ্ব। ধৰি। অন্তৰীক্ষ ভাৱে ৰথ আন ঝাণ্ট কৰি ॥ শ্ৰীৰামৰ বচন স্থমন্ত পৰিমানি। সেহিমত কৰি ৰথ যোগাইলন্ত আনি ॥ ৰাঘৱে সীভায়ে সেহি ৰথত চড়িয়া। তমসাৰ পাৰ ভৈলা প্ৰজাক এড়িয়া। পাৰ ভয়া ৰাম যেবে বহুদূৰ গৈলা। প্রভাততে আদিতা উদয় আসি ভৈলা **।**



बामब वनवाम।

জাগি প্ৰজাসবে বোলে হৰি হৰি বিধি। থুজি ফুৰে হাতৰে হৰাইলো নৱ নিধি॥ অযোধ্যাক গৈলা ৰাম দেখি ৰথ চিন। জানি নিৰন্তৰে প্ৰজা ভৈলা শোকহীন॥ ক্ষমা শীল ৰাম কোপ উপদাম ভৈল। হেন বুলি প্রজাসব অযোধ্যাক গৈল। পাছে প্ৰজা দেখে ৰাম নাহি অযোধ্যাত। সূর্যা অন্ত গৈলে পল্ম সংকোচ সাক্ষাত । ভূমিত পড়িয়া প্ৰজা আপুনাৰ ঠাৱে। পূত্ৰ পৰিবাৰ সমে কান্দে দীৰ্ঘ ৰাৱে। নাৰীগণ স্বামীক বোলয় অমুত্তৰ। ৰামগুণ পাসবিয়া আসি ভৈলে ঘৰ। দিনেকৰে। গুণ তান স্থাঝিতে নপাৰি। স্বামী সকলক গালি পাৰে যত নাৰী॥ স্বামীৰ মাথাত কেহোঁ দেই মাৰ ঘোৰ। এড়ি আইলি ৰামক টেণ্টন যেন চোৰ। এভো হেন কৰহ ৰামৰ পাশে যাহা। সেৱা কৰি বিনয়ে ৰামক বাহুৰাহা। ফল মূল জোগাই আনি ৰামক তুষিব। তোক্ষাক আক্ষাক ৰাম দীতায়ে পৰিব ॥ স্ত্ৰীমুখ চাইতে আইলি ৰামক তেজিয়া। পাপী মোক তেজি মৰে নৰকে মজিয়া। এছি মতে প্ৰজায়ে ৰামক কৰে মৰ্ম। ভেজিল সমস্ত লোকে যাৰ যেন কৰ্ম। **(महबिदय (मह शृक्ष) कविदल विद्रम** : ব্ৰাহ্মণ সকলে নপঢ়য় আৰ বেদ॥ ক্ষত্রী এডিলেক অন্ত্র দক্ত্র কর্ম্ম ধর্ম। বৈশ্যে এড়িলেক কৃষি বাণিজাৰ কৰ্ম। শূদ্রে এরিলৈক সেৱা বিষাদিত লোক। পুত্রে মাতৃ তেজিল এড়িল মোরে পোক। 200

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি

সকলো লোকৰ ভৈল আস্থুখ আখুতি। ছতিশ জাতিয়ে এড়িলেক নিজ বৃত্তি। (मर्ग (मर्ग প্রজাসবে কান্দে মন্ত্রা কৰি। সকলে নগৰ ছানি বোলে হৰি হৰি॥ দশৰথ কৈকেইক প্ৰজা বোলে ধিক। বিনা দোষে ৰামক পঠাইল বনে কিক। কতো দিনে প্রকাসবে খাইলে অর পানী। স্থানিয়ে৷ পথত যেন ৰামৰ কাহিনী ৷ উপায় বিশেষে প্রজাগণ পরিহবি। অবিলম্বে পাইল আসি কোশল নগৰী ॥ তাকে। এড়াই গৈলা দেবক্ৰতি নদী তৰি। লক্ষ্মণ জানকী সময়িতে মৃত্যু কৰি। গোপ কুল পাইলা গৈয়া বৃত দধি সাৰ। শীস্ৰ বেগে ভৈলা গৈয়া গোমতীৰ পাৰ। ৰথ নেমি সন্ধানে পৃথবী তল ভেদি। শীত্ৰ বেগে তৰিলা সৰ্যু মহানদী। मछोक मन्त्रीय बारम वृलिला वहरत । वियाम थाकिल त्मांब मबयूब वरन। কোন কালে আসি মার বাপ ভেট পাইবোঁ। मबयूब तरम भूश भाबिताक याहरता ॥ **ट्रिन्य विषारि एयरव देशला वह पृत्र ।** গধ্লিক বেলা পাইলা শৃঙ্গৱেৰ পুৰ। দেৱ নদী গঙ্গাক দেখিলা গৈয়া তথা ! জগত পবিত্ৰ কৰি বছন্ত সৰ্ববৰ্থা। শত ঘোজনত থাকি স্থমৰণ কৰি। তেতিক্ষণে হুৰ্ঘোৰ হুন্তৰ পাপ তৰি। স্থানত তুক্কত যত গুচয় নিশেষ। কল্যান লভিয়া পায় পুণাক অশেষ॥ দেখিলে পাতক হৰে এক জন্মৰ। পৰশিলে নষ্ট হোৱে জনম শতৰ।



সানিলতে সহস্ৰ জন্মৰ পাপ নাশ। স্নানে দানে তপে হোৱে ব্ৰহ্মৰ প্ৰকাশ। অন্তকালে যিবা জনে গল্গত মৰয়। মুকুতি লভিয়া স্থন সংসাৰ তৰ্য় ॥ চাৰি মুখে ব্ৰহ্মা গুণ বৰ্ণাইতে নপাৰি। হেন গলা তীৰ পাইলা ৰাঘৱ মুৰাৰি। বায়ুৰ পৰশে তেওঁ উঠলত্তে আছে। बाम प्रबंधात शका (प्रती (यन नात । ফেনগণ ভৈল যেন সচকিত হাস। জলৰ উল্লোল যেন দেখিয় প্ৰকাশ । নিজাৱৰ্ত্ত হাতে গঞ্চা আহ্বান কৰিল। গঞ্চাৰ দেখিয়া ৰামে শোক পাসবিল ৷ কুন্তাৰ মগৰ মৎস্ত শুছ ঘৰিয়াল। নানাবিধ জলজন্ত কৰ্য় আস্ফাল ॥ হংস সাৰস মৎস্থৰস্ক চক্ৰবাক। জলচৰ পক্ষীগণ লখি ঝাকে ঝাক। তুখতে হৰিষ কিছু ভৈল। গন্ন। কুলে। বসিলা ৰথৰ নামি ইঙ্গুদিৰ মূলে॥ সুমন্ত ৰথৰ ঘোড়া কৰিলা উদাস। জলপান কৰায়া ঘোড়াক দিলা ঘাস 🖫 শৃষ্ণৱেৰ পুৰে বীৰ ইন্দ্ৰ সমসৰ। গুহ নামে ৰাজা বড় সুহৃদ ৰামৰ। চণ্ডালৰ ৰাজা তেহো বাৰ্দ্তা পাছে পাইল। মুখ্য মুখ্য পাত্ৰ লৈয়া ৰাম পাশে আইল। দূৰতে ৰামক দেখি নমাইলেক মাথ। অফ্টাজে প্ৰণামি যুৰিলেক যোৰ হাত। কপ্ৰ তান্ধল যত বিবিধ ভক্ষণ। ৰামৰ আগৃত কৰিলেক উপসন॥ আইস আইস গুহ বুলি ৰামে দিলা ৰাৱ। সন্নিত চাপিলা গৈয়া বিনয় স্বভাৱ॥ -



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

তুই বাহু মেলি ৰামে সাবটি ধৰিলা। গ্ৰাৱত ধৰিয়া মাথে চুম্বন কৰিলা। কিনো শুভ দিন আজি দেখিলোছো ভোক। এড়াইলোহো ক্ষণতেক হৃদয়ৰ শোক। কুশল বার্ত্তাক পুছি দিলন্ত সিদ্ধান্ত। আদি অস্তে কহিলন্ত আপুন বৃত্তান্ত। পৰিগ্ৰহ তেজিলোহোঁ তাপসৰ ভাৱ। অল্ল পান দ্রব্য যত ঠারক পঠার॥ বাকলি বসন ফল মূলে মোৰ আশাস। পাইলোঁ ভোৰ আদৰ ঘোঁড়াক দিয়ো ঘাস চ সন্ধা। কৰিলন্ত ৰাম লথাই মহাবীৰে। তৃণ শ্য্যা নিৰ্মিলা লক্ষ্মণ গঙ্গা তীৰে। তৃণৰ শ্যাত ৰামে ঘেলালইন্ত গাৱ। সীতাও চাপিয়া স্থল। সলজ্জিত ভার। স্মন্ত লক্ষ্মণ গুহ গঙ্গাৰ কুলত। তিনি জনে বিষাদিত বৃক্ষৰ মূলত। গুহ ৰাজে বোলে লক্ষণৰ মুখ চাই। তুক্ষাকে। দিবাক আছে শ্যাক বিছাই ॥ ইহাতে স্থতিয়ে। তুমি মন্যু পৰিহৰি। সসৈন্যে পহৰা দিবো হাতে ধমু ধৰি॥ লক্ষণে বোলন্ত স্থন গুহ মহাবীৰ। क्टिन निक्रा याहेटवाँ भारक मगर भ**नी**व ॥ কৌশল্যা স্থমিত্রা মার বাপ দশৰথ। ছট ফটাই মৰে ভূইবে দহে অন্তৰ্গত। যাহাৰ তুলত লবে চতুৰক দল। স্বৰ্গদাৰ ভেদয় সৈনাৰ কোলাহল। হেন ৰাম সীতা স্থৃতিলম্ভ তক্তল। নৰহয় প্ৰাণ মন কৰয় বিকল ॥ যাহাৰ সেৱক হস্তী ঘোড়া ৰথে চড়ি। আগে পাছে সেবা কৰি ছলে দড়দড়ি॥



ভাগন বিপতি হেন মিলিল অপাই। জীৱনতো ধিক মোৰ পৰাণ ন্যাই। স্থুনি গুহ নৃপতিৰ পৰাণ নসহে। দশৰথ বহিন জলি অন্তৰ্গতে দহে। তিনিকো পীড়িল শোকে জলিয়া প্রচণ্ড। কান্দক্তে পুহাইল ৰাত্ৰি উদিত মাৰ্ত্ত। बाघाद दवालख लथाई बार्ल्ड हाल गांव। পুহাইল ৰজনী কুলি তেজিলেক ৰাৱ। भयुवब नारम स्न श्रुविरलक वन। ধনু কাণ্ড লৈয়ে। ভাই কৰিয়ে। গমন।। ৰামৰ বচন স্থান বিনীত লক্ষাণে। টোণ বাণ খড়গ সাজি লৈলা তেতিক্ষণে ৮ আগত লক্ষ্মণ সীতা পাছে ৰঘুনাথ। আগ বাঢ়ি সুমন্ত যুৰিলা যোৰহাত॥ লখিলক্ষো ভূমি পাৱে ধৰিলাহা দিশ। আজ্ঞা দিয়ো প্ৰভু মঞি কৰিবোহোঁ কিস। बाचरत रवानस मलो व्ययाधाक हन। লোকত জনাইবে মোৰ বাৰ্ত্তাক কুশল । হেন স্থানি মন্ত্রী ভৈল বিকল স্বভাৱ। मिंदिं। तुलिया नित्वक मीर्घ बाद्य । আশেষ कान्मिया (वाटन চৰণত ধৰি। দেশক ন্যাইবোঁ থাকো ত্যু সেৱা কৰি। শ্ৰীৰামে বোলস্ত মন্ত্ৰী হেন নোছে যোগ। তিন দিন বাপৰ নাহিকে ৰাজ ভোগ॥ জীৱন্তে কি দশৰথে তেজিলন্ত মোক। আখাসিবি ভালে তাঙ্ক যেন পলাই শোক ॥ ৰামৰ চৰিত্ৰ কথা অমৃত প্ৰম। সংসাৰ তৰণ ইতো উপায় সুগম। জানিয়া ৰামৰ পাৱে থিৰ কৰি মন। বোলা ৰাম ৰাম যবে সামাজিক জন "



্দোলড়ি।

আক্ৰাৰ বাপৰ তুমি প্ৰিয় মন্ত্ৰী, বচন মোৰ জনাহা।

তুখৰ ভাজন বাপৰ আগত, কুশল বাস্তাক কহা॥

জীৱন্তে আছন্ত তুখৰ ভাজনী, কৌশল্যা স্থমিত্ৰা আই।

কৈবে ছুইৰে। আগে স্থথে জীৱৈ,তিনি, স্থাদ বনফল খাই॥

কৈকেই প্রমুখ্যে মারক প্রণামি, জনাইবাহা পাছে মোক।

ৰামে বুলিলন্ত ভালে মঞি আছেঁ।, ভূমি সব ভেজা শোক।

বাপৰ চৰণ বন্দিয়া বুলিবি, ভোকাৰ ৰাম ভকত।

আছে। বনবাস ত্যু সভ্য পালি, নৰক যাইতে শকত ॥

ভৰতক ঝাণ্টে হাজ্যে থাপিয়োক, ভেজিয়োক সবে শোক।

অবিৰোধে বন তেজিয়া যাইবোঁছো, . স্বিতে দেখিবা মোক॥

ভৰতক মোৰ বচন বুলিবি, স্থভাষিত মোৰ ভাই। কৈকেই সদৃশ দেখিবে মোহোৰ,

ে কৌশল্যা স্থমিত্র। আই ।



লক্ষ্মণে বোলন্ত বাপক বুলিবি, গুচিল তোক্ষাৰ শলি। ৈকৈকেইব হিত চিক্তিয়া আক্ষাক, वनक श्रेशिंशा विन ॥ লোক পতিয়ান বিষাদ এড়িয়া, কৈকেইক ভালে চাহা। সাত পুৰুষৰ তোক্ষাৰ গোসানী, কান্ধত কৰি বুলাহা॥ তুমি হেন ৰাজ। জীৰ বস ভ্য়া, বড় ইতো ধর্ম্ম পাইলা। দেশে দেশে খ্যাতি থাকিল ভোন্ধাৰ, ৰামক বনে পঠাইলা। সকল লোকক অসাৰ দেখিলা, रेकना रेकरकहेक माब। মৰিবাৰ কালে কামবশ্য হয়া, ধৰ্ম নষ্ট আপুনাৰ ॥ লক্ষণক বাধি বামে বুলিলন্ত, মন্ত্ৰী স্থনা পৰিমান। লক্ষণৰ বোল ৰাজাত জানাইলে, তেখনে তেজিব প্রাণ। শোক ছখ এড়ি কিছু মুবুলিবি, इबिरम अत्याधा यादा। আক্ষাৰ কুশল সব বাৰ্তা কহি, নৃপতিক ভালে চাই। । গুহ নৃপতিক ৰামে বুলিলন্ত, আঠা আন এতিক্ষণ। মাথে জটা ধৰি তাপসৰ বেশে, ছুভায়ে চলিবোঁ বন।



আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

আজ্ঞা শিৰে ধৰি তেতিক্ষণে গুহে, আনি দিলা বৰ আঠ।

জটা নিৰ্ম্মি শিৰে তুভায়ে গঙ্গাৰ, পাৰ হৈতে লৈলা বাট ॥

গঙ্গাতীৰ চাহি গুহু যে সুমন্ত, আছয় বিকল ভাৱে।

সীতাৰ হাতত ধৰিলা লক্ষ্মণে, ৰামে চড়িলন্ত নাৱে।

ৰাম সীতা লখাই গুহ সুমন্তৰ, নয়নে লোভক বহে।

ছুইহাঙ্কে। সন্ধুধি ৰাম চলি গৈলা, শৰীৰ কাৰো নসহে॥

প্ৰম অনুত ৰামৰ চৰিত্ৰ, সুনা সামাজিক যত।

অসাৰ সংগাৰ আৰ আশা এড়ি, কৰিয়ো ৰভি ৰামত ॥

ৰামৰ ভকতি এহিসে সম্পত্তি, সমস্তে শাস্ত্ৰ সম্মত।

থিৰ মন কৰি বোলা হৰি হৰি, লাগোক জুই পাপত ॥

अम ।

মাঝ গল্পা পাইলা গৈয়া লৈয়া নাৱ বাহি।
হাত যোৰে বোলস্ত গল্পাক সাঁতা চাহি।
স্থানিয়ো গোসানী তুমি দেৱ নদী গাল্প।
আমি যিতো বোলোঁ তাক স্থানিয়োক সাল্প।
প্রণামোহো গল্পা দেবি হেৰু যোৰ হাত।
দশৰথ স্থাত ৰাম মোৰ প্রাণনাথ।



ৰক্ষা কৰে। মাৱ আৰু ভূগতি ভৰন্ত। বনবাস খাটি আসি ৰাজ্যক কৰন্ত। লক্ষ্মণকো পালিবাই। আক্ষাৰ দেৱৰ। মোক ৰক্ষা কৰা সবে তৰোহোঁ ছুন্তৰ। অযোধ্যাক আসিলে কবিবোঁ বহুমান। ভোক্ষাৰ উদ্দেশে দিবোঁ সহস্ৰ গো দান । সীতা তৃতি কৰম্ভে গঞ্চাৰ ভৈলা পাৰ। প্রণামিয়া গজাক বনত পয়সাব । সীতা আগে চলে লখাই ধনুশৰ ধৰি। পাচত চলন্ত ৰাম তুইকো ৰক্ষা কৰি ॥ তিনিয়ে। অনেক বন বিষম এড়াইল। কভোতুৰ গৈয়া বট বৃক্ষ মূল পাইল। হৰিণেক মাৰিয়া ৰান্ধিয়া তৈতে খাইল। বৃক্ষ মূলে লখাই পত্র শ্যাক বিচাইল। শ্ৰীৰামে বোলন্ত বাপু স্থনৰে লখাই। তোৰো শ্যা কৰ মোৰ সন্নিত চপাই॥ আজি ভালে জানিবি প্রথম প্রবাস। স্থমন্তে এড়িলা দেখি তেজিলা নিশাস॥ কতো 'নশা যাহান্তে উদিত ভৈল শশী। লক্ষণক মাতিলা শ্যাত ৰামে বসি আজি জানা সাফলিবে বাপৰ শপত। किटक है भारत जिल्लि देखन महनावथ । হৰি হৰি বাপ দশৰথ মহীপাল। কৈকেই ভোকাৰ ভৈলন্ত যম কাল। ভৰত নৃপতি ভৈলে নখাই বাউলি। মাৰিবে কৈকেই মোৰ মাৱ বাপ পুলি ॥ এভো ভঞ্জি লখাই দেশক চলি যাহা অনাথিত মারুক বাপক ভালে চাহা। ভোক দৰশনে কিছু সন্তাপ ভেজিব। সাতা সমে আমি পিতৃ বাক্যত থাকিব 🛭



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

লক্ষ্মণে বোলস্ত শোকে তোমাক বাধয়। ইসব ক্রন্দনে আৰু কিছু নসাধয়॥ পুনু পুনু বোলাহ। দেশক লাগি চল। মই প্রাণ তেজিলে পাইবাহা কোন ফল॥ লক্ষণৰ বোলে ভৈলা শোক উপশাম। পুহাইল ৰজনী গাৱ চলিলন্ত ৰাম। আগ ভৈলা লক্ষ্মণ সাতাক মাঝ কৰি। চলি যান্ত ৰাম বৃক্ষমূল পাৰ্ছৰি ॥ नमो नम शक्त भर्तत् मशामा। সীতাক আপুনি বিনারস্ত হৃষিকেশ। দেখিয়োক দীতা গঙ্গা যমুনা সঙ্গম। পাইলোহোঁ প্ৰয়াগ ভৰৱাজৰ আশ্ৰম। ভৰতাজ ঝবিয়ে কৰন্ত হোম যাপ। ত্ৰিভূবন দহিতে পাৰস্ত দিয়া শাপ। হোম ধুম পকতি দেখিয়ে। সাতা আগ। মুক্তি ক্ষেত্র আসি আনি পাইলোহো প্রয়াগ। গধূলি সময়ে থেবে আদিত্য নামিলা। ঋষিৰ ভুৱাৰে গৈয়া তিনিয়ো মিলিলা K ৰাম থাসিবাৰ পাছে ঋষি বাৰ্তা পাইলা। শিশুক পাঠাইয়া ঋষি ৰামক আনাইলা ॥ সৰ্কে মুনিগণে ভৰদাক্তক আৱৰি। বাঘ ঘোড ভালকে আছ্য় সেবা কৰি ॥ ভৈল যজ্ঞ সবে মুনি তপে উপশাম। নমিলন্ত মুনিক লক্ষ্মণ সীতা ৰাম ॥ ঋষিয়ে ৰামক কৰিলগু আশীৰ্বাদ। বেদ ধ্বনি উথলিল ব্ৰাহ্মণৰ নাদ ॥. আসনে বসিলা ৰাম ঋষি সভামাঝে। ফলে মূলে জলে অৰ্চিলন্ত ভূৰদাজে। বচন কাৰণে ৰাম অথিৰ চৰিত। ঋষিয়ে স্থাধলা তব কিবা অপেখিত।



बागव वनवाम।

ৰাঘৱে বোলস্ত স্থানিয়োক ঋবিবাজ। আদি অন্তে সংক্ষেপে কহিবো সবে 🕬 🛭 কৈকেয়া মাৱে বৰ লৈলন্ত ৰাজাত। ভৰতক ৰাজা পাতিবন্ত স্যোধ্যাত ৷ (ह) ४ विषयक (भाक श्रेडिल छ तन। তুলত লবিল সীত। ভৈয়াই লক্ষণ। তোমাৰ চৰণ আসি দেখিসোঁ। বনত। এড়াইছোহো শোক কিছু হবিষ মনত। কমন থানত আসি হৈবেঁ। উপস্থিত। উপদেশ বুলিয়োক গ্রামাক উচিত। সসম্ভ্রম कপে श्रांषि বুলিলা বচন। ত্ৰিভ্বনে সাৰ ইতে। মোৰ তপোবন । প্রয়াগ স্তুতীর্থ গঙ্গা যমুনা-সঙ্গমে। আমি সবে হয়ে। থিত এহিত। আশ্রমে । ৰাঘৱে বোলগু শুনিয়োক ঋষি-ৰত্ন। ইথানে থাকিতে মোক নকৰিবা যতু ॥ মোক দেখিবাক আসিবস্ত বন্ধুজন। নিৰজন থানে উপদেশিয়োক বন # अविरा त्वालक आमि विभविष ठाहेता। অসুৰূপে তোমাৰ আনক খুজি পাইলোঁ 📭 তৃতীয় প্ৰহৰ পথে আছে গুপ্ত দেশ। চিত্রকৃট পর্ববতত হুয়োক প্রবেশ। মুনিগণ দেখিবাছা বহু ফল মূল। ভালক বানৰ সম গোদা গোলাঙ্গুল 🛭 কভো কভো ঋষি তাতে স্বৰ্গপথ চাইলা। কেহোঁ কেহোঁ মুনিগণ মুকুভিক পাইলা। ঋষি সমে কথামতে ৰক্ষনী প্ৰভাত। মুনি সমে পাইলা গৈয়া যুমনা সাক্ষাত। পথ উপদেশি भूनि वाङ्वि वाशिला। ভেল ভান্ধি তিনি হস্তে যমুনা তবিলা ॥

570

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

শাম নামে বটবুক্ষ পাইলা কতে। দূৰে। ভালৰূপে তাহাক জানয় দেবাস্থৰে ॥ মুনি উপদেশে দীতা বৃক্ষক আৰ্ধি। চলি গৈলা ভিনিয়ে। অনেক বৰ সাধি॥ पछ प्रेव भाष भारेला नील नारम वन। মূগ মাৰি বান্ধি তৈতে কৰিলা ভোজন। ভৰুতলে লখাই পত্ৰ শ্যাকি বিছাইলা। প্রয়াস তেজিয়া স্থাথে নিদ্রা তাতে পাইলা । লখাইক জগাইলা ৰামে জানিয়া প্ৰভাত। হাত মুখ ধুইয়া সন্ধা কৰিলা তথাত। অবিলম্বে চিত্রকৃট বন পাচে পাইলা। হৰিষ বদনে ৰামে সীতা মুখ চাইলা। **रम्था रम्था कानकि!** इविष कवि मन। কল মূল যুক্ত বিবিধ তৰু বন। জাই যুতি বকুল বন্দুলি কৰিকাৰ। কাঞ্চন তগৰ কন্দ সেৱালা মনদাৰ। অশোক পলাশ ফুলি গৈল হিসা হিসি। নাগেশৰ চম্পক ফুলিল অহনিশি॥ পিণ্ডীতক গৰৰক ফুলিল সেৱতি। ধুন্দুৰ কনৌৰ আৰু ফুলিল মালতী। ওড় পুষ্প মালি ছুৱামালি আৰু মালি। তমাল তুলসি মাধৈ মকরা সেরালি। বসন্ত সময়ে কাম ৰাজাৰ পয়াণ। পুষ্পৰ ধনুত আৰোহিয়া পাঞ্চবাণ। ভাৰ্য্যা পুৰুষৰ কামবাণে কৰে লখ। বিৰহি জনৰ ভৈল সহন আসখ ৷ সেনাপতি লৰি ভৈল মলয়ৰ বাৱ। मহावीब नाम टेंडन द्यां किनब बात ॥ পক্ষিগণ ৰাৱে যেন বাৱে বাছা তণ্ড। নাগেশ্বৰ ফুল কাম নৃপতিৰ দণ্ড।



গুঞ্জৰিত ৰাৱে সবে ভ্ৰমৰ লৰিল : কেতকী কুসুমে যেন কোণ্ডক গঢ়িল। कांकिल खभव शकी मयुवव बारत। কাম ব্যাধি পীড়িয়া নসহে মোৰ গাৱে । শুনি মন মোহিত পার্য় নিবস্তবে। ভাগে সে ক্ৰোধিত কাম দহিলা ঈশ্বৰে। দেখ দেখ সীতা আম যাম পনিয়াল। ভাস্থল কণ্ঠাল নাৰিকল নানা ফল।। কমলা মোহৰি ত্ৰীফলৰ গন্ধ কহে। নানা ফুল ফলৰ স্তৰভি বায়ু বহে॥ সব বুক্ষে বাহুয় মাসৰ ফল ধৰে। অশেষ চটকে পৰি পৰি ৰোল কৰে। জলচৰ থলচৰ জাকে জাকে পক্ষী। সীতাক চিনাম্ভে চলি যান্ত লখি লখি। কল্প বন্ধ মউপীয়া পক্ষী মনোনীত। নানাবিধ চিত্র পক্ষী দেখিতে শোভিত। কোকিলৰ ৰাৱ পেচা ফিঞ্চা শুক সাৰি। মনোহৰ পক্ষী যত বৰ্ণাইতে নপাৰি॥ मन्नाकिनो ननीज (नथिया शक्तिश्र)। সীভাক সম্বৃধি ৰামে বুলিলা বচন ॥ ৰাজহংস দেখা সীতা ভোমাৰ গমন। চক্ৰবাক যুগল ভোমাৰ ছই তন॥ कल इर्म बांद्र कांकि नृপूबब नाम। বদন কমল তোৰ দেখন্তে আহলাদ। বদন উপৰে তোৰ নয়ন যুগলে। খঞ্জন তুভয় যেন চলয় কমলে। क्रमक् ब कीय (पथ नमी मन्माकिनी। তোমাৰ সদৃশ স্থূশোভিত মধ্য যিনি॥ विकृ गमान देवन मिलिल अशाम। কুশ ভৈল শৰীৰ ঈষত ফেন হাস।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

চিত্রকৃট পর্বতক দেখিয়োক সীতা। পকা আমে গৌৰবৰ্ণ কৰিল চৌভিত।। ওপৰত মেঘ যেন দেখিয় শোভন। বাঢ়িল নিকলি যেন পৃথিবীৰ তন। শিখৰ ওপৰে মন্দাকিনী শুক্ল জল। তনক ঢাকিয়া যেন বস্ত্ৰৰ আঞ্চল। সুৰভি শীতল বায়ু বহে বুঞ্কতলে। উপভোগ কৰিয়ে। অমৃতসম কলে॥ স্থশোভন গৈৰিক বিচিত্ৰ ধাতু ভাল। স্থবৰ্ণৰ তন মণি ৰতন পোৱাল ॥ পাৰিজাত মন্দাৰ চম্পক শাল তাল। আশেষ ৰমণ স্থাৰে বঞ্চিয়োক কাল। তুমি সমে চিত্রকৃট হৈবোঁ আমি থিত। গোৰী মহাদেৱে যেন কৈলাস গিৰিত । মৃগ সব মাৰিয়া ভুঞ্জিবো নিতে নিত। অযোধাৰ জন এবে ভৈলা অবিদিত। এহিমতে নানা বন পর্বত এডাইলা। কথা মতে জানকীৰ পথ পাসৰাইলা। मिथिन गम्ति बाम कानको नकर्ण। পৰ্বত নিকট গৈয়া পাইলা কভোক্ষণে॥ তুয়ো ভাই তেতিক্ষণে পর্বত মূলত। আশ্ৰম নিৰ্মিলা মন্দাকিনীৰ কুলত। বাসা তুই সাজিলা লক্ষণে ৰঘুনাথে। মাটি জল লৈয়া সীতা লিপিলন্ত হাতে॥ बाघरत रवालस्य यक्त कबिरवाँ এथन। কৃষ্ণ সাৰ মুগ মাৰি আনিয়ো লক্ষণ। कार्छ ভाইৰ আদেশক শিৰে তুলি লৈয়া। তেতিক্ষণে মৃগ মাৰি আনিলম্ভ গৈয়া। সীতায়ে ৰান্ধিলা বামে ভনি ৰহিন্দ্ৰ। যজ্ঞ সমাপিয়া ভিনি ভুঞ্জিলন্ত সুৰে n



ফলমূল ভুঞ্জিয়া ৰহিলা সেহি থানে। ৰাম লক্ষণৰ কথা আছো এহি মানে। গল্পা পাৰ হৈয়। ৰামে বনত পশিলা। দেখি গুহ স্থমন্তৰ শোক উথলিলা। ছুই হান্তকে। ছুই পাছে ধৰি গলে বান্ধি। ই। ৰাম ! বুলিয়া বিহবল ভৈলা কান্ধি। ৰাম সীতা লক্ষণৰ শোকে দেহা দহে। নেত্ৰৰ লোভক তুইৰো অবিছেদে বহে। সুমন্ত্ৰ বোলন্ত গুহ কৰোঁ কোন কাম। দশৰথে দিলস্ত তেজিল। মোক ৰাম। ৰথ লৈয়া অযোধ্যাক ঘাইবেঁ। কেন মতে। এভো বনে গৈয়া থাকে। বামৰ লগতে॥ পাচে গুহে সুমন্তক বুলিলা বচন। তেজিয়া সন্তাপ মন্ত্ৰী থিৰ কৰা মন। আপুনি বুজায়া ৰামে তেজিলে তোমাক। তান আজ্ঞা শিৰে লৈয়া চলা অযোধাকি। অনেক যুকুতি গুহে মন্ত্ৰীক বুজাইলা। ৰাম শোকে পোৰা দেহা কিঞ্চ জুৰাইলা। গুহক সন্মুধি মন্ত্ৰী ৰথে চড়িলন্ত। মনত অনুথে অযোধ্যাক লড়িলগু। ৰামক তেজিয়া মন্ত্ৰী নিবৰ্তিয়া আইল। গোধূলিৰ সময়ে অযোধ্যা পুৰ পাইল। মন্ত্ৰী বোলে মনত আসজ ভৈল কাজ। ৰাম শোকে দগঢ় ভৈলন্ত মহাৰাজ। নগৰত দেখোঁ প্ৰজাগণ আভি দীন। দিবসৰ তৰা যেন দীপিত-বিহীন। भूना रयन एएरथी श्रका निभवन रेडन। কমল সঙ্কোচ যেন সূর্যা অন্ত গৈল। क्यूम मलीन त्यन मिता मत्वांतरव। হৰিষ নকৰে প্ৰজা অযোধ্যা নগৰে।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি

কণ্ডকথে নাৰীগণ মন্ত্ৰীক চাহাৱে। বেঢ়াৰ ওপৰে কতে। গভুৰা বঢ়াৱে। भूगा बरथ एमिश्र मर्व कान्मिनाक देलला। হা ৰাম লখাই সীতা এৰি কৈক গৈলা। নিৰন্থৰে বেড়িয়া মন্ত্ৰীক পাৰে গালি। এৰি আইলি ৰামক চণ্ডাল পাপশালী॥ কিনো হিয়া খন তোৰ বজ্ৰসে গঢ়িল। ৰামক এৰিতে কেন মনত ফলিল। জানিলোহেঁ। ইতো ভৰতৰ ভাৰি খাইল। ছলে নিয়া ৰামক বনত এৰি আইল॥ নগৰৰ বাজ কৰি খেদাও ইহাক: মাৰ ধৰ বুলিয়া গালিৰ দেই জাক ॥ কৰে হুলস্থূল বহু ক্ৰন্দনৰ ৰোল। অন্তয় পুৰত গৈয়া সঞ্চৰিল বোল। নিৰন্তৰে যতেক ৰাজাৰ মহাদই। ধৌলিৱৰ শিওৰত চবিলস্ত গই ॥ হাঁ ৰাম অনাথ আমাক কৰি গৈলি। ত্বখ নদী কৈকেয়ী তৰিয়া বাজ ভৈলি। হৃদয়ত তোহোৰ গুছিল অমুৰাগ। আমি ভৈলোঁ কৈক্য়ীৰ অফ্টমীৰ ছাগ। আমি আপুতীৰ অন্ধলীৰ লাঠি তই। জল শুনা তৰু যেন মৰিবোহোঁ জুই ॥ পাছে সুমন্ত্ৰত সবে সুধিলম্ভ কথা। কহিলা সুমন্ত সবে বনৰ ব্যবস্থ।॥ নাৰীগণ পৰাভৱ শুনন্তে আশেষ। কান্দত্তে স্থমন্ত সাত বেবন্ধা প্রবেশ। ছট ফট কৰে ৰাজা বসি আসনত। অসুখ অশান্তি স্থন্থ নাহিকে মনত। শূনা ৰথ দেখি ভৈলা বিয়াকুল চিত। আসনৰ হস্তে শোকে পৰিলা ভূমিত।



কৌশল্যা স্থমিতা ছয়ে। ৰাজ-পটেশ্বৰী। ক্ৰন্দন কৰন্তে হাতে তুলিলম্ভ ধৰি॥ উঠা উঠা প্রভু তুমি চিন্তা তাজিয়োক। ৰাম নীতা লক্ষণৰ বাৰ্ত্তা পুছিয়োক। শুনি পুত্ৰ পুত্ৰ বুলি বিমুহিত ভৈলা। বাতুল চৰিত্ৰ যেন পৰি মূৰ্চ্ছা গৈলা। দেখিয়া কৌশল্যা পৰিলন্ত স্বামী কোলে। ওৱাৰি পুৰিলা সব ক্ৰন্দনৰ ৰোলে। চিৰকালে দশৰথ চেতনক পাইল। পটেশ্বৰী কৌশল্যাৰ পাছে প্ৰাণ আইল। প্ৰথমে ধৰিল যেন অৰণ্যৰ হাতী। নিখাস ফোকাৰে যেন ঠাঠাৰিৰ ভাটি ॥ প্ৰণমিয়া স্থমন্তে যুৰিলা ছই ছাত। ধীৰে ধীৰে স্থাধিলন্ত অযোধ্যাৰ নাথ। মোহোৰ তনয় ৰাম পিতৃ পিতামহ। কোথা এৰি আসিলি প্ৰস্তুত কথা কছ। হস্তী ঘোড়া ৰথে যাক আগ পাচ কৰি। হেন পুত্ৰ বনে আছে ৰাজ্য পৰিহৰি। বুলিতে না পাৰে সীতা কোমল থানত। (इन भा**त हार्क क्लान कलेरक वन** ॥ কুমৰ লক্ষণ যাত মোৰ বৰ স্নেহ। কেনে বনবাস খাটে স্থকুমাৰ দেহ। ৰাজাৰ বচন শুনি পাচে মন্ত্ৰীবৰ। লোতক মলছি দিলা ৰাজাক উত্তৰ ॥ শুনিয়ো গোসাই মোৰ বচন সন্দেশ। প্ৰণাম অঞ্জলি হেৰা ৰামৰ আদেশ ॥ প্রদক্ষিণে ভূমিত থাপিলা পাছে মাথ। কৃতাঞ্চলি বোল শুনা পৃথিবীৰ নাথ। ৰামে বুলিলম্ভ মোৰ ধৰিয়া গ্ৰীৱত। জানাইবা আমাৰ বাৰ্ডা বাপৰ পাৱত ॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

শোক দুঃখ এবি পালন্তোক নিজ শত। অতি শীঘ্ৰে ৰাজে আনি থাপন্তো ভৰত। লক্ষণে বুলিলা পাছে তোমাক পিদ্ধান্ত। থিৰ মন কৰি শুনা সি সব বৃত্তান্ত ৷ সক্ৰেন হিত ৰত ৰাম মহাভাগ। বনক পাঠাইলা ৰাজা কৰি পৰিত্যাগ ॥ ভৰতে তাহাস্ক বৰ কৰিবেক হিত। কান্ধে কৰি কৈকেয়ীক ফুৰস্তোক নিত॥ ভৰতক বুলিলন্ত নিদাৰুণ বাক। গৰ্বব মান এড়িয়া অবস্থা ৰাখি মাক।। দেখিবে সমস্তে মার কৈকেয়ীৰ সমে। সুহি অবিলম্বে পাতি মলছিল যমে। কৌশল্যাক বুলিলগু তেজিয়োক শোক। বনবাস তৰি যাইবে। দেখিবস্ত মোক। मनकरमें बारम वाका वृत्ति भागिहेनछ। ছুই ভায়ে বৰ আঠে জটা নিশ্মিলন্ত ॥ আগত লক্ষণ জানকীক মাঝ কৰি। তিনি হত্তে চলি গৈলা গঙ্গা নদী তৰি চ গুহ ৰাজা সমে চাহি থাকিলোঁ সন্থাপে। মোক এৰি গৈলা ৰাম জগতৰ বাপে। বনে প্রবেশিলা তিনি ভৈলোহোঁ উদাস। নৰকৰ পলুৰ স্বৰ্গত নাহি আশ। ভয়া আতি নৈৰাশ আছোহোঁ হাত যোৰে। আৰ পানি তেজিয়া কান্দয় চাৰি ঘোৰে॥ চিহৰিতে লাগিল ৰামৰ দিশ চাই। গুহৰ মোহোৰ দেখি প্ৰাণ ফুটি যাই॥ শীত্রে বেগে আসি মই পাইলোহে। চিয়ালি। শৃত্য ৰথ দেখ লোকে মোক পাৰে গালি। কেহোঁ দেই মাৰ ঘোৰ কেহোঁ•ভোলে লাঠি। কেহোঁ বোলে মাৰ কিলে কেহোঁ ঘোড়া কাটি॥



ৰামৰ বনবাস।

কেহে। বোলে ইতো ভৰতৰ আইঠা খাইলে। সি কাৰণে চণ্ডালে ৰামক এডি আইলে। যাত ভেক নিশা নবজায় বীৰ ঢাক। হেন অযোধাতি শুনু ক্রন্দনৰ জাক। হাহাকাৰে কান্দে সবে শক্ৰ মিত্ৰ বৰ্গ। জীৱন্ততে বামৰ মিলিল মহ। স্বৰ্গ। কৰিয়ে। শৰীৰ থিৰ মন্থা পৰিহৰি। সহৰে আসিবা ৰাম বনবাস তৰি॥ ৰাজা বোলে স্থমন্ত বিকল কৰে গাৱ। আজি গৈয়া সহৰে ৰামক বাহুৰার। যাহন্তে আসন্তে চিৰকাল দেখোঁ তাই। ঝাণ্টে নিয়ে। মোক তথা প্রাণ সঙ্কলয়। যদি বা স্থমন্ত্ৰ তোক কৰি আছোঁ হিত। এতিক্ষণে থৈয়ে নিয়া ৰামৰ সন্নিত ॥ ক্ৰীগত প্ৰাণ মোৰ প্ৰমাণক পাইল। হৃদয় লবিল মোৰ জিহবায়ে। শুকাইল॥ সিংহ वक्ष ऋक बाम मीर्घ वाछ छुই। (प्रतास्व मात्य याक (करहा नम जूरे। আয়ত নয়ন চক্ত সমান বদন। शुक्त (नामिश्राल याहेर्ता यमन मनन ॥ হা ৰাম লখাই সীতা জনকৰ জীয়। পৰিত্ৰাণ কৰ মোৰ সঙ্কলয় জীৱ ॥ আশেষ মিনতি কৰি মতিহীন ভৈলা। পুনৰপি ধৰণাত পৰি মুৰ্চ্ছা গৈলা। সামীৰ দেখিলা খেবে ভূমিত পতন। (कोमनारिय स्थितारिय वृत्तिन। वहन । আমাকে। বনত মন্ত্ৰী থৈয়া আস গৈয়া। গলে বান্ধি তিনিকো ধৰিবোঁ কোলে লৈয়। । শুনা বোলোঁ মন্ত্ৰী মোৰ প্ৰাণ খানি যাই। ঘোৰ বনে তিনি জনে বন ফল খাই।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

কণ্টক ভাঙ্গিয়া ঘোৰ বন মধ্যে থিত। বাপৰ মাৱৰ শোকে অধীৰ চৰিত। মন্ত্ৰী বোলে মাৱ শোক কৰা উপশম। দেখিবাহা সত্তৰে লক্ষণ সীতা ৰাম॥ স্বামীৰ তুলত থিত সাতা বনবাসে। লক্ষ্মী দেবী ক্রীড়স্ত যেহেন বিষ্ণু পাশে। শ্ৰীৰাম লক্ষণ ছুয়ে। ছুই হন্তৰ হিত। ছুইকো ছুই ৰাখন্তে বনত ভৈলা থিত। মধুময় ফল তিনি ভক্ষণ কৰন্ত। তিনিকে তিনিয়ো দেখি চুখ পাসৰস্ত। বাপ মার বন্ধজন সবাকো পাসৰি। তিনি জনে বনত আছন্ত ক্ৰীড়া কৰি॥ তাহান নিমিত্তে শোক তুঃখ পৰিহৰি। অবিকলে থাকিয়োক স্বামী সেৱা কৰি ॥ স্থমন্ত্ৰৰ বাক্যে তান শৰীৰ জুৰাইল। সন্ধৃকিয়া আগতে ৰাজাক ভেট পাইল। কৌশলা। বোলন্ত শুনা পৃথিৱীৰ নাহা। মবিবাৰ বেলা সত্য-বোল হেৰাইলাঁছা ॥ একশত অশ্বমেধ এক ভিত্তি কৰি। আউৰ দিকে সত্য দিয়া ছুইকো তুলি ধৰি। মহাযজ্ঞ শতকো কৰিয়া সত্য বলে। হেন সভা এবিলা ভোমাৰ দৈব ছলে। ৰাম অভিষেক লাগি সম্ভাৰ মিলাইলা। সকলো লোকত হেন কাৰ্য্যক জানাইলা। গৰ্ভৰ পুত্ৰৰ ভৈলা এমুৱা নাদৰ। ৰাজ্য নেদি দিলা তুমি অৰণা সাগৰ। অজ্ঞানত বুৰাইলা তোমাৰ নাহি লাজ। মোক হিংদা সাধিলাহা কৈক্য়ীৰ কাজ। ৰামক দেখুৱা হেন আশে প্ৰাণ ধৰে।। সুহি আজি আগতে কটাৰ হানি মৰোঁ॥



ৰামৰ বনবাস।

স্থমিত্রায়ে বোলত্তে কৌশল্যা শুনা বাই। হাঁ ৰাম বোলন্তে ৰাজাৰ প্ৰাণ যাই॥ ইতো দোষ পৰিহৰ'। স্বামীৰ সকল। মৰস্তাক মাৰিলে নাহিকে কিছু ফল। ছোট হন্তে ৰামে পিতৃ আজ্ঞা নবাধিল। বন বাস কৰি ৰামে কল্যাণ সাধিল ॥ হেনয় পুত্ৰক একো নকৰিব! চিন্তা। দেখিবাঁহা সত্তৰে লক্ষণ ৰাম সীতা॥ স্থমিত্ৰাৰ বোলে শান্ত চিত্ত কোশল্যাৰ। স্বামীক নিষ্ঠুৰ বুলি ভৈলা চমৎকাৰ॥ ক্ষমিয়োক প্ৰভু বুলি চৰণে ধৰিল। প্ৰবোধ বচনে তেওঁক কাতৰ কৰিল। পুত্ৰৰ শোকত বিমোহিত মোৰ মন। প্ৰভুক বুলিলোঁ তাতে লাঘৰ বচন ॥ शक पिन रेखन बाम वनवारम रेगन । আতে মোৰ শত বৰিষৰ সম ভৈল। হেন শুনি দশৰথ শান্ত কিছু ভৈলা। অনন্তবে সুমল্লেয়ে। বুলিবাক গৈলা। ছোট হত্তে সেৱা কৰোঁ তোমাৰ চৰণ। একো কালে নবাধিলা আমাৰ বচন ॥ মৃত্যুকালে পাইলে আসি তোমাক বিবৃধি। কৈক্য়ীক বৰ দিলা আমাক সুস্থা। বুদ্ধৰ তৰুণী ভাৰ্য্যা লোকত শুনিল। সি সব সকলোঁ কথা তোমাত মিলিল॥ ৰাম অমৃতক তুমি তেজিলা তৰল। মৰিবাৰ বেলা খাইলা কৈকেয়ী গ্ৰল ॥ গুৰু বন্ধু জন কিছু নভৈল তোমাৰ। বংশক বিনাশি কৈলা কৈক্য়ীক সাৰ॥ সার্থক বুলিলা বাকা কৌশল্যা গোসানী। কেনে মতে তোমাৰ ৰহিল সভা বাণী।

2:0

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

সমস্ত লোকত শুনাই বুলিলাহা কাজ।
কালি আনি ৰামক পাতিবোঁ যুবৰাজ।
সিসব বচন কেনে পৰিবৰ্ত ভৈলা।
গুণি চোৱা তয়ু সভ্য কেন মতে বৈলা॥
কোন ফল পাইলা তুমি অসতীক সেৱি।
কৈকেয়ী তোমাৰ মাত্ৰ ভৈল মুখ্য দেৱী॥
ভাহাক কান্ধত গৈয়া ফুৰিয়ো ৰাজ্যত।
তেৱে পৰিপূৰ্ণ হৈবে ভোমাৰ শপত॥
কৌশল্যা বোলন্ত মন্ত্ৰী নবোলা অধিক।
পুত্ৰ শোকে মৰিছে আউৰ মাৰা কিক॥
কৌশল্যাৰ বোলে মন্ত্ৰী কিছু শান্ত ভৈলা।
বিদায় কৰিয়া নিজ স্থানে চলি গৈলা।
অনন্তৰে আসিয়া ৰজনী উপগত।
শোকে তুঃখে পীড়ি নিদ্ৰা গৈলা দশৰথ॥



অৰণ্য কাণ্ড

দীতা হৰণ

ৰামৰ ঘৰিণী আছে সীতা নামে সুৰধনী, ত্ৰিভুবন সাৰ এক বালা। মন্দোদৰী আদি কৰি যত মোৰ পটেখৰী, পুৰীত নপাৰে এক কলা । হেন মোত কহিলেক শূপনিখা বহিনীএ, শুনি চিত্ত ধৰিতে নপাৰে।। জনক জীউক হৰি মুখ্য পটেশ্বী কৰি, ৰামত সকলে মান সাৰোঁ। সীতাৰ শোকত তাৰ তেজ বল হানি হৈব, শৰীৰ যাইবেক তাৰ জসি। হাতে ধনু কাণ্ড ধৰি ৰামক নিৰ্ভয়ে মাৰো, দগুকা বনত পাছে পশি। নকৰা মাৰিচ মমা, আমাৰ বচন ভক্ বাক্য মোৰ দৃঢ় কৰি ধৰ। ত্বৰ্ণৰ মৃগ ভই সীতাৰ আগত গই, কোমল বনত তই চৰ। সীভাৰ বচন শুনি ত্ৰীবাম লক্ষণ তুই, যাইব তোক ধৰিবাক লাগি। গান্দি দেখা যেন কৰি ত্ৰিত গমন ধৰি, গছন বনক যাইবা ভাগি। শূন্য আশ্ৰমত পাছে সীতাক ৰথত তুলি, চলি যাইবোঁ আপুনাৰ থান। এত কাৰ্য্য কৰি লাভ মোক অনুপ্ৰাহ হয়,

কৰিবো ভোমাক বহু মান।

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি:

এতেক বচন শুনি মাৰীচে মনত গুণি,
হাত যোৰে আগে ভৈল থিব।
বামৰ নামক শুনি ৰাৱণক বুলিলেক,
কাম্পে তাৰ সকল শৰীৰ।

ৰাম যেন বীৰবৰ নজানস লক্ষেশ্ৰ,
কাৰ বোলে মাৰিবাক যাস।
সুখৰ ভিতৰে তোৰ এত মতি কৰিলেক,
কুল ক্ষয় কৰিবাক চাস।

নৃপতি সবত চাটু প্রিয় বোল বোলস্তাক্,
শতেক সহস্র কৈও নাই।
হিত পথ অপ্রিয়ক বুলিবেক যিতো জনে,

কোটি মাঝে গুটি এক পাই॥

ৰামৰ বীৰত্ব মই ভাল মতে জানি আছোঁ,
ত্বৰিতে লক্ষাক লাগি যাহা।
ইতো সব যত গ্ৰহ তেজিয়া ভাগিন তুমি,
জ্ঞাতি সমে ৰাজ্যক কৰাহা।

হৰি হৰি লক্ষেত্ৰৰ তোহোৰ প্ৰসাদে সব, ৰাক্ষ্যৰ হৰিলেক শঙ্কা।

হৃদয়ৰ মাঝে তোৰ হেন বুদ্ধি ফিৰি গৈল, হৰাইল মাণিকপুৰী লক্ষা।

আসন্ন কালত আসি বিনাশন বুদ্ধি ভৈল,

মাথে তোৰ যম কাল নাচে।

অগনিৰ শিখা সম সীতাক হৰিবে চাস,

মৰিবাৰ কত কাল আছে।

ৰাম যেন বীৰবৰ নজানস লক্ষেশ্বন, তাহান আগত তই মাখি,। আমাৰ বচন ধৰি সীতা দেবী পৰিহৰি, দেশক চলাহা প্ৰাণ ৰাখি॥



মোৰ বোল হিত যেৱে নশুনস লক্ষেশ্ৰ,
দেৱ ধৰ্ম্ম সবে হৈব সাক্ষি।
থিতো পাত্ৰ মন্ত্ৰী তোক হেন উপদেশ দিল,
ভাহাৰ ফুটিল দুই আঁখি।

ৰাম দেৱ স্থচৰিত সকল জনৰ হিত, দেৱ দিজ গুৰুত বিনীত। পিতৃৰ বচনে মিত সৰ্বব দোষ বিবৰ্জ্জিত, ত্ৰিভুবন ৰাজাক উচিত॥

জনকৰ জীউ সীতা ৰাঘৱৰ বিবাহিতা, পতিব্ৰতা ধৰ্ম্মে আতি থিতা। তোৰ মৃত্যু সন্নিহিত মতি ভৈল বিপৰীত, সি কাৰণে যাস তান ভিতা।

ৰাৱণে বোলয় মাৰীচ মমাই,
তুমি মোৰ মহা পাত্ৰ।
মোক-কি কৰিতে পাবয় ৰাখৱে,
মানুষ গোটদে মাত্ৰ ॥

দশ্ৰথ সূত পাপৰ চৰিত্ৰ, নজানয় ধৰ্মা লেশ।

ব্ৰীৰ বচনে ভাষা। ভাতৃ সমে, আসি ভৈল বনদেশ।

মানুষ ৰাঘৱ হোৱে বৰ বীৰ,
ক্ষমনে তই জানস।
কি কাৰণে মোক মাৰীচ মমাই,
বাক্য-বিষ বৰিষস।

ত্ৰৈলোক্য বিজয়ী হৰ্জয় ৰাৱণ,
শোক বীৰ নেদেখন।
মোহোৰ আগত মানুষ ৰামক,
মুনিষ বলি দেখন।

আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

বাপেকে বনক ডাকিলে নহয়, পিতৃত সিতে৷ ভকত।

তেহন্ম সহস্ৰ কোটি একো ৰামো.

সুহিকে মোক শকত।

কুৱেৰ দদাক যুদ্ধত জিনিয়া,

नका (मन काढ़ि देन(मा)।

ত্ৰিদশক জিনি ৰণ চেৰ কৰি,

কীৰিতিক বৰ থৈলোঁ।

পাতাল পুৰত নভৈলে শকত,

মোক (বাৰ) বৰ নাগে।

মানুষ গোটক মুনিষ বোলস,

কি হেতু মোহোৰ আগে।

ইতো পৃথিবীৰ ৰাজাগণ যত,

মহাবীৰ বোলাইলেক।

সি সৰু সমস্ত মোহোৰ আগত,

উচিত দণ্ড পাইলেক ॥

মাৰীচ মমাই তুমি মহাবীৰ,

মোহোৰ বচন শুন।

পুপুছিলে কথা আপুনি কহরৈ,

মন্ত্ৰীৰ সুহিকে গুণ॥

ত্ৰিদশে ৰামৰ সহায়ক ভজি,

এহি যে কাৰ্য্য সাধিব।

তথাপি সীতাক হৰি লক্ষা নিব,

দৈৱে ভাক নৰাধিব ॥

জানিবা মমাই মোহোৰ সীতাক,

ৰামে আৰ নপাইবেক।

গন্তীৰ সাগৰ তবিয়া কেমনে,

লক্ষাক লাগি যাইবেক ॥



অৱশ্যেকে মই জানিবা থবৰ,

কৰিবোহোঁ প্ৰতিকাৰ।

পুনৰপি তুমি হেন লঘু বোল,

মোক মুবুলিবা আৰ ॥

হেন শুনি পাছে মাৰীচে বোলয়,

ৰাৱণৰ মন জানি।

কেনে নো বিধাতা জানকী সীতাক,

তথা মিলাইলেক আনি।

তোহোৰ ক্ষয়ৰ কাৰণেসে জানোঁ,

সীতা উতপতি ভৈল।

সকলে ৰাক্ষস কুলৰ মাথাত,

काली (मवी भवि रेगल।

কমন মুগুধ মন্ত্ৰীয়ে ভোহোক,

(इनग्र वृक्ति मिलक ।

তোক নসহিয়া কোনে হেন মতে,

লক্ষা পৰি দাইলেক।

ৰাৱণ ৰাজাৰ শ্ৰীসম্পত্তিক,

দেখিতে কেনো নাপাৰে।

সেহিসে কাৰণে ৰামৰ হাতত,

উপায় কৰিয়া মাৰে।

আপোনাৰ মই কথাক কহওঁ,

শুনিৱি ৰাজা ৰাবণ।

বলৰ গৰ্বত

পূৰ্বৰ কালে মই

গৈলো দগুকাৰ বন ॥

বাছিয়া অনেক ৰাক্ষস সেনাক,

তুলুত কৰিয়া গৈলোঁ। মহা মহা ঋষি' সবক মাৰিয়া,

ভুঞ্জিয়া তৃপিতি ভৈলোঁ।

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

পাছে এক বাৰ বিশ্বামিত্ৰ নামে, ঋষিৰ নাথক গৈলোঁ।

ৰাক্ষসে সহিতে যজ্ঞ ছন্ন কৰি, অনেক ঋষিক খাইলোঁ।

ধশ্মৰ চৰিত্ৰ কৃষি বিশামিত,

তেহোঁ আতি বৰ তপী।

পৰম কপালু অধৰ্মক ডবে, মোক নমাৰিলা শাপি ॥

আতি মহাক্ৰুৰ ৰাক্ষসৰ জাতি, আশঙ্কক বৰ পাইলোঁ।

ৰাক্ষসক লৈয়। নিতে নিতে ঠোয়া, ঋষিগণ মাৰি খাইলোঁ॥

হেন দেখি আছে বিশ্বামিত্র পাছে, গৈলা অযোধ্যাক লাগি।

দশৰণ মহা- ৰাজত ঋষিয়ে, ৰামক আনিলা মাগি।

পূৰ্বৰ কাল মতে যজ্ঞ আৰম্ভিলা, ঋষি সৰে কৰে কাম।

দিবা ধনু শৰ হাতত ধৰিয়া, ৰাখিয়া থাকিলা ৰাম ॥

শ্বিক ভুঞ্জিয়া লাণ্টা পায়া পাছে, চাপিলোকোঁ গৈয়া কোল। দেখা দেখা ৰাম বুলিয়া ঋষিৰ,

উপলিল মহা ৰোল॥

আকাশত দেখি পাছে মোক লাগি, ৰামে কৰিলন্ত শব। . মহা বেগে গৈয়া হিয়াঁত পৰিয়া,

কম্পি গৈল কলেৱৰ॥



সাতা হৰণ।

দেখোঁ অন্ধকাৰ ৰামৰ প্ৰহাৰ, যেন শক্ষৰৰ শূল।

চেতন নাপাইলোঁ। আকাশে উৰাইলোঁ।, যেন শিমলীৰ তুল।

ইন্দ্ৰ বজৰ প্ৰহাৰতে শালি, গাৱত মোৰ পৰিল।

বৰৰ প্ৰসাদে মোহোৰ গাৱৰ, লোম গাছো নলৰিল।

যত যত অস্ত্ৰ কৰিল প্ৰহাৰ, মোহোক দেৱ-অস্ত্ৰ। মোহোৰ কঠিন গাৱত পৰিয়া,

সবে ভৈল মাসিমূৰ॥

আপুনি জানাহ। নৃপতি ৰাৱণ, শাৰীচ যিমত বীৰ।

কটো স্বৰূপত ৰামৰ শ্ৰত, পৰিল দেখোঁ শ্ৰীৰ ৷

তুলা যেন ঠানে ৰাঘৱৰ বাণে, গগনক খেদাইলেক।

নিমিষেকে নিয়া সাগৰ চড়িয়া, সি কুল্ত পেলাইলেক।

পাছে চিৰকালে কথমপি তথা, চেতন মই লভিলোঁ। বন্ধুজন দেখি- বাক ধীৰে ধীৰে,

লঙ্কাক লাগিয়া গৈলে।।

অন্তাপি ৰামৰ প্ৰহাৰ স্থমৰি, ধৰিতে নপাৰো মন। সবে পৰিহুৰি সি কাৰণে তপ,

কৰে। এহি তপোবন॥

অসমীয়া সাহিত্যর চানেকি।

শুনা লক্ষেত্ৰ ক্ষেত্ৰক, পাইলোঁ। আমি অমুপম।

যেখন তেখন স্থমৰক্ষে দেখোঁ, হেৰ আসি পাইলে ৰাম।

এহিসে নিমিত্তে এৰিলোহো চাৰ, ভাৰ্যা। পুত্ৰ পৰিবাৰ।

প্ৰাণ অবশেষ কেবলে মোহোৰ, তপ মাত্ৰ ভৈল সাৰ ॥

স্বৰ্গৰ ভিতৰে যতেক দেৱতা, পাঙালৰ যত নাগ।

ইতো পৃথিবীৰ যত ৰাজা আছে, ভোমাক কৰিয়া আগ॥

থেৱে সৱে মিলি একল ৰামক, একেবাৰে কৰে ৰণ।

ৰাঘৱৰ মাৰ চেটত জানিবা, সবাৰে ছইবে মৰণ ।

মোহোৰ বচন সাৰ জানি তুমি, উলটি লঙ্কাক যাহা।

বিভীষণ বুদ্ধি- মন্তত ইসব, কথাক পুছিয়া চাহা॥

ত্ৰিজটা তোমাৰ বহিনীত স্থাধ, যেৱে তাৰা দেই সাহা।

তিনিৰ সম্মতে পাছে নৃপৰৰ, জানেকীক হৰিবাহা।

তোৰ হিত পক্ষ ত্ৰিজটা বহিনী, হিত বিভীষণ ভাই। ছুই হন্তত পৰে লক্ষাৰ ভিতৰে,

তোৰ ইফ্ট কেহোঁ নাই॥



সীতা হরণ।

তাৰা ছুই জনে তোক যিতো বোলে, সেহি বোল সাৰ কৰা।

চটুয়া মন্তাৰ বচন নৃপতি, বিদৃৰতে পৰি হৰ'।॥

হেনয় হিতক কুশুনিয়া তুমি,
কৰা যেৱে আন মন।
সব বন্ধুজন মৰাইবাহা তেবে,

লক্ষা ৰাজ্য হুইবে ছন।

ন্তৰ্জয় ৰামৰ হাতত সমস্তে, বলদৰ্গ ছইবে চূৰ।

অবিলম্বে তেৱে দেখিবা নৃপতি, ভূৰ্ববাৰ এ যমপুৰ ॥

ৰামৰ চৰিত্ৰ প্ৰম অমৃত,

শুনা সভাসদজন।

নিশ্চয়ে জানিব। ইসে মহাধৰ্ম্ম, কলি মন কৰে ছন্ন।

পুণ্যক সঞ্চিয়ো যমক বঞ্চিয়ো, সংসাৰ কৰি মোচন। এৰি আন কাম বোলা ৰাম ৰাম,

चूिषरशंक घरन घन ॥

মাৰীচৰ বচনত কুপিত ৰাৱণ,
আতি বৰ ক্ৰোধে পাছে বুলিলা বচন ॥
হাওৰে পাপিষ্ঠ মই কৰিলোহোঁ কিস,
কি কাৰণে মোক বৰিষস বাক্য-বিষ ॥
নিষ্ঠুৰ বচন কিয় বোল এতমান ।
ভূমিত বৈলেক যেন বীৰ্য্যহীন বাণ ॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেক ।

লখিলো পাপিষ্ঠ ৰাঘৱৰ ভাৰি খাইলে, সি কাৰণে মোক অপমান কৰাইলে ॥ ঘূৰি ঘূৰি বোলস নিষ্ঠৰ মোক বাণী, তুৰ্ববাৰ ৰাৱণ মোৰ কথাক নজানি। আগু হানি তোক আজি কৰিবোঁ ফোহাৰ। ৰাঘৱে কৰোক আসি তোৰ প্ৰতিকাৰ ॥ তোৰ বচনক মই কৰিলোহোঁ লক্ষ, মোক তৰি বোল ৰাঘৱৰ হিত পক্ষ। প্ৰাণে যেবে বিবৰ্ত্তি মোহোৰ বাক্য কৰ। নুহি এতিক্ষণে পেষাইবোহোঁ যম ঘৰ॥ ৰাম পাশে গৈলে তোৰ জীবন সংশয়। মোহোৰ হাতত এতিক্ষণে হুইবি ক্ষয়। यावि वा नायावि बार्ले (वान रकन मन। যাবে নতো পেষো আজি যমৰ কাৰণ। হেন শুনি মাৰীচৰ ত্ৰাস বৰ ভৈল। সক্রোধ বচনে তাক মাতিবাক লৈল। মৰিবাৰ কালে আচৰিয়ে। অসদৃশ। ফুহুদৰ বচনক দেখ যেন বিষ ॥ ৰামৰ হাতত পৰি স্বৰ্গে চলি যাইবোঁ। ভোৰ দুখ শোক কিছু দেখিতে নপাইবোঁ। সীতাক হৰিলে তোৰ হুইবে গল পাশ। ৰামৰ হাতত ঝাণ্টে ছইবে বিনাশ। অনিষ্ট কৰিয়া আছ যত দেৱাস্থৰ। ৰামৰ হাতত আটি-মুটি ভ্ইবে চুৰ॥ ত্ৰিদশৰ শাপে তোৰ আয়ু ভৈল ক্ষীণ। জগতৰ মনুষে জীৱন্ত কত দিন॥ ৰামতো মৰিবোঁ মৰিবোঁহা ৰাৱণত। জীবন নাহিকে হেন গুনিলে। মনত ॥ ভোহোৰ হাতত কিয় প্ৰাণক সুঝাওঁ। ৰামৰ হাতত পৰি স্বৰ্গে চলি যাওঁ॥



হেন শুনি ৰাৱণ হৰিষ বৰ পাইল। আশেষ প্ৰশংসি তাক ৰথত চড়াইল। ৰামক স্তমৰি তাৰ মনে ভয় ঘোৰ : कां विवाक लागि (यन रेगग्रा याहे (हाब ॥ শীত্ৰ বেগে গৈয়া ৰাঘৱৰ থান পাইল। भाबीहरू बाद्धर वहन शुक्काहेल। प्रिथिया कन्मली वन बायत्व थान। মুগ ৰূপ ধৰি মোৰ সাধা বহু মান। ৰথে চড়ি ৰাবণ লুকাইয়া ভৈলা থিত। মাৰীচ ৰাক্ষস তেৱে নামিলা ভূমিত। ধীৰে ধীৰে যাই ভৰি নবাঢ়য় আগ। কাটিবাক নেই যেন অফ্টমীৰ ছাগ॥ বিমৰিষ কৰ্য় মাৰীচ মহাবীৰ। হৰি হৰি হকৱাইলো স্থুন্দৰ শৰীৰ।। ৰাৱণ ৰাজাৰ আজি হিত পথ চাওঁ। ৰামৰ হাতত পৰি স্বৰ্গে চলি যাওঁ॥ হেন বুলি মাৰীচে ধৰিলে মৃগমায়া। মনোহৰ বেশ শুদ্ধ স্থবৰ্ণৰ কায়া। ৰজতৰ অৰ্দ্ধ চন্দ্ৰ দুই পাৱে বলয়। তাৰ। সম থানে থানে মাণিক জলয়। জাজ্লা সমান জ্লে ৰতুময় বুক। থানে থানে প্ৰকাশয় সোনাৰ ভূমুক॥ তৰক্ষ-বৰক্ষ কৰি চতুদ্দিশে যায়। সীতা দেবী দেখন্ত কোমল ঘাঁস খাঁয়। ञ्चर्गव प्रगक प्रिया बन्न मन। ৰামক সম্বুধি সীতা বুলিলা বচন ॥ আশ্চৰ্য্য মৃগক প্ৰভু দেখিয়োক ৰাম। মাণিক খুচিত শুদ্ধ স্থবৰ্ণৰ কাম॥ তিনিয়ো ভুবনে সাৰ দণ্ডকাৰ বন। হেন সব মুগ যত হোৱে উতপন।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি

এতেক কাৰ্য্যক প্ৰভু তোমাত মেলাওঁ। ইহাৰ ছালত যেৱে বসিবাক পাওঁ। এহি মুগ মাৰি ছাল আনি দিয়া মোক। অযোধ্যাক গৈয়া কথা কহিবাক হৌক। এহি ছাল আনি নগৰক লৈয়। যাওঁ। অন্তেষপুৰত কথা কহিবাক পাওঁ। টীকৰ স্বস্থামী প্ৰভু চৰণত লাগোঁ। কৌতুহল মনে ইটো মৃগ গুটি মাগোঁ। ॥ আতি বৰ আশা মোৰ নকৰিয়ে। ভক্ত। আৰু পাইলে প্ৰভু তেৱে হোৱে মহাৰম্ন॥ ধৰিবাক পাৰা যেৱে আতিবৰ ভাল। নোহে মৃগ মাৰি মোক আনি দিয়া ছাল। তুমি আমি ছুই ৰঙ্গে থাকিবোহোঁ বসি। ৰোহিণী সহিতে যেন আকাশত শশী। সীতাৰ বচন পাছে ৰাঘৱে আকলি। नि*****हरत्र कानित्ना गोठ। उमि तम वाकनी ॥ কৈত শুনি আছা মুগ স্থবৰ্ণৰ কায়া। নিষ্ট কৰি জানা ইটো ৰাক্ষ্সৰ মায়। ॥ পুনৰপি সীতা দেবী বুলিলা উত্তৰ। নিশ্চয়ে জানিলো আবে ভাণ্ডিলি বৰ্ববৰ ॥ তাহাক ভাণ্ডাহা যাক দেখিলো সাক্ষাত। আন কিবা বস্ত প্রভু খুজিলো ভোমাত। পতিত্ৰতা ধৰ্ম ৰাখি তোমাৰ লগত। ৰাজ্য হুখ এৰি ফুৰেঁ। ঘোৰ অৰণ্যত। কোন বস্ত ছাৰ খুজিলোহো পশু ছাল। ইহাক নিদিয়া পাতিলাহা আল-জাল ॥ পশু মুই যদি ভই ৰাক্ষস নিশ্চয়। তগাপি মাৰিতে প্ৰভু তোমাৰ লাগয়। এহি হেতু তুমি আসি আছা বনমাঝ। ইহাক মাৰিয়া সাধিয়োক দেৱ কাজ ॥



সাতা হৰণ।

সীতাৰ বচন ৰাম শুনি ৰঞ্গমন। সম্বৃধি বোলয় শুন ভৈয়াই লক্ষণ॥ জনক জोউৰ বাপ শুনিলি বচন। এহি মুগ চৱৰিত বসিবাক মন। অৱশ্যে পুৰিবো জানেকীৰ মনোৰথ। আক অপমান দিবোঁ কমন মহত॥ স্তবৰ্ণৰ মুগছাল বসি থাকিবেক। শেত কমলৰ সুথ ইহাতে পাইবেক॥ মই চলি গৈলো হেৰা মৃগ মাৰিবাক। যাৱে নাসেঁ। ভাৱত সীতাক ৰাখিয়োক॥ लकर्ग (वालक नाना त्नर्था अमनुन। মুগ হেন বেশ নোহে কৰা বিমৰিষ॥ ঋষিগ্ৰাণে কহিয়া আছন্ত মোত কাজ। মাৰীচ ৰাক্ষস আছে দণ্ডকাৰ মাজ ॥ ৰাজাগণ যত মুগ মাৰিবাক যাই। পুবৰ্ণৰ মুগ জ্য়া সবাহাকে খাই॥ কহিত দেখিলা মৃগ স্থবৰ্ণৰ বৰ্ণ। মাণিক কাঞ্চন দেখাঁ ৰত্নৰ পৱাল॥ হিত পক্ষ চিন্তিয়োক বিমৰিষ কৰি। মাৰীচ ৰাক্ষস আইল মায়া ৰূপ ধৰি ॥ ৰাঘৱে বোলন্ত যেৱে মাৰীচেসে আইল। ঋষিৰ যতেক কোপ স্থব্জিবাক পাইল। দণ্ডকা বনৰ আজি গুচাই এৰো শাল। সীতাক আনিয়া দিবোঁ স্বৰ্ণৰ ছাল। সকলে গাৱত দেখোঁ বাজযোগ্য ৰত্ন। অৱশ্য ইহাক লাগি কৰিবোহো যতু। তাৰা মুগগোট আৰো স্বৰ্গত আছয়। তাহাৰ সদৃশ ইতো বলত নাচয়। কি সব আছিল ৰত্ন আমাসাৰ ঠাৱে। ভাতো অতিৰেক দেখেঁ। হৰিণৰ গাৱে॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

এতিক্ষণে আমি মূগ মাৰিবাক যাইব। সাৱহিত ৰূপে তুমি জানকাক চাইব॥ এহি বুলি बारम মৃগ মাৰিবাক মনে। সুসম্ভুত হুয়া চলি গৈলা তেতিক্ষণে । ধনুৰ্ববাণ সাজি গৈলা থান পৰিহৰি। লক্ষণ থাকিলা জানেকীক ৰক্ষা কৰি ॥ কর্মনা বাধ্যতে বুদ্ধিল্ল বুদ্ধা কর্মা বাধ্যতে। সুবুদ্ধিৰপি ৰামোহয়ং হৈমং হৰিণমন্বগাৎ॥ ৰামক দেখিয়া তাৰ হৃদয় কম্পিল। গ্ৰহন বনক লাগি গমন কৰিল ॥ (मध (नामध (तर्ग हिंबन भनारे। দাকণ ৰাক্ষসী মায়া কৰন্তেহি যাই। তেতিক্ষণে দেখি তেতিক্ষণে দেই লুকি। জুই আঙনীৰ মতে দিৱয় ভুমুকী॥ আধা মন্ত্ৰী যেন নিশাচৰ মায়া ধৰে। দণ্ড ডুইৰ পথে গাণ্ডি দেখাৱ নকৰে। খণ্ড খণ্ড মেঘে যেন চন্দ্রক ঢাকিল। খনে। খনো দেখি খনো লুকায়া থাকিল। প্ৰান্ত ভৈল ৰাম বৰ ৰাক্ষসক চাই। বুক্ষৰ গোৰত লুকাইলম্ভ ছায়া পাই। ৰামে। থাকিলন্ত যেৱে ভ্ৰম পৰিহৰি। মুগগণ মাজে পশি চৰৈ মায়া ধৰি॥ দূৰত মাৰীচ চৰে হেনয় জানিল। আকৰ্ণ পৃৰিয়া তাক শৰ প্ৰহাৰিল । হিয়াত পৰিল যেৱে ৰাঘৱৰ বাণ। তেতিক্ষণে মাৰীচৰ ছাৰি গৈল প্ৰাণ n ৰাৱণৰ হিত পক্ষ মৰস্তে বুলিল। লক্ষণক সমুধিয়া আটাসেক দিল। হাহা লখাই মোৰ স্থভাষিত তই ভাই। बाल्डे लाग लड साब आन बान बाह ।



দীতা হৰণ।

আটাস শুনিয়া হিয়া ঋষিৰ লৰিল। পৰ্বত আকাৰ ভয়া ৰাক্ষ্য পৰিল ৷ শুনিলন্ত সীতাথে ৰামৰ আনে ৰাৱ। স্বামীৰ মৰণ শুনি কাম্পে হাত পাৱ। তৰল নয়ন কৰি চতুৰ্ভিতি চাস্ত। লক্ষণক সম্বুধিয়। শীঘ্র বুলিলস্ত । শুনিলাকি লথাই তুম ৰাঘৱৰ বাণী। কমন বিধিয়ে মৃগ মিলাইলেক আনি। হাহা বিধি কিনো মই অকাৰ্যা কৰিলোঁ। দণ্ডকাবনত আনি স্বামীক মাৰিলোঁ। बाल्डि कवि हला लथाई छना त्मांव वाक। সত্তৰে ৰামৰ গৈয়া প্ৰাণ খিনি ৰাখ ॥ তুমি স্থা ভৈলে ন্যাইরন্ত যমপুর। ঝাণ্টে চল ৰাখা মোৰ শিখৰ সিন্দূৰ। ভাতৃত ভকত তুমি লক্ষণ কুমাৰ। ৰামক মাৰ্য হেৰা ঘোৰ নিশাচৰ ॥ আপদ কালত সবে হিতাহিত জানি। স্বামী ভিক্ষা মাগোঁ বাপু মোক দিয়া আনি ॥ ভয়ে চমকিলা যেৱে জনকৰ জীউ। হাত যোৰে লক্ষণ আগত ভৈলা থিউ। ভয় পৰিহৰি দেৱী কৰিয়োক ৰক্ষ। ইটো ৰবি তলত ৰামৰ নাই ভক্ন। ममब कबछ (यदा प्रतिष्ठ नर्व। সবাকে। ৰাঘৱে জিনিৱস্ত একেশ্বৰে॥ প্ৰম হুৰ্জ্জয় ৰাম ত্ৰিভুবনে বীৰ। ভয় পৰিহৰি দৃঢ় কৰিয়ো শৰীৰ ৷ যিব। ৰাৱ শুনি দেবী পঠোৱা আমাক। কলাচিতো সুহিবে ৰামৰ হেন বাক। ন্ত্ৰী জাতি কাৰণে তোমাৰ হেন ভয়। মুগ মাৰি আসিৱন্ত নাহিকে সংশয় 1

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

হেন শুনি সীতা দেবী কোপ মন ভৈলা। নিষ্ঠ্ৰ বচন তাক্ষ বুলিবাক লৈলা। হাওৰে পাপিষ্ঠ ছৰাচাৰ ছফ্টচিত্ত। আজিসি জানিলোঁ ৰাঘৱৰ যেন হিত। ৰামৰ মৰণে তোৰ আতি বৰ স্থা। গাৱ গুটি বাঘ তোৰ হৰিণৰ মুখ। মুখত অমৃত তোৰ চিত্ত বিষ ঘট। কাৰ্য্য পায়া আৱে হেৰ পাতিলি কপট। মোক ভাণ্ডি বোলস বামৰ মুহি বার। আজিপি আছোঁহোঁ মই বাঘৱৰ ঠাৱ। হাওঁৰে চণ্ডাল ভৰতৰ ভাৰি খাইলি। চাটু বাটু কৰিয়া ৰামৰ লগে আইলি। সতিনীৰ পুত্ৰ কণাচিত নোহে হিত। নজানিয়া ৰামে তোক চপাইলে সন্নিত। লখিলোহেঁ। পাপিষ্ঠ তোহোৰ যেন আশ। ৰামৰ মৰণে মোক ভজিবাক চাস। স্বামী অবিহনে অগনিত ঝাপ দিবোঁ। গলত কটাৰ হানি তেখনে মৰিবোঁ। চৰণ সুচইবো পৰ পুৰুষক আন। কি কাৰণে পাপিন্ত কৰদ অপমান। আপনি ইতৰ ত্য়া বাঞা কৰ মোক। ৰাম মন্তগজ আগে মুগ দেখোঁ তোক । হেন বুলি সাতা হৃদয়ত মৃষ্টি হানি। কেশ আজুৰিয়া কৰে কান্দস্ত গোসাঁনী। দীতাৰ চুৰ্ববাৰ বাক্য শুনিয়া লক্ষণে। ভূমিকাণ পৰশি বুলিলা তেতিক্ষণে॥ जूमि त्यांव तमबी वामहत्त्व जानितन्त । তুই হান চৰণ চাৰি আন নাহি কেৱ। হেনয় সভাৱ নিদাকণ স্ত্রী জাতি। ভাই ভাই বেলগাৱে মাঝে দিয়া কাটি।



সাতা হৰণ।

অযুগুত বোল মে!ক বুলিলাহা কিক। ক্ষিপ্রবাদী দাকণী তোমাক আছে। ধিক। চন্দ্র সূর্য। বায়ু বস্তুমতী ভইবা সাকি। সীতা পৰিহৰি চলোঁ আপনাক ৰাখি। वामनारय वृण्णिख वियाकृण मत्न। কেনে একেখৰে থিত হুইবা ঘোৰ বনে। বিমন্ধলো দেখোঁটো অনেক বিপৰীত। কত ভাগ্যে পাইয়া তুমি ৰামৰ সন্নিত। আপনি জানাহা এথা ৰাক্ষস অশেষ। যাইবো কি নাযাইবো ঝাণ্টে কৰিয়ে। আদেশ। भीजारम द्यालख आर्ल्ड हल लक्षा है तीब। ৰাম ৰাৱ শুনি মোৰ নসহে শৰীৰ। স্বামী অবিহনত গৰল বিষ খাইবোঁ। सूहि शामावबो जल প्रांगक स्वाहर्ता । লক্ষণে সাতাক গৈয়া প্ৰদক্ষিণ কৰি। চৰণ প্ৰণামি হাতে ধনুৰ্ববাণ ধৰি॥ ৰামৰ পাশক লাগি চলিলা বিমনে। সীতাৰ লিখিত তাক বাধিব কেমনে। ৰাঘৱৰ পাশক লক্ষণ যেৱে যান্ত। সীতাৰ ক্ষেহত পুনু উলটিয়া চান্ত । লক্ষণে গৈলন্ত যেৱে ৰাঘৱৰ ভিতা। ঘোৰ অৰণাত একেশ্বৰী ভৈল সীতা। শ্ৰীৰাম লক্ষণে যেৱে নাইকন্ত পাশে: কান্দক্তে আছন্ত স্বামী মৰণ তৰাসে। ধুলি ধুসৰিত আতি চান্ত চাৰি দিশা। চন্দ্ৰ অবিহনে যেন অন্ধকাৰ নিশা। লক্ষণ গৈলন্ত জানেকীক দিয়া পিঠি। বৰশীয়া ৰাৱণৰ পুক্লাতেসে দৃষ্টি। বসিয়া আছম্ভ সীতা স্থনিৰ্মাল দেশে। সান্নিত চাপিল গৈয়া ভিক্ষুকৰ বেশে।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

মেৰাইলেক গাৱত কপিন একক্স। পানৈত চৰিল সিতে। কান্ধে একছত। কাথে ঝুলি কন্থা কমগুলু ধৰি হাতে। মাথাত কদ্ৰাক্ষ মালা তপসী সাক্ষাতে॥ শ্ৰীৰাম লক্ষণ তুই চক্ৰ সূৰ্য্য ভৈলা। সীতা সন্ধ্যা এৰিয়া বহুত দৃৰ গৈলা।। অন্ধকাৰ ৰাবণ চাপিল গৈয়া কোল। সীতাৰ ৰূপক দেখি হুয়া গৈল ভোল। महत्व मग्रथ (पर भवीव नमरर । সীতাক পাইলেক যেন শনৈশ্চৰ গ্ৰহে। সীতাক দেখিয়া চক্ষু নভাষয় আৰ। মনে মনে গুণে কলা জগতৰ সাব। ৰাৱণক ডবে পক্ষী নকাঢ়য় ৰাৱ। মাৰিবাক ডৰে ধীৰে ধীৰে বহে বার। সূর্য্যে এবিলম্ভ নিজ প্রচণ্ড প্রভার। অসুকুল ভয়া যোগাৱন্ত তাৰ গাৱ॥ তুৰ্ববাৰ ৰাক্ষ্যে ভিক্ষু বেশক ধৰিল। কভোহো দূৰত থাকি আশংসা কৰিল। বেদধ্বনি উচ্চাৰিল দীৰ্ঘ কৰি ৰাৱে। সীতাক বুলিবে গৈল বিনয় স্বভাৱে ॥ কাহাৰ ৰমণী তই কহিয়োক কাজ। কি কাৰণে আসি ভৈলা ঘোৰ বনমাঝ। শৰীৰৰ কান্তি দেখিবাক অনুপাম। কৈৰ হস্তে আসিলা ভোমাৰ কিবা নাম॥ তোহোৰ বদন পূর্ণ চন্দ্রৰ উদয়। চামৰক জিনিয়া প্ৰকাশ কেশ ছয়। क्तवयूश करेल त्यन हाश महनव। মনোহৰ কটাক্ষ কামৰ পঞ্চাৰ। कु छल लबग्र एमचि मिलिल उदाँम। তোৰ মুখ দেখি ৰাছ গৈল সমীপাশ।



যুৱত মোহন কিন্তু অধৰৰ কান্তি। সপক ডাৰিম বীজ দশনৰ পাস্তি ॥ वस्त डिপर्व ठुडे नयून क्लयू। পঞ্জন যুগল যেন কমলে চৰয়। ললিত বলিত নিৰম্ভৰ তন ভাৰ। উপৰত পৰি জলৈ গজমতি হাৰ ৷ গগনত যেন চক্ৰ ৰেখা দ্বিতীয়াৰ। আতিশয় ৰঞ্জয় গঞ্জয় যত তাৰ। ৰাতুল কমল যেন পদতল তোৰ। বলিত অঙ্গুলি যেন চম্পকৰ কোৰ ॥ ত্ৰিবলিত উদৰ কন্ধাল আতি সৰু। সাক্ষাতে দেখিয় যেন হৰৰ ডম্বক। স্বলিত বাহু পীন নিতম্ব জঘন। ৰাতুল চৰণ যুগে মোহে মুনিগণ । দেখি তোৰ লীলা গতি আতিবৰ লাজে। মতগজ গুছি গৈল সৰোবৰ মাঝে॥ ৰত্ন কাঞ্চি কন্ধন মুপুৰ ৰুণু ঝুণু। জলে পশি থাকিল সকলে হংসগণ। তোৰ ৰূপে অলঙ্কাৰ শোভে আতিশয়। कमल প্রকাশে যেন ৰবিৰ উদয়। শঙ্কৰৰ ভাৰ্য্যা কিবা তুমি মহামায়া। মাধৱৰ লক্ষী কিবা আদিতাৰ ছায়া। বাগৱৰ ভাৰ্য্যা কিন্দা ৰম্ভা অপেন্থৰা। দেৱ গুৰু ভাৰ্যা। কিবা তুমি সতী তাৰা। জগতৰ ৰূপ গুণ একত্ৰ কৰিল। অনেক প্ৰবন্ধে তোক বিধিয়ে গৰিল ৷ ত্ৰৈলোক্য জিনিতে মদনৰ পঞ্চবাণ। বেশ দেখি কমল মৃগুধে ধৰে প্ৰাণ। ৰাজৰাজেশ্বৰ পটেশ্বীক উচিত। ছেন ভোৰ বনবাদে কিনো বিপৰীত॥

10%

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

দণ্ডকাৰ বন এথা ৰাক্ষস বহুত। কোথা হল্তে আসি ভৈলা কহিয়ো প্রস্তুত , হেন শুনি সীতা বৰ বিস্ময়ক পাইল। ঋষি বেশ দেখি তাক মাত পুৰুজাইল॥ জনকৰ জীউ আমি নাম মোৰ সীতা। দশৰথ শশুৰ ৰামৰ বিবাহিতা ॥ বাপৰ আদেশে ৰাম আসি ভৈলা বন। তুলত আসিল মোৰ দেৱৰ লক্ষণ। বনবাস হঃখে আতি তিনিৰো নিকাৰ। পঞ্চিশ বৰিষ আবে স্বামীৰ আমাৰ ॥ ৰূপে গুণে ত্ৰিভুবনে ধনুৰ্ধৰ সাৰ। ধোড়শ বৰিষ আবে সম্পূৰ্ণ আমাৰ। শুনিয়োক মুনিৰাজ কৌতুহল মনে। নিশাচৰ বল মাৰিলন্ত এহি থানে। ত্ৰিশিৰা ভূষণ খৰ প্ৰম ভূৰ্জ্য। ৰামৰ হাতত গৈল যমৰ নিলয়। চৌধয় সহত্ৰ আসিলেক নিশাচৰ। ৰামৰ হাতত পৰি গৈলা যম ঘৰ॥ তুৰ্বাৰ ৰাক্ষ্স ৰামে যত যত পাইল। ৰাঘ্বৰ বাণে সবে খেদি খেদি যাইল। ৰাৱণে বোলয় সীতা তোৰ ৰূপ সাৰ। হেন ৰূপবতী ত্ৰিভুবনে নাহি আৰ ॥ বদন জ্লয় জেন পূৰ্ণিমাৰ শশী। দেখি যুবজন মৰে কাম শৰ পশি॥ সীভায়ে বোলন্ত শুনিয়োক তপোধন। মৃগ মাৰিবাক গৈলা জীৰাম লক্ষণ ॥ খানিতেক ঋষিৰাজ কৰিয়ে। বিশ্ৰাম। এতিক্ষণে আসিবস্ত লক্ষণ শ্ৰীৰাম। তুমি হেন ঋষিক দেখিব কৌতৃহলে। পূজিবন্ত আসি যথাযোগ্য ফলে জলে।



দশক্ষকে বোলে বাক্য শুনা মোৰ সীতা। মই লক্ষেথৰ আসি ভৈলোঁ ত্যু ভিতা। দেশতে আছন্তে সবে কাহিনী শুনিলোঁ। সাক্ষাতে দেখিয়া বৰ কৌতুক লভিলেঁ।। পাতালৰ নাগলোকে মোকে কৰে সেৱ। স্বৰ্গ গৈয়া জিনিলে। ত্ৰিদশ কোটি দেৱ । হৰি-শঙ্কৰক আবে মোৰ নাহি শঙ্কা। সাগৰ মধ্যত মোৰ স্বৰ্ণপুৰী লক্ষা। ट्रिवष्टि कलाक कारने। ट्रिय भाज नय। যতেক পঞ্চিশ তম্ব আমাত আছয়॥ অবি-বীৰ-দমন ৰাৱণ মত গজ। মানুষ ৰামক এৰি সীতা মোক ভত্ন ৷ আন সব ৰাজাৰ যতেক পটেশ্বৰী। জিনি আনি দিবোঁহোঁ ভোমাৰ চেড়ী কৰি। ইহাত অধিক কিনো কৰিবোঁহোঁ তোক। ইন্দ্ৰৰ শচীয়ে। আসি ভোমাত খাটোক ॥ मर्भ मिश शालब नाबीक **म**रत किनि । তাকো দিবো আনি কৰি তোৰ সেৱকিনী॥ মন্দোদৰী মোহোৰ প্ৰধান পটেখৰী। সৱে কন্মা লৈয়া ভোতে থাকে। সেৱা কৰি॥ আজি হস্তে দূৰ হৈব তোহোৰ তুৰ্গতি। কোটি কোটি ৰাক্ষ্যৰ মইসে অধিপতি॥ মোহোৰ বদন সীতা মাথা তুলি চাহা। বন ফল এৰি ত্ৰিভুবন ফল যাহা॥ তিনিয়ো ভুবন মাঝে যতেক স্থন্দৰী। স্বামীক মাৰিয়ে৷ সবে আনি আছোঁ হৰি ॥ মোকে সেবা কৰি সবে থাকোক হৰিষি। ভাৰাগণ মাঝে তই পূৰ্ণিমাৰ শশী॥ ব্ৰহ্মাৰ কৰত কামদেৱ ৰূপ ধৰোঁ। তুমি আমি লঙ্কাত বসিয়া ৰাজ্য কৰেঁ।।

আসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

পৰিহৰ মানুষক মোত কৰ ভাৱ। গার চাল সীতা ঝাণ্টে যাওঁ নিজ ঠার॥ মদনে দগধে মোৰ নসহে অন্তৰ। ত্ৰৈলোকাৰ নাথ ৰাৱণক স্বামী বৰ। ৰাৱণৰ বোল শুনি অন্তৰ্গতে ভয়। ৰাক্ষস জানিয়া তান শৰীৰ কম্পয়॥ দাৰুণ বচন শুনি দীতা কুপিলন্ত। নিষ্ঠুৰ বচন তাক বুলিবে লৈলন্ত। হাওঁৰে ৰাৱণ বৰ্বৰ নিশাচৰ। অবিলম্বে যাইবাক চাহা যমঘৰ ৷ ৰামৰ ঘৰণী মোক ভজিবাক চাস। মৰিবাক লাগি কালকৃট বিষ খাস ॥ ত্ৰিশূলৰ ওপৰত নাচিবাক চাস। মহাপাপী হয়। তই স্বৰ্গে কৰ আশ। হুয়া তই আঙ্নী চন্দ্ৰক ধাৰ দেস। জলন্ত অগ্নিক বেটা বজ্রে বান্ধি নেস। ভীখাণ খাণ্ডাভ জিহ্বা ঘৰিবাক চাস। বহিত্ও মাঝে যেন পতঙ্গৰ ঝাস। ৰামৰ ভাৰ্য্যাক নীচ ৰাক্ষ্যে বাঞ্চম। স্থাত দিয়া নয়ন জান্তস ॥ গলে শিলা বান্ধি তই তৰ সমুদ্ৰক। ক্তু পক্ষী হয়। ধাৰ দেহ গৰুড়ক ॥ বেল ভয়া তেৰঞ্জৰ আগত মিলস। এনি সাপ হয়। তই পর্বত গিলস ॥ বিৰাইল বাঘিনী সমে কৰ পৰিহাস। পৃথিবীৰ জন্ত আদিত্যৰ ধাৰে যাস ॥ সিংহৰ ভাৰ্য্যাক শৃগালৰ অভিলাষ। শান্তি দীতা মোক তই ভঞ্জিবাক চাস। স্থৰ ভিতৰে তোৰ মতি ভৈল মন্দ। অবিলম্বে বাঘরে ছেদিবে দশক্ষ ॥



গৰুড়ৰে কাকৰে যেহেন পটন্তৰ। শিয়াল সিংহৰ হোৱে যেহেন অন্তৰ ৷ গিৰি নদা সমদ্ৰে অন্তৰ হোৱে যত। ৰাম দেৱে তোহোৰ দেখয় সেহি মত। ৰাঘৱক এড়ি কেনে ভোহোক ভজিবোঁ। গশ্বাক এড়িয়া কেনে কৃপত মঝিবোঁ। গাৰক ভজিবে কেনে সিংহক এৰিয়া। স্বকৃতাক থাইবোঁ কেনে অমৃত তেজিয়া। আমাৰ আগত কিক লঘু বোল মাতি। আমাক জিনিবি পতিত্রতা মহাশান্তি॥ স্বপ্নে জ্ঞানে মনে ৰাঘৱত দৃঢ়কায়া। চৰণে সুচুইবোঁ পৰপুৰুষৰ ছায়া। যুত পৰিহৰিয়া কিসক ঘোল পিবোঁ। ৰামৰ আপচু কাচু ভোৰ মুণ্ডে দিবোঁ।। ৰাঘ্যৰ শৰে ভোৰ জিহনা ছিৰিবেক। ৰাক্ষসসকলে ভোৰ কিবা কৰিবেক। সীতাৰ বচনে তাৰ ক্ৰোধ সম্পজিল। অগনিত নিয়া যেন যুত দান দিল। মোহোৰ বীৰত্ব সীতা তই নজানস। সি কাৰণে ৰামক মুনিষ বথানস **॥** মুহি ধমুদ্ধৰ ৰাম তেজবলহীন। নজানয় শান্ত্র-নয় ধর্মতো বিহীন॥ এতেকেদে ৰাম পিতৃ-বাক্যত থাকিল। मीठ कानि मनवर्थ रमनव छाकिन। গুণরম্ভ ভৰতক দিলা সবে বাজ। নিও । বামক পঠাইলপ্ত বন মাঝ ॥ ভোৰ স্বামী ৰাম খেৱে মুনিষ ছোৱয়। ভায়েকক মাৰি কেনে ৰাজ্য নলৱয়। ক্ষত্ৰি জাতি হয়া বহে শিবে জটা ভাব। হেন দেখি হাস্ত বৰ উঠয় আমাৰ #



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

তোৰ স্বামী মানুষ জীৱেক কতদিন। অলপ কালেতে ভাৰ আয়ু হৈবে ক্ষীণ॥ মৃতক স্বামীৰ সীতা গৃহ পৰিহৰ। লক্ষাত পশিয়া যুগে যুগে ৰাজ্য কৰ ॥ ব্ৰহ্মাৰ বৰত মোৰ অবধ্য শৰীৰ। স্বৰ্গ মৰ্ত্ত পাতালত মোত নাহি বীৰ॥ ত্রিদশক জিনিলে। আরৰ নাহি শঙ্কা। জেষ্ঠ ভাই কুবেৰৰ কাঢ়ি লৈলে। লক্ষা॥ আৰু লৈলে। ধন জন পুষ্পক বিমান। সব দেশ চলৈ সিতো মহা দিবা যান । किलामक रेगग्रा लिल इवड भवत । त्रि कांबर्ग कूरवबब नरेखल भवग ॥ वाञवक किनि लिला। वीवय स्माव अन । যমক জিনিয়া আৰু জিনিলোঁ বৰুণ॥ সুৰগণ জিনিলে। জিনিলে। ৰুদ্ৰগণ। মোক সম বীৰ নাহি ই তিনি ভুবন॥ লঙ্কাত খাটন্ত আসি সব দেবলোক। তাক দেখি সীতা তোৰ কৌতুহল ছৌক॥ ভুঞ্জিবি মানুষ হুয়া ৰাক্ষ্যৰ ভোগ। বনবাস নিকাৰ তোহোৰ নোহি যোগ। আপুনি আসিয়া তোত পশিলো শৰণ। মুহিবি স্থন্দৰী তই নিদাৰুণ মন॥ এতিক্ষণ মোক যেৱে স্বামী নবৰিবি। পাছ কালে দীতা মোক স্থমৰি মৰিবি। পৃথিবীৰ ৰাজা সব যুজি বশ্য কৈলোঁ। মহাদেৱে সহিতে কৈলাস তুলি গৈলোঁ। জগততে সাৰ যত আমাকেসে যোগ। লঙ্কাত পশিয়া সীতা কৰিয়োক ভোগ॥ ত্ৰিভ্ৰন নৃপতি ভোহোৰ ভৈলে । দাস। অনুগত জন পৰিহৰিবাক চাস॥



भारहाब वहन यादा देनबान कबिव। স্থা দুখে তোক আজি অবশ্যো হৰিব॥ ৰাৱণৰ বোল শুনি উৰি গৈল জীউ। কোপে ভয়ে বুলিলন্ত জনকৰ জীউ॥ মোহোক হৰিয়া ষেৱে পাতালক যাস। তহিতো ৰাঘৱে তোৰ চিন্তিব বিনাশ। হাড়ী জাতি হুয়া পঢ়িবকৈ চাস বেদ। অবিলম্বে ৰাঘৱে কৰিব ক্ষম ছেদ। হৰৰ ঘৰিণী হৰি জীৱাক আশস । ইন্দ্ৰ শচীক হৰি মৰণৰ লস। হৰিবাক পাৰস চন্দ্ৰৰ ৰোহিণীক। সত্যবন্ত ভাৰ্য্যা নিবে পাৰ সাবিত্ৰীক॥ বশিষ্ঠৰ অৰুশ্বতী পাৰ হৰিবাক। তথাপিতো নোৱাৰিবি ৰামৰ সীতাক ॥ লঙ্কাৰ অগনিকুগু মোক যেবে নিবি। ৰামৰ হাতত মৃঢ় অবস্থে মৰিবি॥ মুনিষৰ বেটা হোস ক্ষণিক বিথান। প্ৰভুৰ হাতৰ সহ এক গোটা বাণ ॥ কি তই সহিবি শ্ৰীৰামৰ বাণ টান। লক্ষণৰ শব ছোটে তেজিবি পৰাণ ॥ স্ত্ৰীৰ আগত মুনিষাই বখানস। মোহোৰ প্ৰভুৰ তই কথা নঞ্চানস। অপকাৰ কৰিলি যতেক দেৱাস্থৰ। ৰাঘৱৰ হাতত সকলে ভুইব চূৰ। কুপিল ৰাৱণ বাক্য শুনিয়া সীতাৰ। ঋষি বেশ এৰি ৰূপ ভৈল আপোনাৰ ॥ কুৰি কাণ দশ নাক কুৰিখান হাত। ডাক্সৰ কপালে চিত্ৰ দশ গোটা মাথ । मण मूथ माँद्या कवि नयन वलय । যেন কুৰি কুণ্ডা বহিং পৰ্বতে জ্লয়॥

₹80

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

কাল বৰ্ণ দেহা যেন অঞ্চন পৰ্বত। ভয়ন্ধৰ বেশে থিয় ভৈ গৈল আগত ৷ कबकिब (ठावाद्य किब शाबि मान्छ। একে বেলে তানে যেন কুৰি থান জ্ঞান্ত॥ रक्तिक्षिया बावर्ग रवारल थ**ब**ङब वाक। হৰিবো পাপিষ্ঠি ত্ৰিভুবনে নাহি ৰাখ । হাওঁৰে পাপিষ্টি মোক হেনয় দিদ্ধান্ত। চৱৰৰ ছোটে ভোৰ সাৰি এৰো দাস্ত। মোক নজানস তই ৰাৱণ বিশাল। অগনিৰে। অগনি যমৰ যমকাল ॥ ৰামক বখান মোৰ আগত মুনিষ। সহত্ৰেক ৰামে মোক কৰিবেক কিস। শুনিয়োক সভাসদ ৰামৰ চৰিত। আত পৰে নাহি ধৰ্ম ছৰ্মোৰ কলিত । ৰাম হেন নাম ইতো সংসাৰতে সাৰ। বোলা ৰাম ৰাম পোৰা পাপৰ ভাণ্ডাৰ।

কিন্ধিন্ধা কাণ্ড। বালী বধ।
বাঘৱৰ বচনে স্থানীব ৰঙ্গ পাইলা।
চবণত ধৰি বীৰে প্ৰবোধ কৰাইলা॥
নাজানি গজ্জিলো দোষ ক্ষমা ৰঘুপতি।
ইহ পৰ লোক প্ৰাভু তুমি মোৰ গতি॥
মহাপাপী সবো তৰে নাম লৈলে যাৰ।
তাহান্ধ নিদিলোঁ। পাপ সঞ্চিলোঁ। অপাৰ॥
অজ্ঞানীৰ দোষ ক্ষমিয়োক নাৰায়ণ।
বোষৰ অভয় পদে পশিলোঁ। শৰণ॥
ঘাৱৰ বিষত মোৰ হৰিল চেতন।
বুলিলোহে। উত্থৰক গৰিহা ৰচন॥



সহজে বানৰ জাতি তৰল সদাই। তুমি কুপাময় তাক ক্ষমিবে যুৱাই। ন্তনিয়া ৰাঘবে তাক্ষ আখাস কৰিলা। দিন তিনি চাৰি মানে ঘার পালম্পিলা॥ স্থাীৱে ৰামৰ মালা শিৰত ধৰিলা। প্রদক্ষিণে ৰাঘৱক প্রণাম কবিলা। জয় বাঞ্ছা কৰি স্থাকল আচৰিলা। বালীৰাইক ধাৱে শুভ সমৰে পশিলা॥ সুগ্ৰীৱ লক্ষণ ৰাম সহিতে চলন্ত। পাছে যান্ত নল নীল আৰ হকুমন্ত। বুলিলা ৰাঘৱে স্থাীবক দিয়া ডাক। মাৰে। অবিলম্বে মিত্ৰ চিনায়ে। আমাক । এহি বুলি ধনু ধৰি শ্ৰীৰাম লক্ষণে। সাৱধানে থাকিৱস্ত কিকিন্ধাৰ বনে ॥ স্থুগ্ৰীৱ গৰ্জ্জ গৈয়া ছৱাৰত বসি। কি কৰস বালী ৰাজা গহবৰত পশি॥ নিচিন্তি আছহ দদা বার্ত্তাক নপাইলা। ভোমাৰ কনিষ্ঠ ভাই কাল হুয়া আইলা॥ সত্য কৰি জানা দদা বচন আমাৰ। পৰিছেদা কৰি দেখা পুত্ৰ পৰিবাৰ। পটেখৰী লোক দেখা আৰে। যত তিবী। আজি ধৰি ভোমাৰ খণ্ডাইবোঁ ৰাজশিৰী। সুগ্ৰীবৰ নাদ শুনি বালীৰাইৰ কোগে। আজি তোক মাৰো বুলি কৰয় আটোপ। ত্ববিতে বজাইল বীৰে আৰ্ত্তনাদ কৰি। আগ বাঢ়ি বিনাৱস্ত তাৰা পটেশ্বৰী।

টীকৰ সুস্বামী মোৰ

वलब्रस्थ श्रारम्बर,

বানৰ কুলৰ নিজ নাহা। মাণিকৰ দণ্ডপাত পৰিহৰি প্ৰস্তু দেৱ,

কি কাৰণে সমৰক থাহা ।

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

প্ৰাণতো অধিক মোৰ আছে, মই আছোঁ শান্তি পটেশ্বৰী।

ইন্দ্ৰ গুৰীতোধিক প্ৰকাশ কৰন্তে আছে, দেখা ইতো কিন্ধিনা নগৰী।

আপোনাৰ বাহুবলে বৈৰ সব জিনিলাহা, বৰ যশ্ৰাশি তুমি পাইলা।

স্থৃত্ৰভ্ন ৰাৱণক কাষত চিপিয়া লইয়া, চাৰিয়ে৷ সাগৰ ফুৰি আইলা॥

সাত পৃথিবীত যত ভালুক বানৰ আছে, তোমাৰ চৰণে কৰে সেৱ। কোন নো অশক্য কৰ্ম সাধিবাহা সপ্ৰতিক,

সমৰক যাহা প্ৰভু দেৱ ॥

স্থপনৰ কথা কহে। শুনিয়োক প্ৰভু ভ্ৰু,
ক্ষমত লাগি গৈল মাটি।
ওপৰক হৈয়া গোড়ে তোহোৰ শৰীৰ গোটে,
সমূলে পশিল মাটি ফাটি॥

সিংহাসনে বসি ৰঙ্গে স্থাতীর দেৱৰে মোৰ, তিনি কোনা ইটা গোট গিলে। হেনয় স্বপন জানা যাকে যাকৈ দেখিৱয়,

তাতে গৈয়া ৰাজ শ্ৰী মিলে॥

বালী বোলে শুন ওবে পটেশ্বী তাৰা মোৰ, যুগুত বচন হলি সহি।

হেন কি জানহ তই পৃথিবী মণ্ডল মাঝে, বালীক জিনন্তা আছে কহি ॥

উদয় গিৰিক লাগি হিমালয় প্ৰবিত্ৰক,
নিবাক আছয় মোৰ শক্য।
মোৰ সমৰক লাগি আইবান কৰন্তে আছে,
সুগ্ৰীৱ কমন বীৰ বখ।



মোৰ প্ৰাণ গোটা বাদ্ধৈ তাতে নিয়া আৰোপিয়া, স্থগ্ৰীৱক বাঢ়ি দিব ৰণ।

স্থপনৰ কথা যত কহিলাহা প্ৰাণজায়া, জানিবা সকলে আন জাল। বাধা বচনব তুমি সুবুলিবা পটেশ্ৰী,

वारन्छे हिन या छ युक्तमान ॥

তাৰা বোলে প্ৰাণেখৰ টীকৰ সুস্বামী মোৰ, আৱৰ কাহিনী কহোঁ শুনা।

ডাহিনৰ চকু মোৰ স্থানে কুৰে, আৰু হৃদয়ত ভাল গুণা।

দিন তিনি চাৰি ভৈল স্থাীৱ দেৱৰে মোৰ, তোমাত সমৰ হাৰি গৈল।

হেন জানা বিনা সাহে ছুৱাৰত বসি আসি, পুনৰপি গজ্জিবাক লৈল॥

আৱৰ কাহিনী কহেঁ। শুনিয়োক প্ৰাণনাথ, কাৰ্য্য বৰ ভৈ গৈল বিচিত্ৰ।

ৰিপুকুল-বিমৰ্দ্দন ৰঘুকুল শিৰোমণি, ৰাম ভৈল স্থগ্ৰীৱৰ মিত্ৰ॥

আছোক পৃথিৱী খণ্ড স্বৰ্গ সাত পাতালৰ, জিনিতে পাৰয় দেৱাস্থৰ।

জানিবা স্বৰূপ ৰূপে তোমাৰ কনিষ্ঠ ভাই, তেহে ৰাম ভৈলা পথাপুৰ॥

ৰাঘৱে সহিতে প্ৰভূ বিবাদক পুযুৱাই, শুনিয়োক বোলো হিত কাজ। আপোনাৰ কনিষ্ঠক স্থাীৱ বীৰক আনি, সম্বৰে পাতিয়ো যুৱৰাজ।

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

সোদৰ কনিষ্ঠ ভাই তাহান মুখক চাই,
দোষচয় ক্ষমিয়োক সৰ্বব।
ভোমাতেসে দান মান ঠেস ৰোধ নকৰিব,
তাহানতো কাত আছে গৰ্বব।

কি দিন্ধা নগৰ মাঝে ভালমতে জানিলেক,
বালী ৰাজা স্থগীব বীৰক।
ৰাজাৰ নিদানে আনো সৰ্বলোক আছে স্থাথ,
আৰু প্ৰভু নাজানা কিসক।

মাধব কন্দলি ভণে শুনিয়োক সর্বজনে,
বামৰ চৰিত কথা সাব।
শুনস্থে অমৃত সম পাপৰ সাক্ষাত যম,
জানি ৰাম বোলা বাবেবাৰ॥

বালী বোলে শুনা ওবে পটেশ্বী তাবা। ৰূপে গুণে বিভোপনী সংসাৰতে সাৰা। জানি আছোঁ ৰাম দশ্ৰথৰ ভনয়। তাক লাগি কিছু মোৰ ভয় নজনায়॥ সাগৰ শুকান্ত ৰামে এক পাত শৰে. দেৱক খেদন্ত পশি স্বৰ্গৰ ভিতৰে **॥** উপাৰিবে পাৰো সাতো-দীপা পৃথিবীক। তেহো ৰামে কি কৰিব ছুৰ্জ্জয় বালীক। ন্ত্ৰী-বৈৰী পিতৃ-বৈৰী সীমা-বৈৰী নোহোঁ, ৰাজ্যৰ নিমিত্তে আমি ছুইভাই যুজুহোঁ, কোন অপৰাধে ৰামে বধিবা আমাক। বাস্ত্ৰিয়া প্ৰাণেশ্ৰী ঘৰে বসি থাক ॥ তথাপি বালীক তাৰা বুজাই বুলিলম্ভ। ভকতৰ পদে ৰামে অন্যায় কৰন্ত। ভকতবৎসল গুণ এতেকে বামৰ। স্থাীৱ ভকতি তান্তে কৰে নিৰন্তৰ।



এতেকে সংশয় প্রভু দেখোহো মনত। ক্রোধে বালী বোলে মোক বুজারস কত। নিচুকিয়া থাক কিছু নবুজস কায। এহি বুলি চলিল। যুদ্ধক হয়। সাজ।। প্রবোধিল। यেরে বালী পৌক্ষ বচনে। পালটি বলিলা তাৰা অসম্ভোষ মনে। বাধক সুশুনি বালী সমৰক যায়। মাথাৰ উপৰে কাক শগুন বৰ্ণাই॥ বাম পাশে সর্প যায় ডাহিনে শৃগাল। কাক গৃধ পাখীৰ আকাশে কোলাহল ॥ **5** वाग्र् वटह (थामा-थाशवब काक। কিন্ধিন্ধাত কধিৰে বৰিষে জাকে জাক॥ হাঞ্চি জেঠী নমানিয়া ৰণক গমন। বালী স্থগ্ৰীবৰ তুইৰ ভৈল দৰিশন ॥ তুইকো তুই ভজ্জিয়া-গজ্জিয়া পাৰে গালি। লাগি গৈল সমৰ স্থগ্ৰীব বীৰ বালী॥ বজৰ সদৃশ ভুইয়ো হানন্ত চরৰে। লাঠি হানি প্ৰহাৰে নিৰ্ঘাত যেন পৰে॥ तृरक तृरक शिमलस निथर निथर । किल जुकू ठइरव मावछ निवछरव ॥ অদভুত সমৰ কৰন্ত সুই ভাই। আকাশত দেৱগণে আছে যুদ্ধ চাই ॥ ধনুত জুৰিয়া শৰ ৰামে সাৱধানে। তুইহানো সমৰ চাই আছা বিভামানে । ष्ट्रा वीरव आर्जारभ थविना कारन कारन । ... পৃথিবী কম্পিয়া গৈল তুইহানো আন্দোলে ॥ গম্ভীৰত মেৰু যেন গহিনে সাগৰ। (यन (भक्,मन्तव युक्त ख এক उव । इति-भक्षवंव (यन भिनिल সমव। গ্রহ-যুদ্ধ ভৈল যেন মঞ্চল বুধৰ॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

বলি-বাসৱৰ যেন লাগিল সমৰ। বালী-স্থগ্ৰীৱৰ যুদ্ধ সেহি পটন্তৰ। বালী বোলে শুন ওবে হুগ্ৰীৱ ছুন্দুৰ। মৃষ্টিৰ প্ৰহাৰে ভোক নিবো যমপুৰ। कूछ-ऋत्म भृष्टि शनि नहविशा हे।ति। পৰি মৃষ্ঠা গৈল বীৰ নমৰিল প্ৰাণে ॥ পাচে কতোক্ষণে তান আসি ভৈলা জার। ভয়ক্ষৰ শাল বৃক্ষ হানিলা সুগ্ৰীৱ ৷৷ হৃদয়ত পৰি বীৰ বালী মূৰ্চ্ছা গৈলা। কতোক্ষণে অনন্তৰে সন্ধুক্ষণ ভৈলা॥ ৰামচন্দ্ৰে দেখন্ত আসজ ভৈলা বৰে। স্থাীৱ মাতন্ত বালীৰাইৰ বল চৰে॥ निर्िन नमाबि शृर्त्व व्यमक शाहरला। মাৰে। বুলি শপত কৰিয়া পুনু আইলোঁ॥ আবে কেনে চাহি আছোঁ দেখিয়া আগত। নাহি দোষ ভকত বিদ্রোহীক করে। হত॥ এহি বুলি শৰ পাত গুণে চৰাইলন্ত। বালীৰ হিয়াত লক্ষে হানি পঠাইলন্ত।। বিশ্বাসশবদে শৰ চলে আকাশত। সন্ধানে পৰিল বালীৰাইৰ হৃদয়ত॥ ক্রোঞ্চ পর্ববতক যেন ভেদিল কুমাৰে। হিয়াত পৰিয়া শৰ ভৈল পশি আৰে॥ है। भविलाएँ। वृत्ति शवि रेशन वानी। পৃথিবীক শৰীৰকে শৰে থৈলা শালি॥ সাধিলোঁহো স্থাীব মিত্ৰৰ যত কাষ। এহি বুলি ৰাঘৱ বনৰ ভৈলা বাজ ॥ মাথা পালটাই বালী পাঞ্চৰাক চাইল। বন হস্তে আসন্তে ৰামক ভেট পাইল।। গুঞ্জ হেন চক্ষু ফুৰাই পাৰিলন্ত গালি। ধিক ধিক ৰাঘৱ অধম পাপশালী॥



সীতা হৰণ।

পাপময় ৰাম তুমি পাপৰ আচাৰ। পাপবৃদ্ধি ৰাম ইতো শৰীৰ তোমাৰ॥ মুবুলিয়া শৰ তুমি কৰিলাহা কিক। ভোমাৰ বীৰত্ব ৰাম আছোঁ ধিক ধিক। ক্ষত্ৰি জাতি বীৰ তুমি মুহিকা গছন। মুবলিয়া শৰ কৰিলাহা কি কাৰণ ॥ বুলিয়া আমাক কৰিলাহা হত্তে ৰণ। পৰিবৰ্ত্তি ভৈল হল্তে তোমাৰ মৰণ ॥ লাজ এৰি ৰাম তুমি মাথা তুলি চাহা। হৃদয় বিদাৰি মোৰ শোণিত পিয়াহা॥ कान कार्य वनव वानव माविलाहा। দোখৰা-দোখৰ কৰি মাংস কাটি খাহা। আমাক মাৰিলা আসি কোন কাযে ভাল। মাংস খাইবাহা তেবে নিপিন্ধিবা ছাল। মুভুঞ্জে উত্তম জাতি আমাৰ মাংসক। যজ্ঞত নলাগে বানৰৰ পঞ্চ নখ।। শুনি আছোঁ ৰাম সৰ্বব কাৰ্য্যত গৰিষ্ট। দেৱ গুৰু পিতৃ যত সবাহাতে ইফ । জানিলোঁ তোমাক সবে তপস্বীতে বর্জ্য। যেন ধৰি আছা বিবালৰ ব্ৰহ্মচৰ্য্য । পৃথিবীৰ পতি তুমি ভৈলা অকাৰণ। উত্তম নাৰীৰ স্বামী যেহেন টেন্তন 🛭 হা কিনো ভৈল তযু গতি বস্থমতী। অধম-আচাৰ ৰাম ভৈল তব পতি॥ স্থমৰণে পাপ হৰে আদিতাৰ বংশ। তোমাৰ উপৰি যত সবে ধৰ্ম্ম অংশ ॥ সূৰ্য্যবংশ সমস্তৰ শিৰৰ মুকুট। নিশ্মল কুলত তুমি ভৈল। কালকৃট ॥ দশৰ্থ নৃপতিক ভাল জানো আমি। অস্তুত ক্ষত্রিয় তেহোঁ যুগুত সংগ্রা**মী** ॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

তানে পুত্ৰ চুই ভৈলা অধম-আচাৰ। বিমুখে মাৰিয়া পাইলা কুল-কিলিঙ্কাৰ ॥ মোক বুলিলাহা এন্তে সীতাৰ কাৰ্য্যক। আজি বান্ধি আনি দিবে পাৰে'। ৰাৱণক। আমাক এৰিয়া স্থগ্ৰীৱক কৈলা সাৰ। সিংহ এড়ি শুগালত আশিকা তোমাৰ। স্থগ্রীরে সাধিবে কার্য্য নোৱাবিবে ভালে। যদিবা সাধিবে কাৰ্য্য আতি চিৰকালে ॥ ৰাৱণক স্থগ্ৰাবে পাৰ্য কি কৰিতে। আনি দিবে পাৰেঁ। ৰাৱণক তিলিকিতে ॥ পূৰ্ববকালে ৰাৱণে ব্ৰহ্মাত বৰ পাই। স্বৰ্গ মন্ত্ৰ্য পাতালক ফুৰাৱে কম্পাই ॥ **७** मानिल ख हेन्त्र आपि (प्रवर्गण। কিন্ধিয়াত আসি মোত মাগিলেক ৰণ। মই বোলোঁ ৰাৱণ বসিয়া থাক ঘৰে। স্নান কৰি আসেঁ। মই চাৰিও সাগৰে ॥ বারণে বোলয় ভাল কৰ আটি-মৃটি। জীৱ যেবে বানৰা কৰিচি সাটি-স্থুটি॥ লাঘর বচনে মই ক্রোধ বৰ পাইলোঁ। কাথত নি দাৱতিয়া তুলি আলগাইলোঁ। দশমুখ ৰাৱণক ধৰি বাহু মেলি। দোঙ্কা-দোক্ষি পাৰে বুঢ়া হাতৰ চেক্লেল। সৰ্পক ধৰিয়া যেন গৰুড়ে উৰান্ত। ৰাৱণক গৈয়া মই গৈলে। সাগৰান্ত ॥ নাকে মুখে ৰাৱণক ধৰিলে। জপাই। উসসিল পেট তাৰ হৃদি সিধি নাই॥ পূৰ্বব দিশ দক্ষিণ পশ্চিম উত্তৰত। সন্ধ্যা কৰি ফুৰিলোঁছেঁ। চাৰি সাগৰত॥ দণ্ড ছইৰ ভিতৰে সমৃদ্ৰে সন্ধা কৰি। ত্বৰিতে আসিয়া ভৈলেঁ। কিন্ধিন্ধ্যা নগৰী ॥



সীতা হৰণ।

তুৱাৰত থৈয়া বোলে। আবে দেহ বণ। श्वादिला। श्वादिला। वृत्ति धविल हवत ॥ মিনতি কাতৰ বাণী বুলিল অশেষ। ভক্ত মানি চলি যাই আপোনাৰ দেশ॥ বাট ভেণ্টি পাছে তাক অঙ্গদে ধৰিল। কন্ধালত আন্ধুলে শতেক পাক দিল।। সাগৰত নিয়া পাছে জোবৰাইবে লৈইল। টোপলা বাহত্তে কলা ধাতু মাত্ৰ বৈল। হেন দেখি অঞ্চদক বুলিলোঁ বচন। ছাৰ পুত্ৰ ইতে। মোৰ শৰণীয় জন॥ মোৰ বাকে এৰি দিলা অন্ধদ কুমাৰ। লাঞ্চনা লন্ডিয়া গৈল লঙ্কাব ভিতৰ ॥ হেন ৰাবণক ৰাম তুমি কৰা ডৰ। ৰণ চেৰ যেন মোৰ ঘৰৰ ডিন্সৰ॥ পঠায়া দিলোহে। হন্তে মাত্র আজ্ঞাবাণী। মাথে কৰি দীতাক দিলেক হস্তে আনি। তাকে লাগি স্থগ্ৰীবক আশ্ৰয় কৰিলা। আমাক বিমুখে বধি অধর্ম লভিলা। অধিক নিন্দিবে ৰাম মোৰ নাহি কায। আচাৰত হীন ৰাম ধৰ্মে ভৈলা বাজ ॥ छनि बारम रवालख वानव शक्षांकांबी। মোক গৰিহস আগপাচ নিবিচাৰি ॥ তুৰ্জ্জন চঞ্চল মন্দ তৰল বানৰ। শুন যি কাৰণে তোক কৰিলোঁহোঁ শৰ ॥ ইক্ষাকু বংশৰ ৰাজ্য সকলে আমাৰ। অবশ্য খণ্ডিবে লাগে পৃথিবীৰ ভাব॥ খণ্ট চোৰ মচ্চল যতেক ত্ৰাচাৰ। যাক যেন অনুৰূপে কৰ্ম সংহাৰ॥ ভৰত ভৈলন্ত ৰাজা সোদৰ আমাৰ। অমুচিতে পিম্পৰাৰো নিচিম্বয় মাৰ ॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

তুষ্টক কৰোহে। দণ্ড তানে বাক্য পালি। কোন কাৰ্য্যে আমাক নিন্দ্ৰস হুষ্ট বালী॥ यि तृलिलि विभूथक भावित्नौरहै। भव। ইহাৰ উত্তৰ শুন পাপীষ্ঠ বানৰ ॥ পূৰ্ব্বে যত ৰাজাগণে ধৰ্ম আচৰিলা। যেনে তেনে পশু মৎস্য কচ্ছপ মাৰিলা।। জাল পাতি মাৰয় পাচত খেদি শৰে। বনে আৰ হুয়া মাৰে পলাইবাক ডৰে। জাঠি জোন্দ মাৰে কতো কুৰ ফান্দ পাতি। নানা মতে মাৰয় বনৰ পশু জাতি॥ কাৰ্য্যত লখিলোঁ। তই পাপিষ্ঠ বানৰ। কনিষ্ঠৰ ভাৰ্যাক কৰিয়া আছ ঘৰ॥ স্থ গ্ৰীৱ হেনয় ভাইক দেশৰ ডাকিলি। ভাতৃ-বধু সম্বৰিয়া বৰ যশ পাইলি॥ প্ৰতিজ্ঞা সাফলি স্থগ্ৰীবক দিবো ৰাজ। তোক মাৰি পঠাওঁ আজি যমৰ সমাজ। সাফলিল অঙ্গীকাৰ পালিলোঁ সত্যক। অকাৰ্য্যে নিন্দন মোৰ বানৰ লটক॥ ঘোৰ ঘোৰ পাপ তই যত আচৰিলি। সংগ্ৰামত পৰি প্ৰায়**শ্চিত্ৰ**সে কৰিলি ॥ তোৰ গতি ভৈল বালী মোৰ হাতে পৰি। স্বৰ্গে চলি যাহা দিব্য বিমানত চৰি॥ বালী বোলে ৰামচন্দ্ৰ কৰোঁ নমস্কাৰ। তোমাৰ ৰচনা ইতো সকলে সংসাৰ॥ নিচিনিয়া তোমাক বুলিলে। গৰ্বব বাক। পশিলে। শৰণ প্ৰভু ক্ষমিয়োক তাক॥ তোমাৰ শৰত মোৰ ভৈল সদগতি। অঞ্চক অমুশোচ কৰে হৈ। সম্প্ৰতি॥ নিতে নিতে পুত্ৰ মোৰ কোলে প্ৰপি ক্ৰীড়ে। ৰামৰ শৰত কৰি পুক্ৰশোকে পীড়ে॥



मोडा इबगा

আচন্বিতে শোক মোৰ মিলিল বিশাল। কাহাত শৰণে পুতাই বঞ্চিবেক কাল। ঠ। অঙ্গদাই মোৰ প্ৰাণসম সাৰ। একো ছুঃখ নজানিলি সুখীয়া কুমাৰ॥ মই মৰি যাওঁ হেৰা অঙ্গদাই বাপি। বাপ বুলি থাকিবি কাহাৰ কোল চাপি । হৰি হৰি বিদগধ স্থবলিত দেহা। সব কুটুম্বত কৰি তাতে বৰ নেহা। আথেবেথে ৰামে মোক দেশৰ ডাকিল। স্তক্ষিবে নপাইলি ধাৰ লাগিয়া থাকিল। শুন শুন বোলোঁ মোৰ স্থগ্ৰীব সোদৰ। মন্ত্ৰা পৰিহৰি মোক কোলে চাপি ধৰ। গৰ্ভত আছিলোঁ তুই ভাই একে ঠাই। (कन देव विधित्य (भनाई ति विश्वाई । তোমাৰ আমাৰ কপালত নাহি যোগ। তুই ভাই মিলি নকৰিলে। ৰাজ্যভোগ। হৰি হৰি বালৈ মোৰ ভাৰা পটেখৰী॥ বিপাজে মৰিলে। তোৰ বচন নধৰি॥ বালীৰ কাৰুণ্য শুনি কান্দন্ত স্থগ্ৰীৱে। शंकरल-विकरल मुठि शंनिलख हिरस । কি কৰিলোঁ পাপী মই অধমত শ্ৰেষ্ঠ। ৰাজ্য লোভে হৰুয়াইলে। পিতৃসম জ্যেষ্ঠ ॥ प्ता (वार्ला पूछ जूनि हाहा त्यांव पूथ। প্ৰাণ মোৰ সঙ্কলে ভোমাৰ দেখি ছুঃখ। হেন বুলি ছুই ভাই ধৰি কোলে কোলে। নগৰী ব্যাপিল ছুইৰো ক্ৰন্দনৰ ৰোলে। থাকিলন্ত সুগ্ৰীব বালীক মন্ত্ৰা কৰি। আৰ্ত্তনাদ শুনিলম্ভ তাৰা পটেশ্বৰী। हिएस मूठि दानिया श्वामीव शाटन यारे। বানৰী সহত্রে বেঢ়ি লগতে বজাই॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

श्रामी भारम हलग्र विकरल मिन हारे। **(मश्रास वनव मार्स वानव भलाई ॥** পলাই দাবি-ছবি কৰি মনত বিভক্তে। থাৰে-থাৰে কহে কথা বানৰৰ সজে। ঝাঝ্ন দিয়া কতহোঁ বক্ষৰ আগে চৰে। বৃক্ষ এৰি কতো কতো গহৰৰত পৰে। কিচ কিচ কৰিয়া বানৰ পাৰে উকি। ৰামে পাইলে বুলি দেয় নিকঞ্চ লুকি। তাৰায়ে ৰোলন্ত শুনিয়োক কপিগণ। স্বামীৰ বাৰ্ত্তাক কহিয়োক এতিক্ষণ । कि कांबर्ग भनाई मरत वानव विभूत। অথিৰ চৰিত্ৰ দেখোঁ চিত্ত বিয়াকুল ॥ পটেখৰী আই তুমি বাৰ্দ্তাক নপাইল।। बाम कर्ल काल हुया शामिताक आईला॥ হেন বীৰ নতো দেখি নতো শুনি কাণে। অপাৰ সাগৰ বল গগন সমানে॥ ত্ৰিভুবনে কাম্পয় বালীৰ পদভৰে। হেন বীৰ মাৰিলেক একেপাত শৰে। স্বামী তোৰ নিজীৱস্ত কৈক লাগি যাস। অঙ্গদ পুত্ৰক নিয়া মৰাইবাক চাস। পৰিবৰ্ত্তি আস মাৱ কিছিল্ধা। নগৰ। ৰাজা পাতিয়োক নিয়া অক্সদ কুমাৰ 🛭 কি কিন্ধ্যা ৰাখিতে পাৰা তান বৃদ্ধি বলে। আন কপিগণ মৰে নৃপতি বিকলে। স্বামীৰ বাৰ্ডাক যেবে নিশ্চয় পাইলস্ত। হিয়ে মৃঠি হানি তাৰা দেৱী কান্দিলন্ত ॥ বানৰী সকলে বেঢ়ি প্ৰবোধ বোলন্ত। স্বামীৰ পাশক ডৰ-ডৰি আণ্ট্ৰাইলম্ভ। শুনা সভাসদ বামকথা অমুপাম। পাপৰ কঠিয়া পেলাই বোলা ৰাম ৰাম ॥



সাতা হৰণ।

তাৰাৰ বিলাপ

বালীক দেখিলা গৈয়া মূৰ্চ্ছিতে ৰৱস্তে আছে,
কথমপি আছে মাত্ৰ প্ৰাণে।
নিশ্চেষ্টে আছম্ভ পৰি উভকোল কৰি আতি,
শালি আছে ৰাঘৱৰ বাণে।

স্বামীক বেঢ়িয়া গৈয়। হৃদয়ত পৰি পৰি,
কান্দে সবে হাৰলে-বিৰলে।
সমস্তে দিশক বেঢ়ি বান্দৰী মেলেকে কান্দে,
স্বৰ্গক লভিবল সিতে। ৰোলে।

বালী ৰাজা পৃথিবীত পৰিবাৰ দেখি মই,
কি কাৰণে ধৰি আছোঁ জীউ।
অক্সদাই কুমাৰক কোলে কৰি লইয়া প্ৰভু,
কাহাৰ আগত হও ঠিৱ।

অক্সদ কুমাৰ হেৰা ক্ৰন্দন কৰন্তে আছে,
তযু তুই চৰণত পৰি।
সহস্ত্ৰেক মহাদই ক্ৰন্দন কৰন্তে আছে,
ভূমিত পৰিয়া গড়াগড়ি।

শিথৰ সিন্দুৰ মোৰ খসাইলাহা প্ৰভু দেৱ, ৰাজযোগ্য আনো অলঙ্কাৰ। পতিব্ৰতা নাৰী হুইয়া কেনমতে ৰহিবোঁহোঁ, মহাতুঃখ বিধবাৰ ভাৰ।

মই যাক তৰ্জ্জিলোহে। সেহি মোক গৰ্জ্জিবেক,
বিৰহতে থাকিবোহোঁ পৰি।
অনাথ হৈবেক মোৰ অঙ্গদ কুমাৰ যাতো,
স্বামী সজে গৈলোঁ হত্তে লৰি॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

যাহাৰ প্ৰসাদে মই পৃথিবী মণ্ডল মাঝে, আছিলোহোঁ ৰাজৰাজেখৰী।

শক্ৰপক নৃপতিৰ যত পটেশ্বীগণ, আছিল মোতেদে সেৱা কৰি॥

আনৰ স্বামীয়ে গৈয়া মোহোৰ স্বামীয়ে গৈয়া, অস্তৰ আছিল বহু দূৰ।

হেন মোৰ প্ৰাণনাথ কিছুই কি কাৰ্য্যে যাহা, লগতে চুলিবো যমপুৰ।

আকুল-ব্যাকল কৰি ক্ৰন্দন কৰণ্ডে আছে, ৰাজাৰ কোলাত পাটখৰী।

তোমাতেসে বাঢ়িলেক তাৰাৰ স্থবাগ যত, কৈক যাহা মোক পৰিহৰি॥

আমাৰ বচন তুমি নশুনিলা প্ৰভু দেৱ, আন্ধাৰ কৰিলা দশদিশ।

আপদৰ সময়ত সুহৃদৰ বচনক, দেখিলাহা তুমি যেন বিষঃ

পুক্ৰ যেৱে ৰাজা হয় বোলাৱয় ৰাজমাৱ, অনুৰূপে সম্পদক পাই।

হাত তোলা কৰি আনি কিছু কিছু ধন দেই, যদিবা হোৱয় বাপ ভাই।

স্বামী ৰাজা ভৈল সবে সর্বস্থাৰে অধিকাৰ, হুইবে পায় মুখ্য পটেশ্বৰী। হেন প্রাণনাথ তুমি আমাক এৰিয়া যাহা, কিক লাগি প্রাণ আছোঁ ধৰি॥

শুনিয়ো স্থগ্ৰীব বীৰ স্বামীৰ সোদৰ ভাই,
তুমি শ্ৰেষ্ঠ দেৱৰ আমাৰ।
আপোনাৰ স্থখ হেতু স্বামীক মৰাইয়া মোৰ,
কুলৰ অনাইলা খিলিংকাৰ।



সীতা হৰণ।

এবে বৰ যশ পাইলা শ্ৰেষ্ঠভাইক নচাইলা,
আমাক চাহিবা কিবা আৰ ।
ভোৰ মনে স্থুখ হৌক ভায়েৰৰে লগে মোক,
গলে আনি ডাক্স দিয়া মাৰ ॥

গুণি চাও তোক বাজে বানৰ কুলৰ মাঝে,
আৰ কোন আছে ছুবাচাৰ।
শ্ৰেষ্ঠ ভাই পিতৃসম তান তই ভৈলি যম,
কিনো যশ লভিলা অপাৰ।

তাৰাৰ বিলাপ দেখি লক্ষণ স্থগ্ৰীৱ বীৰ, শ্ৰীৰামচন্দ্ৰ কুপাময়। বিপৰীত শোক শালে তিনিৰো শৰীৰ দহে, চক্ষু ঢালি লোভক বহয়॥

তাৰাই প্ৰীৰামক শাপ দিয়ে।

তাৰা বোলে চাহা ৰাম পৰম সান্ধিক।
বিমুখ সমৰে স্বামী মাৰিলাহা কিক ॥

জাজ্বলা সমান ভৈলোঁ স্বামীৰ সন্তাপে।
তোমাক দহিতে পাৰো পতিত্ৰতা শাপে॥
তোমাক শপিলে যেৱে জীয়ে মোৰ স্বামী।
তেবেসে তোমাক শপি ভত্ম কৰোঁ আমি॥
যেন আন বেলা নকৰাহা হেন পাপ।
সীমা দণ্ড থৈয়া অমুকপে দিওঁ শাপ॥
বাহুৰ প্ৰতাপে তুমি সীতাক লভিবা।
অগনিত পৰীক্ষিয়া অযোধ্যাক নিবা॥
তয়ু জায়া সীতা দেবা হস্ত মহাশান্তি।
তোমাক বিছুই অল্লকালে এৰিবন্তি॥

মই যেন মৰোঁ হেৰা স্বামীৰ বিয়োগে।
তোমাক বঞ্চিবো সীতা দেবীৰ সন্তোগে॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

বিচোহ লগাইয়া হৃদয়ত দিয়া শাল। কৰিব। কাতৰ তভোঁ যাইবন্ত পাতাল। পাছে কতোক্ষণে সন্ধুক্ষণ ভৈলা বালী। চকু মেলি কুটুম্বক চাহিলা নিহালি॥ দেখন্ত অঙ্গদ চৰণত পৰি আছে। সব বন্ধু জনে বেঢ়ি কান্দে আগে পাছে॥ ডাইন হাতে অঞ্চকে। আলিঞ্চি ধবিলা। বাম হাতে ধৰিয়া তাৰাক বোধ দিলা। পৰিচ্ছেদ কৰিয়া দেখোহোঁ ভাৰ্য্যা পোক। যমপুৰে গৈলে মোক নেৰিবেক শোক। হৰি হৰি পুত্ৰ মোৰ তাৰা পটেশ্বী। বিচোহ লগাইয়া হেৰা মই যাওঁ মৰি ॥ সন্তানক এৰিলোঁ। এৰিলোঁ। হৃদি খেদ। তোমাৰ আমাৰ ভৈল দৃষ্টি পৰিচ্ছেদ 🛚 ভৈয়াই স্থাতীৰ তই মোৰ বাক্য শুন। মৃতক ভাতৃৰ নধৰিবি দোষ গুণ। যুবৰাজ কৰি অঙ্গদক ভালে ৰাথা। মোৰ বলবীৰ্য্যে পুক্ৰ হৈব তোৰ সখা। ধুৰতে-ভাতিজ। আদিত্যকো দিবি ধাৰ। ইন্দ্ৰদেবভাভো ভয় নাইবে ভোমাৰ। তোমাৰ বিপুল বলে কিছু নহিবেক। মোৰ পুত্ৰে অনেক ৰাক্ষস মাৰিবেক॥ স্থাীৱক থ্ৰীৱে ধৰি মুখে চুমা দিল। অঙ্গদ পুত্ৰক হাতে হাতে সমর্পিল ॥ মোৰ পুত্ৰ নোহে বাপ তোমাৰ তনয়। ভাল মতে অঞ্চদক পালিতে লাগয় ৷ কুলত থাকয় যদি একোদৰ ভাই। একৰ তনয় আছে আৰু কাৰো নাই ॥ সেহি পুক্ৰ গুটি সনাহাৰে হোঁৱে সাৰ। জলপিণ্ড দানে কৰে বংশক উদ্ধাৰ ॥



সীতা হৰণ।

শুন বোলে। প্রাণ বাপ তন্য অঙ্গদ। ভোহোৰ খুৰাত পাইলি সকলে সম্পদ। আতি সেৱা এৰি ধৰ্ম্মে কৰিবি সেৱলি। আতি সেৱা কৰিয়া পাতালে গৈলা বলি। প্ৰণামোহো ৰামচন্দ্ৰ কৰি হাত যোৰ। অল্লমতি তৰল বানৰ মুখপোৰ। শৰ বিষে যতেক কৰিলোঁ। খিলিস্কাৰ। ইসব দোষক প্ৰভু ক্ষেমিবা আমাৰ । স্তবৰ্ণৰ পক্ষজ যতেক পদ্মমালা। যাক পৰিধানা শ্ৰীধৰ সম কালা। বাসরে দিলন্ত মোক মাণিকে উজ্জ্বলা। গ্ৰাৱ হন্তে কাঢিয়া দিলস্ত সেহি মালা। লক্ষণক দিয়া বা আপুনি গ্রীৱে ধবা। সুহি স্থাীৱক দিয়া ৰাজ্যক জোকাৰা। অক্সদ কুমাৰ মোৰ তাৰা পটেশ্ৰী। তুইহস্তকো প্ৰভূ পালিবাহা ভাল কৰি। বালীক প্ৰবেধি পাছে মাতিলন্ত ৰাম। ভাৰ্য্যাৰ পুত্ৰৰ শোক কৰা উপশাম ৷ তোমাত অধিক কৰি সুগ্ৰীৱে পালিব। অভিনন্দা ভাৱে ৰাজভোগকাল নিব **॥** শুনিয়ো স্থগ্ৰীৱ মিত্ৰ মোৰ বোল কৰা। বালী দেন্ত মালা আপোনাৰ গ্ৰীৱে ধৰা। শ্ৰেষ্ঠ ভাইক লাগি কিছু নকৰিবা শোক। পুষ্পৰথে চৰি যান্ত বালী স্বৰ্গলোক। लिया প্রাণ ভাই বুলি বালী মালা দিল। হৰিষ-বিষাদ মনে স্থগ্ৰীৱে পিন্ধিল। আতিশয় শোভা কৰে দশগুণে কালা। দেখি যেৰ মেৰুৰ শিখৰে সূৰ্য্য জালা॥ ভৈয়াই স্থগ্ৰাব মোৰ হেৰ প্ৰাণ যান্তি। আখৰেক মাভোহোঁ শুনিয়ো তাৰা শান্তি।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি

বিপাঞ্চে মৰিলে। ভোৰ বচন সুশুনি। পুক্ৰক পালিবি মোৰ দোষক মুগুণি। আপদ কালত তোৰ একে বুধি তৰি। মই যম ঘৰে যাওঁ বচন নকৰি ॥ এহি বুলি বালী ৰাজা ভৈলা নিশবদ। শৰ বিষে ছুই চক্ষু ভৈলন্ত তবধ। থৰমৰ ভৈল বালীৰাইৰ হাত ভৰি। অচেতন ভাৱে থাকিলন্ত দান্ত তৰি n মুখ ভৈলা নিক্বাণ নাসাত খাস নাই। পালটিল চক্ষু দুই আদিত্যক চাই॥ नीत्न दिश्नस्य वाली बाजाब निर्धाान । আজুৰিয়া কাঢ়িলস্ত ৰাঘৱৰ বাণ ॥ কধিৰে পূৰিত শৰ গাৱৰ বাজান্তি। চিকিমিকি কৰে যেন আদিভাৰ কাস্তি॥ সাগৰত স্নান কৰি কৃধিৰ গুচাই। ৰামৰ তৃণত আসি পশিল তুনাই॥ भवीवब বোদ্বালে कथिब वहि याखि। বিজুলী চটক যেন দেখি তাৰ কান্তি ॥ श्वामीक विष्या कात्म भएवश्वी लादक। স্থগ্ৰীৰ কান্দস্ত আতি জেষ্ঠভাইৰ শোকে॥ ৰামচন্দ্ৰ লক্ষণ কান্দন্ত হনুমন্ত। সৈত্যে সমে চাৰি পাত্ৰ আৰ জান্মুৱস্ত ॥ তাৰা বোলে স্বামী তুমি গৈলা পৰলোক। যমৰ পুৰত প্ৰভু স্থমৰিবা মোক॥ यांव भूठि প্रহাবে মেদিনী মেলে চিৰ। হেন স্বামী ধৰণীত তেজিলা শৰীৰ। হাঁ স্বামী তুমি কোন কাৰ্য্যক সাধিলা। স্থগ্ৰীৱক ডাকি ভ্ৰাতৃবধৃ সম্বৰিলা । ধৰ্মপথ এৰি পাপ কৰিলা সকল। অৱিলম্বে পাইলা সেই অধর্মৰ ফল ॥



সীতাহৰণ।

অন্নদ কান্দন্ত আতি বিয়াকুল চিত্ত। হাদয়ত মুঠি হানি পৰিলা ভূমিত॥ হা বাপ কি কৰি কৰিলা নিমাখিতি। মহাশান্তি মাৱ মোৰ ভৈলা অনাথিতি **৷** ৰাজাৰ কুমাৰ কান্দে ধৰণীত লুটি। হা বাপ বোলন্তে পৰাণ যাই ফুটি ॥ मीघल गहन পথে চलिला আপোনে। ত্যু ভার্য্য। পুত্র আবে পালিবেক কোনে। ৰাঘৱে বোলন্ত মিত্ৰ শুনিয়ে। উচিত। বিস্তৰ ক্ৰন্দন মুহি মুভকৰ হিত। ঝাণ্টে চিতা সাজিয়োক বহল বিস্তাৰ। তাতে তুলি কৰায়োক বালীৰ সংস্কাৰ ॥ ৰামৰ বচন যেবে ভৈলা অবসান। পাছে বীৰ লক্ষণে দিলন্ত সমিধান। শোক এৰি সুগ্ৰীৱ প্ৰেতৰ কাৰ্য্য চাহা। কৈৰ তাৰা দেবী তুমি কিন্ধিন্ধাক যাহা। চতুৰ্দ্দোল যানত বালীক নিয়া তোলা। গিৰি-নদী সমীপত শীঘ্ৰে নিয়া পোৰা। অন্নদে পিতৃৰ দিবা পিণ্ড জলাঞ্চলি। হতুমন্ত আদি সবে কাৰ্য্যক সঙ্কলি। শিৰোগত কৰিলন্ত লক্ষণৰ বোল। তেতিক্ষণে তাৰা আনাইলস্ত চতুৰ্দ্দোল। वक्रम खुशौद माना जुनिया धरिन । খুৰাতে ভাতিজে গিৰি-নদীতীৰ নিল। আনো বৰ বৰ বীৰ পৰ্বত-আকাৰ। হাতে কান্ধে বহিলম্ভ মৃতকৰ ভাব। काम्मरस काम्मरस रेलग्रा शिग्रा हजूर्यमाला। वानीक श्रुबना रेगग्रा गिवि-मनी कारल ॥ দণ্ড কাষ্ঠ কাক বলি আৰু স্নান বলি। व्यक्रम भिज्य मिना भिछ कनाञ्चनि ।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

নিজগুৰু ত্ৰাহ্মণে দিলন্ত স্বাহি পাহি। অন্তদে কৰিলা কৰ্মা বিধিৱতে চাহি॥ नानाविध पान कविलख दूरवां एमर्ग। হতুমন্ত সুগ্রীর সমস্তে জ্ঞাতিবর্গ। দানে মানে সব জ্ঞাতিলোক তৃষ্ট ভৈলা। भुभ्भवरथ **हिंब ताली ऋर्त्य हिंल रेगला** ॥ সমস্তে বানৰগণে কাৰ্য্যক সঙ্কলি। बामव हबर्ग आमि कविला (महलि॥ হতুমন্তে ৰামক কৰিলা বহু স্ততি। তোমাৰ প্ৰসাদে ভৈল বালীৰ মুকুতি॥ আষাৰেক বোলে। বুলিবাক লাগে ডৰ। ভৰি চাৰিপাঞ্চ যাইয়ো কিন্ধিন্ধা নগৰ। ৰাজ্য ঝন্ধাৰিয়ো স্থাীৱক তযু মিতা। তুমি পৰশিলে হৈব আনৰ পবিত্ৰ। ৰামচক্তে বোলন্ত শুনিয়ো বায়ুপুক্ত। আমাৰ মিত্ৰৰ অকল্যাণ আছে কৈত। বনবাস খাটো পালি পিতৃৰ আদেশ। চৌধয় বৎসৰ নাহি নগৰে প্ৰবেশ # শুনিয়োক হতুমন্ত গৰাক্ষ গ্ৰয়। মনদ দ্বিবিদ শুনা বীৰ সমস্তয়। नल गक्रमानन युर्वण नवहिं । ব্ৰহ্মাৰ তনয় ওৰা শুনিয়ো কেশৰী। তাৰ বাৰ পনস শুনিয়ো জান্তৱন্ত। দ্ধিমুখ যুথপতি আৱৰ আছস্ত॥ इस्तकाय खकाय छिनिए। वीब नीन। ঋষভ শৰভ আৰু শুনিয়ো সুশীল। সতাত্ম সম্পাতি সর্ববভক্ষ শুনিয়োক। গোলাঙ্গুল জাতি কপি আছে যতলোক ॥ সবে মহাবীৰ যেন দেৱৰ সমাজ। সবে মিলি স্থগ্ৰীৱক জোকাৰিয়ো ৰাজ।



সীভাহৰণ।

বালী স্থত মহাবীৰ আছন্ত অঞ্চ । সবে মিলি দিবা তাক্ষ যুবৰাক্ষ পদ। আমাৰ বচনে সবে হেলা পৰিহৰি। সমত্তে বানৰে যাইয়ে কিকিক্ষা নগৰী। চলিয়ো স্থাীর মিত্র লোৱা দণ্ডপাট। প্ৰজাপতি পালি আজ্ঞা কৰিবাহা ছাট। নটে ভাটে ব্ৰাহ্মণে মঙ্গল কৰস্থোক। সাম্পিলো তোমাতে তাৰা দেৱী আছম্ভোক। শ্ৰাৱণাদি মাস মুখ্য বাৰিষাৰ কাল। দিনতে আন্ধাৰ মহা মেঘৰ ঘঞাল। বানৰ লোকৰ আতো কিছু নাহি কাজ। ইটো চাৰি মাস মহাস্তুখে কৰা ৰাজ। আমি থিত হৈব প্ৰস্ৰৱণ গিৰিবৰে। সীতাৰ নিমিতে চিত্ত উত্তাৱল কৰে। কার্ত্তিক নিবৃত্তি গৈলে আগ্রহণ মাসা। সীতাক খুজিবে যেন নমাতিলে আসা। স্থগ্ৰীৱে বোলন্ত আবে ভৈল প্ৰতিকাৰ। ভাৰ্য্যাক লভিলে ৷ অকণ্টক ৰাজ্যভাৰ ৷ সীতাক খুজিবো আমি চাৰি মাস পাছে। ধাৰ লাগি মিক্ৰৰ আমাৰ গাৱে আছে॥ ৰামক প্ৰণাম কৰি ভালুক বানৰে। नगबोट्ड প্রবেশ ভৈ গৈল চপ কৰে॥ চতুৰ্দ্দোলে স্থগ্ৰীৱ ওৱাৰি পয়োসাৰ। স্থাীরে বোলস্ত বিধি প্রসন্ন আমাৰ। ওৱাৰি ভিতৰে পাঞ্চৰত্বৰ ভাণ্ডাৰ। শুভ শুভ জয় জয় ভৈ গৈল জোকাৰ॥ দণ্ড ছত্ৰ পভাকা বিচিত্ৰ নৃত্য গীত। স্থান্ধ শীতুল বাতে প্রমোদিত চিত॥ নানাবিধ চিত্ৰ খান আভি বিভোপন। দেখি স্থাীৱৰ উল্লসিয়া গৈল মন ॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

পদূলী পদূলী সবে পুতিলা তোৰণ।
স্থবৰ্ণৰ দীপ ঘট স্থগন্ধ চনদন॥
দুৰ্ববাক্ষত পঞ্চৰত্ব থৈলা নিৰন্তৰে।
পশিলন্ত স্থগ্ৰীৱ শ্ৰীমন্ত বাস ঘৰে॥
শুনা ৰামায়ণ পদ যত সভাসদ।
শুনন্তে মন্তল মিলে গুচয় আপদ।
যাৰ যেন মনৰ বাঞ্চিত পূৰে কাম।
নিৰন্তৰে নৰে ডাকি বেলা ৰাম ৰাম॥



সাধৰ কন্দলী।

দেৱজিত।

জয় জয় জগতপালক ভগরন্ত। ব্ৰহ্মা হৰ অনস্তে নপাৱে যাৰ অন্ত। জয় জয় জগতপালক নাৰায়ণ। অচ্যুত অনন্ত পূর্ণ ব্রহ্ম সনাতন ॥ जन्मा विक्रु महारम्ब याहाव <u>अक</u>न। যাহাৰ উদৰে আছে চৈধায় ভুবন। তোমাৰ শ্ৰদ্ধন প্ৰভু চৰাচৰগণ। কোটি কোটি ব্ৰহ্মাণ্ডৰ তুমি নাৰায়ণ। ২ যাহাৰ মহিমা কেহো নপাৱয় অন্ত। সকল সংসাৰ ৰঞ্জি আছা ভগৱন্ত। দিন প্ৰসল্পে পালা যত চৰাচৰ। দিন অৱসানে কৰা জগত সংহাৰ। ৩ ব্ৰহ্মা হৰ সমে সব প্ৰাণীক সংহৰি। অনস্ত শ্যাত শুতি থাকা দেৱ হৰি। ব্ৰক্তাহা পালাহা তুমি দেৱ ভগবান। পুনু ইচ্ছা ভৈলে তুমি কৰা উত্তপন্ন ॥ হেন ঈশ্বৰ কাল মূৰ্ত্তি অৱতাৰ। ওৰক নপাৱে ব্ৰহ্মা বিষ্ণু মহেশ্ব। দৈৱকীনন্দন প্ৰভূ পূৰ্ণ ব্ৰহ্ম হৰি। ভকতৰ অৰ্থে আছা নৰৰূপ ধৰি ॥ ৫ क्रक्क प्रशा वब कबा पाटमाप्तव । ভকত জনৰ প্ৰীতি সাধা বাবেবাৰ। তুষ্ট দৈত্য অস্থ্ৰনাশক ভগৱন্ত। ভকত জনৰ মন সঘনে পূৰস্ত॥ ৬

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

এহিমতে কৃষ্ণৰ অনেক কাল গৈলা। স্বৰ্গত ইন্দ্ৰৰ পাচে বৰ গৰ্বব ভৈলা ॥ অমৃতক খাই ভৈলা অজৰ-অমৰ। এহি পদে গৰ্বব বাতি গৈলেক ইন্দ্ৰৰ ॥ স্বৰ্গত নিন্দিলা মাধৱক ইন্দ্ৰে যত। সমস্তে কহিল৷ মুনি কৃঞ্চৰ আগত ৷ कुक्छब इन्मब वब लाशिला विवाम। মাধ্বে ৰচিলা পদ শুনা সভাসদ॥ ৮ কুষ্ণ যে সাৰ্থি অৰ্জ্জুনক কৰি ৰথী। অৰ্জ্জুনে ইন্দ্ৰক ৰণে কৰিলা বিৰথী॥ গুৰুৰ চৰণ ছুই হৃদয়ত ধৰি। গুৰুৰ আজ্ঞাক মনে শিৰোগত কৰি। কুষ্ণৰ চৰণে মই পশিলে। শৰণ। দেৱজিত পদক ভণিলোঁ স্থাভন। ঈশ্বৰ বাক্য যে বেদত হেন সাৰ। আৰু শুনি সভাসদ হুয়োক উদ্ধাৰ। হেন্যু পদক শুনা সভাষদলোক। চতুৰ্জ ৰূপে যাইবা বৈকুণ্ঠপুৰক। বেশস্পায়ন বদতি শুনিও জন্মিজয়। পাচে স্বৰ্গে যি কৰিল। দেৱ হৰিহয়॥ একদিন ইন্দ্র দেৱে সভাত যে বসি। নক্ষত্ৰ সহিতে যেন প্ৰকাশন্ত শশী॥ এহিমতে প্ৰকাশ কৰন্ত হৰিহয়। ইন্দ্ৰক আৱৰি বোলে দিগপালচয়। यछ किवताक हैटल आहि तमीन धिव। যেন যোগী আছে মহা কফ্টব্ৰত কৰি। অপ্সৰ। নাচয় গন্ধৰ্বেব গাৱে গীত। জয়ধ্বনি কৰম্ভ স্বৰ্গত বিপৰীত॥ ১৩ চিত্ৰসেন আদি কৰি গন্ধৰ্ব চাৰ্ছ। তাল কৰতাল ধৰি কৰম্ভ কীৰ্ত্তন।



(मत्रिक्ठ ।

निक मूनिशरण करव (वनमञ्जन्ति। বাছাৰ প্ৰচণ্ড ৰোলে মাতক বুশুনি। ১৪ যক্ত আৰম্ভিলা পাচে দেৱ পুৰন্দৰ। যভ্ৰক গৈলন্ত ত্ৰহ্মা বিষ্ণু মহেশ্ৰ॥ লগত আসিলা আৰো গুৰু বৃহস্পতি। ইন্দ্ৰৰ সভাক লাগি গৈলন্ত সম্প্ৰতি। ব্ৰহ্মা বিষ্ণু মহেশক কৰিলা সন্মান। इर्फ्य निया मिला निरक मिया निश्वान ॥ সিংহাসনে বসিলস্ত তিনিও ঈশ্ব। তিনিকো নমিলা পাচে দেৱ পুৰন্দৰ। বুহস্পতিক দিলা আনি ৰতুৰ আসন। আসনে বসিলা পাচে ব্ৰহ্মাৰ নন্দন॥ (महे (तला आंत्रिला नांबन महाश्रीय। হাতে দিবা বেণা ধৰি প্ৰম হৰিষি। ইন্দ্ৰৰ আগত ঋষি প্ৰবেশ ভৈলন্ত। পাছ-অর্ঘ্য আচমনে ইন্দ্রে পূজিলন্ত। नांबन वनिक (मद्र अना शूबन्मव। তোৰ সম দেৱ নাই স্বৰ্গৰ ভিতৰ । ১৮ কিবা যজ্ঞ হর্য় নহ্য় সুৰপতি। স্বৰূপ কৰিয়া কৈলোঁ মোৰ দৃঢ়মতি 🛭 যদি যজ্ঞ কৰিবে ভোমাৰ আছে মন। কৃষ্ণক পৃজিয়ে। আগে সহস্রলোচন ॥ कुक्षव भाषांस नटेश्टवक यख्वहस्र। আকে জানি কৃষ্ণক পূজিও হৰিহয় ৷ তোৰ আগে কওঁ মই কৃষ্ণৰ মহিমা। ব্ৰহ্মা হৰ অনস্তে নপাৱে যাব সীমা॥ কৃষ্ণক মোহিবে ব্ৰহ্মা আসিলেক লৰি। েগাৰক দামুৰি ভ্ৰহ্মা থৈলা চুৰি কৰি। **(इन एमधि कृद्धः भाग्ना कबिल**न्छ वब । त्भावक मामूबि छ्डे देवला घटव घव । २>



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

নাৰদ বদতি শুনা দেৱ হৰিহয়। কুষ্ণৰ মায়াত মই বৰ ভৈলোঁ ভয়। कृष्ण्य माग्राक प्रिथ (पद रुष्टिक्य। হংসৰ নামিয়া স্তুতি কৰিলা বিস্তাৰ ॥ পূর্ণ ব্রহ্ম কৃষ্ণত অমুজ্ঞ ব্রহ্ম লই। इःम यादन हिंब जक्तात्वादक देशवा धारे ॥ বাণক ৰাখিবে পাচে যুদ্ধ দিল। হৰ। হৰক ভঙ্গাইলা পাচে দেৱ দামোদৰ।। ২৩ জগত সংহাৰ হবে ধৰি ৰূপ ৰুদ্ৰ। কুষ্ণৰ আগত হৰ ভৈলা যেন কুদ্ৰ ॥ অজ ব্ৰহ্ম কৃষ্ণৰ যে যোগমায়। বৰ। অন্তক নপাৱে ব্ৰহ্মা বিষ্ণু মহেশ্ব। ২৪ नावम वमि छन। (मह रुविरुग्र। কুষ্ণৰ মায়াত বৰ মই ভৈলেঁ। ভয়॥ হোমক কৰন্তে কুষ্ণে হাতে শ্ৰুৱ ধৰি। घटन घटन एक्टिश महे एमहि एक्टिशन ३० কৃষণতে ভৈলস্ত যেবে বিশ্বৰূপ যত। ৰোড়শ ভাৰ্য্যাৰ ঘৰে কৃষ্ণ উপগত। কেউ ঘৰে ত্ৰাহ্মণক কৰয় সন্মান। কেউ ঘৰে কৰে আক্ষণক ৰত্ন দান। ২৬ কুষ্ণৰ মহিমা দেখি মোৰ কম্পে প্ৰাণ। সাক্ষাতে ভৈলোহোঁ মই মৃতক সমান॥ স্থিৰ নোহে মোৰ সবে কম্পে হাত ভৰি। কুষ্ণত অনুজ্ঞা লই গৈলে। স্বৰ্গে লৰি। তুমি যজ্ঞ কৰা সৰ্বব যজ্ঞত যে ভাল। মোহোৰ বচনে কৃষ্ণ পূজা দিগপাল॥ অজ ব্ৰহ্ম কৃষ্ণ পাচে ত্ৰৈলোক্যক ধৰি। হেনয় কৃষ্ণক পূজা মনত সাদরি॥ ২৮ শীঘিৰে কৃষ্ণক পূজা কৰা হৰিহয়। অক্ষয় পুণ্যক পাইবা বুলিলে। নিশ্চয়॥



দেৱজিত।

नावमब वागी छनि हेस मिश्रशान। কৃষ্ণক নকৰোঁ পূজা মই একো কাল। মোৰ পূজা ভন্ন কুষ্ণে কৰিছে পূৰ্ববত। কৃষ্ণক নকৰোঁ পূজা জানা স্বৰূপত n মোক কুম্বে অপমান দিয়া আছে অতি। নকৰোঁ কৃষ্ণক পূজা মোৰ দৃঢ়মতি॥ অধম আচাৰ কৃষ্ণ পৰ্ম নিলাজ। কৃষ্ণক নকৰে। পূজা শুনা মুনিৰাজ ॥ আপোনাৰ পুত্ৰবধ্ কৰি আছে ঘৰ। হেনয় আচাৰ কৃষ্ণ পাপমতি বৰ॥ ৩১ হেনয় কৃষ্ণক মুপুজোহোঁ কদাচিত। সত্যে সত্যে কঠে। ঋষি তোমাৰ আগত॥ মহা ৰক্ৰু কৃষ্ণ পাপমতি আতি বৰ। তাহাক নকৰে। পূজা মই পুৰন্দৰ॥ ৩২ সত্যে সত্যে বোলোঁ মোৰ বচন অভেদ। ঐক यमि আদে কৃষ্ণ কৰিবোহোঁ ছেদ ॥ মাধৱক ইন্দ্রে যে নিন্দিলা যত যত। শুনি ব্ৰহ্মা বিষ্ণু হৰে কৰ্ণে দিলা হাত॥ ৩৩ ত্ৰক্ষায়ে বোলম্ভ ইন্দ্ৰ গৰ্বৰ ভৈলা বৰ। অল্পতে কৰিবে চূৰ আসি দামোদৰ॥ মহেশ বোলয় আৰু গৰ্বব বৰ আতি। গৰ্বব খণ্ডাইবেক হৰি অৰ্জ্জুন সহিতি॥ ৩৪ विक्षुद्ध दवालय छना दम्ब रुबिश्य। তোৰ গৰ্বব ভাঙ্গিবেক কৃষ্ণ ধনপ্ৰয়॥ এহি বুলি তিনি দেৱ কৰি ক্ৰোধ মন। ইন্দ্ৰ সভাৰ পৰা উঠিলা তেখন॥ ৩৫ হংসত চৰিয়া ব্ৰহ্মা ব্ৰহ্মলোকে গৈলা। গৰুড়ত বিষ্ণু বিষ্ণুলোকে প্ৰবেশিলা ॥ ব্যভুত চৰি পাচে দেৱ মহেশ্ব। সেহি कर् हिल रेंगला रेकलाम मिथन ॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

তিনিও দেৱতা যেবে গৈলা তিনি দিশ। ইক্ৰৰ বিবৰ্ণ মুখ ঘোৰ অসন্তোষ। यञ्ज निमिक्तिल (प्रथि हेन्स्व विभन। नियाम काज्छ हेन्द्राम्द्र घटन घन ॥ नांबन वनिं हेन्त्र क्षेत्रा शुबन्मव। কুষ্ণক নিন্দাৰ ফল পাইবি বহুতৰ ॥ वर्लान नरेश्दक देश्दव अझ पिरन्। দিগপাল সমে ইন্দ্ৰ থাকা ৰক্ষমনে॥ ৩৮ এহি বুলি নাৰদ উঠিলা ক্ৰোধ মনে। শীঘ্রে চলি গৈলা ঋষি পৃথিবী ভুবনে। কুষ্ণৰ আগত ঋষি ভৈলা উপগত। নাৰদক দেখি কৃষ্ণে কৰি যোৰহাত। ৰত্নৰ আসন কৃষ্ণে দিলে আগে পাৰি। আসনে বসিলা ত্ৰহ্মা-পুত্ৰ বেণা ধৰি॥ পাভ অৰ্ঘ্য আচমনে পৃঞ্জিলা চৰণ। কুষ্ণৰ পূজাত ঋষি হৰষিত মন॥ ৪০ নাৰদ বদতি শুনা প্ৰভু দামোদৰ। ভোমাক নিন্দিলা স্বৰ্গে পাপী পুৰন্দৰ॥ ব্ৰহ্মা বিষ্ণু হৰ আগে নিন্দিলেক বৰ। নিন্দা ভানি ভৈৰ গৈলা ভিনিও ঈশ্বৰ॥ गर्वे मर्न्स व्यक्त काना देखना दम्हाबाक । তাৰ গৰ্কা চূৰ কৰি কৰা ঘোৰলাজ। আৰু ভোমাসাক বোলে অপবাদ বৰ। নৰকৰ ভাৰ্য্যা তুমি কৰি আছা ঘৰ॥ তাহাৰ নিন্দাক কুদ্ধমন ভৈলা বৰ। এতেকে ভোমাত কৈলেঁ। দেৱ দামোদৰ॥ যেহি লাগে তাক কৰা প্ৰভূ দেৱ হৰি। अर्शक हिलाला। महे मिया दिना धिव ॥ এই বুলি নাৰদ স্বৰ্গক চলি গৈলা। হেন শুনি মাধৱৰ ক্ৰন্থমন ভৈলা॥



দেৱজিত।

মাধৱে বোলস্ত কিয় নিন্দে ছুৰাচাৰ।
ইন্দ্ৰক কৰিবো আজি ছুৰ্ঘোৰ সমৰ॥ -88
সাগৰৰ ভাৰ্য্যা হৰি নিলা পুৰন্দৰ।
সাগৰক দিবো অঙ্গীকাৰ ৰাখি মোৰ॥

(मिथरय़ा कृकःब किटन यांगमाया वन । हेन्द्र व्यक्त्र्व (कर्न नगाहेना कम्मन ॥ পিতৃৰ পুত্ৰৰ দেখা ভৈলা ঘোৰ ৰণ। शर्ववभाम व्यक्त क्रांल विवर्ग वनन ॥ ১৭১ মৰণতোধিক পাচে ভৈলা স্থৰপতি দেখিয়ে। কুষ্ণৰ কেনে অনম্ভ শকতি॥ আকে জানি গৰ্বৰ নকৰিবা একোজন। তিলমাত্রো গর্ব নসহস্ত নাৰায়ণ॥ এতেকে নামক লোৱা সবে সাধুজন। कृष्य हवरण ट्रेल्ट्या जन्दर नवण ॥ তপ জপ ৰজ্ঞ দান জানা তীৰ্থ ব্ৰত। অপ্ৰয়াসে সিজে সবে নামৰ লগত ॥ ১৭৩ হেন ৰাম নাম যিটো লৱে একবাৰ। কোটি কোটি পুৰুষক কৰয় উদ্ধাৰ॥ নামতে আছম্ভ পূৰ্ণ ব্ৰহ্ম নাৰায়ণ। এতেকে নামক নেৰে ব্ৰহ্মা ত্ৰিনয়ন॥ সুৰাত্বৰ ব্ৰহ্মাণ্ডক নামে আছে ধৰি। এতেকে মহস্তে গায়ে নামক সাদৰি॥ बामकृष्ध উচ্চबिया यात्र यिटो। नरब। ভাৰ পাচে যায় কৃষ্ণ চক্ৰ ধৰি কৰে॥ 296 ৰিঘিনি পাপক কৃষ্ণে চক্ৰে কৰি ছন্ন। ভকত জনক হৰি কৰয় ৰক্ষণ ॥ ষেন ধেন্ট্ৰ নেৰে ক্ষেছে বৎসৰ যে লাগ। কৃষ্ণ ফুৰে পাচত ভক্তক কৰি সাগ॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

হেনয় কুপালু কৃষ্ণ ত্ৰৈলোক্যতে সাৰ। • কুষ্ণে পিতা মাতা ক্ৰানা ক্ৰগত আধাৰ॥ কৃষ্ণসে বাখিয়া আছে সবাবে জীৱন। যেন বায়ু অবিহনে সবাবে মৰণ।। : ৭৭ এতেকে নামক নেৰে সাধু সব নৰে। তেবেসে তৰিবা ঘোৰ সংসাৰ সাগৰে॥ সাৰ কৰি ধৰা সবে আমাৰ সন্মত। মহা পুণা পদ ৰচিলোঁহো দেৱজিত।। অৰ্জুন ইন্দ্ৰ যুদ্ধ দেৱজিত পদ। আকে শুনি সভাসদ খণ্ডিয়ো আপদ।। कृष्धव त्य यन नाम शांश विद्याहन। মাধৱে ৰচিল। পদ শুনা স্থাভন। ১৭৯ হেনয় পদক শুনিয়োক সর্ব্যক্তন। তেবেসে কৰিবা সবে বৈকুণ্ঠ গমন। হেন জানি নামক ধৰিয়ো দৃঢ় কৰি। धन कन (पथा (यन महत् हाहेब कवी ॥ ১৮० দেহা নতু নপৰস্তে কালে নতু গিলে। ধন জন জীৱন যৌবন একেতিলে। হেন জানি মাধৱ-চৰণে দিয়া চিত। তেৱেদে তৰিবা স্থাপে দুৰ্ঘোৰ কলিত ॥ ১৮১ बाम नाम टेलरशं मरत पृष् किब मन। তেৱেসে তৰিবা স্থা যমৰ কাৰণ। আকে জানি নৰ নাৰী এৰি আন কাম। পাতক চাৰোক ডাকি বোলা ৰাম ৰাম ॥ ১৮২

* * * *

হুখে ছুখে ভূখ ভৰি সদায় ঘূষিয়ো হৰি
হুখে লৈবা বৈকুণ্ঠত বাসু।
ভেৱে চক্ৰ হুদৰ্শন ৰাখিলন্ত সৰ্বক্ষণ

পাপক কৰিব সৱে নাশ।



দেৱজিত।

নামক কৰিয়ো ধন নামেদে জানিবা প্ৰাণ

নামকেদে কছে শান্তগণে।

অফ্টাদশ পুৰাণত

ভাগরতে কহে যত

তৰিবে নপাৰে নাম বিনে । ২১২

ধন জন অর্থচয়

জানা সবে মায়াময়

সমস্তে বস্তুক তেজি অতি।

সি সৱক পৰিহৰি

হৰি নাম খাণ্ডা ধৰি

পেলায়োক মোহ-জৰি কাটি।

মাধৱে ভণিলা পদ শুনা সৱে সভাসদ

এৰি সৰ্বজনে আন কাম।

পাপ সর হৌক নাশ

বৈকুণ্ঠত পাইবা বাস

ডাকি সৱে বোলা ৰাম ৰাম॥ ২১৩ আকে জানি গৰ্বব নকৰিয়া একো প্ৰাণী। পুত্র ধন জন সরে মায়াময় জানি।

দেৱতো অধিক ইতো মনুষ্য শৰীৰ।

এতিক্ষণে পৰে কেহেঁ। তাৰ নাহি থিব। ৫৭২

অনেক জন্মৰ মহা পুণা ধন দিয়া।

মনুষ্য শৰীৰ নৌকা আছাহা কিনিয়া।

মহাভয় সাগৰক তৰিবাক প্ৰতি।

যাৱে নতু ভাগে ভৰা তাৱত সম্প্ৰতি ॥

একাদশ, ইন্দ্র, নতু হোরস্ত বিফল।

যাৰ নকৰয় ব্যাধি শৰীৰ ভূৰ্বল।

তেৱে কৃষ্ণ কথা কৰা শ্ৰৱণ কীৰ্ত্তন।

মুকুতি সুথক প্ৰতি যাৰ আছে মন॥ ৫৭৪

মহাপুণা পদ ৰচিলোহোঁ দেৱজিত।

আক শুনি তৰা সৱে হুৰ্ঘোৰ কলিত॥

(मद्यक्षिष्ठ शहक श्वीनार्या अर्ववक्रम ।

দেৱজিত শুনি কৰা বৈকুঠে গমন । ৫৭%

যি সর কথাত আৰু আছে গুণ নাম।

সি সর কথাক ভজা নকৰি বিশ্রাম ॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি

অফ্টাদশ পুৰাণৰ কথা অনুসাৰ।
কৰিলোহোঁ মই দেৱজিতক প্ৰচাৰ॥ ৫৭৬
হেন দেৱজিত পদ শুনা নৰ নাৰী।
তেৱেসে সংসাৰ ছখ তৰিবাক পাৰি।
দেৱজিত পদ শুনা এৰি আন কাম।
খণ্ডোক পাতেক ডাকি বোলা ৰাম ৰাম॥ ৫৭৭

* * * *

বৈশস্পায়ন বদতি শুনিয়ো নৰেশ্ব। অৰ্জ্জুনক ধৰে পাচে দিলস্ত শঙ্কৰ। প্রলয়ত যেন কদ্রকপ ভৈলা হব। তিনিয়ে। জগত যেন কৰয় সংহাৰ॥ ৬৯৬ জকুতিকুটিল মুখ চাহন নযায়। চৰাচৰ ইন্দ্ৰ আদি দেৱ ভৈলা ভয়। দেৱ মুনি সিদ্ধ নৰ সবে ভৈলা তাস। কম্পিলেক স্বৰ্গ আৰু পৃথিবী আকাশ। ৰুদ্ৰৰ ভয়ত কম্পে সঘনে ধৰণী। ধৰ্ম ধৰ্ম স্থমৰম্ভ যত সিদ্ধ মুনি॥ এহি মতে খেদি গৈলা অৰ্জ্ঞ্নক হৰ। ৰথ হত্তে আছে দেখি দেৱ দামোদৰ। ৬৯৮ माधद दोलक मिथ छना वीबवब। তোমাক সন্মুখে খেদি আসয় শঙ্কৰ॥ বুষভত চৰি আসে দেৱ মহেশ্ৰ। কুমুদ উপৰে যেন ধৱল কেশৰ। ৬৯৯ थडल कार्षिक मम खाल कालाइब। আকাশে প্ৰকাশে দেৱ পূৰ্ণ শশধৰ। সেহি মতে জলি আসে খেদি মহেশ্ব। দেৱতাৰ স্থা হুই কৰিবে সমৰ ॥ ৭০০ দেৱতাৰ কাতৰ বচনে ত্ৰিনয়ন। • অৱশ্য তোমাক আজি দিবে ঘোৰ ৰণ ।।



দেৱজিত।

ভোমাত কহিলোঁ সখি কৰি দৃঢ় মন। আকে জানি হৈয়ে। সথি যুদ্ধে সাৱধান। अर्ब्ह्या रवालग्र मिथ छना नारमान्य। কি মতে হৰক মই কৰিবে। সমৰ। কিৰাতৰ ৰূপ ধৰি মোক দিলা ৰণ। নিচিনি কৰিলোঁ পূৰ্বের মই ঘোৰ ৰণ । ৭০২ পাচে তপ কৰি চিনি কৰিলো প্ৰণতি। মোক বৰ দিবে পাচে তান ভৈলা মতি॥ ত্রৈলোক্য দিবাক খুজিলন্ত পশুপতি। ত্ৰৈলোক্য লৈবাক মোৰ নভৈলেক মতি॥ ৭০৩ পাচে পাশুপত শৰ দিলা মোক হৰ। याक दिनि देन्छ। मानद्वव वब छव ।। বৰদাতা ঈশ্বৰ জগতগুৰু হৰ। ভাগান্ধ কি মতে মই কৰিবোঁ সমৰ ॥ সংগ্ৰাম ভিতৰে মোক যদি মাৰে হৰ। তথাপিতো তাক্ষ মই নকৰিবো শৰ॥ এহি বুলি মৌন ভৈলা পাণ্ডৰ সন্ততি। হেন শুনি মাধৱৰ অসম্ভোষ মতি॥ ৭০৫ মাধৱে বোলন্ত সখি শুনা মোৰ বাণী। অকাৰণে মন্ত্ৰ কৰা মহামানী॥ কদ্ৰক নকৰা সথি যেৱে তুমি ৰণ। তোমাক হাঁসিবে সখি যত দেৱগণ॥ ৭০৬ এতেকে দেৱৰ গৰ্বব বাঢ়িবে নিশ্চয়। मक्रवक प्रिंचि धनक्षय रेजना ज्या তোমাৰ লগত স্থি হাঁসিবেক মোক। আকে জানে যুদ্ধ তুমি দিয়ে। শক্ষৰক ॥ ৭০৭ বিকল স্বভাৱ সন্থি এবা ধনপ্ৰয়। হৰক যুঁজিয়া যশ কৰা অভ্যুদয় ৷ ঈশ্বৰ বুলিয়া যদি নকৰাহা ৰণ। তাহাৰ কাৰণ কহোঁ শুনিয়ো অৰ্জুন। ৭০৮

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

মোহোক জানিবা সখি আদি নিৰঞ্জন। কোটি কোটি ব্ৰহ্মগুৰ মই নাৰায়ণ। পূৰ্ণব্ৰহ্ম কৃষ্ণ মই নিৰঞ্জন হৰি। ভক্তৰ কাৰণে আছেঁ। নৰৰূপ ধৰি ॥ ৭০৯ ৰাক্ষস অস্থৰ ছুষ্ট দৈত্য সৱ মাৰি। পৃথিবী ভুবনে আছোঁ বৰ লীলা কৰি॥ আৰু এক কথা কহোঁ শুনা ধনপ্ৰয়। কি কাৰণে একাবিষ্ণু স্ৰেজি আছোঁ মই॥ ৭১• ৰজ সহ তম গুণে শ্ৰেজি তিনি জন। আকাশতে থাকি মই বুলিলোঁ বচন। ৰজ গুণে ব্ৰহ্মা তুমি স্ৰজা চৰাচৰ। সত্ব গুণে বিষ্ণু তুমি পালা নিৰস্তৰ॥ তম গুণে হৰ তুমি জগত সংহাৰ। এহি বুলি তিনিকো যে দিছোঁ তিনি ভাব॥ হেনয় বচন কিয় এৰি মহেশৰ। ভোমাক কৰিবে আসে সন্মুখে সমৰ॥ ৭১২ মোহোৰ প্ৰজন আৱে কাৰণ ঈশ্ব। ইহাৰ কাৰণে খেদ এৰা বীৰবৰ। পূর্ণব্রহ্ম শব্দব্রহ্ম কৃষ্ণব্রহ্ম পূর্ণ। অদুত অনন্ত পূৰ্ণব্ৰহ্ম নিৰঞ্জন ॥ ৭১৩ অনাদি অনন্ত হৰি নিত্য সনাতন। নিৰাময় নিৰ্বিকাৰ দেৱ নাৰায়ণ॥ মংস্থ কৃৰ্ম ৰাম আদি অংশে অৱতাৰ। পূৰ্ণব্ৰহ্ম ভই আছোঁ দৈৱকী কুমাৰ॥ ৭১৪ জন্ম অপবাদ মাত্ৰ মোৰ জন্ম শৃত্য। একো কালে জন্ম মোৰ নাহিকে অৰ্জ্জুন॥ জন্ম মৃত্যু নাহি মোৰ পূৰ্ণব্ৰহ্ম হৰি। ভকতৰ অৰ্থে আছোঁ নৰৰূপ ধৰি ॥ ১১৫ মোহোৰ ইসৱ মায়া শুনা মহাবলী। नमर् थांगीक आएं। मात्रार्य विकलि ॥



দেৱজিত।

যিতো জনে মোৰ নলৱয় নাম গুণ। তাহাকে তোমাৰ হাতে মাৰাও অৰ্জুন 』 ৭১৬ ব্ৰহ্মা হৰ অনস্তে সেৱন্ত মোক নিতি। তুমিও কৰাহা পথি মোহোত ভকতি। যদি মহাদের জান। আপুনি ঈশ্ব। কিসক মোহোক সেৱে শুনা বীৰবৰ ॥ ৭১৭ মোৰ পূৰ্বৰ আজ্ঞা কিয় এৰিলা সম্প্ৰতি। তোমাক ষু জিবে খেদি আসে পশুপতি॥ হৰে সমে যদি ত্ৰিজগতে দেই ৰণ। बर्ग साहाबिरव करहा वृत्तिला वहन ॥ १३৮ তুমি মই সথি একে ব্ৰহ্ম অৱতাৰ। মুহিকে তোমাৰ সম ত্ৰকা মহেশ্ৰ॥ বিষ্ণু আদি চৰাচৰ সৱে দেৱচয়। তোমাৰ সমান কেহো নোহে ধনপ্ৰয়॥ 930 হেন জানি স্থি তুমি হেলা প্ৰিহৰি। হৰক কৰিয়ে। ৰণ শাৰত্বক ধৰি। আগে বুলি আছা তুমি বীৰত্ব বচন। চৰাচৰ সমে হৰ দেই যদি ৰণ॥ ৭২० সেহি দিন মিলিল শুনিয়ো ধনঞ্জয়। কদ্ৰৰ সহিতে যুদ্ধ কৰা মহাশয়॥ তোমাৰ যশস্তা গাইবেক সিদ্ধ মুনি। তোমাৰ নিৰ্মাল যশে যুবিব ধৰণী॥ ৭২১ আকে জানি হৰক যুঁজিয়ো ধনপ্ৰয়। হৰক যুজিয়া যশ কৰা অভ্যুদয়॥ कृष्धव वहरून अर्ज्जूनव वन्न रेजना । गांधबक हां है वौरब वृत्तिवांक टेलला॥ १२२ হৰক কৰিবো ৰণ শুনা নাৰায়ণ। হৰক জিনিবো মই বুলিলো বচন।। অৰ্জ্জুনৰ বাণী শুনি মাধৱ বদতি। হৰক যুঁজিবে স্থি দৃঢ় কৰা মতি॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

ভোমাক মাৰম্ভা সখি নাহি একো জন। . আকে জানি হৰক কৰিয়ে। ঘোৰ বণ। এহি মতে কথা মাতে আছে ছুয়ো জন। বুষভ বাহনে হৰ আগে উপসন্ন ॥ ৭২৪ বিজুলী চমকে হৰ আগত ৰহিলা। उलवल कवि (भक्रमन्मव लविला॥ সপ্তসাগৰক টেউ পৰ্ববত লঞ্চিবলা। কুন্তীৰ মগৰ মানে পাতালে পশিলা॥ ৭২৫ চৰাচৰ সিদ্ধ নৰ সৱে ভৈলা ত্ৰাস। কম্পিলেক স্বৰ্গ আৰু পৃথিবী আকাশ। মহেশ বদতি শুনা হেৰা দামোদৰ। দেৱতাৰ যুদ্ধ ভৈলা তোহোৰ অন্তৰ ॥ ৭২৬ দেৱতাৰ অৰ্চ্ছনৰ কৰাইলিহি ৰণ। তোহোৰ কাৰণে দেৱসেনা ভৈলা ছল। व्यक्ति व्यक्तिक माबि निर्दा यमघव। কিমতে ৰাখহ তাক দেখো দামোদৰ। ৭২৭ স্বভাৱে কপটা তই নিলাজ যাদৱ। অদোষতে বাণ ৰাজাক কাটিলি মাধৱ ৷ তাৰ প্ৰতিফল দেওঁ থাক। স্বৰূপত। কৰ-যুদ্ধ নকৰোঁ সুশুধি অৰ্চ্ছ্ৰুনত॥ ৭২৮ পাপ পুণ্য নাই শুনা পাণ্ডুৰ সম্ভতি। মোক যুদ্ধ কৰা তই দৃঢ় কৰি মতি॥ যদি মই তোক মাৰেঁ। যাইবা বিষ্ণুলোক। মোক যদি মাৰ। যাইবোঁ শিৱৰ পুৰক। ৭২৯ দিবি কি নেদিবি যুদ্ধ কহা দৃঢ় কৰি। সহৰে না যাইবো যুদ্ধ নকৰিয়া ফিৰি॥ হেন শুনি মাধৱে কৰিল। পাচে হাস। ত্ৰিপুৰত হল্তে হৰ ভৈলি বৰ ত্ৰাস॥ ৭৩০ পাচে হৰ তই মোত পশিলি শ্ৰণ। তোহোক ৰাখিলোঁ মই কৰি ঘোৰ ৰণ॥



দেৱজিত।

ৰসকুণ্ড খাইলোঁ মই ধেমু ৰূপ ধৰি। তেবেদে অস্ত্ৰ তই পেলাইলিহি মাৰি ॥ ৭৩১ হেন মহেশ্ব তোৰ দেখিছোঁ মহন্ত। ত্ৰিপুৰত হল্তে হৰ দৰ্প ভৈলা হত॥ কি মতে অৰ্জ্জুন মাৰা দেথোঁ মুনিসাই। অৰ্জ্বত হাৰি ৰণ যাইবিহি পলাই॥ ৭৩২ माध्यव वहरन कज्जब दक्रांध वब। জকৃতিকৃতিল মুখ দেখি লাগে ভৰ ॥ ওৰ কুস্থমৰ বৰ্ণ লোচন যে তিনি। জ্বলিবে লাগিল ধেন প্রলয় অগনি॥ 900 পিনাক ধমুক হবে টঙ্কাৰিল। ধৰি। ধমুৰ প্ৰচণ্ড শব্দ পাচে গৈলা চৰি। ধনুৰ প্ৰচণ্ড শব্দ স্বৰ্গক পূৰিলা। তাৰ প্ৰতিধ্বনি লাগি পৃথিবী লৰিলা। অৰ্জ্জুন বদতি প্ৰভু শুনা মহেখৰ। আগে তুমি কৰা মোক শৰৰ প্ৰহাৰ ॥ পাচে প্রভু তুমি মোক নেদিবাহা দোষ। মোৰ শৰ পাই হইবা মনত সম্ভোষ। ৭:৫ এহি বুলি শাৰঙ্গ ধমুক ধৰি কৰে। **ढेकाब कबिला धनक्षय वीववरब ॥** ধসুৰ প্ৰচণ্ড শব্দ উঠিলেক ৰোল। পূৰিলেক দশোদিশ স্বৰ্গৰ যে কোল। প্ৰচণ্ড শব্দৰ ৰোলে পৃথিবী পৃৰিলা। সাগৰ খলকি ডউ আকাশে লভিবলা ॥ তাৰ প্ৰতিধ্বনি পাচে ৰুক্তক গৈলা ধাই। ধনুৰ প্ৰচণ্ড শব্দে বিমৃচিছতপ্ৰায় ॥ পিনাকত জুৰি হবে ৰচে দশ বাণ। প্ৰথমতে অৰ্জ্ৰক কৰিলা সন্ধান। व्यकिटिन हिल्ला भव दिन्धि लोटा छव । অৰ্জ্বনৰ হিয়াত পৰিলা দৃঢ়তৰ। ৭০৮

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

মাধৱক কল্ডে শৰ হানিলা হাজাৰ। শৰজালে মাধৱে দেখিলা অন্ধকাৰ ॥ इस्टेरमत माध्वय निमया हवन । পাচে নমিলস্ত বীৰে দেৱ ত্ৰিনয়ন । ৭৩৯ দ্ৰোণৰ চৰণ ছুই হৃদয়ত ধৰি। পুনু প্রণামিলা মাধরব পারে পবি। শাৰত্ব ধনুক বীৰে বাম কৰে ধৰি। মাৰিলেক শৰ দশ হাজাৰ সত্তৰি॥ ৭৪০ আকাশে ঢাকিলা যাই অৰ্জুনৰ শৰ। বুকে পিঠি কোষে ভেদিলেক শক্ষৰৰ ॥ অৰ্জ্জনৰ প্ৰহাৰে হৰৰ ক্ৰোধ বৰ। অৰ্জ্জুনক লাগি হানিলন্ত অগ্নি শব ॥ ৭৪১ আকাশ গগণ ছানি আসে ঘোৰ বহিং। সাক্ষাতে দেখিয়া যেন প্ৰলয়ৰ অগ্নি॥ হেন দেখি নসহিলা অৰ্জ্জ্নৰ তমু। বাম হাতে ধৰিলা শাৰক নিজ ধন্ম ॥ ৭৪২ বহ্নি যে বাণক প্রতি হানি বহ্নি বাণ। আকাশতে হৰ বাণ কৰিলা নিৰ্যাান ॥ অস্ত্ৰ ছল্ল ভৈলা দেখি হৰ ক্ৰোধ মন। অৰ্জুনক চাই হৰে বুলিলা বচন । ৭৪০ বহ্নিশৰ নাশ কৰি গৰ্মৰ ভৈলা তোৰ। কদ্ৰশৰ হানি তোক পঠাওঁ যমঘৰ॥ এহি বুলি ৰুদ্ৰশৰ হানি মহেশ্ব। পিনাকৰ গুণে যুৰিলম্ভ দৃঢ়তৰ ॥ ৭৪৪ অস্ত্ৰৰ প্ৰভাৱে কম্পে পৃথিবী পাতাল। সাগৰৰ ঢউ যেন পৰ্বত সচল ॥ স্বৰ্গ কোল কম্পিল লৰিল মেৰুগিৰি। কম্পি গৈলা যেন সসাগৰা বস্তুৰ্মৰি। 982 ৰুদ্ৰ মন্ত্ৰ পঢ়ি প্ৰহাৰিলা মহেশ্ব। যেন মেৰুগিৰি যায় গগন ভিতৰ॥



দেৱজিত।

সেহি মতে শৰ যায় আকাশত চলি। প্ৰলয়ৰ অগ্নি যেন দশোদিশে জ্বলি॥ অজ্বি দেখন্ত কদশৰ আসে ধাই। (अहि (वना कम्पन्य देनना धनक्षत्र ॥ ৰুদ্ৰৰ শৰক ৰুদ্ৰশৰ প্ৰহাৰিলা। বিধুম অগনি হুই গগনে চলিলা। ৭৪৭ যেন মহা গৰুড়ে সর্পক গৈলা ধাই। মাৰিলা সৰ্পক যে গৰুড়ে লাথ পাই॥ সেহি মতে অৰ্জ্বৰ ক্সশৰ যায়। হৰশৰ বিনাশ কৰিলা শৰে পাই ॥ ৭৯৮ इबब (य क्फ्रेंगब वार्थ छ्या रेगला। তল বল কৰি মহীমন্দৰ লৰিলা॥ ক্তৰ্শৰ ছন্ন কৰি অৰ্জ্জুনৰ শৰ। বেগে যাই পশিলেক তুণে অৰ্জুনৰ 🛚 ৭৪৯ আত অনন্তৰে ধনপ্ৰয় মহাবীৰ। কুৰি শৰে ভেদিলন্ত কদ্ৰৰ শৰীৰ। তীখাল চোকাল দিব্য হানিলন্ত শব। পুনু পুনু তাৰিলন্ত শৰীৰে হৰৰ। ৭৫0 বুষভক মাৰিলন্ত বিংশতি নৰাচ। কেঙ্কাই ফোপাই গৈল কুৰি হাত পাচ॥ অৰ্জ্জুনৰ কৰ্মা দেখি কুপিলন্ত হৰ। অৰ্জ্জুনক লাগি প্ৰহাৰিলা দিবা শৰ। মনো জয় বেগে শৰ চলে আকাশত। অদ্ধচন্দ্ৰ মাৰে বীৰে কাটিলা বাটত।। ভন্ন ত্রিকন্তিকা আৰু মাৰে ত্রিনয়নে। অৰ্জ্জুন হিয়াত শৰ ভেদিলা সন্ধানে ॥ ৭৫২ শৰৰ প্ৰহাৰে অৰ্জ্জুনৰ ক্ৰোধ বৰ। শঙ্কৰক লাগি লৈলা ত্ৰহ্মদত্ত শৰ ॥ শাৰত্বৰ গুণে জুৰি প্ৰহাৰিল। টানি। আকাশে চলিলা যেন প্রলয় অগনি। ৭৫৩

2-6

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

मर्मा मिन खूबि याग्र रघांब **उका**राण । ব্রহ্মা আদি দেরগণ ভৈলা কম্পমান ॥ চৰাচৰ সিদ্ধ সবে লৱৰি পলাইলা। ঘোৰ মূৰ্ত্তি ধৰি অস্ত্ৰ শঙ্কৰক ধাইলা॥ দশো দিশ আকাশ ঢাকিলা নিৰন্তৰ। শক্ষৰক ধাই গৈলা বিদ্যাত সঞ্চাৰ ॥ ব্ৰহ্ম অন্ত্ৰ দেখি শঙ্কৰৰ ভৈলা ডৰ। আথবেথ কৰি হৰে লৈলা ব্ৰহ্ম শৰ॥ পিনাকক জুৰি প্ৰহাৰিলা মহেশ্বৰে। মনোজয় বেগে চলে বিহুতে সঞ্চাৰে॥ অজ্জুনৰ ব্ৰহ্মবাণ ব্ৰহ্মবাণে পাই। আকাশত ব্ৰহ্মবাণ কৰিলেক ক্ষয় ॥ ১৫৬ অৰ্জ্জনৰ ব্ৰহ্মবাণ সংহাৰি সেইক্ষণে। পুসু পশিলন্ত যাই শক্ষৰৰ ভূণে। ব্ৰহ্মবাণ চল্ল দেখি অজ্জুন বদতি। আপোনাক ৰাথা আজি দেৱ পশুপতি॥ ৭৫৭ অযুত নিযুত লক্ষ হাজাৰে হাজাৰ। ছুয়ো হাতে শৰাচ্ছন্ন কৰে বীৰবৰ॥ আৰু প্ৰহাৰিলা লক্ষ কোটি দিবা শৰ। এহি মতে শৰ প্ৰহাৰয় বীৰ বৰ । ৭৫৮ দিশ পাশ আকাশ ঢাকিল নিৰন্তৰ। মৰ্মস্থান চাই বীৰে ভেদে কলেৱৰ। জৰ্জনিত ভৈলা হৰ অৰ্জ্জনৰ শৰে। বুকে কোষে পিঠি শৰে ভেদে নিৰস্তৰে॥ 900 विकल विश्वल छुडा छुटल मर्ह्यं । धनक्षरत्र करन त्मांक मध्य ममन ॥ পিঠি পাচে কোষে শৰ কৰয় প্ৰহাৰ। পিঠিক ভেদিয়া মোৰ বুকে ওলায় শৰ। अगुमारन जानिएना भावक मार्थतव। ভাতে সে পৰয় চতুৰ্দ্দিশে চানি শৰ ॥



(मद्यक्ति ।

বিশাল তীখাল যে প্ৰচণ্ড ঘোৰ বাণ। মোহৰ শৰীৰে পৰে বজ্ঞৰ সন্ধান ॥ ৭৬১ ভালেতো দেৱতা গণে হাৰিলেক ৰণ। সৱেয়ো মোহোত যাই পশিলা শৰণ॥ এহি বুলি মহেশ্ব ক্রোধে জ্বলি গৈলা। যুগান্ত কালৰ যেন কদ্ৰূৰপ ভৈলা॥ ৭৬২ সেহি মতে ক্ৰোধ কৰি দেৱ মহেশৰ। অৰ্জ্যুনক মাৰে শৰ হাজাৰে হাজাৰ॥ মাধৱক প্ৰতি প্ৰহাৰিলা কোটি বাণ। শৰৰ সন্ধানে কৃষ্ণ ভৈলা কম্পমান ॥ ৭৬৩ চাৰি দিবা শৰ চাৰি ঘোঁৰাক হানিলা। ত্রিশ যে অযুত হাত পাচ গুচি গৈলা॥ তীখাল চোখাল আৰু হানিলেক শ্ৰ। অৰ্জ্জুনৰ হিয়াত পৰিলা দৃঢ়তৰ। ৭৬৪ আৰু দশ নৰাচ মাৰিলা মহাৰাগে। অৰ্জ্জুনৰ হিয়াত পৰিল মহাবেগে॥ হৰৰ বিক্ৰম বৰ দেখি ধনপ্ৰয়। ক্ৰোধত জলিলা বহিংশিখা যেন প্ৰায়। অৰ্জুনে বোলন্ত সখি হুয়ো সাৱধান। ৰথক কৰিয়ে। থিৰ পূৰ্ববৰ সমান॥ মহেশক কোটি কোটি মাৰে। শৰচয়। বিহবল কৰোহোঁ আজি দেখা কুপাময়॥ এহি বুলি প্ৰহাৰিলা বিশাল দিবা শৰ। জাজ্জ্বলা সমান হই চলিলা সহৰ॥ इवंद क्रमर्य भरद वक्रव मन्तरिन। ঢলিয়। পৰিল হৰ বুষভৰ যানে॥ ৭৬৭ দেৱতাৰ দেখি বৰ চমক লাগিল। অৰ্ভ্নৰ শ্বাৰে আজি মহেশ পৰিল। मर्ट्शक मर्द्ध एमख एमथि **व्यर**हरून। মহা অসম্ভোষ মনে কৰম্ভ ক্ৰেন্দন।

অসমীয়া সাহিতাৰ চানেকি।

বিধাতা আমাৰ হুখ লেখি আছে কত। অৰ্জ্জুনৰ শৰে যে মহেশ ভৈল। হত ॥ অনাথা লোকক কোনে কৰিবেক ত্ৰাণ। হা বিধি আমাৰ হে উৰি গৈল প্ৰাণ ॥ ৭৬: এহি বুলি দেৱে কৰে হাহাকাৰ বাণী। অল্লসত দেৱগণ পলাই দিশ চানি॥ কতো বেলি চেতন লভিলা ত্রিনয়ন। অৰ্জ্জুনক গৰ্জি হৰে বুলিলা বচন । ৭৭০ মই অচেতন ভৈলোঁ ভোহোৰ যে ৰণে। তোহোৰ সমান বীৰ নাহি ত্ৰিভূবনে॥ পূৰ্বের ব্ৰহ্মা বুলি আছে মোহক বচন। অৰ্জ্নৰ সম তুমি নহা ত্ৰিনয়ন ॥ ৭৭১ ব্ৰহ্মাৰ বচন মিলিলেক সাৰে সাৰ। তথাপি কৰিবো মই তোহোক সমৰ। এহি বুলি হৰে পাচে ক্ৰোধত জ্বলিলা। একশত ব্ৰহ্মবাণ গুণত জুৰিলা॥ ৭ ।২ মন্ত্ৰ পঢ়ি মহাদেৱে প্ৰহাৰ কৰিলা। জাজুল্য সমান হই আকাশে চলিলা॥ দশোদিশ আকাশ চলিয়া বেগে যায়। প্ৰলয়ৰ বহ্নি যেন দেখি লাগে ভয়॥ ৭৭৩ স্থৰ মুনি সিদ্ধ সৱে ভাগিয়া পলায়। এহিমতে ত্ৰহ্মশৰে অৰ্চ্ছুনক ধায়॥ ব্ৰহ্মবাণে খেদি আসে দেখিলা অৰ্জ্জুন। শাৰক ধনুক বীৰে ধৰে ক্ৰোধ মন। ৭৭৪ একশত ব্ৰহ্মবাণ আনিলা অৰ্জ্জুনে। শাৰত্বৰ গুণে জুৰিলন্ত ক্ৰোধ মনে। মন্ত্ৰ পঢ়ি ধনপ্ৰয় কৰিলা প্ৰহাৰ। আকাশে চলিলা শৰ বিদ্যুৎ সঞাৰ॥ ৭৭৫ বজ্ৰৰ সন্ধানে অৰ্জ্জুনৰ শব পৰি। ক্ষণেকে ৰুদ্ৰৰ শ্ব পেলাইলা সংহাৰি।



মহেশৰ শত ব্ৰহ্মবাণ কৰি ছয়। পুনু অৰ্চ্চ নৰ বাণ পশিলম্ভ তৃণ। ৭৭৬ হেন দেখি মহেশৰ ক্ৰোধ গৈলা জলি। पिता प्रभ भव **अ**शविला (शैंश तूलि॥ অৰ্জ্জুনৰ হিয়াত পৰিলা দশ শৰ। নিঢালে পৰিলা বীৰ পাণ্ডৰ কুমাৰ। মাধৱক হানিলন্ত দিব্য শ্ৰচয়। শ্ৰজালে মাধৱে দেখিলা তমোময় n কতো বেলি চেতন লভিলা ধনপ্রয়। মাধৱক দেখিলন্ত শৰে তমোময়। ৭০৮ মহেশৰ শৰে কৃষ্ণ ভৈলা জৰ্জ্জৰিত। হেন দেখি ক্ৰোধত জ্বিলা পাণ্ডুস্তুত।। লক্ষ শত অযুত হাজাৰ শৰচয়। मकारन एडिंगि वीर्य इवव क्रमग्र॥ আৰু দিব্য ক্ৰপতি ধনপ্তয়ে আনি। শাৰক্ষৰ গুণে জুৰি পঠাইলেক হানি॥ আকাশে চলিলা শৰ বিধৃম অগনি। দহিবে খোজয় যেন প্ৰলয়ৰ বহ্নি॥ ৭৮० শঙ্কৰৰ হিয়ে পৰি পিঠি বাজ ভৈলা। দেৱতাক লাগি শৰে সেহি মতে ধাইলা॥ কাটি ছিক্সি শৰপাত পাতালে পশিলা। সাগৰত স্নান কৰি সেই স্থানে আইলা। অৰ্চ্ছুনৰ তৃণত পশিলা আসি বাণ। হেন দেখি ৰুক্ত পাচে ক্রোধে কম্পুমান। মহেশ বদতি শুনা হাওবে অৰ্জ্জুন। তোক মাৰি খেদাওঁ আজি যমৰ কাৰণ। व्यातक दमद्रक बर्ग कविलिशि इस । **সশ্य সমূৰে** বেটা মোক কৰ ৰণ ॥ ইন্দ্ৰ আদি দেৱতাক নকৰিলি ভাল। দেৱক মাৰিয়া তই হৈবি দিগপাল॥ ৭৮৩

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি

मिश्रशाल टेक्**वि उहे शाक मां**त्रशास्त । দিগপাল পাতি থওঁ যমৰ ভুবনে॥ সাৱধান হৈবি বুলি দেৱ পশুপতি। হানিলেক অৰ্জুনক তুৰ্বাৰ শকতি॥ विश्वाम भवरम भक्ति हत्न मिश हानि। প্ৰলয় কালৰ যেন বিধৃম অগনি ॥ জাকে জাকে অগনি যে চলে শীঘগতি। ধনপ্ৰয়ে দেখে আসে তুৰ্বাৰ শক্তি K আথবেথ কৰি বীৰে শাৰঙ্গক টানি। দিবা পাঞ্চ অৰ্দ্ধচন্দ্ৰ পঠাইলৈক হানি ॥ আকাশে চলিলা শৰ বিহ্যুত সঞ্চাৰে। মহেশৰ শক্তিত পৰিলা দৃঢ় তৰে॥ ৭৮৬ শৰ চেৰাই চলি আসে শক্তি বেগে ধাই। দশদিশ ঢাকি আসে প্ৰলয়ৰ জুই। হেন দেখি অৰ্জ্জুনৰ ক্ৰোধ গুৰুতৰ। শক্তিক লাগিয়া হানিলস্ত ব্ৰহ্মশৰ॥ ৭৮৭ জাজ্ব্য অগনি জ্বি যায় ব্ৰহ্মবাণ। শক্তিত পৰিলা যেন বজ্ৰৰ সন্ধান। আগমুৰি সিয়ো শৰ পৰি মহীতলে। বৰ বেগে চলে শক্তি গগনমগুলে ॥ অৰ্জ্জুনে দেখন্ত ব্ৰহ্মবাণ ভৈলা ছন্ন। ক্ৰোধত কম্পন্ত বীৰ পাণ্ডুৰ নন্দন॥ পাচে বৰ কোপ মনে বীৰ সব্যসাচী। ব্ৰহ্মাৰ দিবাৰ ঘোৰ শক্তি লৈলা বাচি। মাধৱৰ ভূণত থাকয় সৰ্ববকাল। বিদাৰিতে পাৰে মেক মন্দৰ পাতাল ৷ সেহি শৰ ধনপ্তয়ে পঠাইলেক হানি। আকাশে চলিলা ধেন প্রলয় অগনি ৷ অৰ্জ্জুনৰ শক্তিয়ে শিৱৰ শক্তি পাই। প্ৰচণ্ড অগনি জ্বলি কৰিলন্ত ক্ষয়॥



শক্তি ছন্ন কৰি শক্তি শীত্ৰকেগ আসি। অৰ্জ্জনৰ তৃণত যে থাকিলন্ত পশি হেন দেখি সিদ্ধ মূনি কৰে জয় জয়। মহেশৰ শক্তি বিনাশিলা ধনপ্তয়। অৰ্জ্জুনৰ সম বীৰ নাহি ত্ৰিভুবনে। এহি বুলি প্ৰশংসা কৰিলা সিদ্ধগণে। ৭৯২ মহেশে দেখন্ত মোৰ শক্তি ভৈলা ছন্ন। চন্দ্ৰহাস খড়গ ধৰি কৰিলা সন্ধান। আকাশৰ পত্তে শৰ যায় গুৰুতৰ। সাক্ষাতে দেখায় যেন চক্ৰ মাধৱৰ। চক্ৰাকাৰে খড়গ যায় দেখি লাগে ভৰ। আকাশত যায় যেন বহ্নি প্ৰলয়ৰ॥ খড়গ দেখি অৰ্জ্জনৰ ক্ৰোধ গুৰুতৰ। মাধৱৰ খড়গ ধৰি কবিলা প্ৰহাৰ। ৭৯৪ मरनोक्स दवरश हिन यांग्र त्य शशन । মহেশৰ খড়গক কৰিলা খান খান। আকাশৰ পৰা খডগ শীঘ্ৰ কৰি আইলা। অৰ্জ্জুনৰ হাতে আসি উপসন্ন ভৈলা॥ ৭৯৫ খড়গ ছন্ন দেখি পাচে দেৱ ত্রিলোচন। পিনাক ধনুক ধৰিলন্ত ক্ৰোধমন। তীখাল চোথাল হৰে ক্ৰশৰ আনি। প্ৰহাৰ কৰিলা কোপে পিনাকক টানি । মনোজয় বেগে শীত্ৰ চলে ঘোৰ বাণ। আকাশৰ মেঘগণ কৰিলা নিৰ্য্যান ॥ অৰ্জ্জুন দেখন্ত মোক প্ৰতি আসে বাণ। ষুগান্ত কালৰ যেন বহি সম বাণ॥ ৭৯৭ তিখাল চোখাল ইটো ক্ৰপতি বাণ। প্ৰহাৰ ৰুবিলা ক্ৰোধে পাণ্ডুৰ নন্দন ॥ বিছ্যুত দঞ্চাৰে চলে মাৰুতৰ বাট। হৰশৰ কাটিয়া পেলাইলা আকাশত। ৭৯৮



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

অমোঘ শ্ৰৰ কথা কহন নযায়। আকাশৰ পৰা বায়ু বেগে গৈলা ধাই। হৰৰ হিয়াত পৰি প্ৰিঠি বাজ ভৈলা। সাগৰত স্নান কৰি শীঘ্ৰবেগে আইলা। অৰ্জ্জুনৰ তৃণত পশিল। বেগে শৰ। ইন্দ্ৰসমে দেখি পাচে ত্ৰিদশৰ ডৰ। হৰৰ মনত বৰ বিসায় লাগিলা। অযুত নিযুত শৰ প্ৰহাৰিবে লৈলা। আৰু প্ৰহাৰিলা হৰে কোটি দিবা শৰ। স্বৰ্গসমে পৃথিবী ভৈলেক একাকাৰ। অৰ্ববুদ নিৰ্ববুদ শৰ প্ৰহাৰিলা খঙ্গে। দেখি সুৰ নৰ মুনি পলায় বিভক্তে । ৮০১ দিবসতে ৰাত্ৰি ভৈলা ঘোৰ অন্ধকাৰ। নবহে প্ৰন নাহি ৰবিৰ সঞ্চাৰ। ক্ষণেকে অৰ্জ্জুনক শৰে অদৃশ্য কৰিলা। সাগৰ পৰ্ববত মহী সকলে কম্পিলা। ৮০২ ব্ৰহ্মাণ্ড ভিতৰে সবে ভৈলা শৰ্ময়। ব্ৰহ্মা আদি দেৱগণ ভৈলন্ত বিশ্বায়॥ হেন দেখি অৰ্জ্জুনৰ নসহিলা তমু। বাম হাতে ধৰিল। শাৰক নিজধনু । ৮০৩ দিব্য ক্ৰপতি এক কোটি শীঘ্ৰে আনি। শাৰত্ব আজুৰি বীৰে পঠাইলেক হানি। মনোজয় বেগে শৰ চলে শীঘ্ৰ কৰি। আকাশতে সিয়ো শৰ পেলাইলা সংহৰি ॥ ৮০৪ मर्गापिर्ग व्यक्ति श्रामिला भवत्र । হৰশৰ বিনাশ কৰিলা ধনপ্ৰয় ৷ আকাশ গগন মহী কৰয় প্ৰসন্ন। मिश (य विभिश छोकि वहस शहन ॥ bod ञञ्जहम प्रिथ द्वारिश क्विलेख इव । অৰ্চ্ছ নক শকৰে হা নলা কোটি শৰ।



তীথাল চোথাল মহেশৰ দিবা শৰ। অৰ্জ্জনৰ হিয়াত পৰিলা দৃঢ়তৰ 🎩 আৰু পাঞ্চ হাজাৰ হানিলা সেহি ছেগে। অৰ্জ্জুনৰ হিয়াত পৰিলা বৰ বেগৈ। মহেশৰ শৰক সহিয়া অবিকলে। নহালিলা মেক যেন বায়ুৰ আন্দোলে॥ সেহিমতে অৰ্জ্জুন থাকিলা ৰথে চৰি। পৰ্বতৰ মধ্যে যেন মহা মেৰু গিৰি॥ নিৰ্ভয় নিঃশঙ্ক পাণ্ডপুত্ৰ ধমুৰ্দ্ধৰ। লীলায় যুঁজন্ত যেন মত সিংহবর। ৮০৮ সেহি মতে সমৰ কৰম্ভ ধনপ্ৰয় ৷ অৰ্জ্জনৰ কৰ্ম দেখি মহেশৰ ভয়। মোহোৰ প্ৰহাৰে আৰু নকম্পে শৰীৰ। তৈলোক্যবিজয় ইটো জানো মহাবীৰ॥ বজ্ৰৰ সন্ধানে মোৰ পৰে শ্ৰচয়। কিঞ্চিতো নকম্পে বীৰ পাণ্ডুৰ তনয়॥ এহি বুলি ক্রোধে জ্বলি গৈলা মহেশ্ব। পিনাকত যুৰিলন্ত ছয় ব্ৰহ্মশৰ ৷৷ ৮১০ ত্ৰহ্মমন্ত্ৰ পঢ়ি প্ৰহাৰিল। মহেশ্বৰে। ব্ৰহ্ম-অন্ত চলি যায় গগন ভিতৰে। বিধুম অগনি জাকে জাকে বাজ হুই। मर्मामिम **ঢাकिय़ा वश्य (यन खूरे । ৮**>> আকাশৰ মেঘগণ কৰিয়া নিৰ্জ্জন। মহাবেগে ধাই আসে শক্ষৰৰ বাণ। অৰ্জ্জনে দেখন্ত ত্ৰহ্মবাণ আসে ছানি। ছয় ব্ৰহ্মবাণ বীৰে পঠাইলেক হানি॥ আকাশে চলিলা অৰ্জ্জনৰ ব্ৰহ্মবাণ। হৰশৰ আকাশতে কৰিলা নিৰ্যান ॥ হৰশৰ বিনাশিয়া ছয় ব্ৰহ্মশৰ। বৰ বেগে পশিলন্ত তণে অৰ্জ্জুনৰ। ৮১৩

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

হৰশৰ বিনাশিয়া বীৰ ধনঞ্জয়। ক্ৰোধত কম্পয় বীৰ অগনিব নয়। ক্রোধ অপমানে পাওপুত্র গৈল। জলি। দশ দিবা নৰাচ হানিলা হোঁহ বুলি॥ আকাশে চলিলা শৰ বহিঃসম জ্বল। হৰৰ হিয়াত পৰিলক্ত হলাহলি। পিঠি পাচে বাজ হই গৈলেক নিকলি। মাকতৰ বাটে শৰ শীঘ্ৰে যায় চলি। ৮১৫ অৰ্জ্জুনৰ হাতে যাই উপসন্ন ভৈলা। ধনঞ্জয় পুনু সেহি শৰ প্ৰহাৰিলা ॥ জাজ্বা অগনি জ্বি চলে দশশৰ। শক্ষৰৰ হৃদয়ে ভেদিলা দৃঢ়তৰ ৷ ৮১৬ বিমূৰ্চিছত ভৈলা হৰ দেখি তমোময়। ক্ষণেকে চেতন পাইলা ব্ৰহ্মৰ তনয়। চেতন ভৈলম্ভ হৰ লভিয়া হতাশ। অ**ৰ্জ**ুনে কৰিলা ৰণে মোক বৰ ত্ৰাস ৷ ৮১৭ অৰ্জু নৰ সম কোনো নাই জগতত। আজি সে দেখিলোঁ মই ইহাৰ মহত্ব॥ **महिवाक भार्व हैरिंग टिमाय जूवन।** ভালেভো দেৱভাগণে হাৰিলেক ৰণ। ৮১৮ মনত বোলন্ত ইটো বীৰ অদভূত। এহি বুলি ক্রোধিলম্ভ অজব্রহ্মস্ত । ত্রৈলোক্য দহিবে যেন খুজিলন্ত হব। যুগান্ত কালৰ যেন বহিংসম শৰ। ৮১৯ তিনিয়ো জগত সবে সংহৰিবে প্ৰতি। যুগান্তৰ ৰূপ ৰুদ্ৰ ভৈলা পশুপতি॥ शाक्ष मूथ टेंडला शास्त्र (लाहन। চৰাচৰ প্ৰাণী সংহৰিবে ত্ৰিনয়ন 🕨 ৮২০ মাধৱে দেখন্ত হৰ জাজ্বা যে সম। প্ৰজা সংহাৰিবে যেন কালান্তক যম॥



মাধৱে বোলন্ত অবা শুনা প্রাণস্থি। হৰক চাহিয়ো কালান্তকসম দেখি ॥ হৰে সমে যুঁজিবাক এবা এতিক্ষণ। বিনাশিবে পাৰে হৰ তৈগ্য ভুবন ॥ দণ্ড চাৰি ৰণ এৰি মোৰ কথা ধৰ। শৰৰ যে ঘৰ বান্ধি হৰক বন্দী কৰ। ৮২২ দেৱক হৰক ঢাকি মাৰা ঘোৰ শৰ। আকাশ পৃথিবী ঢাকি বান্ধা এক ঘৰ॥ মাধৱৰ বচনে অৰ্জুন বন্ধ ভৈলা। দৃত্মুষ্টি কৰি ধনু শাৰক টানিলা। ৮২% অযুত অৰ্ব্দ শৰ গুণত চৰাইলা। শাৰত্ম টক্ষাৰি বীৰে প্ৰহাৰি পঠাইলা। এক শৰ জোৰন্তে যে দশ কোটি হয়। প্ৰহাৰন্তে লক্ষকোটি পৰে লেখ নাই। ৮২৪ অথবৰ নিথবৰ শৰ পলা মহা ঢুলি। প্ৰহাৰ কৰ্ম ধনপ্ৰয় মহাবলী ॥ তুয়ো হাতে শ্ৰাচ্ছন্ন কৰে মহাবল। প্রলয় কালত যেন মেঘে ঢালে জল। স্বৰ্গ আকাশ সবে পৃথিবীক ছানি। দেৱতাক ঢাকি শৰ প্ৰহাৰে অৰ্জ্জুনি॥ সুয়ো হাতে শৰাচ্ছন্ন কৰে ধনঞ্জয়। হাতক মনিব নপাৰ্য় দেৱচয়। ৮২৬ স্বৰ্গ আকাশৰ পৰা শৰ ঘৰ সাজি। নিমিষে অৰ্জ্জুনে এক ঘৰ থৈলা দাজি। इर्द भरम इन्द्र आपि एपड निवस्त्व। भवारक कविला वन्मी घ**वव** ভिতৰ ॥ ৮২৭ দেৱ সমে গৃহৰ ভিতৰ ভৈলা হৰ। ত্ৰকান্ত্ৰ মুনি দেখি ৰক্ষ কৰে বৰ ॥ जन्मार्य त्वानस माधू माधू वीव माव। পাণ্ডুবংশে নৰৰূপে ভৈলা অৱতাৰ॥ ৮২৮

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

তোমাৰ যশভা গাইবেক সৱে মুনি। তোমাৰ নিৰ্দ্মল যশে পৃৰিবে ধৰণী। এছি বুলি ব্ৰহ্মা আদি সুৰ নৰ মুনি। পুষ্প বৰষিলা অৰ্জুনৰ মাথে ছানি ॥ ৮:৯ সিটো ঘৰ ভেদিবে নপাৰে দেৱগণে। একে শ্লপাণি দেৱ মহেশ্ব বিনে। দেৱ সমে গৃহৰ ভিতৰ ভৈলা হৰ। দেখি কৃষ্ণ অৰ্জ্জুনে যে হাঁসিলা বিস্তৰ ॥ ১৩০ মাধৱে বোলন্ত সখি শুনা ধনপ্তয়। ঘৰৰ ভিতৰ ভৈলা যত দেৱচয় ৷ অছেদ অভেদ মোৰ শৰৰ যে ঘৰ। **टिं** जिम्हित निर्मात क्षेत्र निर्म क्षेत्र निर्मा क्षेत्र क्षेत्र निर्मा क् ত্ৰহ্মা বিষ্ণু নোৱাৰিবে ঘৰ ভেদিবাক। ভোমাত কহিলোঁ সখি মই দৃঢ় বাক॥ চৰাচৰ সিদ্ধে নোৱাৰিবে মহামতি। শূলৰ প্ৰহাৰে ভেদিবেক পশুপতি॥ অৰ্জ্ৰক চাই হৰি বুলিলা বচন। শীঘ্ৰে চলা ছুয়ো যাওঁ স্বৰ্গৰ ভুবন ॥ অদিতি মাৱক ছুয়ো কৰোহোঁ প্ৰণতি। অদিতি মারত দোষ মাগোহোঁ সম্প্রতি॥ তৈৰ পৰা আসি যুদ্ধ কৰে"। ধনঞ্জয়। ইহাক লাগিয়া তুমি নকৰা সংশয়। ইহাক ৰণত তুমি কৰিবা বিৰথী। তেবে তোমাসাক জানিবেক বুলি ৰথী। ৮৩৪ হেন শুনি অর্জ্জুনে বুলিলা মাধরক। শীঘ্ৰে ৰথ ডাকি প্ৰভু চলিও স্বৰ্গক॥ অৰ্জ্জুনে বোলস্ত সথি চপৰাই মাথ। শীত্রে চলা স্বর্গে যাওঁ বাহা দিব্য ৰথ । অৰ্চ্চ নৰ বচনতে প্ৰভু দেৱ হৰি^{*}। ঘোঁৰাক দিলেক পাচে চাবুকৰ বাৰি॥



সব্য স্থাীর মেঘ পুষ্প বলাহক। মনোজয় বেগে হৰি ডাকিলা ৰথক ॥ খৰতৰ বেগে যে মাধৱে ডাকে ৰথ। ক্ষণেকে পাইলেক যাই মাৰুতৰ পথ।। মাক্তৰ বাট চেৰাই পাইলা আকাশ। নিমিষে পাইলেক যাই স্বৰ্গৰ যে পাশ।। ৮৩৭ স্বৰ্গৰ হুৱাৰ ভেদি ৰথ ডাকে হৰি। নিমিষে পাইলেক যাই অমাৱতীপুৰি॥ ৰথৰ নামিয়া যে অৰ্জ্জুন দামোদৰ। भोरब भीरब **हिल रेशला अमि** जिब घव ॥ ४०४ ৰত্বৰ আসনে বসি আছে মহাগতী। সাক্ষাতে দেখিয়া যেন হৰৰ পাৰ্বতী॥ সেহি মতে বসি আছে দেৱতাৰ মাৱ। চৌপাশে আৱৰি আছে দেৱকস্থাচয়॥ ৮৩৯ কুষ্ণ ধনপ্রয় দুয়ে। সবিনয় তুই। প্ৰণাম কৰিলা অদিতিৰ পাৱে ছুই । অদিতিক দণ্ডৱতে নমি বনমানী। হেন দেখি অদিতি ধৰিলা আকোৱালি॥ ৮৪০ মাধৱক বসাইলন্ত ৰতুৰ আসনে। একাসনে বসিলন্ত পাণ্ডৰ নন্দনে॥ মাধৱক চাই সতী বুলিলা বচন। তোমাৰ লগত বসিলস্ত কোন জন॥ মাধৱ বদতি তুমি শুনিয়োক আই। এহিতো পাওৰ পুত্ৰ নাম ধনপ্ৰয়॥ নিমিত্ত যে পাণ্ডুপুত্ৰ ইন্দ্ৰৰ তনয়। তোমাসাৰ নাতি এত্তে জানিবা নিশ্চয়॥ অদিতি বদতি পুত্ৰ শুনা নাৰায়ণ। কিসক আসিলি ছয়ে। স্বৰ্গৰ ভূবন। মোহোৰ পাশক ছুয়ো আঙ্গিলি কিসক। শীঘ্ৰ কৰি আজি পুত্ৰ মোত কহিয়োক॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

হেন শুনি মাধরে মাতিলা মনে গুণি। কি কার্যো আসিছেঁ। আই শুনিয়ো গোসানী॥ মোক ইন্দ্রে নিন্দিলা স্বর্গত যত যত। কি কহিবো আই মই ভোমাৰ আগত॥ ৮৪৪ তোমাত কহিলোঁ মই শুনিয়োক আই। ইন্দ্ৰক কৰিবো ৰণে মৃতক পৰায়॥ প্ৰাণমাত্ৰ ৰাখিবো যে শুনা স্বৰূপত। মৰণসদৃশ মই কৰিবো ৰণত। ৮৪৫ দেৱতাৰ মুখে শুনি যুদ্ধৰ কাৰণ। অনেক বুলিবা আই ছুৰ্ববাক্য বচন। তোমাত কহিয়া দোষ এৰাইলোহেঁ। আই। দিয়োক মেলানি ষাওঁ ইন্দ্রক যে ধাই। ৮৪৬ মাধৱৰ বচনে হাদিতি বোলে বাণী। দেৱতাক ধাই শীঘ্রে যোৱা চক্রপাণি ম দিলোহো মেলানি পুত্ৰ শীঘ্ৰ কৰি যাওঁ। সন্থ সমৰে আজি ইন্দ্ৰক ভঙ্গাওঁ। অদিভিক নমি পাচে অৰ্জুন শ্ৰীহৰি। ৰথত চৰিলা ছুয়ো বিমন্দ্ৰ কৰি। বাঘ জৰি ধৰিয়া ঘোৰাত দিলা বাৰি। চাৰি দিব্য ঘোৰা চলে উৰ্দ্ধমুখ কৰি॥ ৮৪৮ স্বৰ্গক চাৰিয়া পাচে আকাশ এৰাইলা। মাৰুতৰ বাট চেৰাই ৰণভূমি পাইলা। আকাশৰ পৰা যেন শুক্ল মেঘচয়। সেহি মতে ৰথে চৰি কৃষ্ণ ধনপ্ৰয়। ৮৪৯ বৈশম্পায়ন বদতি যে শুনা জন্মেজয়। গৃহৰ ভিতৰে যি কৰিলা দেৱচয়। দিশ বিদিশক নপার্য় দেরভাই। উশাহ নপাই ঘূৰি ফুৰে দেৱুটয়। ৮৫० हेट्स (य प्रथस भारत वक्रमर्भ घर । হেন দেখি ক্ৰোধত জ্লিলা পুৰন্দৰ॥



(मदक्षित ।

पृढ़ान्न धपुक हेरल देकांव कविना। বাচি বাচি অৰ্দ্ধচন্দ্ৰ গুণত যুৰিলা। মল্ল পঢ়ি প্ৰহাৰ কৰিলা হৰি হয়। ঘৰত পৰিয়া ইন্দ্ৰ শৰ ভৈলা ক্ষয় ॥ অন্ত্ৰ ছন্ন ভৈলা দেখি ক্ৰোধে স্থৰপতি। ব্ৰহ্মাৰ ডিবাৰ শব ধৰিলা সম্প্ৰতি॥ ৮৫২ ধমুৰ গুণত যুৰি প্ৰহাৰ কৰিলা। প্ৰলয়ৰ জুই যেন আকাশে চলিলা। ঘৰত পৰিলা ব্ৰহ্মশৰ বেগে যাই। আগমূৰি সিয়ে: শৰ পৰিলা ভোটাই ৷ ৮৫৩ इन्द्रब প্रहाब त्यत्व तार्थ रेह्या रेशना। ছেন দেখি মহেশ্বে ত্রিশূলক লৈলা॥ দন্ত কাম্ৰিয়া হৰে শূল প্ৰহাৰিলা। উৰ্দ্ধে আৰ্দ্ধে সাত হাত ঘৰক ফালিলা॥ ৮৫৪ (यहि (वना चवक कानिना मर्ड्य । **(**সহি বেলা অৰ্জ্জনৰ শৰ নিৰম্ভৰ । আকাশৰ পত্তে শীঘ্ৰ বেগে যাই শৰ। তৃণত পশিলা তেবে বীৰ অৰ্জ্বনৰ। ৮৫৫ वन्मी (य छिह्ना इव मर्म रमद्रशन। স্বৰগ আকাশ মহী ভৈলা স্থাসন। অৰ্জ্জুনক দেখি পাচে দেৱ মহেশ্ৰ। পিনাকত দিবা শৰ যুৰিলা সত্ব। ৮৫৬ কৰ্ণমানে ধণু টানি কৰিলা প্ৰহাৰ। আকাশে চলিল শৰ বিদ্যুত সঞ্চাৰ। অৰ্জ্জুনৰ গাৱে পৰি বজৰ সন্ধান। নকম্পিলা শব ছোটে পাণ্ড্ৰ নন্দন ॥ ৮৫৭ মাধরে বোলন্ত সাধু সাধু বীৰসাৰ ॥ হৰ-শৰ প্ৰহাৰে নকম্পে কলেৱৰ॥ व्यर्द्धात दोलख सोव नाहि कि इ खरा। তুমি মোৰ সহায় যদি ভৈলা কৃপাময়। ৮৫৮



অসমায়। সাহিত্যৰ চানেকি।

এহি বুলি ধনপ্লয়ে ধৰিলা শাৰস। ় ভয় ভীত নাই যেন প্রমন্ত মাতস্ব।। ভল্ল দশ পাত শৰ ধণুগুণি যুৰি। প্ৰহাৰ কৰিলা বীৰে শাৰপত যুৰি ৷ ৮৫৯ হৰৰ হিয়াত শৰ পৰিলা সন্ধানে। শৰৰ সন্ধানে হৰ কম্পে ঘনে ঘনে ॥ কম্পমান ভৈলা হব দিবা শৰ পৰি। বুষভ পলাইলা পাচে কত দূৰে লৰি। ৮৬০ বৃষভক চাই হৰে বোলে ৰহ ৰহ। ঘোৰ শৰ হানি অৰ্জ্জনৰ ভাকে। গহ। হৰৰ বচনে ফিৰে বুষভবাহন। বতাসে ফিৰাইলা যেন শুক্ল মেঘখান ॥ ৮৬১ সেহি মতে বুষভক ফিৰাই মহেশ্বে। পিনাক ধণুক ধৰিলন্ত বাম কৰে। অযুত নিযুত হৰে হানিলন্ত শৰ। মাৰুতৰ বাটে চলি যায় গুৰুতৰ ॥ ৮৬২ আৰু লক্ষে লক্ষে হৰে হানিলন্ত শৰ। আকাশ পৃথিবা ঢাকি বহে নিবন্তৰ ॥ হৰশৰ ভেদি চলে বজ্ৰ সম ধাৰ। মহেশৰ শৰীৰত পৰিলম্ভ শৰ। ৮৬৩ অর্দ্ধে উর্দ্ধে পিঠি কোষে সন্ধানে যে ফুটি। বোম্বাল আকাৰে বহি তেজ যায় ছুটি॥ আৰু প্ৰহাৰিলা ধনপ্ৰয়ে শৰচয়। সন্ধানে ভেদিল যাই হৰৰ হৃদয়। ৮৬৪ হৃদয়ত পৰি শৰ পিঠি বাজ ভৈলা। ইন্দ্ৰক লাগিয়া শৰ সেহি মতে ধাইলা। বাসৱৰ হৃদয় ভেদিলা দৃত্তৰ। আকাশৰ পত্তে যায় দেখি লাগে ডৰ ৷ ৮৬৫ অৰ্জ্জুনৰ তৃণত পশিলা শৰ্চয়। मिथ ञ्च-गक्तर्यं क्या क्या क्या ।।



হেন দেখি মহেশ্বৰে হানি মেঘশৰ। আকাশ ঢাকিয়া ভৈলা ঘোৰ সন্ধকাৰ। আকাশত কৰে ঘোৰ গৰ্জ্জন আক্ষাল। কুষ্য অৰ্জ্জুনক বেঢ়ি বৰিষয় জল। হर् भव विषय अर्द्ध्न एमिना। বাচি আনি বায়ুবাণ গুণত যুবিলা। ৮৬৭ মন্ত্ৰ পঢ়ি ধনপ্ৰয় পঠাইলেক হানি। প্রচণ্ড আন্দোলে চলে আকাশত ছানি। গিৰ গিৰ শবদে যে হৰ মেঘ যাই। নিৰ্জ্জনক লাগি বায়ু নিলা উৰুৱাই। ৮৬৮ হেন দেখি আনিলা পর্বত পাঞ্চবাণ। আথবেথ কৰি হৰে কৰিলা সন্ধান॥ তেতিক্ষণে বায়ু নিবতিয়া নিলা হৰ। আকাশত হুই ৰৈলা পাঞ্চ গিৰিবৰ। বায় নিবৰ্তিলা অৰ্জ্জনৰ জোধ টান। বজ্ৰবাণ হানি পৰ্ববতক কৰি ছন্ন। পাচে বায়ু মেঘশৰ উৰুৱাই নিলা। নিৰ্জ্জনে পেলাই পুনৰপি আসি ভৈলা॥ ৮৭০ অঞ্জুনৰ তুণত পশিলা বায়ুশৰ। दिन्ध दिन्द्राध्य क्रिक्त देशका दिन स्टब्ध्य । অৰ্জ্বনক হৰে হানিলেক শত বাণ। ভেদিলেক হৰে অৰ্জ্জুনৰ মৰ্মস্থান॥ হৰৰ শৰত নকম্পত বীৰবৰ। প্ৰচণ্ড অগনি যেন জলে কলেৱৰ ॥ আতি বৰ ক্ৰোধত অৰ্চ্চুন গৈলা ছলি। শনাইবাৰ তীক্ষ শৰ হাতে লৈলা তুলি ॥ মহামন্ত্ৰ পঢ়ি প্ৰহাৰিলা মহাবলী। জাজ্ঞা সমানে চলে অগ্নি সম জলি। হৰৰ-হিয়াত শৰ পৰিলা সন্ধানে। कप्तय विपादि अब खलाईला एउथरन । ৮৭०



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

भावव প্রহাবে হব ভৈলা তমোময়। সন্ধুক্ষণ ভৈলা পাছে ব্ৰহ্মৰ তনয়॥ ८ छन निख्या इब छाए। मान मन। দেৱতাৰ আগে মই বুলিলোঁ বচন ॥ ৮ 18 অৰ্জ্জুন সহিতে মই কৰিবোহোঁ ৰণ। সমৰত মাৰি অৰ্জ্জুনক কৰে। ছল। यमि नामारबार्टी रहारब अलोकांव इन । এহিসে কাৰণে কৰে। ছুৰ্ঘোৰ যে ৰণ। ১৭৫ মৰণ কালত কোনে কৰিবেক ত্ৰাণ। ইহাৰ প্ৰহাৰ যেন বজৰ সন্ধান। এহি বুলি মহেশৰ ক্ৰোধ গুৰুতৰ। পিনাকত যুৰিলম্ভ দশ অগ্নিশৰ ॥ ৮৭৬ প্ৰহাৰ কৰিলা হৰে পিনাকত টানি। আকাশে চলিলা শৰ বহি সম ছানি। জাকে জাকে অগনি নিকলে তুই বাজ। প্ৰচণ্ড আন্দোলে চলে গগনৰ মাজ। অৰ্জ্জনে দেখন্ত অগ্নিশৰ আসে চানি। আথবেথ কৰি বীৰে অগ্নি শৰ আনি॥ শাৰত্বত যুৰি শৰ কৰিলা প্ৰহাৰ। শঙ্কৰৰ অগ্নিশৰ কৰিলা সংহাৰ ৷ ৮৭৮ তীখাল চোখাল দিব্য বত্ৰিশ যে শৰ। শাবক ধণুত যুবিলম্ভ বীৰবৰ। কৰ্ণমানে ধনু টানি কৰিলা প্ৰহাৰ। আকাশে চলিলা শৰ বিদ্যুত সঞ্চাৰ। ১৭৯ मत्नाक्षय त्वरश यांग्र व्यक्त्नव भव । বক্ষস্থলে ভেদিলেক দুৰ্জ্বয় হৰৰ। হৃদয় বিদাৰি পিঠি পাচে ওলাই শৰ। তৃণত পশিলা যাই বীৰ অৰ্জ্জুনৰ ॥ ৮৮० শৰৰ প্ৰহাৰে হৰ জৰ্জ্জৰিত ভৈলা.। অথাকে অৰ্চ্ছ নে শৰ প্ৰহাৰিবে লৈলা॥



(मद्रकिछ।

ভল্ল ভিণ্ডিপাল যে নৰাচ কনিয়ালী। আৰু দিবা নানা শৰ হানে মহাবলী॥ . ৮৮) শিলিমুৰ সৰ্পমুখ ত্ৰিকণ্টিকা দণ্ড। ইসব প্ৰমুখ্যে শৰ হানে অপৰ্য্যস্ত । আৰু অসংখ্যাত শৰ হানে ধনপ্ৰয়। निमिक्त एकपिला वीर्य इबब कामग्र ॥ ५४२ ছয়ে। হাতে শৰাজ্ঞন্ন কৰে বীৰবৰ। হাতক মনিবে নপাৰয় মহেশ্ব॥ ভৰ কুমুমৰ বৰ্ণ দেখি কলেৱৰ। পলাশ ফুটিলা যেন বসন্ত কালৰ । ৮৮৩ क्रमग्र विमाबि एक वर्ष्ट निबस्त । হেন দেখি অৰ্জ্জুনৰ ক্ৰোধ গুৰুতৰ । অসংখ্যাত শৰ প্ৰহাৰিলা হোঁহ বুলি। মতেশৰ পাশে শীত্ৰ বেগে গৈলা চলি। ৮৮৪ এহি মতে শৰ যেবে অৰ্জ্জুনে হানিলা। দশোদিশ আকাশ যে অন্ধকাৰ ভৈলা॥ তুইকো তুই শৰ প্ৰহাৰন্ত মহাবল। হৃদয় বিদাৰি শৰ পশয় পাতাল। ৮৮৫ শক্ষৰে হানয় ধনগুয় কদ্ৰ শৰ। দিশ পাশ আকাশ ঢাকিলা নিৰন্তৰ ॥ দিবসতে ৰাত্ৰি ভৈলা ঘোৰ অন্ধকাৰ। নবহে পৰন নাহি ৰবিৰ সঞাৰ। ৮৮৬ আৰ শৰ অৰ্জ্জনও পেলাইলেক হানি। काञ्चना ममारन नव यात्र पिन डानि॥ হৰৰ হিয়াত পৰিলেক বৰ টানে। उिल পৰিলেক হৰ বৃষভৰ যানে॥ ৮৮৭ কতো ৰেলি চেডন লভিলা মহেখৰ। চেতন পাইয়া গৰ্জি বোলে শ্লধৰ॥ হাওঁৰে অৰ্জ্জন ভোক মাৰি কৰে। নাশ। কুষ্ণৰ সহায় পাই মুনিষ বোলাস॥ ৮৮৮

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

এহি বুলি হৰে আনি হাজাৰেক বাণ। . পিনাকৰ গুণে যুৰি কৰিলা সন্ধান **॥** অৰ্জুনে হানিলা ছুই হাজাৰ যে শৰ। শক্ষৰৰ শৰ সবে কৰিলা সংহাৰ ৷৷ ৮৮৯ যেন যুদ্ধ ভৈলা পূৰ্বেব বলি বাসৱৰ। সেহি মতে যুদ্ধ ভৈলা হৰ অৰ্জ্জুনৰ ॥ যুদ্ধ দেখি চৰাচৰ চমক লাগিলা। তুই অন্তে ঘোৰ যুদ্ধ কৰিবাক লৈলা। হেন দেখি মহেশৰ ক্ৰোধ জ্বলি গৈলা। প্ৰলয়ৰ বহিত্সম শৰ প্ৰহাৰিলা : আথবেথ কৰি হবে মাৰি শৰ পাত। জাজ্ল্য সমানে চলে মাকতৰ বাট॥ ৮৯১ অৰ্জ্জনেও সেই বেগে হানে দশ বাণ। বিস্থাদ শবদে চলে অগ্নি সম থান॥ অৰ্জ্জনৰ শৰে শক্ষৰৰ শৰ পাই। আকাশতে হৰশৰ কৰিলন্ত ক্ষয় ॥ ৮৯২ অস্ত্ৰ ছব্ন ভৈলা দেখি ক্ৰোধিলস্ত হৰ। সহস্ৰ হাজাৰ প্ৰহাৰিলা ব্ৰহ্মশৰ । আকাশ ঢাকিয়া যায় জ্বলি ঘোৰ বহিন। শুষিলন্ত জলে যেন প্রলয় অগনি। ৮.১৩ হেন দেখি অৰ্জ্জুনৰ ক্ৰোধ ভৈলা টান। লক্ষ কোটি ব্ৰহ্মবাণ কৰিলা সন্ধান। জাজ্বা সমানে চলে অৰ্জ্জনৰ বাণ। হৰ-শৰ আকাশতে কৰিলা নিৰ্য্যাণ। ৮৯৪ হৰ-শৰ ছল কৰি মাধৱৰ শৰ। তৃণত পশিলা যাই বীৰ অৰ্জ্জুনৰ। ব্ৰহ্মবাণ ছন্ন দেখি হৰ গৈলা জ্বলি। পাঞ্চ অৰ্দ্ধচন্দ্ৰ প্ৰহাৰিলা হোঁহ বুলি॥ ৮৯৫ ি বিজুলী চমকে শৰ শীঘ্ৰে যায় চলি। অৰ্জ্জুনৰ হিয়াত পৰিলা হলাহলি।



বায়ুবেগে শৰ যাই পাতালে পশিলা। সাগৰত স্নান কৰি শীঘ্ৰে আসি ভৈলা।। ৮৯৬ মহেশৰ ভূণত পশিলা বেগে শৰ। হেন দেখি অৰ্জ্জুনৰ ক্ৰোধ গুৰুতৰ। তৃণে হাতে নাৰায়ণ অন্ত বীৰে আনি। শাৰত্বৰ গুণে যুবি প্ৰহাৰিল। টানি। ৮৯৭ বিধুম অগনি ভই চলে দিশ ছানি। দেখি হাহাকাৰ কৰে চৰাচৰ প্ৰাণী। বিস্বাদ শৱদে হৰ হৃদয় ভেদিলা। ঢলোঁ। পৰোঁ কৰি হৰ বুষভে পৰিলা। ৮৯৮· হাতৰ পৰিলা খদি পিনাক যে ধনু। ঘনে ঘনে কম্পায় হৰৰ সবে তকু॥ কতো ক্ষণে স্বস্থ পাচে ভৈলা মহেশ্ব। কোটি কোটি লক্ষে লক্ষে প্রহাবিলা শব ॥ ৮৯ আৰু অৰ্ববুদেক শব প্ৰহাৰিলা বলে। আকাশ ঢাকিয়া যাই গগনমণ্ডলে॥ অৰ্জুনে দেখন্ত শব আদে আকশিতে। অৰ্ভুনেও শৰ প্ৰহাৰিল। অতি হ্যাতে॥ এক শৰ প্ৰহাৰন্তে লক্ষ কোটি হুই। প্ৰহাৰ কৰন্তে শৰ লেখাজোখা নাই ৷ অৰ্ব্ৰদ হাজাৰ কোটি পল্ম মহা ঢুলি। ছুয়ো হাতে শ্ৰাচ্ছন্ন কৰে মহাবলী। ৯০১ व्याकाम जाकिया (यन (भएच जांदन कन। সেহি মতে শৰ প্ৰহাৰয় মহাবল। আকাশ ঢাকিয়া ভৈলা ঘোৰ সন্ধকাৰ। নবহে প্ৰন নাহি ৰবিৰ সঞ্চাৰ। ৯০২ হৰ-শৰ সংহাৰিয়া অৰ্জ্জনৰ শৰে। निमक्ति एङिनिना मर्हणव करनवर्व ॥ তেজে ভলবল ভৈলা হৰৰ সৰ্বব কায়। বিহবল ভৈলন্ত হৰ শ্ৰুতি বৃদ্ধি নাই। ৯০৩



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

ক্ৰোধ মনে পাচে জুলি গৈল। মহেশ্ব। খড়গ ধৰি দেৱ দিল। নামে বৃষভৰ। অভ্ৰেক শিৰক কাটিবে যাই খেদি। যেন ভয়ক্ষৰ এক বহি যায় নদী। ৯০৪ সেহি মতে কোপে খেদি যায় পশুপতি। অৰ্জুনক খেদি যান্ত লৰে বস্থমতী। অৰ্জ্জনে দেখন্ত খড়গ ধৰি আসে হৰ। শীঘ্ৰে ধৰিলন্ত বীৰে অৰ্দ্ধচন্দ্ৰ শৰ। ৯০৫ দিবা অৰ্দ্ধচন্দ্ৰশৰ প্ৰহাৰিলা ডাটি। হৰৰ হাতৰ খড়গ পেলাইলেক কাটি। খড়গ কাটা গৈলা দেখি জলে মহেশব। ডেৱ দিয়া উঠিলন্ত বুষভ উপৰ। ৯০৬ হোঁহ বুলি ত্রিশূল হামিলা মহেশব। বিষ্ণুচক্ৰশৰে শূল কৰিলা নিবাৰ ৷ শুল বাৰ্থ ভৈলা দেখি ক্ৰোধে মহেশ্ব। ছলন্ত মহেশ যেন বহিন প্রলয়ব। ১০৭ পিনাক ধণুক হৰে ধৰি নিজ কৰে। অৰ্জ্ঞ্নক ভেদিলস্ত তিনি কোটি শৰে। মাধরক কুৰি শৰ কৰিলা প্রহাব। শ্ৰ-ছোতে গোবিদে দেখিলা অন্ধকাৰ ৷ আৰু চয় নৰাচ হানিলা মহেখৰে। হলাহলি পশিলন্ত কুফাৰ শৰীৰে॥ হেন দেখি অৰ্জ্জনৰ ক্ৰোধ গুৰুতৰ। শাৰজ টকাৰি বীৰে যুৰি বিষ্ণুশৰ। বিষ্ণুমন্ত্ৰ পঢ়ি প্ৰহাৰিলা ধনঞ্জয়। স্থৰ নৰ মুনি দেখি ভৈলন্ত বিশায়। বিত্যুত সঞ্চাৰে হৰ-জদয় ভেদিলা। বিশ্ৰুতি বিজ্ঞান হুই বুষভে পৰিলা। পাচে শ্ৰুতি পাই হৰ উঠি বুৰ্যভৰ। व्यक्तिव वधक हिन्तिना गरहश्व ।



মহাপাশুপত শৰ হৰে গুণি পাইলা। পিনাক টক্ষাৰি হবে গুণত চৰাইলা। পাশুপত্ৰ অন্ত হৰে যুৰিলেক যেবে। স্তুৰ নৰ মুনি স্বৰ্গ চাৰি পলাই তেবে॥ মেক গিৰি কম্পিলা লৰিলা বস্থমতী। ধর্মা ধর্মা সুমৰস্ত দেৱ প্রজাপতি। ১১২ সাগৰৰ ঢউ ভৈলা পৰ্বত চঞ্চল। কুন্তীৰ মগৰ মানে পশিলা পাতাল। দেৱতাই বোলে আজি মিলিলা প্রলয়। ত্ৰিজগত হবে আজি কৰিবেক ক্ষয়। ৯১৩ পাচে পাশুপত অন্ত্ৰ ঘোৰ মৃত্তি ভৈলা। সসাগৰা বহুদ্ধৰী গিৰিসে লৰিলা। অস্ত্ৰৰ ভয়ত স্বৰ্গ পৃথিবী পাতাল। ঘনে ঘনে কম্পিয়া কৰয় তল বল। ১১৪ মাধরে বোলস্ত স্থি হৈয়ে। সার্ধান। মহেশে লৈলন্ত যোৰ পাশুপত বাণ। भाव श्रुमर्भन ठळ थवा **मा**द्रशासन । **उटात अ याहेटतक शाहे मक्कबब वाटिंग । २०००** হেন শুনি মাধৱক নমি বাৰবৰ। धविलाख धनक्ष**य ह**ळा माध्यव । मर्टी मर्टी करन ठक दिशाय जुनन। জাজ্ন্য অগনি ভূই মহাবহ্নি যেন॥ মাধরৰ চক্ৰৰ যে তেজ বাঢ়ি গৈলা। অনস্ত মুখৰ যেন বহি বাজ ভৈল।। সেহি মতে মাধৱৰ ক্ৰোধ জলি গৈলা। চৰাচৰ প্ৰাণী সবে কালবৰ্গ ভৈলা॥ ৯১৭ স্বৰ্গ যে আকাশ যেন ব্ৰহ্মাণ্ড দহয়। माध्यम हक्त वन शहर स्नय एमिथ शास्त्रभक्त भव क्रमग्र लविला। কি কৰিবে পাশুপত্ৰ মনত গুণিলা।। ১১৮

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

চক্র দেখি পাশুপত্র অন্ত্র ভৈলা ডব। সোমাইলা পাশুপত্ৰ তৃণে মহেশৰ ॥ পাশুপত্ৰ শৰ যদি তৃণত পশিলা। শুভ শুভ বুলি দেৱে প্রশংসা কৰিলা। ১১৯ প্ৰচণ্ড বিশাল বীৰ পাণ্ডুৰ তনয়। যাৰ ৰণে পাশুপত্ৰ অন্ত্ৰ ভৈলা ভয়॥ এহি বুলি ত্রন্ধা আদি যত সিদ্ধগণ। कय धनक्षय वृत्ति त्यार्य घरन घन ॥ ७१० বৈশম্পায়ন বদতি যে শুনা জন্মেজয়। মাধৱৰ চক্ৰক থৈলন্ত ধনপ্ৰয়॥ শাৰক্ষ ধণুক ধৰিলন্ত বাম কৰে। হৰক ভেদিলা দশ বোটি দিব্য শৰ॥ অৰ্জ্জুনে হৰক বিন্ধিলেক থানে থানে। কম্পি কম্পি পৰিলেক বুষভৰ যানে।। বুষভক অৰ্জুনে হানিলা চাৰি শৰ। বুষভক ভেদিলন্ত শৰে অৰ্জ্জুনৰ॥ ৯২২ হৰক অৰ্জ্জুনে প্ৰহাৰিলা কোটি শৰ। আকাশ ঢাকিয়া যাই বহ্নিৰ সঞ্চাৰ॥ হৰৰ হৃদয়ে পৰি পিঠি বাজ ভৈলা। ফুৰি ফুৰি মহাদেৱ বৃষভে পৰিলা॥ ৯২৩ পাশুপত্ৰ অন্ত্ৰ পৰি গুছিলেক বল। বুষভক হৰে বোলে শীত্ৰ কৰি চল।। চল চল বৃষভ তই ব্ৰহ্মাৰ যে পাশ। অৰ্জ্জুনৰ শৰে মোৰ নোলায় উশাস॥ 958 এহি বুলি হৰে পাচে পাচক নচাই। বুষভ সহিতে হব শীঘ্রে পলাই যায়॥ হৰ পলাইলা বুলি হাঁসে দামোদৰ। শুনি সুশুনিয়া পলাই যায় মহেশ্ব ॥ ৯২৫ মহেশ পলাইলা দেখি পাণুৰ नन्द्रन । প্ৰণাম কৰিয়া প্ৰহাৰিলা শৰগণ ॥



হৰৰ আগত যাই পৰি শৰে শৰ। অৰ্জুনৰ অৰ্থে শৰে কৰয় কাতৰ ৷৷ ১২৬ মহেশক চাই অজ্জুনৰ সব শৰ। কুপ। কৰা দোষ প্ৰভু ক্ষমা অৰ্জু নৰ ॥ এহি বুলি প্ৰণাম কৰিলা সবে শৰ। শীঘ্ৰে পশিলন্ত আসি তৃণে অৰ্জুনৰ॥ ১২৭ বায়ুবেগে পলাই যায় গগনৰ কাছে। থাকিলা লুকাই হৰ ব্ৰহ্মাৰ যে পাচে॥ অজ্নিৰ শৰে হৰ বাতুল পৰায়। মহাভয়ে কম্পয় হৰৰ সৰ্বৰ কায়॥ ৯২৮ ব্ৰহ্মায়ে দেখন্ত হৰৰ গাৱ নোহে থিৰ। অৰ্জ্ডুনক ভয়ে কম্পে হৰৰ শৰীৰ। হৰক সন্মুধি ত্রন্ধা বুলিলা বচন। কিসক কৰাহা ভয় দেৱ ত্ৰিলোচন॥ ৯২৯ পূৰ্বের মোৰ বাক্য কুশুনিলা মহেশ্ব। অৰ্জ্জুনক দিলা যাই তুৰ্ঘোৰ সমৰ॥ যদি তুমি আমি চৰাচবে দেওঁ ৰণ। বলে নোৱাৰিবোঁ মই বুলিলোঁ বচন।। ৯৩০ মহেশ বদতি শুনা দেৱ পশুপতি। অৰ্জ্জুনে কৰিলা ৰণে মোক বিসন্ধতি।। অঙ্গীকাৰ ছন্ন দেখি আত নাই ডৰ। আতে থাকি ৰণ চাওঁ ইন্দ্ৰ অৰ্জ্জুনৰ॥ এহি বুলি ব্ৰহ্মাৰ আগত মহেশ্বৰ। মহাৰঙ্গে থাকি হৰ ব্যভ উপৰ।। অৰ্জ্জুনক ভয় এৰি দেৱ মহেশ্ব। থাকিলন্ত হৰ বসি গগন ভিতৰ॥ ..৩২ অৰ্জ্জুন ৰহিলা পাচে শাৰ্ক্সক ধৰি। যেন হাতে চক্ৰ ধৰি থাকিলা শ্ৰীহৰি। সেহি মতে ধনপ্ৰয় জলস্ত বিৰিন্দ। ভয় ভীত নাই ষেন প্ৰমন্ত মাতন্ত্ব। ৯৩৩

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি

সেহি মতে অৰ্জুন আছম্ভ লালা কৰি। ইন্দ্ৰ আদি দেৱতাৰ ধাতৃ গৈলা উৰি॥ দেৱতা হৰক কেনে উৎপাত তাক দেখা। সান সামান্তৰ আৰ তাৰ কোন লেখা॥ मर्भ कवि कुछ आर्ग वृत्तिन छ इव। অৰ্জ্জনৰ হাতে হ'ৰ কৰাইলা সমৰ॥ অৰ্জ্জনৰ শৰে পাচে হৰ জৈলা ত্ৰাস। মহাভয়ে পলাই গৈলা ত্ৰন্ধাৰ যে পাশ। অৰ্জ্জনৰ সহায় আপুনি বনমালী। কি কৰিতে পাৰে কোটি কোটি কন্ত মিলি॥ আকে জানি গৰ্বব নকৰিবা একে। জন। ঝাণ্ট কৰি লৈয়ো সবে কৃষ্ণত শৰণ॥ ৯৩৬ ক্ষণমাত্র গর্বর নসহস্ত দের হবি। আকে জানি গৰ্বৰ নকৰিবা নৰনাৰী ॥ विट्डा भर गर्वेव कवि क्वय विख्व। অল্লভে কৰম চূৰ দেৱ দামোদৰ 🛭 ৯৩৭ মাধৱ কন্দলি ৰচিলস্ত ইতো পদ। আকে শুনি ভৰা সবে হুৰ্ঘোৰ আপদ।। অফ্টাদশ পুৰাণৰ ভাগৱত পদ। ছেলা এৰি শুনা সবে যত সভাসদ॥ ৯৩৮ অফ্টাদশ পুৰাণৰ কথা অসুসাৰ। দেৱজিত পদ মই কৰিলোঁ প্ৰচাৰ॥ আকে জানি সভাসদ এবি আন কাম। খণ্ডোক পাতক ডাকি বোলা ৰাম ৰাম। ৯৩৯



সাধৰ কন্দলি

বামায়ণ।

(উত্তৰাকাণ্ড)

যতে তাৰ কথাক আবে থওঁ এহি মানে। লৱৰ কুশৰ কথা শুনা সাৱধানে 🛭 ৰামক পঠাই ঘৰে যাই তেভিক্ষণে। लदक कू नक अधि वृत्तिला वहरम । তয়া চিৰঞ্জীবা লৱ কুশ ছই ভাই। দেশে দেশে ৰামৰ চৰিত্ৰ ফুৰা গাই। নগৰ গ্ৰামৰ সমস্তৰে ৰঞ্চি চিত। ৰামৰ সভাত গৈয়া গাৱা ছুই গীত ॥ যিতো ৰাম মাৰিছিলা প্ৰচণ্ড প্ৰতাপ। নিজ স্বামী সীভাৰ ভোমাৰ নিজ বাপ। শক্ৰঘন লক্ষণ আথৰ ভৰত। ৰামৰ কনিষ্ঠ ভাই তোমাৰ খুৰাত। নিচিনিয়া পিতাপুত্রে কৰিলা সমৰ। আমাৰ আদেশে গীত গাৱা নির্ভর॥ छिनिया अरखाय देशव बाघतव मन । তুই হান্তক সান্ত্ৰিয়া দিবে বহু ধন । নলৈবাছা একো তোৰা আমাৰ বচনে। ৰামৰ চৰিত্ৰ মাত্ৰ গাইবা একেমনে। বাল্মীকিৰ আজ্ঞা চুয়ো ধৰিয়া শিৰত। শুনাই-ৰামায়ণ গীত ভ্ৰমাই লোকত॥ কৰ্ণৰ ক্ৰামৃত বস ৰামৰ চৰিত্ৰ। ত্যো ৰক্ষে নাচে গাৱে লোক ৰঞ্জি চিত ।

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

পৰম গভীৰ ধীৰ স্থবন্ধি স্থান্থিৰ। অনন্তৰে পাইলা গৈয়া গোমিত্ৰৰ তীৰ ॥ ৰামৰ নিকট আসি ভৈলন্ত প্ৰবেশ। হাতে তাল ধৰি দুয়ো স্থন্দৰ স্থবেশ। যন্ত্ৰ সব বজন্তে শুনত্তে মনোহৰ। এৰি ভাত পানী প্ৰক্ৰা শুনে নিৰস্তৰ॥ ৰামৰ জন্মৰ পৰা ৰাৱগাৰ বধ। ৰামায়ণ শুনে সবে নব নত বন্ধ। কোকিলাৰ স্বৰত অমৃত কৰে বৃষ্টি। চাৱে চতুৰ্ভিতি নৰনাৰী একদৃষ্টি। গুণে ৰূপে গীতে আতি লোক ভৈলা ভোল। পৰম নগৰী নাৰী সবে নেডে কোল। অমৃত সমান নাগ শুনন্তে স্থবেশ। শুনি মুহে চক্ষু কেছে। নকৰে নিমিষ। লৱৰ কুশৰ গীতে ভোল সৰ্ববন্ধন। আছে মানে সৰ্ববন্ধ তাৰাক দেই দান। বস্ত্র অলঙ্কাৰ কেছো যাচে পঞ্চামূত। পঞ্চিশ বেগুনে দেই ভোজনে অমৃত॥ ফলমূল ভোজন বাকলি পৰিধান। নলাগই বলি হাসি দেই সমিধান॥ আমি বনবাসীৰ ধনত কোন কাজ। দেখিয়া বিশ্বয় আতি হৱে সমৰাজ। আনন্দে ভৰিলা হিয়া হৰষিত মন। শ্ৰীৰামৰ আগে পাত্ৰ লোকে দিলা জান। কৈবা হুই গুটি শিশু আতি স্থকুমাৰ। গাৱে আদি অস্তে প্ৰভু চৰিত্ৰ ভোমাৰ॥ স্বৰ্গ মন্ত্ৰা পাতালৰ গীতাল যতেক। তোমাৰ প্ৰদাদে প্ৰভু দেখিলোঁ. প্ৰত্যেক। একোরে পুরুষে নতু শুনে হেঁন গীত। কোকিলৰ স্বৰসম বৰিষে অমৃত।



ৰামায়ণ।

শুনি ৰামে দিলা ভৰতক সমিধান। দৃত পঠাই শিশু ছুইক ইঠায়ক আন। শিখিলেক কৈত গীত কাহাৰ কুমাৰ। কেনেবায়ে শুনু গাৱে চৰিত্ৰ আমাৰ॥ ৰামৰ বচন শুনি স্থমিত্ৰাৰ সূত। বাছি বাছি পাঞ্চিল কুশল চাৰি দৃত॥ পৰম হৰিষে ৰঙ্গে গান্তে আছে গীত। কোকিলৰ স্বৰ যেন বৰিষে অমৃত। গাৱন্তে আছন্ত গীত ৰঙ্গে চুই ভাই। নিবেদিলা ছুতে আসি আদেশ বোলয়॥ ৰাজাৰ আজ্ঞাক পালি চলিয়ো ত্বিত। ৰাজসমাজত গৈয়া ছুয়ো গাৱা গীত॥ দেখিবাক ইচ্ছা বৰ কৰন্ত ৰাঘৱে। হেন শুনি আনন্দে লবিলা কুশ লৱে॥ ৰূপে অনুপম ছুয়ো সীতাৰ সন্ততি। গজপতিগমন গঞ্জীৰ থিৰমতি ॥ 6লিলন্ত ৰাঘ্বৰ সমীপক প্ৰতি। বেঢ়িলন্ত নাৰা সবে চলিলা উভতি ॥ বসিয়া আচন্ত ৰাম ৰত্নসিংহাসনে। উপাসন্ত শত্ৰুঘন ভৰত লক্ষণে। খনেক নৃপতি কৃতাঞ্চলি তৃতি কৰে। শ্বেভছত্ৰ তুলি ধৰি বিছন্তে চামৰে॥ গাল্লব গোতম দান্ত হুমন্ত কার্ত্তিক। অন্থি বিশ্বামিত্র অত্তি অগস্তি নিটিক॥ পুলন্তি পুলহ বিস্ত বশিষ্ঠ প্রমুখো। আচন্ত কৌতুকে বসি এক পাষে চক্ষে। বিভীষণ জান্বয়সন্ত আৰ হনুমন্ত। নলনীল প্ৰমুখ্যে বানৰ অপৰ্য্যস্ত । লক্ষ লক্ষ বানৰ ভালুক কোটি কোটি। চৌপাশে উপাসি পৰি কৰি লাটিস্থটি॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

গাৱে অপেম্বৰা বিভাধৰে কৰে নাট। গাৱে গীত গন্ধৰ্বে চপয়। পৰে ভাট ॥ कूञ्चम विदिय मिक्त खनौ विशाधन। বসিয়া আচন্ত ৰাম হেন চমৎকাৰ। ৰতুময় সিংহাসনে কৰন্ত প্ৰকাশ। চাৰু শ্যাম তত্ম তাতে শোভে পীত বাস। শিৰ চক্ৰ কুভ কেশ নিল্থ কুচিত। সুন্দৰ ললাটে জ্বলে ভিলক লভিভ। অলকা পক্ষতি ৰত্ন কিৰীটি উজ্জ্বল। কচিকৰ কৰে মণি মকৰকুগুল ॥ ক্ৰাব স্থবলিত নেত্ৰ পঙ্কজ পৰায়। স্থবেশ নাশিক। ওষ্ঠ কণ্ঠ অভিনয়। নিবিড় দশন জলে মুকুতাৰ পান্তি। জবযুগ কেয়ুৰ কঙ্গণে কৰে কান্তি I আৰ কত কৰক দেখন্তে আতি তৃষ্টি। সুদীৰ্ঘ আঙ্গুলি ভাতে ৰত্নৰ আঙ্গুষ্টি॥ মনোহৰ হিয়ে মণি মুকুতাৰ মালা। কটিত মেখলা ৰত্ন চিকিমিকি জালা। সুবলিত উৰু আৰাকত পদতল। ৰত্বৰ মুপৰ জ্লে চৰণকমল।। নয়ন ৰচিত ছ্যাতিমন্ত কামদেৱ। সুৰাসূৰে উপাসি চৌপাশে কৰে সেৱ **।** শাৰি শাৰি তুলি ধৰি আছে ছত্ৰদণ্ড। শৰীৰৰ জ্যোতি প্ৰকাশন্ত সভাখন্ত। হেন চমৎকাৰে বসি আছম্ভ ৰাঘৱ। সেহি সময়তে প্রবেশিলা কুশ লর ॥ নগৰীয়া লোকে আসে লগতে উভতি। দেখি সমজ্যাৰ প্ৰজা চাৱে চতুভীতি। ৰামৰ আদেশে সেহি সভামধ্যে উঠি। মেকত প্রকাশে যেন চন্দ্রমা তৃই গুটি॥



ৰামায়ণ।

ৰামৰ সমান শ্ৰাম তত্ম কৰে কান্তি। দাভিম্বৰ বীজ যেন দত্তে ছুই পান্তি। পক্ষপত্র সম সেহি আয়তলোচন। কচিকৰ কৰ্ণ মুখে মধুৰ বচন॥ শিৰ চক্ৰ কুটি নীল আকৃঞ্চিত চুলি। আজাসুলম্বিত বাহু স্থনীর্ঘ আঙ্গুলি॥ আৰকত অধৰ যে কমুকণ্ঠ গল। ৰামৰ সদৃশ তুইৰ দেখি বক্ষত্ৰ ॥ সিংহবন্ধ কটি কন্ধ উৰু কৰিকৰ। শিশু তুইক দেখি আতি আনন্দ লোকৰ॥ পৰিল নিয়ম প্ৰজা নিৰখিয়া কান্তি। শিশু তুইক চাই চাহে ৰাঘৰৰ ভীতি॥ নাহি ভেদাভেদ ৰাম সমে একো কায়া। দৰ্পণত দেখি যেন ৰাঘৰৰ ছায়া। ঘনে ঘনে বোলে কিন্তু ছয়ো স্কুমাৰ। সকল শোভন দেহা ৰামৰ আকাৰ ৷ সেহি সুখ হাসি স্থবলিত হাত পার। ইটো চুইৰ কোননো স্থবৰ্ণমূখী মাৱ॥ জয়মনি বদতি শুনিয়ো জন্মিজয় । এহি মতে লোকে সবে প্ৰম্বিশ্ময়। **ट्यांब-इस्ट नरेडरल** वाकल हिंबशाबी। ৰামৰ কুমাৰ হেন বুলিবাক পাৰি॥ হনুমন্ত শক্ৰঘন লক্ষণ ভৰত। পৰম বিশায় কথা কহন্ত কৰ্ণত। वनवारम रेगना मीला भाखि गर्छद्वजी। তাহাৰ তনয় ইটো ৰামৰ সন্ততি। সীতা বিনে নাহি ৰাঘবৰ ভাষ্যা আন। কেন মতে ৰূপে ভৈলা বামৰ সমান। গুণস্ত মনত বামচন্দ্ৰ কুপাময়। এছি ছুই ৰযুবংশ জানিলো নিশ্চয়।

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

আনন্দে নধৰে হিয়া শিহৰে শৰীৰ। মহাত্ৰেহে চকুৰ আপুনি বহে নীৰ। ছইৰে। ৰূপ দেখি কেন আনন্দ হৃদয়। ছইকো নিৰ্থিয়া লোক ভৈলন্ত বিশ্বয়। অল্ল বয়সত শিশু দুই মহাগুণী। হেন ৰূপে ঋষিৰ তনয় নাহি শুনি॥ এই বুলি ৰামে পাছে বুলিলা বচন। শুনি আছোঁ ভোৰা ছুই প্ৰম গায়ন। জানিলো গীতত তুমি সব স্থানিকত। কেন কথা ৰামায়ণ গাৱা শুদ্ধ গীত। শুনি পাছে ৰামৰ আদেশ দুই ভাই। দিলা ৰাগ ছুয়ো পাছে পঞ্চম উড়াই। একজনে তাল এক জনে যন্ত্ৰ বাই। তাল সমে ঘোৰ নাদ পঞ্চম উহাই॥ প্রথমে ধৰিল আদিকাণ্ড ৰামায়ণ। কৈলা সূৰ্যা বংশ যত যত মহাজন ॥ ইক্ষাকু কাকুন্ত অজ ৰঘু নৃপতৰ। ভৈলা দশৰথ ৰাজা সূৰ্য্যবংশধৰ। বলে বিছে সমচৰ মুহি পুৰন্দৰ। ক্ষমায় ধৰণী ধৈৰ্য্যে গম্ভীৰসাগৰ। প্রতাপত আদিত্য ক্রোধত যেন যম। নাহি মুপূজিবো ৰাজা দশৰথ সম। শচীত অধিক তান তিনি পটেশ্বী। কৌশল্যা স্থমিত্রা আৰু কৈকেয়ী স্থন্দৰী। তিনিত ভৈলন্ত পাছে চাৰি পুত্ৰ জাত। জেষ্ঠ ভেলা ৰামচন্দ্ৰ গৰ্ভে কৌশল্যাত। কৈকেয়ীত ভৈলস্ত ভৰত উত্তপন। স্থমিত্রাত ভৈলম্ভ লক্ষণ শক্তুঘন॥ কৰম্ভ ভকতি নিতে বামৰ চৰণৈ। গম্ভীৰসাগৰ আতি ৰামচক্ৰ যেনে॥



ৰামায়ণ।

প্ৰম পুৰুষ শান্ত শীতল স্বভাৱ। ভৈলা লোকৰঞ্জণ প্ৰজাৰ বাপ মাৱ। কোনে কহিবেক তাত মহিমা অপাৰ। গাৱে কুশ লৱে আদিকাণ্ড ৰামায়ণ। কোকিলাৰ স্বৰ যেন তালে মানে যদি। শুনস্তে অমৃত আন ভীতি কাণ নেদি। ৰামৰ চৰিত্ৰৰস প্ৰম অমৃত। নিযম পৰিয়া প্ৰজা শুনে আনন্দিত। কিবা সোপানত কিবা শুনস্তে সচিতে। কিবা পৃথিবীত কিবা আছন্তে স্বৰ্গতে॥ কুধা ভূথ নলাগয় নাহি অন্ত পান। শিশু ছুইৰ গীততে লাগিল যেন ধান ॥ উত্তৰকাণ্ডৰ পদ শুনা সভাসদ। তাহাৰ কীৰ্ত্তনে তবে যাতনা আপদ। কলিত সকাতি নাহি বিনে হৰি নাম। মাধৱ কন্দলি ভণে বোলা ৰাম ৰাম॥



কৰিৰত্ন সৰস্বতী

মহাভাৰত।

(জোণ পর্বব)

কৈলাস বর্ণনা।

জয় মধুসূদন নৰক নাশন,

क्श (कनी मित्रूमन ।

নিৰাকাৰ হৰি ভব ভয় হাৰী,

ভকত জন ৰপ্তণ ।

মায়া বিভঞ্জন নুমো নাৰায়ণ

পুৰাণ পুৰুষ হৰি।

ভাৰত কথাৰ ভনিবো পয়াৰ,

ত্যু পদ অমুসৰি ॥

ফটিক প্ৰকাশ হৰৰ কৈলাস, ----

জ্বলে নানা ৰত্নয়।

অজ্ঞান বাঢ়ক দেখি পৰতেক,

অনেক বৃক্ষ নিচয়॥

আম যাম চাম আতি অভিৰাম,

শাল তাল ভাল দেখি।

कृतिन कछकी

স্থবৰ্ণ কেডকা,

कूल मर्या योक टलिथ ॥

গুৱা নাৰিকল

জৰা পনিয়ল,

লেতেকু টেঙ্গা দাড়িছ।

ষোলেক মধুৰী আছে ভাল ভৰি,

बाम देश देश किय ॥



মহাভাৰত।

কমলা কপুৰা বেদ চেনিচ্ডা

স্বাদত আমোলমোল।

পড়ণ্টা কণ্টুক আছে জোক জোক

দৰশনে হোৱে ভোল ॥

দেবতাৰি লিয়া ৰেঙ্গুয়া মুৰিয়া

জোণ্টা ফল জৰা ফল।

নানা ফল ছয় বৃক্ত শোভয়

কন্ত নাম কৈবো তাৰ॥

শীতল নিৰ্মাল সৰোধৰে জল,

বুৰো বুৰো কৰে তীৰ।

আছো স্থান পান দেখি স্থন্থ মন,

নিৰ্মাল মন শৰীৰ ॥

अभल कमल इरकामल प्रल,

কুলি ফুলি ডাল শোভে।

পৰি মধুকৰ গুঞ্জে কচিকৰ,

ভাৰ মধু পান লোভে।

শ্ৰমে জাকে জাক হংস চক্ৰবাক,

জলচৰ পক্ষীগণ।

কেণে কণে উবি ফুৰি ফুৰি পৰি,

্ত্ৰ জলত কৰে ক্ৰীড়ণ **॥**

লবন্ধ মালতী ফুলিল সেউতি,

কুন্দ কুকবক জাই। চম্পা নাগেখৰ শিৰিষ বিস্তৰ,

হাত মেলি ফুল পাই।

ৰাজণ বেৱ ী আছে থুপি থুপি

্তগৰ জয়স্ত মালী। ফুলভৰে ছালি পৰে দাল ভাজি

कृतिल वकूल जानि॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

ফুলিছে বন্দুলী গদ্ধে নাহি তুলি
কদম্ব দেখি শোভন।
কেতেকী প্ৰচুৰ কনক ধুত্তৰ

(नदानि मावि मन्न ॥

ফুলিল শেৱালী পৰে হালি হালি ফুলভৰে ভাগে ডাল। হেনয় শোভন বিচিত্ৰ উদ্যান,

ফুল তথা সর্ববকাল॥

যত মনোহৰ মন্দাৰ কুসুম পাৰিজাত তথা আছে।

স্থল অভিনয় কুস্থম পল্লৱ, দেখি ভাল গাছে গাছে॥

তাত কল্পতক আছ্য় অগক শুনা তাত কোন কথা।

মহাতক্বৰ মাগি পাইলা বৰ মনে অভিলাষী তথা॥

বসস্ত মিলিল আৰাৱে কোকিল, বহয় মলয়া বার।

ভ্ৰমৰা গুঞ্জৰি চিত্ত চুৰি কৰি, কোকিলে তেজিল ৰাৱ॥

দাৰুণ বিৰহে শৰীৰে নসহে
যতেক বিৰহী জন।
পাঞ্চ পাঞ্চ বাণে তঃসহ সন্ধানে
হৃদয়ে দহে মদন॥

দেৱ শক্ষৰ চাক গিৰিবৰ,
ৰত্নময় মহাথান।
থিৰতৰ মনে নানা সিদ্ধগণে,
কৰম্ভ যোগ ধিয়ান॥



মহাভাৰত।

মুগচৰ্ম্ম পৰি পদ্মাসন কৰি,

গিৰি-গহৰত বসি।

নানাবিধ ব্ৰতে শিবক সভতে

পূজন্ত যত তপন্বী॥

কৰ্ণে তাত্ৰ কৰি মুগৰ ছৱৰী

পিন্সতে কণ্টয় তল।

কৰত ডম্বৰু গাৱে সুৰগুৰু

হৰক তুতি মঙ্গল ॥

ক্ৰমা নাৰায়ণ আদি দেৱগণে,

তথাত কৰে ভকতি।

নানা উপহাৰে বিবিধ প্ৰকাৰে,

নিতে পূজে স্থৰপতি ॥

নানাঝ্যিগণ আতি শুদ্ধমন

জানে তত বেদসাৰ।

অতি দীৰ্ঘৰাৱে শিশ্ৰক পঢ়াৱে

মধুৰ শুনি হুম্বৰ।

জানে পদক্ৰম কৰি তত সম,

हिधा भाज हानि दवम ।

যত তপ ব্ৰত কৰে মনুখ্যত,

मिरनरका नाइ विरुक्त **॥**

কাব্য কোষ যত পুৰাণ ভাৰত,

নাটক তর্ক খণ্ডন।

তথা অহর্নিশে পঢ়ে বহু বিধে,

যাহাৰ যাহাক মন ॥

বেদাস্ত काहिनी वाामक প্রণামি,

্কৰম্ভ তুতি বিচাৰ। যতেক প্ৰত্যৈক সকলে ততেক,

একে বিষ্ণুমন্ত্ৰ সাৰ।

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

ৰত ভূতগণ কৰন্ত প্ৰণাম, প্রথমে নাম বথানি।

দেশন্তে বিকৃত কপে ভয় ভীত, कारबा गमगम वानी।

কাৰো নাহি শিব কবন্ধ শৰীৰ, কাৰো হাণ্ডি হেন পেট।

গলত গণ্ডল কোৰত কুৰুণ্ড **हाशबि** (नरमरथ दश्रे ॥

কাৰো নাহি ভাৰি থাকে পৰি পৰি, কাহাৰে। অনেক পাৱ।

কাৰো হাতে খণ্ডা কতো মণ্ড ৰণ্ডা কাৰো বহুতৰ গাৱ।

कूला (इन कांग ला वार घरन घन,

কৃপ হেন চক্ষু ছুই। বদন ভিতৰ পৰ্বৰত গহবৰ, দেখি ভয় ভাত হুই॥

কতো ছুই পাৱ পশুৰ আকাৰ নিষ্ঠুৰ বিকৃত মাত। ফুৰি কৰি গৈল প্ৰকটিত ভৈল

মুখত বিকৃত দন্ত॥

হেন কুশোভন শিৱ দেনাগণ,

ভ্ৰমে তথা নানা ভাৱে। দেখি ভয়ন্ধৰ পাণ্ডু তনয়ৰ, সপোনতে কাম্পে গারে।

স্বভাৱে শোভন অপেশ্বৰা গণ, মদন চকিত ভাৱ। উন্নত কঠিন ঘন পীন স্তন,

তাৰ অবনত গাৱ।



মহাভাৰত।

সহজে চঞ্চলি মদনে বিকলি, নিৰ্ভয়ে তৰুণী জন। কাম ভাৱে পাশে ৰতিবন্ধ ৰমে,

কৰে প্ৰভু স্থমৰণ ॥

তান নথে ক্ষত সুৰত বেকত

নাগৰ প্ৰভূৰ সঙ্গে।

খোপা স্থলকিল কুন্তম খনিল, নির্ভৰ স্থৰতি ৰঙ্গে।

নিজা বিৰহণে আনন্দ নয়নে, অধৰ দশন যাৱ।

ৰজনী প্ৰয়ন্ন নৰনাৰীগণ, চলে আপোনাৰ ঠাব ॥

তিনি চাৰি নাৰী হাতে হাতে ধৰি, পথত ৰঙ্গে লৱৰে।

গাৱত চঞ্চল নেত্ৰৰ আঞ্চল, বাৱে হালি হালি পৰে ॥

যৌবনৰ ভবে চলে ধীৰে ধীৰে, দুঃসহ নিতম্ব ভবে।

নয়ন কটাকে বদন নিৰুখে, চিন্তনে চিন্ত বিকাৰে।

মান পৰিহৰি কেছে। বৰনাৰী চলি গৈলা প্ৰভু থানে ॥

হেনয় অনেক তথাপি ৰসক দেখিলা নাৰীৰ কৰ্ম। কৰিবো বৰ্গন জানে বধ্জন, পাপৰো নজানে মৰ্ম্ম।

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

নূপ শিৰোমণি দেব মহামানী
. ছুৰ্লভনাৰাণ ৰাজা।
নিতে পুজ্ৰৱতে পালিলা সততে,

জেৱতে সালিলা সভতে পৃথিবীৰ যত প্ৰজা ॥

তাহান তনয় ভৈল ধৰ্মময়, ইন্দ্ৰনাৰায়ণ দেৱ।

মহাবীৰ ধীৰ স্বভাবে গল্পীৰ, নিভে কুত্য হৰি দেৱ॥

নিজ বাহু বলে পাইল অবিকলে অথও মহীমণ্ডলে।

যাত খাটে নামি সততে প্রণামি বিপক্ষ নৃপসকলে॥

যত সৰ্বক্ষণ ইন্দ্ৰনাৰায়ণ, বৰ দেন্ত সদাশিৱ।

হৌক নৰেশ্বৰ পাঞ্চ গোৰেশ্বৰ, পিতা পুজ্ৰে চিৰঞ্জীৱ।

ছোটশিলা নাম আছে এক গ্ৰাম, যত গ্ৰাম মধ্যে সাৰ।

অছিল তথাত জগত প্ৰখ্যাত, চক্ৰপাণি শিকদাৰ॥

পটু নৰবৰ কায়স্থ প্ৰবৰ, ধৰ্মাৱস্ত মহাযশী।

পণ্ডিত তিলক কুল প্রকাশক, নিকলঙ্ক যেন শশী।

দেব দ্বিজগণ কৰিলা পূজন, স্বনে ধৰ্ম প্ৰসঞ্চ।

নিত্য উপগত যাৰ অভ্যাগত , নভৈলেক আশা ভঙ্গ ॥



মহাভাৰত।

নিজগুণ বলে লভিল সকলে ।

ধন ধান সতকাৰ। • নুপতি প্ৰধান ছুৰ্লভনাৰাণ, প্ৰসংশয় বাবে বাব।

তানে পৰলোক ভৈল সৰ্বেব শোক, নিজ তমু ভক্ষে ৰণে।

মেক ভক্ল ষেন সিন্ধু ভৈলা পক্ষ, মাণিক বিন্ধিলা ঘূণে॥

তাহান তনয় আতি হুঁভময়, কবিৰত্ন সৰস্বতী।

দ্রোণ পর্বব পদ জয়দ্রথ বধ, কৌভূহলে নিগদতি।



দুৰ্গীৰৰি

অৰণ্যকা ও

ৰাগ—মঞ্ৰি

ৰাম আইলৰে বনেৰ মৃগ মাৰি—
ৰাম আইলৰে।
মৃগ মাৰি নেদেখিয়া সীতা,
সীতা সীতা বুলি ডাকে ৰঘুনাথ। (ৰাম আইলৰে।)
লক্ষণক চাই বোলে বাণী
কি কাৰণে তেজিলা গোসানা।
(ৰঘুনাথ ৰাম আইলৰে।)
যেন বজ্ঞ পৰিলেক মাথে—
ৰেখাৰ বাহিৰে খোজ দেখি ৰঘুনাথে।
হাহা প্ৰিয়া কোথা গৈলা এৰি—
নিদান কালত ছই ভাই থাকো বেৰি।
ধন জন নকৰোহো সাৰ—
প্ৰিয়া অবিহনে দেখোঁ দিনতে আধাৰ।
কহে ছুৰ্গাবৰে ৰামৰ চৰণে।
প্ৰভু কান্দে মোহা শোক ত্ৰাসে॥

ৰাগ—বেলোয়াৰ

সীতাক হৰিলা যেবে ৰাঘৱ আসিলা তেবে হে— আসিলা গোসাই মৃগ মাৰি। কপট কৰিয়া দূৰ পশিলা অন্তেসঁপুৰএ ঘৰে নাহি জনক বিয়াৰি॥



নেদেখি সীতাৰ মুখ মনত লাগিল ত্থ লক্ষণত পোছে নাৰায়ণ। কহিয়ে। স্বৰূপ বোল তেজিয়া মোটোৰ কোল এ গৈলা প্ৰিয়া কাহাৰ সদন । তোমাক মেঢ়ত থৈয়া হাতত সাৰক লৈয়া প্ৰবেশিলো গহনৰ মাজ। মায়াবি মুগৰ তৰে গৈলো মই একেন্সৰে এ এথা কোনে কৰিলা অকাজ ॥ বুলিলো বচন যত সকলে কৰিলি হত কথাক নলৈলা তোৰ মন। ভোমাৰ নিমিত্তে মোৰ প্ৰিয়াক কৰিলা চোৰ এ কি অকাজ কৰিলা লক্ষ্মণ॥ শ্ৰীৰামৰ যে বচন বদতি যে লক্ষ্মণ অতিশয় সঙ্গোচিত মনে। নাহি মৌৰ কিছো দোষ অকাৰণে কৰা ৰোষ এ कवि कुर्शीवब मारम ভर्ग ।

बाग-वदाबि

নাজানো স্বৰূপ দাদাহে—

দাদা দােষ নাই মােৰ।

বিৰলৈ সীভাক হৰি নিল কোন চােৰ॥

সূগে যে কাঢ়িলা বার ভােমাৰ সদৃশ।
শুনিয়া সীভাৰ মনে ভৈলা বিসদৃশ॥
প্রভুক মাৰয় শুনো কোন বিৰসণে।
এহি বুলি মােহােক পাঞ্চিলা ভেভিক্ষণে।
আৰু যি বুলিলা ভাক কহিবাক পাপ।
আৰু কুথা কহাে শুনু জগতৰ বাপ॥
ৰাম অবিহনে ভােৰ্নুমােক হাবিলাস।

হেন বাক্য শুনিয়া মােহােৰ মােহাে আসে।

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

শুনিয়া অন্তৰ ভৈলোহে কুখাতি বচনে।

অন্তৰিয়া গৈলো মঞি তোমাৰ কাৰণে।
লক্ষণে কহিলা কথা ৰামৰ আগত।
বিষাদ লাগিল প্ৰভু ৰামৰ মনত।
বিষাদত নয়নৰ নাৰ বহি যাই।
বৈদেহি-হৰণ পদ তুৰ্গাব্যৰ গাই।

পদ

ভাতৃৰ বচন শুনি থাকিলন্ত বসি। মেঘত ঢাকিলা যেন পূৰ্ণিমাৰ শ্ৰী। লোতকে তিতিল নেত্র মলিন বদন। সীতাশোকে আকুল ব্যাকুল নাৰায়ণ। কিবা জীয়া জন্তুক দেখিয়া বিভামান। ত্রাস হৈয়া গৈল। কিবা হঠাতে প্রমাণ। আমাক উদ্দেশি সীতা গৈলা স্বৰূপত। জানোবা আছ্য় এহি অৰণ্য মাজত । এহি বুলি লক্ষণক কহিলন্ত ৰাম। ক্ষেণেতেক ভাই তুমি কৰিয়ে। বিশ্ৰাম । এতিক্ষণে অৰণ্যত চাহি আহো যাই। মৃগ ৰক্ষা কৰিয়া থাকিবা তুমি ভাই॥ ভিতৰে বাহিৰে অৰণ্যৰ থানে থানে। কতো দূৰ বিচাৰি আহিবো এহিক্ষণে॥ ठाइ ठाइ विठाव कविला मारमामव। বুক্ষৰ কোটৰ গিৰি পৰ্ববত গভৰ॥ লতায়ে বেঢ়িলা জত বৃক্ষ অন্ধকাৰ। ভাকো ৰামদেৱে বিচাৰিলা বাবেশাৰ। लंडा উপবনচয় नहनि । • চাহিলন্ত নানা থানে ৰাম গদাধৰে ৷



একেশ্ৰে ৰাঘৱ ভ্ৰমন্ত নানা থানে।
আতি উত্ৰাৱল চিত সীতাৰ কাৰণে।
অনেক বিচাৰ কৰি উদ্দেশ নপাইলা।
মেঢ় মন্দিৰক লাগি পুকুৰুপি আইলা।
শৃষ্য মেঢ় দেখি প্ৰভু বিয়াকুল মনে।
হা সীতা বুলি ৰাৱ পাৰে ঘনে ঘনে।
চিত্ত থিৰ নহয় স্থমৰি প্ৰাণপ্ৰিয়া।
ভণে তুৰ্গাবৰ ৰামচৰণ ভাবিয়া।

ৰাগ—অহিৰ

অ কি লখ্মন— গৈলা সীতা মোক উপেক্ষিয়া। তৃণত শয়ন মোৰ বক্ষ পৰিধান হে-এহি তুখ মনে আলচিয়া। এবেদে জানিলো সীতা— ৰামৰ স্থহদ নোহে— এৰি মোক গৈলা কোন ভিতা। একক লক্ষ্মণ যেন-আমিয়ো ভৈলো হো তেন হে— সহজে চঞ্চল তিৰি জাতি। সম্পদে সুন্দৰী নাৰী-আপদে পলাইলা এৰি মই তাক জানোহো স্বৰূপে। জনক তুহিতা হয়া স্বামীক তেজিলা হে-কেনে জীয়ো এতেক সন্তাপে। আখুটি কৰিয়া মোক— মুগক পঠাইলা হে-

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

ভোমাকো পঠাইলা ক্ৰোধ কৰি। মই নজানিলো তান কপট হৃদয় প্রাণ ভিৰি মায়া বুঝিতে নপাৰি॥ স্তৱৰ্ণৰ মৃগ মাৰি যতনে আনিলো ছে-ৰত্ন জেউভি জলয় পিঠিত। ৰূপাৰ চৰণ চাক শোভন কৰয় হে— হেন মুগ দিবো কাৰ হাতে। হাতৰ গাণ্ডির বামে আছৰি পেলালা হে-ঘনে ছাৰে দীৰ্ঘ যে নিখাস। শ্ৰীৰাম চৰণ যুগ প্ৰণতি কৰিয়া কছে— কবি ভণে ছুৰ্গাবৰ দাসে।

ৰাগ—চালনি

শুন শুন প্রাণ লক্ষণৰে ভাই
কাক লৈয়া বঞ্চিবোহো বোনে।
প্রাণৰ কামিনা সীতা হৰুৱাইলো
কাহাক চাইবো নয়নে।
এখানে আহিলো ৰমণা সহিতে
খেলাই পাশাৰ শাৰি।
কোন মন্দক্ষণে মই পাপ কৰিলো
হৰাইলো কুলৰ নাৰী।
মনুষ্য সঞ্চাৰ নাহি দণ্ডকাত
আৰু নানা পশু পক্ষী।
ইহাৰ মধ্যত কোনে হৰিলেক
একেশ্বৰী সীতা দেখি।



८म एय मन्मिब नलाएग गर्छोब মুশুনি সীতাৰ ৰাৱ। পাশা গুটিগণ সকলে আচয় প্রিয়া গৈলা কোন ঠার ॥ পৰ্ববতে পৰ্ববতে ঘূৰিলো সমস্তে ঋষি তপ কৰে যথা। নদী সৰোবৰ গিৰিয়ে গভৰ বিচাৰি নপাইলো সীতা ॥ অতি অল্পজান বালকসমান নোহয় চতুৰা নাৰী। অতিশয় বালা অতি আলাভোলা অৱলা ৰাজকুমাৰী। অন্ধকাৰময় নাহি পশুচয় नकानि निम विनिम । হেন গহনত গৈলা কোন মত ভৈলা অতি বিসদৃশ। लक्षन वहन ठाडि घटन चन কাৰুণ্য কৰে শ্ৰীৰাম। বোলে হুৰ্গাবৰে ৰামৰ কিন্ধৰে লেচাৰি অতি উপাম॥

পদ

কান্দন্তে কান্দন্তে ৰাম অচেতন ভৈলা।
ধৰণি উপৰে পৰি মুৰ্চ্ছাগত হৈলা॥
ক্ষণে মুৰ্চ্ছা যায় ক্ষণে চেতন লভয়।
চঞ্চল চৰিত্ৰ ৰাম বাতুল্য পৰয়॥
উঠে বৈগে গুণে শত সহস্ৰেক বাৰ।
অসন্তোধ মনত কৰয় হাহাকাৰ।



অসমায়া সাহিত্যৰ চানেকি।

মেচ মন্দিৰত বসি গুণন্ত শ্ৰীৰাম। পতি বচনতে মাত্র সীতা সীতা নাম। कारन मञ्जासित त्यांक मधुब वहरन। কাহাক তুষিবো মই চুমা আলিন্সনে॥ কাৰ সঙ্গে ৰঙ্গে নিতে থাকিবো কৌতুকে। অনাথিতি কৰি প্ৰিয়া এৰিলিহি মোকে॥ আৰ কাক চাহিয়া থাকিবো অমুক্ষণে। কাৰ অলঙ্কাৰ মই পিন্ধিবো আপুনে॥ কোনে আসি হৈবো মোৰ লগৰ সৈতাৰি। काक लहेबा याहेटवा महे अट्यांशा नगबी। প্রথমা যৌৱনী যে কোমল অঙ্গ তান। মোহোক বঞ্চিয়া তই গৈলি কোন থান। মোক ছাৰি থাকিবি কাছাৰ আজ্ঞা পালি। হাহা বিধি কাহাক ৰাখিবো আমি ভালি। কহিত বিচাৰো মই নিলে কোনে সীতা। প্ৰাণৰ স্কৃদ স্কৃচৰিতা গুণনীতা। কহিত আছ্য় কোনে দিবেক উদ্দিশ। ভণে ভূগাবৰে ৰাম চৰিত্ৰ বিশেষ ॥

ৰাগ-অহিৰ।

প্ৰায় কোনে লৈলেক হৰিয়া।
পীতাক নেদেখি মোৰ অথস্তৰ ভৈলা ঘোৰ
ঘনে ঘনে পোৰে মোৰ হিয়া।
ছনাই সীতাক মই লাগ নপাইলে ভাই
মৰিবো গৰল বিষ খায়া।
কৈক যাইবো কোনে কব কৈঙে বা উদ্দিশ পাইবো
কোনে প্ৰিয়াক দিবো বা দেখায়া।



व्यवगाकां छ।

যথাতে উদ্দিশ পায়ে। তথাতে চলিয়া যায়ে। যথা আছে জনক জিয়াৰী।

যদি বা মনৰ ছথে ক্ৰোধে বাহিৰাইলা হে আপুনি আসিবো কাথে কৰি।

চঞ্চল চৰিত্ৰা বালা প্ৰথম যৌবনী কালা জলে যেন চম্পকৰ কান্তি।

বদন স্থৱৰ্ণ সম দেশন মুকুত। সম পান্তি॥

চিকন চৰণ চাৰু বলিত ৰাতুল উৰু বচন কুকিল সম ভাসে।

তিনিয়ে। ভুবন ৰূপে মূহিবাক পাৰেছে। ভশ্বৰুক জিনি মধা দেহে।

চিত্ৰৰ পুতলি যেন সাক্ষাতে লক্ষীৰ থান লয়মু ললিত সমদেহা।

পৰম স্থানৰ গতি হংসক জিনিলা আতি বাতাসে শৰীৰ যেন হালে॥

ধসুক ভান্সিয়া লৈক নৃপতিক জানিলোহে। সীতাক বিহাইলো বাহুবলে।

প্ৰশুৰামক জিনি অযোধ্যাক গৈলোহে বনবাস কৈকেয়ীৰ বোলে ॥

অভিষেক সময়ত ৰাজ্য হৰুৱাইলোহে। সীতা হৰুৱাইলো বনবাসী।

কতেক ললাটে ছুখ বিধিয়ে লিখিলা হে কিনো ভৈলা মোৰ মন্দৰাশি॥

আৰু নো কাহাৰ সজে থাকিবো কৌতুক ৰঙ্গে বৈধি কৈলা জীৱন নৈৰাশে।

কাছাত পুছিবো মই উদ্দেশ নপাওঁ হে কোনো লোক নাই আগে পাছে॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

শীতায়ে অমূল্যধন সীতায়ে সর্ববভূষণ শীতা মোৰ অমূল্য ভাগুৰে। সীতা অবিহনে ভায়া জীবন বিফল হে সীতা তিনি কুলৰ উদ্ধাৰ। যদিবা মোহোৰ তাপে ত্ৰোধে বাহিৰাইলা হে তথাপি আনিবো প্রাণ জায়া। অন্ন ব্যপ্তনক আৰ একোকে নাখাইবো হে থাকিবোহো শয্যাত শুতিয়া॥ নেদেখিবো আৰ যাক মনত স্থমাৰো তাক **(मथाई मिटिक आब कार्य।** এহি বুলি নাৰায়ণ কান্দিলস্ত সর্বক্ষণ কহে প্ৰভু কান্দিয়া কাৰুণ্যে॥ ধৰণিত পৰি ৰাম অচেতন ভৈলা হে

প্ৰিয়া শোক সহিতে নাপাৰি। সৰস্বতী কুপাগুণে তুৰ্গাবৰ দাসে ভণে সীভা শোকে আকুল মুৰাৰি॥

ৰাগ—ধনপ্ৰী।

কুবৃদ্ধি লাগিয়া বৈলো হে

কি কৰে জীৱন।
শুনি নিন্দা কৰিবেক অযোধ্যাৰ জন।
কি লাজে দেশক যাইবো হে
ভৈলা মন্দৰাশি।
হৰাইলো কামিনী ৰত্ন আমাৰ বৈদেহী॥
চক্ষুযে আচন্তে মোৰ হে
নেদেখো নয়নে।
জীৱন্তে মৃতক ভৈলো প্ৰাণ প্ৰিয়া বিনে॥
বাম হেন ক্ষেপ্তি ভ্য়া হে
হক্তৱাইলো নাৰী।
প্ৰিয়াৰ বিযোগে মোৰ প্ৰাণ যাই ছাৰি॥



হাতৰ ৰতন মোৰ হে
কোনে নিলে ছলি।
আপুন দোষে হকৱাইলো চিত্ৰৰ পুতলী।
শৰীৰৰ কান্তি যেন হে
আন্ধাৰৰ বাতি।
বিনা প্ৰদীপত জলে শৰীৰৰ জেউতি॥
মূণালৰ ভাল যেন হে—
হালয় কল্পণে।
সাক্ষাতে দেখিয়া যেন ৰাজহংস চলে।
সীতা অবিহনে ভায়া হে—
জিৰাব কোন ফল।
লৈয়া ধন্মুশৰ বাপ আগ হুয়া চল॥
এহি বুলি পাছে মেঢ় হে—
মন্দিৰক ছাৰি।
সীতাৰ উদ্দেশে ৰামে ফেলাইলেক ভৰি॥

अम ।

কোটৰ গভৰ গিৰি গৃহ যে কন্দৰ।
নদী যে আৱৰ কৃপ দীঘি সৰোবৰ।
বন উপবনচয় সকলো চাহিলা।
সীভাক নপায়া দীর্ঘনিশাস ছাৰিলা।
অসস্টোষে থাকিলন্ত বৃক্ষতলে বসি।
শিশিৰে ঢাকিলা জেন পূর্ণিমাৰ শশী॥
লক্ষ্মণক বোলে ভায়া বসিয়ো ছায়াত।
বৌদ্র ৰশ্মি লাগে ভায়া ভোমাৰ মুখত।
কৈত্র বৈশাগৰ যে বিষম ৰৌদ্রজাল।
বৃক্ষৰ ভায়াত ভায়া জিৰায়ো সকল॥
ভোৰ তৃথ দেখিয়া নস্তে কলেবৰ।
ভানিয়োক ভায়া স্থমিত্রাৰ স্থকুমাৰ॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

লক্ষণ বদতি দদা বিশ্রুতি যে ছই।

নিশাত কিসৰ আজে ৰবিৰ উদয়॥

শিশিৰ প্রকাশ ভৈলা ববিৰ জেউতি।

ৰাত্রিক বোলয় দিন কিনো ৰঘুপতি॥

সীতা শোকে তোমাৰ যে হৰাইলস্ত জ্ঞান।

নিশাক কৰয় ৰবি ৰশ্মিৰ সমান॥

মুহি ৰৌদ্র হেৰা দেখা পূর্ণিমাৰ শশী।

গ্রহগণ হেৰা আছে আকাশ প্রকাশি॥

লক্ষ্মণৰ মুখে শুনি এতেক বচন।

অধামুখ হুয়া আছিলেক কতোক্ষণ॥

ৰাত্রি হেন ভাবি ৰাম বৃক্ষতলে বসি।

সীতা সীতা বুলি ৰাম থাকিলা উপেক্ষি॥

হাহা শশিমুখী বুলি ভেজিলা নিখাস।

ৰামৰ চৰণে ভণে হুৰ্গাবৰ দাস॥

ৰাগ—সুহাই।

শুনা শুনা জীয় লক্ষণৰে ভাই
বিশ্ববো ঘৰে কি লৈয়া।
কপে বিভাধৰী গুণৰ সাগৰী এ
কোথাত থাকিল জাইয়া।
কৰিয়া নিঠুৰ গৈলেক বিদূৰ
আমাক এখানে থৈয়া॥
অগৃত স্থৰস বাণী মনোহৰ এ
শুনিতে ৰঞ্জয় মন।
কাঢ়ি নিলে জীউ জনকৰ জিউ এ
হানিয়া অগনি বাণ॥
হাতৰ ৰতন ভ্য়া অচেতন
আপুনি সে হকুৱাইলো।
চিত্ৰৰ পুতলী তমু জুগাৱলী—এ
কাহাৰ ভালে যোগাইলো॥



দশনৰ পান্তি মাণিকৰ কান্তি
বিনা প্ৰদীপতো জলে।
দেৱনাৰ ভাল হালয় কন্ধাল—এ
ৰাজহংস হেন চলে॥
চিকণ চামৰ গুপ্তৰে ভ্ৰমৰ
মালতী নিন্দে স্থ্ৰাণ।
সদায়ে বসন্ত কৰে উনমত্ত—এ
দেখিয়া দিবা লোচন॥
কান্দে ৰঘুপতি হৰাইলা স্থমতি
আমাক কৈলি নিৰাশ।
সীতাৰ হৰণ ৰামৰ ক্ৰেন্দন—এ
ভণে ভূগবিৰ দাস॥

शन ।

শশিমুখী বৃলিয়া যে কান্দন্ত ৰাঘব।
হাহা কৈক গৈলি মোৰ ৰমণী বান্ধৱ॥
পাত পাত কৰি মই কৰিলো বিচাৰ।
কহিতো নপাইলো কোনো মন্মুন্তা সঞ্চাৰ॥
আপুনি উদ্দিশ কৰি নপাইলো সীতাক।
কোননা বৰ্বৰে অবৰোধিলা আমাক॥
কোনে নিলে কৈত পাইবো আমাৰ ৰমণী।
এহি বৃলি আসন ছাৰিলা চক্ৰপাণি॥
সীতাক বিচাৰি প্ৰভু পুনক্পি গৈলা।
অৰণ্যৰ মাজে চকোৱাক লগ পাইলা॥
নিজ নাৰী সহিতে বঞ্জয় প্ৰাতঃকালে।
ভুঞ্জয় চকোৱা মংশ্য শামুক সকলে।
চকোৱাৰ সমীপ চাপিলা ৰিষিকেশ।
খীৰে ধীৰে পোছয় বচন উপদেশ॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

আকুল কুৰত্ব আমি কয়ো এক বাতা। যাইতে দেখিলিকি ভই জনক ছুহিতা॥ একেখৰে গৈলা কিবা অনেকে সহিতে। পুৰুব পছিম কিবা দখিণ দিশতে। বা বৈশন্য কিবা অগ্নিকোণ যে নৈৰিত। কোন পথে গৈলা সীতা কহা স্বৰূপত। চকোৱা বদতি শুনা ৰাম দেৱৰাজ। যে বোল পুছিলা কহিবাক লাগে লাজ। তুয়ো বীৰ সামৰ্থ গাণ্ডীৱ ধণু হাতে। ক্ষেত্রি হয়। ভার্যা। হেৰুৱাইলি কেন মতে॥ আমি পক্ষী জাতি কিছে। নজানো উপাই। নাহি শৰীৰত কিছো বল সমুদাই। অস্ত্র শস্ত্র নাজানো নাহিকে ভাই লগে। তথাপি ৰাখোহো ভাৰ্য্যা উপায়ৰ বলে। লগত সঙ্গতি আছে কনিষ্ঠ সোদৰ। ছুভাই সঙ্গতি তুমি নোহা একেশ্বৰ॥ হেনভো সীতাক হৰি লৈয়া গেল আগে। আমি হলে ইতো লাজে নিজীও পৰাণে। বৰ বিপৰীত চকোৱাৰ পটন্তৰ। শুনিয়া সিদ্ধান্ত দিলা ৰাম গদাধৰ॥ যাত্রা পুছিবাক মই আইলো তবু পাশে। হেনয় নিশ্দিত বাক্য বোলা উপহাসে। এহি বুলি ৰামচন্দ্ৰ মনে কৰি তাপ। চকোৱাক দিলস্ত প্ৰচণ্ড বৰ শাপ॥ দিবসত একত্রে থাকিবি সুই ছাবে। ৰাত্ৰি হলে ছুয়ো ৰবি ইপাৰে সিপাৰে॥ বাত বৰিষণ আৰু মেঘ সংযোগত। সম্ভোগ মিলিব বাৰ বছৰ মূৰত i চন্দ্ৰ দিবাকৰ লাগি চকোৱাৰ শাপ। এছি বুলি অন্তৰিলা জগতৰ বাপ।

- 4



অৰণাকাণ্ড।

চকোৱাক দিলা শাপ ৰাঘৱ মুৰাৰি।
বুলিবে লাগিলা চকোৱাৰ নিজ নাৰী॥
অকাৰ্যো ভাণ্ডিলি বাত্ৰা জানি স্থমজল।
ভণ্ডে দুৰ্গাবৰে ৰামচৰণকমল।

ৰাগ—ৰামগিৰি

চকোরেনী বোলে এবে শুনাবে চকোরাছে— কিসতে বা কি কাম কৰিলি। प्तिश्र श्रुविक्षेत्री अनकनिमनी ৰামক তঞি ভাণ্ডিলি॥ ভাল মন্দ তঞি একো নজানস মৰাস আপোন গৰ্কে। শাপ গুৰুতৰ দিলা বখুবৰ— কিমতে তাক এৰাইবে। মোহোৰ বচন শুনা এতিক্ষণ अञ्चल हिल्या यार्या। সীতাৰ বাত্ৰাক কহিয়ো ৰামত, শাপৰ মুকুতি পাঞো॥ ভাৰ্য্যাৰ বচন শুনি তেতিক্ষণ চলিলা ৰামৰ পাশে সৰস্বতী পদ শিৰত ধৰিয়া ভণে ছুৰ্গাবৰ দাসে।

ৰাগ—অহিৰ

অকি প্ৰভূ ৰাম—
কহো মই স্বৰূপ কাহিনী।
আমি আছো দোষ কৰি
তোমাক ভাণ্ডিলোঁ হে—
শাপৰ উদ্ধাৰা চক্ৰপাণি।

SB .

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

ৰাৱে পাখী ছেঞাই শাপ দিয়া ৰাম যাই ৰহা প্ৰভু বিশ্ৰাম কৰিয়া। বাপ জগতৰ ধাতা শুনিয়ো সীতাৰ কথা কহে। শুনা সাৱধান হয়।॥ আমাক শাপিলা হে চন্দ্ৰ দিবাকৰ লাগি ৰহি গৈলা পাষাণৰ ৰেখা। অতি জ্ঞানশূন্য মতি আমি প্রভূ পক্ষী জাতি আমাক পালন কৰি ৰাখা। সিদ্ধান্ত নেদিলা তাত চকোৱা বুলিলা যত চলি গৈলা পাছক নাচায়া। কবি ছুৰ্গাবৰ ভণে সৰস্বতী কুপা গুণে গৈলা পক্ষী সিদ্ধান্ত নাপায়।॥

शन ।

লক্ষণে সহিতে প্ৰভু চলে ধীৰে ধীৰে।

ছবে তাপে ছই নয়নৰ নীৰ পৰে॥

ভ্ৰমন্তে ভ্ৰমন্তে গৈলা গিৰি তক্তল।

ভ্ৰমৰে গুপ্তৰে শুনে মনত বিকল॥

চলিছে কেৱল মুখে লৈয়া সীতা নাম।

পোছে প্ৰিয়া বুলিয়া বুক্ষত শ্ৰীৰাম॥

দশৰথ স্তুত ৰাম জানা মোৰ নাম।

হাতত ধণুক দেখ স্বৱৰ্গৰ কাম॥

মোহোৰ স্থন্দৰী শশিমুখী দীৰ্ঘকেশী।

দাড়িম্ব সদৃশ যেন দশন প্ৰকাশি॥

হাহা শশিমুখীক নিলে কোনে হৰি।

যাইতে নেদেখিলা কি মোৰ জনক ঝিয়াৰি॥

কহা কথা সাৰ যে স্বৰূপ বুক্ষ্চিয়।

সীতাৰ সন্তাপে মোৰ হৃদি নসহয়॥



সীতাৰ বাত্ৰাক ৰামে বৃক্ষত পুছিলা।
বাত্ৰাক নাপাই ৰামে নিশাস তেজিলা,॥
সীতাৰ সন্তাপে লোহ বহয় নয়নে।
ভণে তুৰ্গাবৰ প্ৰভু ৰামৰ চৰণে।

ৰাগ—অহিৰ

অ কি লখমন—
নাই বুধি সীতাক নাপায়া।
নয়নৰ লোহে মোৰ পন্থক নেদেখো হে
সন্তাপে পোৰয় মোৰ হিয়া॥
চকোৱা ভৰ্চিছলা মোক তাক পাসৰিলো হে—
গৈলো মই বুক্ষতল লাগি।
বুক্ষত পুছিলোঁ পাচে উদ্দিশ নাপালো হে—
প্রিয়া হৰুৱাইলো মৃগ লাগি।
চিত্ত যে নহয় থিৰ
ব্যাকুল শৰীৰ হে—
হৰুৱাইলো জ্ঞান স্থচৰিত।

সন্ধনাৰ ৰাত্ৰি পাই প্ৰমিবাৰ নাই ঠাই
শৰীৰতো নাহি একো তম্ব ॥
সাগত চলিয়ো তুমি পাচত চলিবো আমি
তুৰ্গম সন্ধট ঘোৰ বনে।
সৰস্বতী চৰণত কৰি শিৰ অৱনত
কবিবৰ তুৰ্গাবৰ ভণে॥

अन ।

তুখমনে লক্ষণ যে গৈলা আগুৱাই।
পাছত চলস্ত ৰাম কোশল্যা তনয়।
ক্তোঁ বেলি অৰণ্যক এৰি তুই জন।
বগুলা পক্ষীক পাছে পাইলা দৰিশন॥

অস্মীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

बाटम ट्वाटन नक्न एमिट्सा टक्वा नय । পক্ষিজাতি দেখা এই জনত ভ্ৰময় **।** পৰম ধাৰ্ম্মিক বক প্ৰাণিছিংসা ডবে। लक् लक् भम कबि क्षलब उभरब ॥ এছি পক্ষিবৰত পুছিবে যোগ্য হয়। যত কথা জানে এহি কহিবো নিশ্চয়॥ ধাৰ্ম্মিক বৈষণ্ডৱ শান্ত স্বভাৱ সৰল। এছিতো আমাক নভাণ্ডিবো একোকাল॥ लक्षण वपछि पापा श्वितिया वहन। কহে। মই শুনা তেবে বকৰ লক্ষণ॥ মস্থক চোপয় কতে। ধৰি ধৰি খান্ত। নপাইলে মস্থক পাছে ধাৰ্ম্মিক বোলস্তু। স্বভারতে পক্ষিজাতি অন্তি অগিয়ান। অধৰ্মত ৰতি বৰ হিংসাৰ নিদান ॥ নজানে অধৰ্ম ধৰ্ম পূৰ্ববপৰ জ্ঞান। হেন চাৰ বকত পুছিবে নাই মন॥ এহিমতে চকোৱাত পুছিলা আপুনি। বুলিলা যতেক শুনিলাহা নিন্দাবাণী ৷ আপদ সম্পদ বৃক্ষপস্থত দেখিলা। সীতাৰ সম্পদ বাত্ৰা তাহাত পুছিলা॥ যাতে ভাতে বাত্রা দাদা মুপুছিবা দেখি। তাহাতে পুছিবা তুমি শুদ্ধমত লেখি॥ অল্লমতি অল্লজ্ঞান দেখা যিতোজন। তাহাত নোপোছা কথা আমাৰ বচন ॥ শ্ৰীৰাম বদতি বাপু শুনিয়ো বচন। বকত পুছিলে বাত্ৰা পাম এতক্ষণ॥ হেন শুনি লক্ষণে বকক দিলা মাত। সীতাৰ সম্পদ বাত্ৰা কহিয়ো আমাত॥ লক্ষণৰ বাক্য শুনি তেখনে আৰ্সিলা। শ্ৰীৰামক বকে যাই প্ৰণাম কৰিলা॥



অৰণাকাগু।

বকক সন্থাধি পাচে শ্ৰীৰামে পুছিলা। ইতো পত্তে যাইতে নিকি দীতাক দেখিলা। ৰামক বোলন্ত প্ৰভূ কিছো বাত্ৰা পাওঁ। জলত ফুৰোছো মই মতা ধৰি খাওঁ॥ দেখিলোহো ছায়া মায়া জলৰ তলত। কন্যা এক লই যাই ৰথ ওপৰত। देकब कचा दकारन रनहें निश्च नाशाख। তল মৃশু কৰি প্ৰভু মণ্ড ধৰি খাও॥ বকৰ মুখৰ কথা শুনি ৰঘুমণি। মোহোৰ সীতাক আবে হৰিলেক কুনি। कांनित्ना अवस्था स्वित्नक (प्रवर्गन । এহি বুলি ক্ৰেদ্ধ ভৈলা কমললোচন। বুলিলম্ভ ক্রোধে অগ্নিসম ছুই আখি। চন্দ্ৰ সূৰ্য্য বায়ু বহু সবে হৈব। সাখি॥ **(महिमिक मांग्र) शक्तर्यक त्वाल वांगी।** সবে ভাল জীৱা যেবে সীতা দিয়া আনি।। ভিনিয়ো লোকৰ ষেবে সাধিবোছো ভাল। কোনে সীতা নিলে দেখাই দিয়াগ সকাল। বাহ্য অভ্যস্তৰক দেখয় দেৱগণ। क्तांत भी छ। नित्न क्लां भारतित्व वहन ॥ হেৰা মোৰ দোষ নাই সবে আছা চাই। সীতাৰ সন্তাপে হেৰা প্ৰাণ মোৰ যায়। হেৰা অগ্নিশৰ মাৰো স্বৰ্গচূৰ কৰো। প্ৰহাৰি পাতাল পোৰো দেৱকো সংহাৰো॥ नांग नकी करवा यक बक मत मारवा। উल्टां अधिव स्मक मन्नाव विनादवा । সীতাক উদ্ধাৰো দৈত্য দানৱ নিবাৰো। ৰাম নাম কীৰ্ত্তি থও পাতক সংহাৰো॥ মোৰ ভাৰ্য্যা হৰি স্থথে জীৱে কেন কৰি। উদ্যান্ত গিৰিমানে পেলাইবো বিদাৰি॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

তিনিয়ো ভূবন জুৰি ত্ৰন্ধ অন্ত মাৰি। • দহিবো নিৰ্য্যাণ কৰি সবে মান সাৰি। শুনিয়ে। লক্ষণ বাপ হেলা মুজুৱাই। শীতল পানীক ভাই কেহো নডৰাই॥ শনিৰ শুনিয়া নাম সমস্তে ডৰাই। চল্ৰে পাইলে তাক কিছু ভয় নকৰয়॥ এহি বুলি প্ৰভূ ধনু কৰিলা টক্কাৰ। লৰিল ব্ৰহ্মাণ্ড প্ৰজা ভৈলা চমৎকাৰ ॥ উৰ্দ্ধক সমূখে ৰামে জুৰিলেক শৰ। হাতত ধৰিলা যাই লক্ষণ কুমাৰ ॥ সন্ত্র্ধি বোলন্ত দাদা তেজিয়ো কুকর্ম। জগতক বিনাশিবা ইতো কোন কৰ্ম্ম॥ কোনে সীতা হৰিলেক নিৰ্ণয় নাজানি। জগতকে বিনাশিবা ত্রক্ষ-অন্ত হানি॥ অক্সিজ্ঞাসী ক্ৰোধ কেনে কৰাহ। আপুনি। তুমি বিনাশিলে তাক ৰাখিবেক কুনি। তুমি ত্ৰক্ষা তুমি বিষ্ণু তুমি ত্ৰিপুৰাৰি। তুমি সংহাৰিলে প্ৰভু কি কৰিতে পাৰি। পূৰ্বত আপুনি প্ৰভু প্ৰজিলা জগত। নতো কাল হস্তে কেনে কৰিবাহা হত। পালিৱেক বৈষ্ণৱক ভৈলা অবতাৰ। তুৰ্জ্বনক বাচি বাচি কৰিবা সংহাৰ॥ এহি ত্যু যশ শুনি তৰে নৰলোক। সীতাৰ শক্ৰক মাৰা কীৰ্ত্তি ৰহিয়োক। শীতল স্বভাৱ ধৰা উগ্ৰব্ধণ এবা। শৰক সম্বৰা প্ৰভু লোক ৰক্ষা কৰা॥ ইতো কোপে আপুনাৰ যশ নষ্ট হয়। যদিব। ঈশ্বৰ তুমি তভো যোগ্য नয়॥ लक्ष्म दर्वात वाम भव मखिला। উগ্ৰৰূপ এৰি প্ৰভু শান্তমূৰ্ত্তি ভৈলা।



অৰণাকাণ্ড।

পুনু ছুই ভাই শীতা বিচাৰয় বনে। কবি ছুৰ্গাবৰ ভনে ৰামৰ চৰণে॥

ৰাগ-ৰামগিৰি।

সীতাৰ কাৰণে ৰাম বিচাৰে বনে ছে-পুনু দুই ভাই গৈলা। সীতাক বিচাৰি ফুৰয় দৈত্যাৰি অৰণ্য মাজে পশিলা॥ কতো দূৰ লাগি গৈলা বন ভাঙ্গি ৰথ এক দেখা পাইলা। ভাক্সা ৰথখান দেখি বিভামান কোনে আনি ঐত থৈলা। ৰামে বুলিলন্ত লক্ষণে শুনন্ত কিনো ইতো বিপৰীত। ৰথ-ধজ ভাঙ্গি বন মাঝ লাগি পৰি আছে ধৰণিত॥ সমীপক যাই চাইলা তুই ভাই कविलख भारत थिव। সীতাৰ নিদানে ভৈলা ঘোৰ ৰণে যুঝিলন্ত কোন বৰী॥ এহি বুলি ৰাম লগত লক্ষণ कृबिल छ तरन तन। কতো দূৰ যাই জটায়ুক,পাই দেখিলন্ত বিভামান । দেখিলা পকोৰ ৰক্ত কলেবৰ তমু আতি থুলম্ভৰ। শীত্ৰে বন চাপি জগতৰ বাপে জুৰিলেক এক শৰ॥ लक्षणक हो है तितल बघुबाई छनिएया প্রाণ नशह ।



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

এহি পক্ষী খাইলা নিশ্চয় জানিলো সীতা একেশ্বৰে পাই ॥ মায়াবী ৰাক্ষস ফুৰে দশোদিশ शाइन (भाव প্রাণেশ্বী। আমাক খাইবেক জানিলো প্রত্যেক আছে পক্ষীৰূপ ধৰি॥ গৰ্ভত পশিলা উশাস গুচিলা সীতা জনকৰ জিউ। গুধৰ ঠোঠৰ পশিল ভিতৰ তোৰ তৈতে গৈলা জীউ॥ মোক মোহা স্লেচে লখাইক পঠাইলা গুধৰ হৈবিহি ভক্ষি। ওৰেৰে পাপিষ্ঠ শুন পক্ষিনিষ্ট তোক মাৰো অবে পক্ষি॥ খাইলি মোৰ ভাৰ্য্যা পাপী পক্ষিৰাজ বিজুৰিয়া মাৰো ধৰি। এহি বুলি ৰাম প্ৰভু পুণা কাম ধন্ম এক শৰ জুৰি॥ ৰাম শৰ দেখি কম্পমান পক্ষী ভয়ত ভৈলা তৰাস। ৰামৰ চৰণ সেবি অনুক্ষণ ভনে ছুৰ্গাবৰ দাস ॥

> ৰাগ—অহিৰ অ কি ত্ৰাহি ৰাম— চৰণত কৰোহো প্ৰণাম।

ত্ৰাহি ত্ৰাহি ৰাম বুলি কৰি হাত কৃতাঞ্চলি বৰ ভাগ্যে ৰহিছে পৰাণ'।

জটায়ু যে মোৰ নাম শুনিয়োক প্ৰভু ৰাম আমি ভৈলো গৰুড়নন্দন॥



ভোমাৰ ভাৰ্য্যাক হৰি দশগ্ৰীৱে চোৰ কৰি । ৰূথে তুলি যাই লগ্ধা পোন। • • •

দেখি তাক ধাই গৈলো পাথা চাটে কম্পাইলো বৰ চোটে চুইৰো ভৈলা ৰণ।

সৰ্ববান্ধ বিদাৰ কৈলো কিৰীটিক ভান্ধি থৈলো ৰথক ভান্ধিলো ধৰি ঠোঠে।

বৰ চোটে দশগ্ৰীৱ দেখিলেক তমোময় মূৰ্চ্ছা ধাই পৰিলা ৰথতে 🕫

মুহূৰ্ত্তেক মানে উঠি মোক চাইলা ক্ৰোধ দৃষ্টি কৰিলেক মোহোক অন্তাই।

অগ্নিবাণ মাৰি মোৰ পাথা পুৰি কৈলা চূৰ পৰিলোহো মই মূচ্ছ । যাই॥

বৰ দিলা সীতা আই পৰি থাকা এহি ঠাই এহি বাত্ৰা কহিবা ৰামত।

ৰামে সাধিবেক কাজ শুনিয়োক পক্ষিৰাজ থাকিবিহি অক্ষয় স্বৰ্গত ॥

এই বুলি সীতা আই কান্দি কান্দি মোক চাই কৈ গৈলা ৰাৱন্নায় হৰিলা।

তাৰ আধ্যান ৰথ দেখিয়োক ৰঘুনাথ বনৰ মাজত পৰি ৰৈলা ॥

মোৰ হৃদিকম্প ভৈলা পাপিছে হৰিয়া লৈলা সাধিবে নৰিলো ত্যু কাজ।

কহিলোহো এহি বাত্ৰা ৰাৱন্নে নিলেক সীতা শুনিয়োক আবে ৰঘুৰাজ ॥

এৰে মন ভৈলা সিন্ধি

• শৰণ দিয়োক ৰঘুনাথ।

ধশ্য মোৰ ইজীৱন তবু কাৰ্য্যে গৈলা প্ৰাণ চৰণে নমিছে মোৰ মাথ॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

দেখে পক্ষী এৰে প্ৰাণ ছই ভায়ে ছখনন
তুলি আলিজিলা ছয়োজনে।
বামৰ চৰণ সেবি ৰচিলে ই গীত ছবি
ছুৰ্গাবৰ মহা ভক্তিমনে।

ৰাগ—বসন্থ

শোকতে বিৰল ৰাম ছে— লক্ষণ চুই ভাই। জটায়ুৰ গলে ধৰিলন্ত ভূয়ে থাই॥ ভকতৰ দুখ দেখিহে নসহে শৰীৰ। ছুই ভাই কান্দন্তে নেত্ৰৰ বহে নাৰ॥ পিতৃৰ প্ৰম মিত্ৰহে তুমি পক্ষিৰাজ। হৰি হৰি বিধি কিনো কৰিলা অকাজ॥ আজিসে মৰিলা যেন হে ৰাজা দশৰথ। সিতো শোকে অগ্নিত পিম্পলি ভৈলা পথ।। হাহা মৰিলোহো শোকে হে ছুটে প্ৰাণবায়ু। মোৰ অৰ্থে যুদ্ধ কৰি মৰিল জটায়ু॥ সন্থধি বোলন্ত বাপ হে কহা নিষ্ট কৰি। কৈহিৰ ৰাৱল্লে মোৰ সীতা নিলে হৰি॥ কোন থানে থাকে তাৰ হে কতেক কটক। কোন বংশে উপজিলা পাপিষ্ট লটক॥ মাৰিয়া পঠাইবো তাকহে যমৰ কটক। জীয়াইবো ভোমাক মোহা ভক্ত চটক ॥ জটায়ু বোলস্ত হেন হে সুবুলিবা মোক। যেবে দয়া আছে তেবে নকৰিবা শোক।



হৌক গতি তোমাক যে হে চাহি এৰো প্ৰাণ।
দহিয়া শৰীৰ দিয়া পিণ্ড জল দান।
আত পৰে ভাগ্য কোন হে আছ্য় আমাৰ।
তোমাৰ প্ৰসাদে পাইবো সংসাৰৰ পাৰ॥
নিজ কৰ্ম্মে হওঁ প্ৰভু হে যেহি সেহি গতি।
সেহি সেহি জন্মে হৌক তোমাৰ ভকতি॥
বৈষ্ণৱৰ সক্ষতেসে হে ৰহোক সৰ্ব্বথা।
মুখে তবু যশ গাইবো কর্মে তবু কথা॥
শুনিয়োক প্রভু তুমি হে চূর্ত্তি নহৰাইবা।
জানিলো নিশ্চয় তুমি জানকীক পাইবা॥
ৰাক্ষসক সংহৰিবা হে দেৱক পালিবা।
জগত পালিবা পুণ্য যশ প্রকাশিবা॥
সীতাক পৰীক্ষা তুমি হে কৰিবা আপুনে।
ভনে কবি তুর্গাবৰ ৰামৰ চৰণে॥

পদ

পুছিলা ৰাৱনা সিতো পুলস্তৰ নাতি।
বিশ্বেপ্ৰবা বাঁৰ্যো নিক্ষাত উতপতি॥
তেজে বলে বাঁৰ্যো কাৰ্যো বিপুল শকতি।
কুবেৰৰ ভাই হয় ৰাক্ষসৰ পতি।
সমুদ্ৰৰ মাজে পুৰিহে নাম তাৰ লক্ষা।
তাতে থাকে ত্ৰিভুৱনে কাকো নাই শক্ষা॥
সীতাৰেসে বৰে মই আছো প্ৰাণ ৰাখি।
কান্দিয়া গোসানী বুলিলস্ত মোক দেখি॥
ৰামত যাবত বাত্ৰা নজনাবা তুমি।
দিশো বৰ যবদেকে নাহে মোৰ স্বামি॥
এছি কহি পক্ষী চথু মুদিলা ইঠাই।
সাক্ষাতে দেখিলা ৰাম লক্ষণ হভাই॥



অসমীয়া সাহিতাৰ চানেকি।

চথু থিৰ কৰিয়া ভূমিত দিয়া ঠোট। • ঢলিয়া পৰিল থুলন্তৰ দেহা গোট॥ প্রাণ ছাবি যাত্তে মুখ কণ মেলা দিলা। ঘাৰ গোট পালটাই ভূমিত পৰিলা। খানিতেক মান তনু আছিলেক কম্পি। মৰিল কাশ্যপ নাতি ৰাম ৰাম জম্পি॥ দেৱে যাক নপাৱস্ত পাইলা হেন গতি। দেখি ৰাম লক্ষণ বিশ্বয় ভৈলা অতি॥ পাচে হুই ভাই চিতা খান পাতিলম্ভ। তাতে তুলি জটায়ুৰ দেহাক দিলন্ত॥ তুই ভাই স্নান কৰি দিল জলাঞ্জলি। ৰক্ষ মাছে দিলা চটকৰ কাক বলি॥ সর্বব কার্য্য সমাধিলা পাছে ছুই ভাই। বনত ভ্ৰমস্ত সীতা গোসানীক চাই। অনন্তৰে পাইলন্ত কৱন্ধ নিশাচৰ। মুণ্ড নাই গাৰি গোট আতি থুলন্তৰ ॥ ৰাম লক্ষণক ছুইকো ধৰিলেক বলে। গিলিবাক চাই তুষ্ট আতি কুতৃহলে ॥ শ্ৰীৰামে বোলস্ত লখাই মৰিলো আৱেশে। তুই ভাইক ধৰি হেৰা গিলয় ৰাক্ষসে॥ देककश्री भावब माफलिला भरनावथ। অকণ্টকে ৰাজ্যভোগ কৰোক ভৰথ॥ ধিক ধিক আমাৰ বীৰত্ব সমুদাই। সীতাক হৰাই বনে মৰো তুই ভাই। লক্ষণে বোলন্ত মুহি অমুশৌচ বেলা। দুৰ্ঘোৰ আপদ ভৈলা নকৰিবা হেলা। শীত্ৰ কৰি দৃঢ় মৃষ্টি খড়গ ধৰিয়োক। মুণ্ড নাই ইহাৰ বাত্তক ছেদিয়োক। করক্ষে বোলয় হোৱা তুমি কোন জন। কোন ছুই মহাবীৰ জানিলো এখন॥



অৰণাকাণ্ড

বজ্র সম হাত্তে মই আন্টিলোহো চাপি। কিনো বীৰ তোৰা চুই ৰহিলা তথাপি # মোৰ সিদ্ধি বিধি কিবা মিলাইলেক আনি। াবে নতে। গিলো কহা সক্ষপ কাহিনী। কৱন্ধৰ বচনত কম্পিলেক কায়। তুইখান খড়গ ধৰিলন্ত তুই ভাই॥ বাহুৰ মূলত তাৰ বেগে ঘাৱ দিলা। ভয়ন্ধৰ দুই বাহু খসিয়া পড়িলা ॥ বাত্ ছিক্সা গৈলা ৰক্ষ মিলিলা তাহাৰ। ৰাম লক্ষণক চাই বোলে পুনৰ্ববাৰ। কহিয়ো কহিৰ ছুয়ো ধৰা কিবা নাম। জানো ত্ৰিভুবনে নাই ভোৰাৰ উপাম। বদতি লক্ষণ শুনা নিশাচৰ কাজ। আমাৰ জনক দশৰথ মহাৰজি॥ সপত্নী মাতৃৰ বোলে বনক পঠাইলা। আমাৰ সম্ভাপে পিতৃ প্ৰাণক তেজিলা। এহেন্তে শ্ৰীৰাম জানা পিতৃৰ ভকত। ইহান ঘ্ৰুণি সীতা হ্ৰাইলা বনত। ভাহাকে খোজতে আমি ফুৰো বনে বন। তই কোন জন হস কহা এহিক্ষণ॥ বোলস্ত করদ্ধে কিনো আনন্দ আমাৰ। পুৰুষ-উদ্ধাৰ ৰাম ভৈলা অৱতাৰ। পূৰ্বত আছিলে। মই গন্ধৰ্ব শোভন। ৰাক্ষ স্থৰূপ হই গৈলে। তপোৱন ॥ ঋষি সব ধৰি খাইলো ভৈলা মহাপাপ। সিকাৰণে পালো এই ভয়ানক শাপ। আন ঋষি সব মিলি বুলিলেক তয়। বিকৃত ৰাক্ষস হবি শাপিলো নিশ্চয় ॥ পাচে প্ৰণমিয়া মই কৰিলোঁ কাতৰ। भाश भीमा कवि शाटक मिला टमांक वव ॥

অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

যৈসানি ঈশ্বৰ বাম ৰূপে অৱতৰি। .তোৰ বাহু ছেদিবোহো হাতে খড়গ ধৰি॥ তৈসানি আপুন ৰূপ ধৰি বিতোপন। হবি মুক্ত বুলি চলি গৈলা নিজ থান॥ তেতিক্ষণে দন্দু নামে ৰাক্ষ্যেক ভৈলো। আৰাধিয়া চিৰকাল ব্ৰহ্মাক চিস্তিলো॥ চিৰকালে জিবাৰ ব্ৰহ্মায়ে দিলা বৰ। এহি গৰ্কে ইন্দ্ৰক যুক্তিলো একেশ্বৰ। ক্ৰোধে ইন্দ্ৰ কৰিলেক যুদ্ধক প্ৰবন্ধ। বজু হানি শৰীৰত বদাইলেক কন্ধ। এতেকেসে মোৰ শিৰ নাই ওপৰত। শৰীৰক পশিয়াছে বজ্ৰৰ ঘাৱত। इत्क (म रिथल छ कबक्क भाव नाम। ব্ৰহ্মাৰ বৰত মোৰ নপৰিল প্ৰাণ॥ তৃতি কৰি বুলিলোহো শুনা দেৱৰাই। মুক নাই দিয়া মোক জিবাৰ উপাই॥ শুনি হেন ইন্দ্ৰ পলাইলা মনতুথ। দিব্য তুই বাস্ত দিলা হৃদয়ত সুখ। পদ্মত থাকোহে। প্ৰহৰেক হাত মেলি। পশু পক্ষা মনুষ্য সবাকে। থও গিলি॥ ভোমাৰ প্ৰসাদে প্ৰভু পাব নিজ থান। জ্ঞান কৰি পোষা মোক হৌক দিব্য জ্ঞান। শুনি ৰামে লক্ষণক বুলিলা বচন। ভনে কবি তুৰ্গাবৰ হৈ ভক্তিমন।

ৰাগ—শ্ৰীগান্ধাৰ।

শুন শুন ভাই প্ৰাণৰ লখাই এ জাণ্টে দিয়া চিতা পাতি। ভকত বাঞ্চিত সাধিয়ো স্থবিত এ । জাণ্টে আনা কাষ্ঠ কাটি।



অৰণাকাণ্ড।

কুপাময় ৰাম প্ৰিমল কাম আজ্ঞা দিলা লক্ষণক। শুনিয়া লথাই তেতিক্ষণে যাই এ চিতাখান পাতিলেক॥ গাড়া খান্দি চিতা পাতিলম্ভ তথা করন্ধক তাতে তুলি। জগত ঈশ্বৰ দেৱ গদাধৰ এ **मिलस्य अग्रिन कालि**॥ কার্ত্তিক থাপিলা যশ প্রকাশিলা অগ্নিয়ে ভন্ম কৰিলা। করন্ধ গুচিলা দেৱমূর্ত্তি ভৈলা এ शक्तर्व यादन हिल्ला॥ স্বৰ্গ হত্তে যান দেবৰ বিমান তাহাতে গই চৰিলা। স্বৰ্গ মুখলই আনন্দে চলই এ (मत महत्र मझ देनना ॥ আনন্দে গন্ধর্বর করে মহোৎসর স্থথে গাই ৰাম গীত। ৰামে দেখিলন্ত লক্ষণে সহিত এ ৰক্ষ ভৈলা ছুইৰো চিত॥ লক্ষণক চাই মাতে ৰঘুৰাই **চल यांट**का छूहे वन। **ट्रिकंड** वहन श्रुनिय़ा लक्ष्म এ পশিলন্ত তুই জন। ৰামৰ চৰিত্ৰ শুনস্তে সমৃত মনত হুয়ো সম্ভোষ। ৰামৰ চৰণ সেবি অনুক্ষণ এ ভনে ছুগাঁবৰ দাস ॥



অসমীয়া সাহিত্যৰ চানেকি।

शम

করন্ধ গন্ধর্বের বোলে শুনা বঘুরাই। সীতাৰ উদ্দেশ কহো শুনা চুই ভাই॥ পূৰ্ববৰ দিশক লাগি চলা ৰঘুবৰ। কতোদূৰে দেখিবাহা চম্পা সৰোবৰ॥ ঋষ্যমুখ পৰ্ববতৰ সমীপৰ কাযে। পাঞ্জন দেৱ যে বানৰ ৰূপে আছে॥ স্থুগ্ৰীৱ যে নল নীল বীৰ হনুমন্ত। ভালুকৰ অধিপতি বৃদ্ধ জামুৱন্ত ৷ স্থগ্ৰীৱৰ ভাই আছে তাব নাম বালি। किन्छिक (मृभ इर्छ (थमाईना निकानि॥ পাঞ্জন বানৰক ৰাজ্য খেদি পাচে। কনিষ্ঠৰ ভাৰ্য্যা বলে কাৰি লৈই আছে। বৰ ভাইত যুদ্ধ হাৰি আছে পৰ্ববতত। তেহে সমে সন্ধৰে কৰিয়ে। মিত্ৰৱত ॥ ৰাবন্নাক বধা পশি লক্ষাৰ ভিতৰ। তযু পুণ্য ৰূপ কীৰ্ত্তি হওক বিস্তাৰ ৷ এহি বুলি গন্ধর্বৰ আকাশে চলি গৈলা। জয় ৰাম নাম মুখে মুখে গান গাইলা॥ পাচে ৰাম লক্ষণ চলিলা ছুই বাৰ। চম্পা নামে সৰোবৰ পাইলা তাৰ তীৰ। বহল নিৰ্মাল জল ফটিক সাক্ষাত। হংস চক্ৰবাক সবে ক্ৰীৰে পৰি তাত॥ ফুটিছে কমল ফুল গল্ধে বহু দূৰ। চিত্ৰ বিচিত্ৰ যে তাত দেখি মনজুৰ॥ তাহাৰ ভীৰত এক আছম্ভ সৰ্ববৰি। পৰম পৱিত্ৰ সিদ্ধ বৃদ্ধ হস্ত নাৰী॥ ৰামক দেখিয়া প্ৰণামিলা দণ্ডৱতে। পাচে পৰিচয় ভৈলা শ্ৰীৰাম সহিতে ।



অনেক বিচিত্ৰ কথা ৰামে সমে কৈলা। মানুষী গুচিয়া তাই বিভাধৰী ভৈলা। স্বৰ্গ হত্তে আইলা এক দিব্য যে বিমান। পাচে প্ৰণমিলা তাই শ্ৰীৰাম চৰণ॥ চৰণৰ ধূলি লৈলা কৰি বহু মান। বিমানত চৰি গৈলা অম্ৰাৱতী থান॥ ধৰি দিব্য ৰূপ তাই স্বৰ্গে চলি যাই। হৰিষে থাকিলা চাই ৰঙ্গে ছুই ভাই॥ भारि खेजू हिन रेगना हम्भा मरबावर**व**। চতুৰ্পাশে আছে পুষ্প ফুটি জাতিকাৰে॥ অশোক বকুল বেল কুন্দ নাগেখৰ। কদম্ব কেতেকি চম্পা মালতি মন্দাৰ। ফুটিছে মালতি গুটি পুষ্প মনোহৰ। আনন্দে প্ৰচুৰ আমোদিত গঙ্গে তাৰ॥ সূৰ্য্যৰ কিৰণ সম জলে পুষ্প ৰাতি। স্থল পদ্ম প্ৰকাশয় ঘোষে দিন ৰাতি ॥ বনৰ দেখিয়া জোতি ৰাম তুষ্ট ভৈলা। ফুৰি ফুৰি চাহি ৰাম বিয়ামোহ হৈলা॥ লক্ষণে বোলন্ত প্ৰভূ থিৰ কৰা মন। আপুনি ঈশ্ব ছই হৰাইলা জ্ঞান ॥ করন্ধে কহিলা বাত্রা আসন্তে পথত। পুষ্পা গন্ধে বিয়ামোহ ভৈলা কেন মত। লক্ষণৰ বাক্যে ৰামে পাইলস্ত স্থমৰি। ছুই ভাই চলি গৈলা ঋষ্যমুখগিৰি॥ असुमूर्य प्रिथिला वानव शक्षकता। ৰামৰ চৰণ সেবি হুৰ্গাবৰ ভনে॥

অৰণ্যকাণ্ডে সীতাহৰণ সমাপ্ত:।